
ISSN : 0975-8011
बुंदेली
बसंत
2024

नगर पालिका छतरपुर (म0प्र0)

बुन्देली उत्सव के आयोजन पर सभी
कलाकारों व नागरिकों का अभिनंदन

श्रीमती ज्योति सुरेन्द्र चौरसिया
अध्यक्ष

माधुरी शर्मा
मुख्य नगरपालिका अधिकारी

नगर परिषद, खजुराहो जिला छतरपुर

बुन्देली उत्सव में पधारे सभी कलाप्रेमियों
का हार्दिक स्वागत

अरूण अवस्थी
अध्यक्ष

बसन्त चतुर्वेदी
मुख्य नगरपालिका अधिकारी

नगर परिषद, राजनगर जिला छतरपुर

बुन्देली उत्सव में पधारे सभी
कलाकारों का अभिनंदन

जीतेन्द्र वर्मा
अध्यक्ष

बसन्त चतुर्वेदी
मुख्य नगरपालिका अधिकारी

तुलसी चिन्तामणि ग्रंथ और रामचरित मानस की कथा

–उदय शंकर दुबे

रामचरित मानस के प्रणेता गोस्वामी तुलसीदास की ख्याति से आकृष्ट होकर कई कवियों ने स्वमति व लोक श्रुतियों के आधार पर उनका जीवन चरित लिखा। अब तक उनके जीवन में संबधित कई ग्रंथ प्रकाश में आ चुके हैं- **यथा–**

१. वेणी माधव दास कृत मूल गोसाई चरित
२. रघुवर दास कृत गोसाईं चरित
३. भवानीदास रचित गोसाईं चरित
४. जादौराम कृत तुलसी चरित
५. कृष्णदत्त मिश्र प्रणीत–गौतम चन्द्रिका
६. अविनाश भट्ट कृत तुलसी प्रकाश
७. सरीला रियासत की रानी कमल कुंवरि कृत तुलसी चरित एवं बुन्देलखण्ड के कवि हरिदास (हरिजन) रचित तुलसी चिन्तामणि ग्रंथ।

हरिदास रचित तुलसी चिन्तामणि ग्रंथ अभी तक अप्रकाशित हैं इस ग्रंथ की दो हस्तलिखित प्रतियों की जानकारी प्राप्त है। एक प्रति टीकमगढ़ राजकीय पुस्तकालय मध्य प्रदेश में सुरक्षित है तथा दूसरी प्रति श्री हरि विष्णु अवस्थी, अवस्थी चौक, किला का मैदान–टीकमगढ़ (म.प्र.) के संग्रह में है। इस प्रति की फोटो स्टेट कापी, श्री अवस्थी जी ने लेखक को प्रदान की थी।

हरिजन (हरिदास), ललितपुर के निवासी थे। इनका नाम जानकीदास था। ये हनुमान के परम भक्त थे। भगवान राम में उनकी दृढ़ आस्था थी। ओरछा राज दरबार में उन्हें आश्रम प्राप्त था। उनके आश्रयदाता ओरछा नरेश हमीर सिंह उन्हें हरिदास नाम से सम्बोधित करते थे। ओरछा राज्य में उनका हरिदास नाम प्रचलित हो गया। अपनी रचनाओं में उन्होंने हरिजन नाम रखा है। राज्याश्रय प्राप्त होने पर ये सपरिवार ओरछा में ही रहने लगे। वे संस्कृत और हिन्दी भाषा के अच्छे ज्ञाता थे। कवि प्रतिभा के धनी हरिदास की दो कृतियाँ उपलब्ध हैं–

१. तुलसी चिन्तामणि २. व्याधि हरण। उन्होंने नाभादास के भक्तमाल के आधार पर संवत् १९०३ वि. (सन् १८४६ ई.) में तुलसी चिन्तामणि ग्रंथ की रचना की थी–

संवत दस नव सत त्रय धारू।
श्रावन सुदि दुतिया भृगुवारू।।

तुलसी चिन्तामणि कवि की प्रौढ़तम रचना है। कवि ने इसे प्रबंध काव्य का रूप दिया हैं। यह ग्रंथ रामचरित मानस की शैली–दोहा–चौपाई छंद में तथा विशुद्ध अवधी भाषा में लिखा गया है। कहीं–कहीं बुन्देली शब्दावली का भी प्रभाव पड़ा है। कवि ने ग्रंथारंभ में स्पष्ट लिख दिया है कि नाभा कृत भक्तमाल तथा सज्जनों द्वारा तुलसी के विषय में प्राप्त जानकारी के आधार पर अपनी सुमति के अनुसार रचना की है। तुलसी से संबंधित अलौकिक घटनाओं की इसमें प्रधानता है, यथा–प्रेत से भेंट, काशी यात्रा, पत्थर की मूर्ति नादिया को भोजन कराना, मृतक को जिला देना, अकबर के आदेश पर दिल्ली यात्रा, ओरछा में केशव कवि का उद्धार, पत्नी का अंत तक साथ रहना आदि घटनाओं का वर्णन है।

तुलसी चिंतामणि ग्रंथ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रसंग रामकथा का दो बार संक्षेप में कथन है। तुलसी ने अपने गुरु से जो राम कथा सुनी थी, हरिदास ने अत्यंत संक्षेप में तिथि क्रम से लिखा है। पुनः जब तुलसी पत्नी के साथ अयोध्या पहुँचते हैं और वहाँ निवास कर रामचरित मानस की रचना करने में संलग्न हो जाते हैं, उन्हें मानस लिखने में कौन–सी कठिनाई होती है, उनकी कठिनाई का निराकरण कैसे होता है, इन सबका वर्णन कर हरिदास ने मानस की कथा को संक्षेप में प्रस्तुत कर तब तुलसी चरित का विस्तार से वर्णन किया है –

तुलसीदास का अयोध्या आगमन और रामचरित मानस की रचना का शुभारंभ करना - हरिजन (हरिदास) कवि ने तुलसी चिन्तामणि ग्रंथ में लिखा है कि अपने गुरु से रामकथा का श्रवण कर तुलसीदास अयोध्या–राम–जन्मभूमि के दर्शनार्थ प्रस्थान किया। अयोध्या पहुँच कर उन्होंने पवित्र सरयू में स्नान कर पवित्र तीर्थों का दर्शन–पूजन किया और राम यश वर्णन का विचार कर देव भाषा संस्कृत में रामचरित मानस की रचना का श्री गणेश किया। कवि हरिदास ने रामचरित मानस की रचना का विवरण लिखने के साथ तुलसी कृत रामचरित मानस की संपूर्ण कथा को संक्षेप में लिखकर स्व रचित तुलसी चिन्तामणि में स्थान दिया है। अन्य चरित ग्रंथों में रामकथा का इस प्रकार वर्णन नहीं मिलता है, यहाँ पर पूरी कथा प्रस्तुत है–

दोहा– किय निस सैन सनेह जुत, उठिव सप्रेम प्रभात।
सुचि कर प्रात नहाइ पय, चले तुरत हरषात।।७३।।
करत बात मारग मुदित, बरनत प्रभु गुन गाथ।
जात चले इहि विध अवध, दोऊ जन इक साथ।।७४।।

चौपही–
पहुँचे रामपुरी जब तुलसी। लख उर अधिक मोद पर हुलसी।।
बरनत सुजस गुसाइन ताकी। देखहु अवध अवध सुषमा की।।
नभुवन अंड अखिल तै न्यारी। रामपुरी मुद मंगलकारी।।
सहजानंद रूप प्रभु गाई। खल कैवल्य पर्म पद दाई।।
जासु दरस अघ ओघ नसावै। सेवत मन वंछित फल पावै।।
संतत सुचि समरथ वरदाइक। वरनत सुजस सकुच अहि नाइक।।
इहि विध कहत सनेह अपारा। श्रवत नयन जल तन न सम्हारा।।
आये उर उमगत तिहि ठाऊं। उत्तर दिस सरजू वहि जाऊ।।

देखत रंग उतंग अनूपा। जे हित दैन हृदय अनरूपा।।
महिमा अमित महा अघहारी। जिम तम निवड विभंजनकारी.... ।।
सोरठा –
पुनि तुलसी जुत नेह .... महिमा वरन।
मानस दुहिता येह .... परत हित।।७५।।
दोहा – सकल सुखद कल मल दवन–सेवत समन कलेस।
सहित जानकी लखन प्रभु–विहरत रहत हमेस।।७६।।
चौपही –
सुक्रत पुंज मंजुल सब लाइक। अति उदार हरि पद रति दाइक।
प्रद पर मुक्ति हरन भव भारा। जन दुख अरि गंजन अस धारा।।
अति अनूप महिमा बहु गाई। पुनि सानद सुचि सलिल नहाई।।
वरनत अवध महांतम भारा। तुरत पवन सुत गडिय सिधारा।।
कर कपि दरस हरष अति लयऊ। पुनि मन मुदित भवन तह ठयऊ।।
रहन लाग हरषित जुत जाया। राम चरन रति गत मद माया।।
तब तुलसी अस हृदय विचारी। वरनहु कछु हरि जसहित कारी।।
कर यह बहुरि समुझ मन माही। भाषाबँध करब भल नाही।।
जे हरि रस अविद्य बुध झारी। करहि निरादर निपट निहारी।।
अस विचार तब रचि सुर वानी। कहत कठिन समुझत सुख दानी।।
दोहा – तब संकर कर उर समुझ, कल औगुन आगार।
हौइ जीव अब कुटिल रति कोह मोह मद मार।।७७।।
चौपही –
जांनहि नीत न धर्म विवेकू। हरि पद विमुख गहहि अघ टेकू।।
नित पर द्रोह दया रति नाही। हिंसिक तज गुन औगुन ग्राही।।
अति मतिमंद न मानहि देवा। गत पितु मात विप्र गुरु सेवा।।
अस किय तर भव सिंध मझारै। रघुपति चरित श्रवन विन धोरे।।
तिहि हित भाषा बंध करांऊ। पुनि इहि हित अस बुध कह पाऊं।
अवस करहु यह तुरत उपाई। जिहि विधि तरहि अधम भव जाई।।
इहि सम अपर अमल गुन ग्राही। श्री हरि कृपा पात्र कल नाही।।
यह विचार करूना कर संकर। लै वहि कथा गये तिहि अवसर।।
दोहा – भोर भयै तुलसी तहाँ, लख न कथा तिहि जोर।
लहि अचरज रचि अपर, सिव हरि लै गये बहोर।।७८।।
चौपही –
इहि विधि गये सप्त दिन बीती। कहि दिन सिव निस हरहि सप्रीती।।
जब तुलसी अचरज अति माना। तब सिव सुप्न कहा अस आना।।
भाषा बंध करहु अस वानी। सुनि तुलसी पूछत हित मानी।।
सुनहु देव जग चतुर अपारा। भाषा केर निरादर भारा।।
कहि संकर जिय गनहु न ऊंना। भाषा बंध दिपहि दिन दूंना।।
मम आइसु लहि करहु उपाऊ। पारहि सकल सिया रघुराऊ।।
इहि विधि सुप्न भयेऊ निस जागी। प्रात क्रिया कर उर अनुरागी।।
राम जनम नौमी तिथ पाई। कीन्ह अरंभ कथा सुखदाई ।।
दोहा– प्रथम कीन्ह सब वंदना, हरि जस मानस गाइ।
भरद्वाज संवाद जिम, जाकवलिक मुनि पाइ।।७९।।
चौपही –
बहुरि संभु सुभ चरित बखाना। कहि जिम उमा प्रश्न किय आना।।
जिहि विध गिरिजहि संभु बुझावा। नारद मोह भयेउ जिम गावा।।

पुन मनचरित कहेउ कल गाई। कहि दस सिर भव कछु प्रभुताई।।
कर सुर विनय भई नभ वानी। राम जनम पुनि कहेउ बखानी।।
मुनि आगंवन दिये नृप सुत जिम। हत ताडका राष मुनि मष तिय।।
मुनि तिय तरन गंग जिम न्हाई। चल विदेह जिम गये लिवाई।।
देख नगर जिम प्रात बाग गय। सिय आगवन चरित कहितिय भय।।
सतानंद जिय गये लियाई। रंग अवनि आये रघुराई।।
दोहा – प्रभु प्रभाव कहि विविध विध, नृपन केर संवाद।।
कहि सनेह जिम मंच पर, जनकासन दिय भाद ।।८०।।
चौपही –
रंग भूमि सिय आइसु पाई। चलिय सखिय सिय संग लिवाई।।
तह तुक एक लिखिय अति रूरी। सो कहि वरन सुनावहु पूरी।।
सोह नवल तन सुंदर सारी। लिख अस तब भ्रम हृदय विचारी।
यह मत कहिव कवन मै भाई। जग जननी श्रृंगार गनाई।।
अस गुन तुरत कथा धर दीन्हा। सपथ पवनसुत सुमरन कीन्हा।।
तब तिन आन लिखिय तुक चारी। जगत जननि अतुलित छवि भारी।।
लख तुक ललित अधिक अनुरागे। बहुरि उमग वरनन जस लागे।।
जिम नृप बोलि भाट समुझाई। वंदी वचन भूप मुनि साई।।
दोहा – जनक कोह लछमन वचन, उठ प्रभु जिम हरषाइ।।
सिया मातु सिय सखिन कर, सोक मोह जस गाइ।।८१।।
सोरठा –प्रभु पिनाक परस जिम, धर धनु भंजन करिब।
बूडिब सकल समाज, यह तुक लिख किय समुझ पुनि।।८२।।
बूड गये अब झार, कहहु कहा धर दीन व्रत।
गे लिख पवन कुमार, चढे प्रथम ते मोह बरन।।८३।।
चौपही –
कहन लगे लख सुजस बहोरी। लै सिय माल चलिय प्रभु बोरी।।
जिम सिय हरष हृदय पहिराई। बहुरि सखिन प्रभु पाइ पराई।।
भयउ परस्पर नृप संवादू। बरनेउ सुनि जिम सबहि विषादू।।
जिहि विध भृगुनंदन तह आये। देखत नृपन निपट दुख पाये।।
लख धनुभंग जनक सन क्रोधा। लछमन तरक कीन्ह प्रभु बोधा।।
जिय धनु देइ गये मुनिराऊ। भयेऊ सबहि उर अधिक उछाऊ।।
कहि जिय जनक दूत पहुंचाये। दसरथ सज बरात पुर आये।।
कहेउ विवाह भयउ जिहि भाता। सानुज राम सुमंगल दाता।।
दोहा –जनक विनय सुनि बहुरि जिम, आये अवध अवाध।
सब उत्सब कहि कहेउ जिम, गये विपिन सुत गाध।।८४।।
यह विचित्र सब बाल बिच, कथेउ सरस सुखदाइ।
भयउ प्रगट तुरतहि पहुमि, सुनि बुध जन सरसाइ।।८५।।
चौपही –
जिमि नारद रघुपति पहि आये। भूपति गुरुकह वचन सुनाये।।
सज नृप तिलक साज प्रभु हित जिम। केकसुता मंथरा वाद तिम।।
जिम गृह कोप गई केकेई। भूप गवन सनेह मत भेई।।
जिम सप्रेम नृप वचन सुनाये। सुनि केकई मनहि नहि भाये।।
यह तुक कहत जात ते सोई। केकई पीर मनहि मन गोई।।
तिहि अवसर अस वचन सुनै जिन। कथा निरादर कीनब बुध तिन।।
तुरतहि दीन्ह कहिस लिख सोई। इहि कर जुगम करहु तुम सोई।।
अस कहि दीन्ह तुरत परगासी। चलहि न बुद्धि गये लहि कासी।।

दोहा –
जुरे जहां पंडित विपुल, बुधगम विविध प्रवीन।
किय उपाय बहु चकित चित, व्यथित भई मति दीन।।८६।।
चौपही –
तऊ न ठीक परेउ तिहि फेरा। कासमीर पहुँचे लहि फेरा।।
बहुत देस बुध भवन फिरी तुक। विसमित सकल रहे जह तह थक।।
तब विचार सबही मिल कीन्हा। लै तुक तुरत पठै तह दीन्हा।।
लख तुलसी बोले मुसिकयाई। काहु न इहि तुक जुगम बनाई।।
तब सब वचन कहत कर जोरी। भई देव सब गत मति थोरी।
तब तुम ढिग विचार कर आये। कहहु हमहि सुनि वचन बुझाये।
यह सब संकर कर प्रसादा। इहि नहि तर्क कियैं सब वादा।।
इहि विध वचन कहे तिन पाई। बोले बहुरि सनेह गुसाईं।
इहि कर जुगम सुनहु यह सोई। चोर नारि जिम प्रगट न रोई।।
दोहा – सुनि अस तुक तिन अति अगम, प्रमुदित जुत अनुराग।
कहत सकल हरषित हृदय, कुटिल तर्क भ्रम त्याग।।८७।।
चौपही –
धन्य देव निज मति अति चारी। नित अनूप भव मंगलकारी।
परहित निरति रहित सुख अपनै। तज हरि अनत चित्त नहि सपनै।
इहि विधि विनय कीन्ह सुखपाई। चले तुरत हरषित सिर नाई।।
सुनि सो सब मन अचरज लहौ। बहुरि कहत तुलसी जस कहौ।।
जिहि बिध वर मागेउ केकेई। भूप दीन्ह दुख दारून लेई।
सुनि जिम खबर राम तह आये। नृप बुझाइ गृह जननिसि धाये।।
कौसिल्या प्रभु सिया बतकही। कहि जिमि लखन मिले प्रभु जही।।
प्रभु आइसु लहि मातु जनाई। सुनि सिख बहुरि मिले रघुराई।।
दोहा – पुनि आये भूपति सदन, जिम सिय लखन समेत।
नृप सनेह कहि वचन दिय, उत्तर कृपा निकेत।।८८।।
चौपही –
अनुज सहित धर वेष विरागी। चले ससिय वन सुरहित लागी।
जिम सुमंत नृप आइसु मानी। लै रथ चले जहां धनु पानी।।
स्यंदन चढ तमसा प्रभु आये। पीछै पुरी लोग उठ धाये।।
खोज मार रथ हांक सचिव नै। आरज अवध लोग ग़ृह गवनै।।
गय जिम गंग निषाद मिताई। किय सुमंत प्रभु प्रस्न बुझाई।।
केवट वचन पखार चरन जिम। लै प्रभु पार गयेउ वरप्रद लिय।।
भरद्वाज मुनि मिलन बखाना। कहि जिम वालमीक पहि आना।।
पूंछ ठाम कि य गवन कृपाला। देत नयन फल मग नर माला।।
मिल वटु फिर निषाद सिख पाई। रचि गृह चित्रकूट रघुराई।।
दोहा –फिर निषाद लख गंग तट, सचिव अवध पहुचाइ।
सचिव सोक जिम दसरथहि, प्रभु सुधि कहिब बुझाइ।।८९।।
चौपही–
नृपति प्रान तजे जिहि भाती। पठय बसिष्ठ दूत गत राती।
आये भरत नृपति कृत कीन्हा। सभा समुझ संग तिय नर लीन्हा।
मिल निषाद गय तीरथ राजू। भरद्वाज मिल निवत समाजू।।
आये चित्रकूट जिम दुख लहि। लखन कोह प्रभु भरत मिलन कहि।।
जुर समाज जिम आइ विदेहू। लहि पादुका चले फिर गेहू।।
भरत प्रभाव इन्द्रसुत करनी। तज गिरि अत्र भैट जिम वरनी।।
मिल सरभंग विराध निपाता। कहस सुतीक्षन मिलन सुहाता।।
जिम कुंभज मिल आइसु पाई। आये पंचवटी रघुराई।।
लखन प्रस्न प्रभु जथा बुझावा। पुनि सियराम मंत्र निज गावा।।
सूपनषा श्रुत कांन निपाती। खरदूषन गत तै जिहि भाती।।
दोहा – पुनि लंकहि जिम जाइ तिय, कहस कथा समुझाइ।
निस विचार दसकंध कहि, जथा सिंध तट जाइ ।।९०।।
चौपही –
जिम मारीचहि लीन्ह सहापा। कपट कुरंग संग प्रभु धावा।।
सुनि पुकार लछमन जिम जाई। सिय छाया हरि निश्चरराई।।
गीध समर सुग्रीव पाइ पट। सिय अशोक तर रख दस सिर भट।।
पुनि प्रभु विरह जथा कछु गा तब। दै गत गीध कबंध निपातब।।
सबरी गत नारद संवादू। चल जिम लहि सुग्रीव विषादू।।
मिल हनमंत सुकंठ मिताई। बधेउ बाल कवि कर कपिराई।।
वरषा रित जिम गिरि प्रभु छाये। पंपापुर जिम लखन सिधाये।।
जहि विध दूत दिसांन पधारे। पवन कुमार विवर पग धारे।।
दोहा – जिहि विध जलनिध तट गये, अंगदादि कपि वीर।
मिलेउ तहां संपात तिहि कहसि कथा मति धीर।।९१।।
चौपही –
उतरन सिंध कीन्ह दुख कीसा। जिम सुत वायु उलंघन दीसा।
प्रवस लंक जिम लंकनि मारी। जिहि विध सदन सोध कपि झारी।।
मिले विभीषन जिम सुध पाइब। गय असोक वन रावन आइब।।
दिय मुदरी सिय सुध कहि सारा। वन विधंस रावन सुत मारा।।
मेघ नाद बंधन तर आई। पावक कठिन लंक कपि लाई।।
लाहे आइसु सिय जलनिध नाषी। वन फल खाइ रामसुध भाषी।।
चल रघुवीर जलध तट आना। मिले विभीषन सिंध बधाना।।
उतर पार अंगद गय लंका। लछमन सक्ति लगी जिम लंका।।
दोहा – वैद ल्याइ जिमि पवनसुत, गये सजीवन लैन।
काल नैम हत गिरि लियै, भरत वान लग रैन।।९२।।
चौपही –
जिहि विध भरत पठै कवि केता। जहां राम भय लखन सचेता।
कुंभकरन वध जिम रघुराई। लछमन मेघनाद हत जाई।।
रावन समर भयंकर भारी। कहि जिहि विध हतेउ सुरारी।।
सोक मंदोदरि राज विभीषन। सिय आगवन विवुध अस्तुत भन।।
कवि जिवाइ पुष्पक चढ जिय। सियहि दिखाइब ठांम सकल तिय।।
पवन तनय जिम अवध पठाये। भरद्वाज आश्रम प्रभु आये।।
जिम निषाद प्रभु मिलेउ हरष मन। पवन तनय संदेस भरत भन।।
दिय सुध भरत अवध हरषाई। सहित समाज मिले रघुराई।।
दोहा – पठय जांन प्रभु चल अवध, जिम सिय लखन समेत।
मिलन मातु पुनि कहिब तिन, राम तिलक कर हेत।।९३।।
राम राज सुख सुजस कहि, गरूड़ भसुंड सुवाद।
सप्तकांड वरनन करे, वेद तत्व पर भाद।।९४।।
चौपही –
निगमागम पुरान मथ काडा। यह रघुवीर चरित सुख भाडा।।
जिहि कर वरन झनक श्रुत परही। कोट जन्म अघ नासय करही।।
जोग विराग विवेक विधाना। ग्यान विनय विज्ञान निधाना।।

सुभ गुन सदन सर्व हित कारी। भक्ति प्रधान प्रभाव अपारी।।
भव वारिधि वोहित सम भाई। दाइक अखिल मुक्ति खल ताई।।
विषयी साधक सिध्ध न जीवा। दाइक हित निज निज भर सीवा।।
जे नित कहहि सुनहि समुझाई। राम भक्त भूषन है जाई।।
जे जग जीव सुनहि जिहि हेतू। पावहि सकल मनोरथ तेतू।।
छंद -पावहि मनोरथ सकल ते तौ सुनहि जो जिहि हेत लै।
कल मल रहित कल्यान निध प्रभु भक्ति कौ वर भेद लै।
अति सरस सुर तर तैं सुभाव अभाव खण्डन कारनी।
नित दास हरिजन कौं अभै प्रभु प्रेम प्रद दुख हारनी।।९५।।

इस प्रकार सुकवि हरिजन ने तुलसी चिन्तामणि ग्रंथ के प्रारंभ में तुलसी के गरू नरहरिदास द्वारा उन्हें सुनाई गई रामकथा को लिखा है पुन: तुलसीदास ने अयोध्या में रामचरित मानस में जिस राम कथा को लेखबद्ध किया उसको भी अति संक्षेप में मय फ्लश्रुति के सहित तुलसी की जीवनी को प्रभावशाली बनाने का प्रशंसनीय कार्य किया है।

(लेखक श्री उदयशंकर दुबे का स्वर्गवास दिनांक १९ दिसंबर २०२३ मंगलवार को हो गया है। बुंदेली बसंत परिवार के ओर से विनम्र श्रद्धांजलि)

- साहित्य कुटीर, कठारी बाजार
पोस्ट-खमरिया जिला-मिर्जापुर (उ.प्र.)पिन - 221306 卐

समथर का रामनवमी का मेला

-रामप्रकाश गुप्ता

हमारी संस्कृति उत्सवधर्मी रही है। मेला भी हमारे मन के मेल के गहरे अर्न्तसम्बन्धों की मुखर व्याख्या है। मेला मन का उत्सव और भीतरी उछाह, उमंगों तरंगों और सुरताल का बहुवर्णी इन्द्रधनुष है। धार्मिक मेलों का आयोजन सांस्कृतिक जीवन का प्रधान अंग है। बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति में मेलों की भरमार है। प्राय: वर्ष भर कहीं न कहीं मेले भरते रहते हैं। बुन्देलखण्ड के सर्वाधिक प्रसिद्ध मेलों में समथर का रामनवमी का मेला एक है। समथर झाँसी जिले में झाँसी से 66 किमी. दूर एक छोटा सा नगर है। यह झाँसी-कानपुर राजमार्ग पर मोंठ कस्बे से 15 किमी. दूर स्थित है। समथर पूर्व में एक रियासत रही है। यहाँ पर गुर्जर राजवंश का शासन रहा है। समथर नगर के मध्य में एक विशाल किला बना है, जो आज भी सुरक्षित और देखने योग्य है। किले में कई महल बने हुए हैं। दुर्ग के अन्दर भगवान राम का मन्दिर है। यह मन्दिर दो मंजिला है। इसकी निर्माण योजना उत्सवों की दृष्टि से बनाई गयी है। इसमें तीन आँगन हैं, जिन्हें फब्बारों तथा बगीचों से सुसज्जित किया गया है। दुर्ग के अन्दर एक विशाल बावड़ी है। किले के बाहर चतुर्भुज जी का मन्दिर है। दुर्ग के उत्तर में एक गढ़ी है जिसे विजयगढ़ कहते हैं। विजयगढ़ में दो मंदिर प्रथम विजयकिशोर तथा द्वितीय युगलकिशोर स्थित हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि समथर नरेशों ने समथर में विभिन्न मंदिरों का निर्माण कराके समथर को एक धार्मिक नगरी बना दिया। समस्त बुन्देलखण्ड में रामभक्ति का व्यापक प्रभाव है। ओरछा में भगवान रामराजा के विराजमान होने के बाद रामनवमी का त्यौहार सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में विशेष उत्सव के रूप में मनाया जाने लगा। रामनवमी के उत्सव पर समथर नगर में एक विशाल मेला लगता है, जो एक माह तक चलता है। कहा जाता है कि रामनवमी का मेला समथर राज्य की स्थापना के पूर्व से लगता चला आ रहा था। लेकिन समथर राज्य की स्थापना के बाद महाराजा विष्णु सिंह ने इस मेले को विशाल रूप प्रदान किया। इस मेले में दूर-दूर के व्यापारियों को बुलाया जाता था। राज्य भी इन व्यापारियों से जरूरत का सामान खरीदता था। व्यापारियों को राज्य की ओर से पूरी सुरक्षा और सहायता प्रदान की जाती थी। दुर्भाग्य से किसी व्यापारी का कोई सामान चोरी चला जाता और पुलिस अपराधी को नहीं पकड़ पाती तो ऐसी दशा में राज्य उस व्यापारी की हानि को पूरा करता था। मेले में अनेक साधु महात्मा और उनके समूह या अखाड़े आते थे। राज्य इन साधु महात्माओं को निमंत्रित भी करता था। जिन स्थानों के महात्माओं को निमंत्रित किया जाता था, उनमें से उल्लेखनीय स्थान निम्नलिखित हैं - अयोध्या में हनुमानगढ़ी, मथुरा, वृन्दावन, गोकुल, काशी, जगन्नाथपुरी, ग्वालियर, चरखारी, छतरपुर, ओरछा और दतिया। चैत्र सुदी सप्तमी से निशान वाले महंतों का आना प्रारम्भ हो जाता था, जो अखाड़े का आयोजन करते थे। उनके ठहरने के लिए राज्य की ओर से वृन्दावन बाग और अयोध्या बाग में शिविर लगाये जाते थे। राज्य की ओर से उनकी सेवा के लिए एक विशेष अधिकारी नियुक्त किया जाता था। उनको आवश्यकता की सभी सामग्री राज्य अपनी ओर से प्रदान करता था। रामनवमी के दिन जब रामजन्म होता था, उस समय समथर दुर्ग से तोप की सलामी दी जाती थी। मेले में राज्य शासन की ओर से तीन दिन भण्डारा होता था। प्रथम दिन मिष्ठान और शेष दो दिन पूड़ी और मिठाई के भोजन दिए जाते थे। इन भण्डारों में कोई भी व्यक्ति जा सकता था। यह मेला एक सप्ताह तक रहता था। पूर्णमासी के दिन सभी महन्तों तथा साधुओं को औपचारिक विदाई दी जाती थी। यह कार्यक्रम रामचन्द्रजी के मंदिर में होता था। अन्य कलाकारों, पहलवानों, उस्तादों, नर्तकी एवं नर्तकों, अभिनेताओं तथा नाट्यकारों को भी औपचारिक विदाई दी जाती थी। राज्य की ओर से उन्हें पुरस्कार दिया जाता था। मेले में जनता के मंनोरंजनार्थ अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जाते थे। रामलीला, रासलीला, नौटंकी के साथ-साथ संगीत और नाटक की टोलियां मनोहारी प्रदर्शन करतीं थी। दूर-दूर से आये संगीतकार, कलाकार, कवि अपनी प्रतिभा के द्वारा जनसमुदाय को चमतकृत करते थे। दंगल, घुड़दौड़, सैनिक परेड, युद्ध प्रदर्शन, आतिशबाजी, नटों के खेल, लोक विधाओं-स्वांग, लोकगायन आदि कार्यक्रम लगातार चलते रहते थे। स्वयं समथर के महाराजा मेले में प्रतिदिन भ्रमण करते थे। समथर के राजाओं के समय से यह मेला आज भी अनवरत रूप से भरता चला आ रहा है। लेकिन अब पुरानी परम्परायें समाप्त सी हो गयी हैं।

-विद्यानगर कालोनी, चिरगांव जिला - झाँसी (उ.प्र.)
मोबा. 9936324305 卐

छतरपुर जिले की गौरिहार तहसील के प्राचीन गांव

–नरेश कुमार पाठक

मध्यप्रदेश के बुन्देलखण्ड अंचल में स्थित छतरपुर जिला की गौरिहार तहसील का ग्रामवार पुरातत्वीय सर्वेक्षण मेरे द्वारा वर्ष २०११-२०१२ एवं २०१२-२०१३ में किया गया। तहसील के सभी १५३ ग्रामों का सर्वेक्षण किया गया, जिसमें से ११ गाँवों से चन्देल काल से बुन्देला काल तक के अवशेष मिले है, जिनका का विवरण इस प्रकार है :-

गौरिहार – गौरिहार छतरपुर से १०० कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह बुन्देलखण्ड एजेन्सी में एक सनद रियासत थी, अब इस नाम की तहसील का मुख्यालय है। यह सन् १८०७ में ब्रिटिश एजेन्सी द्वारा किन्ही जिझौतिया ब्राह्मणों को दी गई थी, जिन्होंने उस पर उसके संविलियन के समय तक शासन किया, शासन प्रधान १८५७-५८ की महान क्रान्ति के दौरान अपने अधिराज के प्रति वफादार रहा और उसे १०,००० रुपये की एक खिलत पुरस्कार में मिला। मुख्य गांव गौरिहार है, जो कि राष्ट्रीय विस्तार संग खण्ड का मुख्यालय है।[1]

अली बहादुर को गौरिहार क्षेत्र में विरोध का सामना पड़ा, राजाराम गौरिहार में बूढ़ागढ़ जिले का गर्वनर था, जो अजयगढ़ के राजा गुमान सिंह की सेवा में था, उस समय व्याप्त अराजकता का लाभ उठाकर अपने-अपने स्वामी के विरुद्ध विद्रोह कर दिया तथा थोड़े समय के लिये वह अली बहादुर के खिलाफ जिले पर अधिकार करने में सफल हो गया। अंतत: उसने साथियों के साथ लूटमार का मार्ग अपना लिया और बाद में उसे अंग्रेजों द्वारा सनद प्रदान की गई।[2]

गौरिहार के सरदार ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार की तथा उसे ८ जून १८०७ को सनद प्रदान की गई। अंग्रेजों द्वारा बुन्देलखण्ड पर कब्जा कर लिये जाने पर बख्त सिंह को पुन: अजयगढ़ का सरदार बना दिया गया और उसे सनद प्रदान की गई। बख्त सिंह से यह आशा की जाती थी कि वह राजाराम पर नजर रखेगा और अधीनता स्वीकार करने के लिये उसे बाध्य करेगा किन्तु बख्त सिंह यह कार्य करने में असफल रहा। इसके विपरीत राजाराम का प्रतिरोध इतना सफल रहा कि अंग्रेज सरकार ने उसे पकड़ने के लिये तीस हजार रुपये का इनाम घोषित किया था, किन्तु घोषणा किये जाने के पूर्व ही उसे इस आश्वासन पर आत्म समर्पण करने के लिये राजी कर लिया गया कि उसे भी उन्हें शर्तों पर प्रादेशिक अधिकार दिया जायेगा, जिन शर्तों पर बुन्देलखण्ड के अन्य सरदारों को यह अधिकार दिया गया है। तदानुसार २९ नवम्बर १८०७ को राजाराम को सनद प्रदान की गई सनद के अन्तर्नियमों के अनुसार उसे गौरिहार सहित १४ गांव प्रदान किये गये। ३१ जनवरी १८४६ को राजाराम की मृत्यु हो गयी और उसका एक मात्र जीवित पुत्र राजधर रूद्र सिंह उसका उत्तराधिकारी बना। सन् १८५७ की महान क्रान्ति के दौरान राजधर रुद्र सिंह ने अंग्रेज सरकार के प्रति अत्याधिक वफादार बना रहा।[3]

जब नौगांव में क्रान्ति भड़की तब लेफ्टीनेट इरकास कैप्टन स्माट तथा मिसेज मैन, भगोड़ों के रूप में भाग गये थे और उनकी रक्षा तथा अन्य लोगों के साथ गौरिहार के जागीरदार ने की थी। सन् १८५७ में उसके द्वारा की गई सेवाओं के लिये उसे राव बहादुर की पदवी तथा दस हजार रुपये सालाना की खिल्लत प्रदान की गई।।[4]

गौरिहार के शासक राजधर रुद्र सिंह की मृत्यु २६ अप्रेल १८७७ को नि: सतान हो गयी, तीन वर्षों तक रियासत का कामकाज राजधर रुद सिंह की विधवा ने संभाला। सन् १८८० में उसने स्वर्गीय शासक के संबंधी गजाधर प्रसाद को गोद लिया। उसके उत्तराधिकारी का अंग्रेज सरकार ने स्वीकृत दे दी। गजाधर प्रसाद की २ मार्च १८८७ को मृत्यु हो गई। उसका न तो कोई पुत्र था और न ही कोई दत्तक उत्तराधिकारी था। गजाधर की मृत्यु के समय उसकी विधवा ठकुरानी की आयु केवल १४ वर्ष थी। अतएव उसे गोद लेने की अनुमति नहीं दी गई। तब उसके परिवार के सगोत्रीय शामले प्रसाद को अंग्रेज सरकार ने १८ अक्टूबर १९८८ को यहां के शासक सरदार का उत्तराधिकारी बनाया। उसके उत्तराधिकारी बनाये जाने पर अंग्रेज सरकार ने उसे ३६,००० रुपये का नजराना बसूल किया। वर्ष १८९१ में इस क्षेत्र से ५०,००० रुपये का वार्षिक राजस्व प्राप्त हुआ था। उसने सैन्यबल में चार तोपें, ८ तोपची, ४३ घुड़सवार सैनिक तथा २१८ पैदल सैनिक थे।।[5]

राय बहादुर श्यामले प्रसाद ने बड़ी कुशलतापूर्वक राज्य का संचालन किया तथा अंग्रेजी कानून के मुताबिक राज्य की व्यवस्था की थी। राज्य के कृषकों को कृषि विकास के निमित प्रोत्साहित किया था तथा उन्हें स्थाई पट्टे की व्यवस्था का यह भूमि सुधार १८७७ ईर्स्वी के अकाल के कारण लागू किया गया है।

राय बहादुर श्यामले प्रसाद के बाद उसके पुत्र प्रतिपाल सिंह (१९०४-३५ ईर्स्वी) उत्तराधिकारी हुये। उन्होंने गौरिहार में शिक्षा के विकास के लिये प्राथमिक विद्यालय प्रारम्भ किये थे। राज्य में माल गुजारी की समुचित व्यवस्था एवं भूमि व्यवस्था के लिये माल विभाग की स्थापना की थी। जिसका प्रमुख तहसीलदार को बनाया गया था। प्रतिपाल सिंह के दो पुत्र अवधेश प्रताप सिंह और देवेन्द्र प्रताप सिंह थे। सन् १९३५ में प्रतिपाल सिंह का निधन हो गया था।

प्रतिपाल सिंह की मृत्युपरांत उसके ज्येष्ठ पुत्र अवधेश प्रताप सिंह गौरिहार के राजा बने थे। वे जन जागरण और

राष्ट्रीय चेतना नापसंद करते थे। उनकी रचनात्मक नीति के विरोध में पं. शम्भू दयाल दुबे एवं रघुनाथ सिंह सेंगर ने १९४६ में राज्य प्रजा-मण्डल की स्थापना करने एवं सामंतवाद के विरोध में जन जागरण आंदोलन चलाया था। उस समय प्रताप नारायण शर्मा राज्य के कामदार थे। राज्य में राष्ट्रीय-चेतना और जन-जागरण का आरोप लगाकर उन्हें कामदारी के पद से हटा दिया था। अन्त में २९ अप्रेल १९४८ को पं. राम सहाय तिवारी मंत्री विंध्य प्रदेश नौगाँव ने राज्य का चार्ज लेकर रामनाथ सिंह को व्यवस्थापक नियुक्त किया था। गौरिहार राज्य का विलय विंध्य प्रदेश में किये जाने के उपलक्ष्य में कावृनेन्ट के अनुसार राजा अवधेश प्रताप सिंह को १५०० रुपये वार्षिक प्रिवीयर्स दिया गया था।। [6] गौरिहार में कुछ महत्वपूर्ण स्मारक है, जिनका विवरण इस प्रकार है। -

राम जानकी मंदिर - गौरिहार स्थित रामजानकी मंदिर का निर्माण लगभग १९वीं शती ईस्वीं के प्रारंभिक काल में किया गया है। यह मंदिर राम जानकी के नाम से जाना जाता है। लोगों का मानना है कि महाराजा राजधर ने मंदिर के साथ गढ़ी का निर्माण कराना चाहते थे। जिसे ब्रिटिश राजनयिक द्वारा अजयगढ़ के कहने पर रोक दिया गया था। वर्तमान में यहां एक मंदिर है, जो पूजा अर्चना के अन्तर्गत है।

गौरिहार तालाब - यह तालाब मंदिर के पश्चिम में निर्मित है। स्थानीय लोगों का मानना है, कि इस तालाब का निर्माण मंदिर निर्माण के समय में किया गया।

गढ़ी - नगर में स्थित गढ़ी-बुन्देला शैली में गौरिहार के बुन्देला शासकों द्वारा निर्मित है, गढ़ी का प्रवेश द्वार उत्तर दिशा में है, गढ़ी का ब्राह्य भाग जीर्ण-शीर्ष अवस्था में है। गढ़ी का आन्तरिक भाग सुरक्षित है। गढ़ी के अन्त भाग में एक मंदिर है। वर्तमान में मंदिर पूजा के अंतर्गत है। गढ़ी महाराजा गौरिहार के अधीन है, वे वर्तमान में गौरिहार से बाहर निवास करते है।

किसुनगढ़- किसुनगढ़ गौरिहार से १० कि.मी. की दूरी पर स्थित है। गांव के पश्चिम में एक प्राचीन गढ़ी है। गढ़ी निर्माण विधा की दृष्टि से बुन्देला कालीन लगभग १८वीं शती ईस्वीं में निर्मित प्रतीत होती है। स्थानीय जनों का मानना है, कि बुन्देला राजा अजय सिंह द्वारा निर्मित गढ़ी है। जिसे अजयगढ़ ने गौरिहार के महाराजा राजधर को दी गई थी। इसके अन्तर्गत १५ गांव आते थे। जिसका सम्पूर्ण राजस्व ब्राह्मण राजा राजधर को मिलता था। गढ़ी का प्रवेश द्वार पूर्व दिशा में है। गढ़ी के बाहर बुर्ज बने हुये है। गढ़ी के उत्तर पश्चिम की दीवार व बुर्ज भग्न है। गढ़ी के अन्त भाग की दीवार जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। गढ़ी के उत्तर-दक्षिण-पूर्व में एक कूप निर्मित है। जिसमें अन्दर जाने के लिये सीढ़ियाँ निर्मित है। इस कूप का गढ़ी में जल-स्त्रोत के लिये उपयोग किया जाता रहा होगा। गढ़ी के आन्तरिक भाग में दो सिप्पा तोप रखी हुई है। गढ़ी को बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा प्रदान करने के लिये चारों ओर खाई का निर्माण किया गया होगा, जो आज भी दृष्टिगत है।

बारीगढ़ - बारीगढ़ छतरपुर से ७० कि.मी. एवं महोबा से १० कि.मी. की दूरी पर स्थित है। बारीगढ़ १९४८ के पूर्व चरखारी रियासत की तहसील था, जिसे जुझार नगर नाम से जाना जाता था। यह चन्देल काल में महोबा राजधानी का निकटतम सैन्य दुर्ग था। बारीगढ़ के किले को बारी दुर्ग और विजयगढ़ नामों से भी जाना जाता था। इसे महोबा के चन्देल राजा विजय वर्मा (१०४० ईस्वीं) ने बनवाया था। इसका मूल नाम विजयगढ़ था परन्तु नगर की सुरक्षा में बारी (बागढ़) सा सुदृढ़ परकोटा बना होने के कारण इसे बारी दुर्ग या बारीगढ़ कहा जाने लगा।

परकोटे के भीतर की बस्ती बारीगढ़ एवं बाहर की बस्ती जुझार नगर नाम से जानी जाती रही है। बारीगढ़ किले का दुर्गाध्यक्ष बालब्रह्म चन्देल था। चन्देलों के पराभव के साथ-साथ बारीगढ़ किले का पराभव हुआ। सन् ११८२ में पृथ्वीराज चौहान ने चन्देल राज्य का विनास आक्रमण किया था, जिसमें चन्देल कालीन बुन्देलखण्ड के सभी सूरमा किलेदार एवं पराक्रमी वीरगति को प्राप्त हो गये। इस प्रकार से यह युद्ध बुन्देलखण्ड का महाभारत था। चन्देलों के सैन्य दुर्ग भी ढहा दिये गये, जिसमें बारीगढ़ एवं मनियागढ़ के दुर्ग प्रमुख थे। जैसे ही मुगलों के अधिकार में महोबा हुआ तो वहां हमीद खां प्रशासक नियुक्त हुआ। हमीद खां ने भी बारीगढ़ नगर एवं किले के महलों को धरासायी किया। कालान्तर में महाराजा छत्रसाल ने जब महोबा जैतपुर पर आक्रमण किया तो बारीगढ़ भी जैतपुर राज्य का भू-भाग बनाया गया। चन्देल कालीन महोबा, बारीगढ़ पराभव एवं उपेक्षा के स्थल हो गये तथा जैतपुर कुलपहाड़ चरखारी जैसे नव स्थापित नगरों को उत्कर्ष हो गया। किला बारीगढ़ को मुहम्मद बंगश की सेना ने भी आघात पहुंचाया। छत्रसाल के स्वर्गवास के पश्चात् बांदा के अली-बहादुर एवं मौदहा के हिम्मत बहादुर ने १७९२ से १७९५ ईस्वीं के मध्य बारीगढ़ सहित इन परिक्षेत्र को रौंद डाला एवं किले के दरवाजों पर कोटों को तोड़कर यहां की सुरक्षा-व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर दिया। जया श्री शिन्दे ने इसे गिराया। राजाराम तिवारी किलेदार भूरागढ़ ने अपने आतंक काल में बारीगढ़ को श्री हीन किया था। राजनगर (छतरपुर) के राजा सोनेशाह एवं चरखारी के राजा विजय बहादुर ने हमेशा सीमा को लेकर लड़ाई होती रही। इन दोनों राज्यों की लड़ाई में पिसता रहा बारीगढ़। दो पाटों के बीच पिसते रहने से यह किला एवं नगर पराभव को प्राप्त हो गया। सन् १८५७ ईस्वीं के विप्लव के समय महोबा से भागकर अजयगढ़ जाते हुये यहां के दासी सिंह एवं देशराज सिंह बनाफर ने दो अंग्रेजों को लूटकर मार डाला था।

बारीगढ़ किला चन्देलों की विशाल पहाड़ी किला रहा है, जिसका परकोटा (भित्ति) चार पहाड़ों की चोटियों-चुराह पहाड़, बेड़ा पहाड़, वेहार पहाड़ एवं धंधा पहाड़ को जोड़ता हुआ १५ कि.मी. के घेरे में फैला हुआ है। किला समुद्र तल से ९०० फीट की ऊंचाई पर है। किले का मुख्य दरवाजा, हाथी

दरवाजा है, जो पश्चिम दिशा की ओर चुरहा पहाड़ एवं बैड़ा पहाड़ की खाँद में से है। उत्तर दिशा की ओर साहब तालाब के पास से द्वितीय दरवाजा है। पूर्वी दरवाजा जिसे कंजली पौर कहा जाता है। यह तृतीय कंजली दरवाजा बेहार पहाड़ की खदिया में से है। कंजली दरवाजा के अन्दर एवं बाहर की ओर आगम-निर्गम के लिये पत्थरों की सीढ़ियां निर्मित है। दक्षिणी-पूर्वी दिशा की ओर निर्मित चौथा दरवाजा गुरैया नाघा दरवाजा कहलाता है, जो बेड़ा पहाड़ एवं धंधा पहाड़ की खॉद में से है।

बारीगढ़ गांव के पश्चिमी भाग से चुरहा पहाड़ एवं बेड़ा पहाड़ की खंदक चढ़ते हुये हाथी दरवाजा के सामने पहुंचते हैं। यह विशाल दरवाजा २० फीट लम्बे २ फीट चौड़े मोटे चौपाल खम्भों पर खड़ा हुआ है। दरवाजे की छत एवं परकोटा पर चढ़ने को सीढियाँ बनाई गई है। दरवाजा के बाहर दाँये-बाँये लगभग १०-१० फीट की लम्बी २० फीट ऊंची बुर्जो के सदृश्य सुरक्षा भितियां है। बारीगढ़ किले का हाथी दरवाजा ही शेष देखने लायक है। अन्य तीन दरवाजे-साहब दरवाजा, कंजली दरवाजा एवं गुरैया नाघा दरवाजे आक्रमकों ने ध्वस्त कर दिये है केवल दरवाजों के पत्थर ही बिखरे पड़े है। गुरया दरवाजा गुरैया देव के नाम पर एवं कंजली (कजली) दरवाजा कजलियों का विसर्जन को आने के कारण जाने जाते है। कजलिया महोत्सव चन्देलों का महत्वपूर्ण पर्व था।

बारीगढ़ किले का १५ कि.मी. परिधि का परकोटा चुरहा पहाड़ा बेड़ा, पहाड़ बेहार एवं धंधा पहाड़ के शिखरों एवं उन पर स्थापित महलों तथा सुरक्षा चौकियों को अपने में समाहित किये हुये है। परकोटा वर्गाकार एवं आयताकार बड़े-बड़े पत्थरों से सारी-पाटी (लम्बाई-लम्बाई) के आधार पर एक-दूसरे को स्थापित करते हुये बनाया गया है, जो २० फीट ऊंचा एवं चौड़ा है। पत्थरों पर पत्थरों की जमाहट स्वयं में एक आश्चर्य है। मानो प्राकृतिक पहाड़ों की छाती पर चन्देलों ने २० फीट ऊंचा कृत्रिम पहाड़ खड़ा कर दिया है।

हाथी दरवाजा के अन्दर से किला मैदान में पहुंचते है। इस मैदान में राजा के हाथी बांधे जाते थे। मैदान से उत्तर दिशा की ओर परकोटा के घूमते हुये चुरहा पहाड़ के नजदीक पहुंचते हैं। यहां पहाड़ पर एक बनाया मैदान है, जिसके चारों ओर पत्थरों का आयताकार छ: सात फीट ऊंचा परकोटा है, जिसके अन्दर महलों भवनों के भग्नावशेष बिखरे पड़े है। इस भग्न महलों को पार कर पहाड़ के उत्तरी भाग के मध्य में उत्तराभिमुखी भगवान आशुतोष का गुफा मंदिर है। यह गुफा मंदिर पहाड़ की चट्टान काटकर बनाया गया है। पहाड़ पर निर्मित महलों से गुफा मंदिर तक सीढ़ियाँ थी, जो मंदिर से नीचे गांव की बस्ती तक भी थी। वर्तमान में सीढ़ियाँ जहां कहीं है। चुरहा पहाड़ के सर्वोच्च शिखर पर ठीक महलों के सामने ईट, चूना की एक सुरक्षा चौकी निर्मित है। हाथी दरवाजा के बाँये भाग में एक खोह है। स्थानीय लोकमत के अनुसार इस खोह से महोबा तक गुप्त मार्ग था। किला पर कोटा में पहाड़ों के ऊपर घुमावद्वार गोल ऊंची सुरक्षा चौकियां स्थापित है। पूर्वी कंजली (कजली) पौर दरवाजे के अन्दर एक ऊंचा मटिया कोट है, जिसके भीतरी प्रागंण में महलों के भग्नावशेष दृष्टव्य है। बारीगढ़ किया परकोटा के भीतर चार तालाब एवं बनिया तालाब है। तालाबों के अतिरिक्त चौदह बावड़ियां भी है। धंधागढ़ पहाड़ के शिखर पर धंधा देवी का मंदिर है। इसी पहाड़ पर पत्थर काटकर एक तालाब भी बना हुआ है गुरैया नांधा दरवाजे के समीप पहाड़ पर दो नग्न प्रतिमाएं थी। जिन्हें स्थानीय लोग सुमना-कन्हैया कहते थे। वर्तमान में ये प्रतिमाएं महोबा संग्रहालय में है। कंजली (कजली) पौर दरवाजे के भीतर बस्ती की ओर शान्तिनाथ तीर्थकंर की १८ फीट लम्बी प्रतिमा रखी हुई है, जिसे स्थानीय लोग शेषनाथ नाम से पुकारते है। इन सब मूर्तियों की उपलब्धता से स्पष्ट होता है, कि चन्देल शासन काल में बारीगढ़ में शैव, शाक्त एव जैन सम्प्रदायी लोग निवास करते थे। कंजली पौर दरवाजा एवं कंजली तालाब इस बात के पुष्ट प्रमाण है, कि यहां कजलियों का विसर्जन उत्सव धूमधाम से बनाया जाता था तथा परकोटा से बाहर जुझार नगर आदि के लोग कजलियों के विसर्जन समारोह में शामिल होते हैं।

डॉ. काशी प्रसाद त्रिपाठी ने लिखा है, कि बारीगढ़ दुर्ग, परकोटा एवं हाथी दरवाजा आज भी पहाड़ों के शिखरों पर सिर ऊंचा किये अपने गौरवशाली अतीत को प्रस्तर खण्डों में छिपाये खड़े हुये है। काश! कि वह अपने वैभवशाली अतीत एवं वर्तमान के पराभव को कह पाते। [7]

कितपुरा - कितपुरा गौरिहार से ३ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। गांव में तालाब के किनारे चन्देल कालीन घट पल्लव युक्त स्तम्भ मंदिर के गर्भ से में देवी महिष मर्दिनी की प्रतिमा एवं अन्य शिल्प खण्ड रखे है। मंदिर के बाहर चबूतरे पर बुन्देलाकालीन देवी प्रतिमा प्रतिष्ठापित है।

महोई खुर्द - महोई खुर्द गौरिहार से १८ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। गांव के मध्य में प्राचीन मंदिर के अवशेष बिखरे पड़े है, जिससे स्पष्ट होता है, कि यहां पर लगभग १२वीं शती ईस्वीं का प्राचीन मंदिर रहा होगा, यहां से प्राप्त मूर्तियों में प्रथम **विष्णु प्रतिमा** समभंग स्थानक विष्णु का सिर व हाथ टूटे हुये है। पाद पीठ पर पार्श्व में चक्र पुरुष, शंख पुरुष, लक्ष्मी, गरूड़ परिकर में विष्णु के वराह अवतार अंकित है। वितान में दाये ब्रह्मा, दायें शिव मध्य में योग नारायण का अंकन है। देव केयूर, मेखला एवं बनमाला से अलंकृत है, बलुआ पत्थर पर निर्मित प्रतिमा लगभग १२वीं शतीं ईस्वीं की है। दूसरी **हनुमान प्रतिमा** में हनुमान प्रतिमा का ऊर्ध्वभाग है, दाया हाथ चपेट मुद्रा में सिर बाया हाथ विर्तक मुद्रा में वक्ष पर है, देव करण्ड मुकुट व वानरमुखी है, बलुआ पत्थर पर निर्मित प्रतिमा लगभग १२वीं शती ईस्वी की है, इसके अलावा लगभग १२ वीं शती ईस्वी की बलुआ पत्थर पर निर्मित प्रतिमा का ऊर्ध्वभाग, प्रतिमा का मध्य भाग, प्रतिमा का निम्न भाग प्रतिमा-खण्ड एवं तीन विष्णु प्रतिमा के सिर रखे हुये है।

ठकुर्रा – ठकुर्रा गौरिहार से ९ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। ठकुर्रा गांव के समीप जंगल में माता आलमा देवी का भव्य मंदिर है। यह सिद्ध देवी स्थल कई चमत्कारों के चलते बुन्देलखण्ड में चर्चित है। बताया जाता है, कि यहां माता शारदा यहां जमीन फाड़कर मूर्ति के रूप में निकली है। कुंवर विजय बहादुर सिंह बुन्देला द्वारा इस सिद्ध पीठ का जीर्णोद्वार और कायाकल्प कराकर यहां भव्य मंदिर का निर्माण कराया। नवरात्र के समय यहां भव्य मेला लगता है, इस मंदिर के बाजू में एक फीट लम्बा और चौड़ा गड्ढा है, जिसमें मीठा जल निकलता है, जिसे पीने से रोग ठीक हो जाते है। इस कुण्ड की खासयित यह है, कि यहां पानी से भरे कितने भी टैंकर डाले जाए पूरा पानी कहां समा जाता है, यह आज तक किसी को पता नहीं चल पाया है। लोग इसे देवी मां का चमत्कार ही मानते है। यहां चन्देल कालीन तालाब है।[8]

घूर – घूर गौरिहार से १४ कि.मी. एवं लौड़ी से २१ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। गांव के बाहर बेड़ी कच्चे मार्ग पर दायीं ओंर टीले पर मंदिर है। मंदिर तल विन्यास में गर्भगृह ही शेष है। उर्ध्व विन्यास में जगती जंघा है। शिखर सपाट है। जंघा भाग तीन बन्धनों युक्त है। गर्भगृह प्रतिमा विहीन है। दीवार एवं छत सादा है। द्वार शाखा त्रिशाखा होकर सादा देहरी पर धनुषाकार आकृति है। मण्डप भाग टूट चुका है, जिसके स्तम्भ शहतीर यथा स्थान रखे है। स्तम्भ चौकोर एवं अष्ट पहलू होकर, घट पल्लवों से अलंकृत है। मंदिर स्थापत्य कला की दृष्टि से लगभग १२वीं शती ईस्वीं का प्रतीत होता है।

घूर के पास ही कटी भवानी का चबूतरा एक टीले पर बना है, जिसमें मंदिर के घट पल्लवों से अलंकृत स्तम्भ शहतीर एवं पाषाण खण्ड बिखरे पड़े हैं, यह मंदिर अवशेष लगभग १२वीं शती ईस्वीं के है। यहां से प्राप्त प्रतिमाओं में प्रथम महेश्वरी प्रतिमा कटि भवानी के चबूतरे से प्राप्त प्रतिमा खण्ड में चतुर्भुजी मातृका महेश्वरी अंकित है। भव्य ललितासन में बैठी देवी की भुजाओं में अभय मुडा, त्रिशूल, सर्प एवं कमण्डलु है। देवी जटा मुकुट, कुण्डल, हार, आदि आभूषण पहने हुये है, बलुआ पत्थर पर निर्मित प्रतिमा लगभग १२वीं शती ईस्वीं की है। दूसरी द्वार शाखा कटि भवानी के चबूतरे से प्राप्त हुई है। इस पर प्रेमी युगल, मातृका, चामुण्डा की प्रतिमा, सिंह गज, नर व्यालों का अंकन है। बलुआ पत्थर पर निर्मित प्रतिमा १२वीं शतीं ईस्वीं की है। तीसरी द्वार शाखा भी कटि भवानी चबूतरे से प्राप्त हुई है, इस पर युगल मातृका चामुण्डा, सिंह, गज, नर, व्यालों का अंकन है। बलुआ पत्थर पर निर्मित प्रतिमा लगभग १२वीं शती ईस्वीं की है। चौथी सती स्तम्भ घूरगांव में संतोष साहू के मकान के सामने रखा है। इस पर ऊपर चन्द्र का अंकन है। दोनों पारम्परिक आभूषण पहने हुए स्त्री-पुरूष अंकित है। बलुआ पत्थर पर निर्मित प्रतिमा लगभग १६वीं शती ईस्वीं की है।

किवलाहा – किवलाहा गौरिहार से १४ कि.मी. दूरी पर है। गांव के बाहर चबूतरे के पास लगभग १६वीं शती ईस्वीं की बलुआ पत्थर निर्मित प्रतिमा रखी है, जिसमें नन्दी प्रतिमा, जलहारी एवं स्थापत्य खण्ड है। बरगद के पेड़ के नीचे प्राचीन मंदिर के विशालकाय स्तम्भ रखे हैं।

हटवा – हटवा बारीगढ़ से ९ कि.मी. एवं गौरिहार से १२ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। गांव के समीप एक प्राचीन मंदिर है, जिसे ग्रामवासी बाला जी के नाम से जानते है। मंदिर का बाहरी ऊपर भाग क्षतिग्रस्त हो गया था। उसका ग्रामवासियों द्वारा जीर्णोंद्वार कराया गया, जिससे मंदिर के गर्भगृह का आन्तरिक हो गया है। मंदिर के गर्भगृह का आन्तरिक भाग अपने स्वरूप में विद्यमान है। यह बनावट की दृष्टि से लगभग १२वीं शदी ईस्वीं के उत्तरार्द्ध का प्रतीत होता है। गर्भगृह में प्राचीन कलाकृतियां रखी है। जिनमें प्रथम **विष्णु प्रतिमा** चतुर्भुजी विष्णु के दायीं ओर के आगे का हाथ वरद मुदा में शेष हाथों में शंख, चक्र, गदा धारण किये है। प्रतिमा किरीट मुकुट, कुण्डल, हार, यज्ञोपवीत, मेखला एवं अधोवस्त्र आदि से अंलकृत है। प्रतिमा का आकार ५६×२६×१० से.मी. है। द्वितीय **गणेश प्रतिमा** चतुर्भुजी गणेश आसनस्थ प्रदर्शित है। गणेश का दाहिनी ओर आगे का हाथ अभय मुदा में शेष हाथों में परशु, स्वदंत, और मोदक धारण किये है, देव करण्ड मुकुट यज्ञोपवीत आदि से सुसज्जित है। प्रतिमा का आकार ४५×२७×११ से.मी. है। तृतीय **महिष मर्दिन प्रतिमा** महिष का वध करते हुये देवी प्रदर्शित है। प्रतिमा का आकार २१×१३×६ से.मी. है। इसके अतिरिक्त विष्णु प्रतिमा खण्ड, नृसिंह, नाग आदि प्रतिमा रखी है। मंदिर से एक कि.मी. की दूरी पर एक अन्य प्राचीन मंदिर के अवशेष प्राप्त हुये है, जिसमें वैष्णव शैव प्रतिमा खण्डों का संग्रह है।

उमरी – उमरी गौरिहार से १९ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहां पहाड़ी पर प्राचीन गढ़ी के अवशेष के रूप में स्थित है। यहां पर बुन्देला कालीन दो मंदिर है, प्रथम मंदिर में गर्भगृह ही है। ऊर्ध्व विन्यास में जगती जंघा, शिखर उल्टे कमल फूल के आकार का आमलक एवं कलश है। मंदिर के शिखर एवं जंघा के मध्य अलिन्द बने हुये है। द्वार मेहरावदार है। दूसरा मंदिर में गर्भगृह ही है, उर्ध्व विन्यास में जगती जंघा एवं गुम्बदाकार शिखर है, जंघा के ऊपरी भाग में छज्जे बने हुये है। द्वार मेहरावदार है, जिसके दोनों ओर से छोटे अलिन्द बने हुये है। दोनों मंदिर लगभग १७वीं १८वी शती ईस्वीं के बुन्देला कला शैली के अनुरूप है।

मनुरिया – मनुरिया गौरिहार से १५ कि.मी. एवं लौड़ी से १५ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। ऐसा कहा जाता है, कि पूर्व में यहां पर मनिहारों की बस्ती थी, बाद में इस मनुरिया कहा जाने लगा था। गांव के मध्य में बुन्देला कालीन देवी मंदिर है, जिसके अन्दर बाहर प्रतिमा रखी हुई है, जिनमें प्रथम **हनुमान प्रतिमा** यह हनुमान प्रतिमा मंदिर के बाहर पीछे की ओर चबूतरे पर रखी है। पवनपुत्र हनुमान का सिर से नीचे का भाग है।

बायां हाथ वक्ष पर वितर्क मुद्रा में है। कमर में कटार है। अलीढ मुद्रा में खड़े देव का एक पैर खीचकर जमीन पर दूसरापैर मुड़ा हुआ है। बलुआ पत्थर पर निर्मित प्रतिमा लगभग १२ वीं शती ईस्वी की प्रतीत होती है। दूसरी **नागदेवता** की यह प्रतिमा मंदिर के अन्दर रखी है। प्रतिमा के ऊपरी भाग पुरुष विग्रह में नीचे का भाग नाग विग्रह में है। देव के सिर के ऊपर तीन फण नाग मौलि है। देव हाथ जोड़े है। नीचे तीन सर्प कुण्डलियां है। देव मुकुट, कुण्डल, हार धारण किये है, बलुआ पत्थर पर निर्मित प्रतिमा लगभग १२वी शती ईस्वी की है।

तीसरी **गणेश प्रतिमा** मंदिर के अन्दर रखी है। सव्य ललितासन में बैठे हुये गणेश की सूंड बायीं ओर को मुड़कर बाये हाथ में लिये मोदक पर रखी है। गणपति मुकुट, सूपकर्ण, एक दन्त, सर्प यज्ञोपवीत धारण किये है, बलुआ पत्थर पर निर्मित प्रतिमा लगभग १३वीं शती ईस्वी की है। चौथी **सती स्तम्भ** मंदिर के बाहर दरवाजे के पास रखा है। इसके नीचे के भाग में पांच पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है, जिसकी लिपि नागरी भाषा संस्कृत मिश्रित हिन्दी है। लेख में विक्रम संवत् १४३५ (ईस्वी सन् १३७८) उत्कीर्ण है। स्तम्भ के ऊपर अर्द्ध चन्द्र हाथ का पंजा एवं पंचलिंग अंकित है। पुरुष बाँयें हाथ से एवं दाये हाथ से शिवलिंग की पूजा कर रहे है, पुरुष के दाँये हाथ में कटार, स्त्री के बाये हाथ में कलश है। दोनों केश, कुण्डल, हार, केयूर, बलय, मेखला धारण किये है। प्रतिमा बलुआ पत्थर पर निर्मित है।

पांचवी **सती स्तम्भ** मंदिर के बाहर पीछे की ओर चबूतरे पर रखा है, इस स्तम्भ पर विक्रम संवत् १३४५ (ईस्वी सन् १२८८) का चार पंक्तियों में लेख उत्कीर्ण है, जिसकी लिपि नागरी भाषा संस्कृत प्रतीत होती है, इस पर पुरुष-स्त्री, शिवलिंग की पूजा करते हुये दिखाये गये है, शिवलिंग, जलहारी युक्त है, दोनों केश, कुण्डल हार, वस्त्र धारण किये हुये हैं। स्तम्भ बलुआ पत्थर पर निर्मित है। इसके अलावा मंदिर के अन्दर लगभग १२वी शती ईस्वी की बलुआ पत्थर पर निर्मित दो स्थापत्य खण्ड एवं एक प्रतिमा पट्ट पर दो स्तम्भ प्रतिमा रखी है।

संदर्भ-सूची -

१. गुरू शम्भू दयाल (सम्पादित) मध्यप्रदेश जिला गजेरियर छतरपुर जिला भोपाल १९७४ पृष्ठ ३४२-४३

२. वही पृष्ठ ५९

३. वही पृष्ठ ६३

४. वही पृष्ठ ७२

५. वही पृष्ठ ७६

६. त्रिपाठी काशीप्रसाद 'बुन्देलखण्ड का वृहत इतिहास' राजतन्त्र से जनतन्त्र दिल्ली २००६ २१२-१४

७. त्रिपाठी काशी प्रसाद 'बुन्देलखण्ड के दुर्ग, दिल्ली २००५ पृष्ठ ७१-७४

८. अकेला नरेन्द्र सिंह (सम्पादित) धर्मक्षेत्र छतरपुर दैनिक भास्कर दिसम्बर २०१० पृष्ठ १२

९. त्रिपाठी काशीप्रसाद 'बुन्देलखण्ड के तालाब एवं जल प्रबन्धन का इतिहास' दिल्ली २०११ पृष्ठ ७४

- २४, रामानुज नगर, रामवाटिका के पीछे,
गोविन्दपुरी के सामने, सिटी सेन्टर,ग्वालियर (म.प्र.)
मो. - 8223915111 卐

रामेश्वर गुप्त की चौकड़ियाँ

-डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त

माता-पिता हमारे ईश्वर, जेई पूज्य परमेश्वर।
जनम देत, पालत पोषत, कर अपनों सब न्योछावर।
ओढ़त सबै कष्ट संतति के, बोझौ अपने शिर धर।
'रामेश्वर' जिन इन्हें भुलइयौ, जेइ अपने जगदीश्वर।।

अपनी जनम भूमि अनियारी, है प्रानन सों प्यारी।
अपने जा भारत की महिमा, जगती पै है न्यारी।
मुकुट हिमालय जाके सिर पै, विभा बिखेरत भारी।
'रामेश्वर' सब दिव्य देव, जापै जातइ बलिहारी।।

अपनौ कर्म भूल जिन जइयौ, पूरी तराँ निभइयौ।
कामचोर समचोर बड़ौ ना, कोउ, हिये जा लइयौ।
है सुकर्म ईश्वर, सुकर्म कर ईश्वर-दर्शन पइयौ।
'रामेश्वर' कर्तव्य पूज्य है, कबहुँ न जाय भुलइयौ।।
करियौ सदा बड़न कौ आदर, लो आशीष भर गागर।
कबहुँ काउ कौ मन न दुखइयौ, करियौ दया उजागर।
झूठ छली सों बचियौ, जौ है महापाप कौ सागर।
'रामेश्वर' सूधे पथ चलियौ, जौई सुख कौ आगर।।

छोड़ो, अहंकार सब छोड़ो, दन्दन सों मुँख मोड़ो।
कुटिल कामना बुरी वासना के फन्दन खों तोड़ो।
सुख सुगंध वर शान्ति हेतु, संयम की धरती गोड़ो।
'रामेश्वर' वर मुक्ति हेतु, ईश्वर सों नाता जोड़ो।

वानी संतन जा मानों, जग असार जौ जानों।
भारी पीर देत 'मैं मैं' कौ मिमियावौ, पहिचानों।
जल में कमल सरीखे जी लो, तौ पा लैव ठिकानों।
'रामेश्वर' जिन कबहुँ भूलियौ, मानवता कौवानों।।

-सेवानिवृत्त प्राध्यापक (संस्कृत), श्रीमती लक्ष्मी गुप्ता भवन,
उद्योग विभाग के पास, सिविल लाइन्स, दतिया (म.प्र.)
पिन-475661, मोबा.-9826249448 卐

''भाबई : भारत में ...।''

–ओ.पी. रिछारिया

अपनों भारत देश – पूरे सिंसार में हर मामले में अपनी एक चिनार रखत है। ऐतिहासिक महत्व, धार्मिक दृष्टि और सामाजिक नज़रिया सें – बिल्कुल अलायदो देश है, भारत।

समय–समय पे–आफत–अबेरा और गिरानी परत रई– मनों कबे सुरज के दूर हो गऐ – पतो नई चलो। चीन की लड़ाई होवे, पाकिस्तान की लड़ाई होवे, बंगलादेश स्वतंत्र बनवाने को काम होय – ''स्काई लैब'' – को हल्ला होवे, चेचक, महामारी, प्लेग, महामारी, मलेरिया, एड्स या मस्तिष्क ज्वर होवे, चाऐ पल्स–पोलियो से मुक्ति को मामलो होये, – ''जीका'' – वायरस और न जावें कौन–कौन से – कष्ट, बाधाऐं और गिरानी से – ''भारत'' – ने बाजी जीत लई है। मनों आसों की साल तो हद्द हो गई, ऐंसी मुसीबत ऐंसी बज्जुर की – ''भाबई'' – भारत में – आन पसरी है, के सब कछू – सत् बिढ़ार हो गओ ।

कुरोना–वारस को जो दानव ऐसों – सुरसा – घाँई – पॉव पसारत आ गओ के जे की कौनऊँ ने बर्रोटी में सोई नें सोसी हती।

अब भैया हरो – का बतायें – ई बीमारी के – दोंदरा में – मोरी सोई सिरकारी डूटी लगी हती। – बो तो भलो होवे उन डाँगघरों को, नरस बाई और स्वास्थ्य विभाग के सबरे करमचारी जिनने जी जान सें – ई खों और जॉदा फैलाऐं से रोक वे के लाने सिरकार की मदद में अपनो –संग निभाओ।

अपने देश के पिरधान मंत्री जू नें – सहीं टेम पै, सही कदम उठाओ – ''लुक डोन'' लगा दओ। – जे को पूरो–पूरो पालन करवे में, – पुलस विभाग के सबई आफीसर वर्ग और सिपाई भैया हरों ने अपनी जान गदिया पे धर के – आम जनता की रखवारी करी। – जे नगर पालका – नगर–निगम के सफाई – करमचारी दिन–रात एक करकें साफ–सफाई में जुटे रऐ है। जा बताओ का – इनकें – ''जी'' नइयाँ ...? इन खों भी तो ''वारस'' को खतरा है, के नई ...? मनों का कइऐ, – पूरी–पूरी सुरक्षा और बन्देज को उपाव करके जनता की सेवा में अले–मैदना ठाँड़े रऐ हैं।

जब हम एक मुहल्ला में – पूँछा–ताँछी (सर्वे) करवे जा रऐ–हते–सो – एक भूखे–प्यासे–मजूर की बातें सुनबे मिली – वो अपने दूसरे संगाती सें बतकाव कर रओ हतो। ... वो बोलो ... के ''लुक डोन'' – को मतलब है– के – घर में लुके रओ। – सबरी बीमारियों को – ''डॉन'' – आ गओ है। ऐ सें बचन होय तो – घर में लुके रहो। – कोऊ से – हॉत नई मिलाऊ नें और खाँसी आवे, छींक आवे तो – रूमाल संगे राखो। – मों पे – कपड़ा को मुसीका बाँध ले ओ ...। – पैल के जमाने में – जानवरों खों –मुसीका लगा देत हते। – जे में कोनऊ के – खेत की मेड़ पार करके 'जानवर' ' – फसल में, मों ने मार देवें। अनाज कट के जब, गह्ले मे धरो जात है, तब ओ के बाद खिरान में ''दाऐं'' – करी जात हती। – और दाऐं में लगे बैलों के, मों पे मुसीका लगा दओ जात हतो – के, –– अन्न को दानों इनके मों – में – न जा पा वें ।

आज भारत में ऐसी भाबई आन परी – के आदमों के मों पे – ''मुसीका'' लगाने पर गओ। के – ''कुरोना'' को वारस नाक के द्वारा सॉस लेत में – या मों के जरिऐं –शरीर में – नें पिढ़ पावे न सामने – मौत धरी कहाई।

– जब हम घर–घर गऐं हते – सो सबई सें – पैली बात जा पूँछी हती के भैया कोऊ–काऊ खों, सरदी, खाँसी जुर–ताप तो –नईयाँ...? अगर होवे तो झट्ट से बता देव – तुरतई गौंरगिरी हो जै है। साठ साल से ऊपर बारे मान्स चाऐं आदमी होये चाहे घर की जनानी होवे – उनकी जानकारी लिखा देओ। कोऊ खों साँस लेवे में परेशानी तो नइयाँ, दम फूलत होवे – शक्कर की बीमारी होय – बी.पी. घटत होय, बढ़त होय ऐंसी सबई पूरी–पूरी जानकारी – ले के – ऊपर के अधिकारियों तक पौंचाई जा रई हती। जरूरत परवे पे – एक सौ आठ नम्बर वारी– गाड़ी बुला कें – कछू मरीजों खों – भरती कराओ गओ उनकी – ''कुरोना–बारस'' की जाँच करी गई। कछू शंका बारे मरीजों खों, – ''कोरनटेन'' – कराओ जात हतो। – माने के – अपने घर के एक कोठा में, अकेलो मरीज बनो रऐ। चौदा दिनों – तक बो कोनऊँ के जरौं नें जावे कोनऊ से मेल–जोल नें करें। घर के भीतर लुको रऐं।''लुक–डोन'' को पालन करे। ऐसी मरीज खों – ''रोटी–पानी'' ओई के कमरा में दई जात है।

अच्छे भले सुस्वस्थ आदमों खों सोई बेजाँ हुसियारी और समजदारी से चलने आऊत है। बेर–बेर साबुन सें – अच्छे से हॉथ धोत रओ चइऐ। चेहरा खों – कपड़ा, रूमाल, तौलिया से – ढॉक के राखो। बिना काम के – सड़क पे गली मोहल्ला में ठाँड़े नें भओ चइये। और जब –दूध – साग–सब्जी ले वें – जाओ सो – एक दूसरे से – दो–दो हाँथ दूर रे के सौदा सामान लओ चइये। साग–सब्जी, फल और पैकट वारों दूध सब खों – खूब अच्छे से धो कें – फिर काम में – लओ जाऐं। ऐंसी सब बातें – घर–घर जाके – समझाई। लोगों ने सब बातें मानी। सुनी और गुनी सो अपने ''भारत'' – खों जाँदा – ''भाबई'' नें नई घेर पाओ। भैया एक बात और केन चाहत है – के – अपने भारत नें – कबऊँ दूसरों के मामलें में कौनऊँ टॉग नही अड़ाई। अपने – काम सें काम राखो है। ''ऊधौ को लेनें, न माधौ को देने।'' वारे सिद्धाँत पे चलवे बारे देश है, भारत।

दूसरों देशों की हालत् सोई देखी सुनी है, अमेरिका, फ्रॉंस, जापान, इटली की ''कुरोना'' से का ''गतगंगा'' सुधरी सो कोनऊँ से दबी–लुकी नइयॉ। और वो लुगराँयदो ''चीन'' ओ की कॉ लों का कऐं। कैत है, के सबरी गतें तो ओई ने सुघारी है।''कुठिया में गुड़ फोर वें वारों तो बोई आऐं''। कैसे बिचारे बूढे–बारे, राई भरे मौड़ा–मौड़ी, आदमी–औरतें बिचारें हजारों की संख्या में लोग पटाँ पर गऐ। ऐसों दुःख होत है देख–देख के सुन–सुन कें। ... बताओ आदमी की जान की कौनऊँ कीमत नइयाँ। ... और पाकिस्तान साँगरे कैत है – के हम लोगों खों घरों में कैद नई कर सकत...। गरीब लोगों के

धन्दे-पानी बेठ जै है। ... ''कई नाँच न आवे आँगन टेढ़ो...।'' तुम तो ऊसई उन खों - मँहगाई और भुखमरी से बाहरे नई काढ़ पा रऐ बीमारी से - बचाऐं रओ, जोई भौत है। मनों आ हाँ, ... जा नें कओ। - अकेली -बातें -करवा लों। - ''कई हाथ ने मुठी... फरफरा उठी...।''

एक बात और जा कैन चाहत है, के भइया अगर - ''दगा-धोके'' से कोनऊँ खो - कुरोना की चपेट पर जात है। बीमारी मान लो कढ़ आवे - तो समय पे - झट्ट ओं की जानकारी - दे कें, - इलाज करा लओ चइये। घबरावे बारी, और चिन्ता की कौनऊँ बात नइयाँ। - मनों -दूसरों खों न फैल पावे - ई को जरूर ध्यान राखनें। - घर में सुरक्षित रै के - बचाव करो जाऐ। - सब से बड़ो इलाज तो ऐ सें - ''बचाव'' - है।

जिन्दगी कढ़ गई, भैया इत्ती उमर में पैली बेंर ऐसों - ''बन्देज'' - देखो है। सन् चौरासी में, सोई, - ऐसों - ''बन्देज'' - देखो है। सन् चौरासी में, सोई -ऐसों - ''करफू'' - नई लगो। लरका बारे तो, उकता गऐं। - नई लड़क दोन जिनखों घर में कबऊ थुबने नईयाँ...। गाड़ी से नैचे डग नई धरने - ऐसें सब रे ठलुआ और मुगरूरे तो मछरिया घाँई छटपटान लगे हते। - कहाँ जाऐ कैसो करें। कॉ लो सोवे, कहाँ लो - टी.व्ही. देखें। - बा तो जा कुसर रई - दूरदर्शन बारों नें - ''रामायण'' - ''महाभारत'' सीरियल शुरू कर दऐ - सो मान्सों को अच्छो बखत कटन लगो हतो। नई-नई औलादों के लाने - ज्ञान की बातें - सुनवे मिली।

स्वास्थ्य विभाग के पैरामेडीकल स्टाफ के संगे-संगे - आँगनबाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका की टीम के जरिऐ - जब घर-घर जा के - पूँछाताँछी और जानकारी लई जा रई हती - सो कछू अच्छे बुरऐ -अनुभव सोई हमोरों खों मिले।

एक सी सोस-समझ के आदमी नई मिलत। - कछू आदमों को तो जोई काम हतो के सरवे बारी टीम की बिलकुल मदद नहीं करने। गाली-गलौच और बिलकुल अभद्रता से उतरवे बारे लोग सोई मिले। ''बीमारी'' के सरवे में - ''जाँत-पाँत'' देखन लगे। फलाने समाज की जानकारी पैलें ले आओ, बाद में, हम अपनी दे हैं। बस आ गऐ - भुँनसारे से - ''पेरबे'' खो। - कछू आदमी किबार तक नई खोलें - भीतर से कै देत - ''ऑगे जाओ...भैया...''। बताओ का मॉगने-भिखारी आऐं। सो कैंत के आँगे जाओ...। कछू जाँदा... ईमानदारी वारे पुलस डिपाट के सोई - मिल जात हते। सो - वे सिरकारी डूटी बारों खों - उनके कार्य क्षेत्र में - नई पिढ़न दे रऐ ते। उनसे जब कई के भैया जो गरे में डरो भओ - हमाओ - ''परिचय-पत्र'' - देख लों, पढ़ लों, फिर कढ़ जान दो। - इत्ती सुनके तो और - ''पावर'' में आ जावें। - हमें नई देखने ...। तुम तो - ''आडर'' - बताओ...डूटी को ...। - अब उन खों को समझावे के - भैया तुमँई जैसे - हुशियार हमाऐ - आफीसर सोई है। वे तो - ''वॉट्स अप'' - पे - आडर डार देत है। सो तुम मोबाईल देख ले ...। फोन पे बात कर लेओ। -अरे। राम-राम ... पुलस के आफीसर और दूसरों की कई मान लेवे ... ऐसो-कबऊँ भओ हैं ...?... बे काऐ खों फोन पे बात कर है। - अब ऐसो है, के आजकल के नये लरका बारे - जोन फोन चला के जानत हैं, सो वे सब जानकारी निकार के बता देत हैं। जोन बिचारे पुरानियाँ है - वे मोबाइल खोल के नई जानें ... बे कॉ से आडर बता दऐं ...। - डूटी सो जरूरई करने। - सो फिर का है, के हॉथ-पॉव जोर कें, - चोरी - भॅड़याई सें - ना हो, मा हो खुलक कें, - अपनी डूटी बजा वे ठाँड़े हो जात हते। - ऊपर से - जनता को - बेहार - ''काऐं फिर से आ गऐ - तुमोरें ?'' कछू खाबे-पीवे लियाऐ हो ? के ऊँसई आ गऐ ...? कछू आदमी कैत हे, के भैया हमाऐं इते, की - नरदा-नाली की सफाई कर देओ...। अब बताओ ... घर में तुम रओ - निस्तार तुम करो ... नाली नरदा - ''साफ'' सुवास्थ्य विभाग की टीम कर देवें ...।

जनता के लाने सिरकारी प्रयास, पूरे-पूरे और हर प्रकार की कोसिस खूब करी गई।''कुरोना'' - की जॉच के लाने - अलग से अस्तपतालें बनाई गई। नई-नई प्रयोगशालाऐं खोली गई। - जॉच की ''किट'' - बनाई गई। जैसें जल्दी से जल्दी - सब की जॉच की रिपोर्ट सामने आ जावें।

भारत देश ने इजराईल और जर्मनी जैसे देशों के संगे मिल के - प्रयोग शालाऐं - खोल के - ''कुरोना'' - की जाँच को बीड़ा उठाओ है।

मध्यप्रदेश के आठ संभागों में से जा मान के चलों के, कुल दो जिले - निरूँ गे बचे रऐ है, - रीवा और शहडोल। - इन जिलो में - ''कुरोना'' की छाँयरी तक नई पर पाई। - अप्रेल के - मईना तक कौनऊँ केस नई निकरो - जा भगवान की किरपा बनी रई। राज्य सिरकार और केन्द्र सरकार ने - प्रवासी मजदूरों खों - भोजन पानी की पूरी व्यवस्था करी। - जित्ते मजूर घर के बाहर - ''छिके'' हते - सो उन खों - रेलगाड़ी की अलग से जुगाड़ बैठार के और मोटरगाड़ी की जुगाड़ करके उन्हें -उनके - ठिया-ठिकाने सें लगाओ।

ऐसी - ''भाबई'' भारत में पैली दार आई के हिन्दुओ ने -''नौ-दुर्गा'' - पूजा बिना मंदर जाऐं - घर में करी। - रमजान में मुसलमान भाईयों ने - अपने-अपने घरों में रै कै - नमाज-इबादत करी। भइया ठीक बात और समझदारी को - काम तो जोई आय काऐ से के - नें तो मन्दर ''हुमस'' रऐ...। सब जाँ के ताँ रै है, - पूजा - इबादत - अरदास सब-हँसी-खुशी के - माहौल में - होत रै है।

सार की बात जा कहाई के - समय-समय पे - आबे बारी - मुसीबत - आपदा में - सब जनों खों मिल जुर के - अपनी सिरकार को संग देने पर है। - जबई जंग जीत पा है।

संगी-साथी, मोहल्ला-परौसी, समाज से दूरी बना कें - ''कुरोना'' - लिम्मा डोरी (चैन) को तोड़ के - हरा वे को मूल मंत्र भारत खों मिल गओ सो सबकी रक्षा हो गई। जा बात और है के - डाँगधरों के ऊपर, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के ऊपर और पुलिस की टीम के ऊपर - पत्थरबाजी, हमला भी भौत होत रऐ हैं, - मनों सिरकार ने ऐसे - दुष्टों के ऊपर - ''रासुका'' - लगा कें, उनकी कारी करतूतों पे पानी फेर दओ...।

- भारत नें तो हर मुसीबत पे जीत हासिल करी है, हर जंग में विजय मिली है, - छोटी-छोटी भडकाऊ बातें होंए - या''कुरोना'' जैसी - बड़ी ''भाबई'' - होए, जीत तो जनता की होत है, - भारत की होत् है।

- रिछारिया घाट, परकोटा सागर (म.प्र.)
मो. - 9755811972 卐

उत्कृष्ट कला एवं स्थापत्य का नमूना : उदयगिरि की गुफायें

-डॉ. मोना जैन

उदयगिरि पहाड़ी बेसनगर से तीन किलोमीटर और सांची से सीधे मार्ग पर छः किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसका सामान्य दिग्-विन्यास उत्तर-पश्चिम से दक्षिण पूर्व है। प्रातः कालीन सूर्य की किरणें सीधी गुफाओं को प्रकाशित करती है, संभवतः इसी कारण इस स्थान का नाम उदयगिरि पड़ा। यह पहाड़ी नरम श्वेत बालुकाश्म की है, जिसमें समतल परतें हैं, जिसके कारण इसके पूर्वी भाग में अनेक शैलकृत गुफाओं का निर्माण सहज ही हो सका है। यहाँ पर कुल बीस गुफायें हैं, जिनमें अधिकांश छोटी है। इन गुफाओं को देखने से आभास होता है कि प्रत्येक गुफा के सामने मौलिक रूप से मंडप रहे होंगे। इन गुफाओं में गुप्तकालीन कला का क्रमिक विकास मिलता है। इस बीस गुफाओं में दो गुफायें जैन धर्म तथा शेष हिन्दू धर्म की हैं। इस पहाड़ी पर मौर्य, युंग और नागकालीन अवशेष भी देखे जा सकते हैं, जिनमें बौद्ध स्तूप भी हैं।

गुफा १ को हम बनावटी गुफा मंदिर कह सकते हैं जिसकी एक दीवार तथा मंडप बनाया हुआ हैं किन्तु इसकी छत प्राकृतिक हैं। यहाँ एक गर्भगृह तथा चार स्तम्भों पर टिका मण्डप हैं। गर्भगृह की मूल प्रतिमा अब नष्ट हो चुकी हैं, जो पीछे की दीवार में थी। अब उसके स्थान पर एक अन्य जैन प्रतिमा हैं। शिल्पशास्त्र की दृष्टि से यह गुफा को अत्यंत उत्कृष्ट कहा जा सकता हैं, क्योंकि इस गुफा में गुप्तकाल के मंदिर स्थापत्य का प्रारंभिक रूप दिखायी देता हैं।

गुफा २ और ३ का आकार अत्यंत छोटा है और ये दोनों गुफायें बहुत अधिक अपक्षीण हो चुकी हैं।

गुफा ४ के द्वार पर एक वीणाधारी पुरुष की आकृति हैं, कनिंघम ने इस गुफा को बीना गुफा के नाम से संबोधित किया था। गुफा ३ से थोड़ी दूरी पर दायीं तरफ यह गुफा हैं। इस गुफा में गर्भगृह और इसका द्वार अलंकृत है। इसके द्वार-स्तंभों के ऊपर का लिंटल स्तंभों को दोनों तरफ से ढँके हुए हैं। द्वार चौखट पर तीन पंक्तियों का अलंकरण हैं।

गर्भगृह में प्रतिष्ठापित एक-मुखलिंग शिल्पशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इसके मस्तिष्क पर तीसरे नेत्र का चिन्हमात्र है। सामने की तरफ दो बड़े तथा दो छोटे स्तंभों का मण्डप था। दो अर्धस्तम्भ मण्डप अभी-भी हैं। इस मण्डप के उत्तर-दक्षिण में एक खुली गुफा दिखायी देती है जो बीना गुफा के समकोण पर हैं। जिसमें सप्तमातृकाओं की अस्पष्ट प्रतिमायें हैं।

गुफा ५ बृहद आकार की होने के बावजूद उसे अधिक भीतर तक नहीं काटा गया है। गुफा ५ की गणना संसार की सर्वप्रसिद्ध कलाकृतियों में की जाती है। इस गुफा में विष्णु के वाराह अवतार की एक विशाल प्रतिमा है। जिसका शरीर मानव का और शीर्ष वराह का है। विष्णु वराह अपने बायें चरण से नागराज को दबाये हुए हैं जिनके फन में १३ सर्पो के शीर्ष हैं। विष्णु का दायाँ हाथ पीछे तथा बायाँ हाथ घुटने के ऊपर रखा हैं। नागराज के पीछे एक अन्य मूर्ति है जो किसी राजा की प्रतीत होती हैं। वराह के शीर्ष के बायीं तरफ स्वर्गीय संगीतज्ञ हैं। सामने दोनों ओर देवों तथा असुरों का समूह है जो इस दृश्य को प्रसन्न होकर देख रहा है। इन मूर्तियों में ब्रह्मा तथा नंदी पर आसीन शिव हैं। तीसरी पंक्ति में ऋषिगण हैं। इस गुफा की दायीं तथा बायीं भित्तियों पर गंगा तथा यमुना अपने वाहनों मकर व कछुये पर स्वर्ग से अवतरित होती दिखायी गई हैं, जहाँ वरूण अपने हाथ में घट लेकर स्वागत कर रहे हैं।

यहाँ पर इस पौराणिक कथा का चित्रण किया गया है, जब विष्णु ने जलमग्न पृथ्वी का वराह अवतार लेकर उद्धार किया था।

गुफा ६ की बाह्य भित्ति के बाहरी भाग पर चन्द्रगुप्त द्वितीय का गुप्त संवत् ८२ उत्कीर्ण अभिलेख है जिसमें विष्णुदास के पुत्र सनकानीक सामन्त द्वारा दिये गये दान का उल्लेख हैं। इस गुफा के सामने बरामदा हैं। गुफा का द्वार गुप्तकालीन प्रणाली के अनुसार अलंकृत हैं तथा दोनों ओर अर्ध स्तंभों पर गंगा की मूर्तियाँ थी। द्वार के बौयी ओर दो और दायी ओर तीन फलक हैं। द्वार के दोनों तरफ दो द्वारपाल खड़े हैं जिनकी वेशभूषा साधारण तथा घुंघराले बाल है। द्वारपालों के सम्मुख विष्णु की मूर्तियाँ हैं। दायी तरफ के तीसरे खंड में महिषासुर मर्दिनी का केश विन्यास अत्यंत आकर्षक है।

गुफा ६ की भीतरी छत पर कुछ छोटे-छोटे अभिलेख है।

इस गुफा के दायी तरफ एक छोटी सी गुफा है जिसमें सप्त-मातृकाओं की अस्पष्ट सी प्रतिमायें हैं। गुफा सात का ऊपरी भाग (गोल चट्टान) जैसा है जिसके कारण इसे तवा गुफा के नाम से पुकारा जाता हैं। इस गुफा के पीछे की भित्ति पर एक अभिलेख उत्कीर्ण हैं जिससे हमें पता चलता है कि चंद्रगुप्त के मंत्री वीरसेन ने इस गुफा का उत्खनन करवाया था। दूसरी गुफाओं के समान इस गुफा के सामने भी एक मण्डप था जो अब नहीं है नष्ट हो चुका है परंतु गुफा की छत पर उत्कीर्ण पदम अभी-भी दिखायी देता हैं।

इस गुफा में उत्कीर्ण लेख से हमें ज्ञात होता हैं कि चन्द्रगुप्त द्वितीय अपनी दिग्विजय के पश्चात् यहाँ आया था। यह गुफा उसकी पूजा-उपासना के लिए निर्मित की गयी थी। वह शिव भक्त था। चन्द्रगुप्त द्वारा मालवा विजय का यह अभिलेख एक मात्र प्रमाण कहा जा सकता हैं।

गुफा १३ में शेषशायी विष्णु की लम्बी विशाल मूर्ति, अनंत नाग की विशाल कुंडली, गरुड़ मूर्ति तथा सात अस्पष्ट मूर्तियाँ हैं।

गुफा चौदह, पंद्रह, सोलह, सत्रह तथा अठारह बहुत छोटी-छोटी हैं।

गुफा उन्नीस अमृत गुफा के नाम से जानी जाती है, एक अभिलेख से ज्ञात होता है कि पहले इस गुफा में विष्णु की पूजा की जाती थी। इस गुफा की छत वर्गाकार स्तम्भों पर आधारित हैं। इनका शीर्ष बहुत अलंकृत हैं। इस गुफा का द्वार भी अन्य गुफाओं के द्वारों की अपेक्षा अधिक अलंकृत हैं। लिंटेल के ऊपर समुद्र मंथन का दृश्य हैं, जो समय के कारण अस्पष्ट हो चला है। इस दृश्य के अंकन के कारण ही इस गुफा का नाम 'अमृत गुफा' पड़ा क्योंकि समुद्र मंथन से अमृत निकला था। इस गुफा का उत्खनन सभी गुफाओं के पश्चात् किया गया था।

गुफा बीस में जैन प्रतिमायें तथा अभिलेख हैं। अभिलेख संवत् १०६ का है, जिसमें शंकर द्वारा पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठापित किये जाने का विवरण मिलता है। अनगढ़ पत्थरों की भित्तियों द्वारा इसे पाँच भागों में बाँटा गया हैं।

पहाड़ी के पास एक छोटा-सा जल कुण्ड हैं। गुफा २० के पास अनेक छोटी-छोटी प्राकृतिक गुफायें हैं जिसमें कुछ प्राचीन काल के रंगीन चित्र हैं तथा कुछ मनुष्य आकृतियाँ तथा एक स्तंभ उत्कीर्ण हैं। एक अभिलेख उत्कीर्ण है जिसकी लिपि नागरी और भाषा संस्कृत हैं।

गुफा १० से गुफा २० तक जाने के लिए पहाड़ी पर सीढ़ियाँ बनी हैं।

अंत में, यहाँ की सभी गुफायें भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित हैं। भावी पीढ़ी के लाभ के लिए हमारी महती जिम्मेदारी है कि हम अपने देश की पुरातात्विक धरोहरों को संरक्षित रखने के प्रयास से अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. कनिंघम : आर्क्योलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, रिपोर्ट १८७४-७५ एवं १८७६-७७, पृ. ४६-५६

२. कनिंघम : आर्क्योलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, रिपोर्ट १८७४-७५ एवं १८७६-७७, पृ. ४७

३. विदिशा-खरे महेश्वरी दयाल, पृ.स. १६८-१६९, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, १९८५

४. यहाँ की सभी गुफायें भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित हैं। गुफा ३ तथा ४ को धूप व वर्षा से सुरक्षित रखने का प्रयास किया जा रहा है।

५. द्विवेदी, हरिहर निवास, पूर्व निर्देशित, पृ. १६ व इंडियन ऐंटिक्वेरी, ग्रंथ १८, ३४४ पृ.

६. प्राचीन जैन और बौद्ध तीर्थ (स्थापत्य कला के विशेष संदर्भ में) : सिंह राजेश कुमार, पृ.सं. ६९, ७० प्रकाशक:अंजनी कुमार मिश्र, वारणसी, प्रथम संस्करण : सितम्बर २०००

७. शर्मा, राजकुमार, मध्यप्रदेश के पुरातत्व का सन्दर्भ ग्रंथ, भोपाल, १९७४, पृ. २७२-३१६

- शास.जे.यो. छत्तीसगढ़ महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) 卐

राम कहानी

-अश्विनी कुमार चतुर्वेदी

जब लो जीने, तब लो सीने, इतई राम कहानी
कुआँ खोद के - हम खा-तुम खा रोजई पीने पानी। इतई ...
बेटा-बिटिया, नाती पोता, कहबे के जे नाते गोता
जानत हो सब साँची बातें तऊ, ऑखे काये पिरानी। इतई ....
लरका, बहू, बहुरिया सबरे गये दूसरे देश
फूटे बासन सो, नाहक में बाँधे फिरे कलेस
घुर-घुर गिरी भीत खा, कालौ गोंदा थामें
टूटी म्याँरी कब लो साधे, गिर गई छप्पर छानी। इतई ......
थिगरैलू सी एक कथरिया, तरे फूस को ढेर
कुकरे डरे, डुकर-डुकरिया, देख समो को फेर
पोले मों से बजे बाँसुरी, गुरसी परी सिरानी। इतई ......
कभऊँ रहो गाँव को मुखिया, छिरियाँ आज-चरावे सुखिया
बऊ द्वारन-द्वारन झारे लीपें, तऊ कहाबे रानी। इतई ......
रहे हते वे चार ज्वान से, जिनका छाती फूँकी
नाम लेत जिनके से, अब लो हिरदे उठ रई हूकी
गहनों-जागा बेंच गये सब, जा सार बची मुर्दानी। इतई .....

-एडवोकेट, अजयगढ़ रोड, पन्ना(म.प्र.)
- मोबा. 9300198042 卐

बुन्देली - ढोला गीत

सब सें नेह-लगाव

-स्व. डॉ. एल.आर. सोनी, 'सीकर'

सब सें -नेह-लगाव भईया!
छोड़ बुराई मन सें।।
का-झगड़े-झाँसे-में रक्खो-
प्रेम सें - सबै मिलाव-भईया!
छोड़ बुराई मन सें।।
आदर करौ-कराऔ आदर -
ऐसे गुण अपनाव -भईया!
छोड़ बुराई मन सें।।
सब-अपने-अपने ही-जानों-
एक-एक मिल जाव -भईया!
छोड़ बुराई मन सें।।
गुरिया -टूटे - माला टूटे -
जौ ध्यान धरा-भईया!
छोड़ बुराई मन सें।।
कारौ-कबहुँ न-गोरो होवे-
'सीकर' साँची-गाव-भईया!
छोड़ बुराई मन सें।।

卐

बुन्देली कविता में बुढ़ापे की अभिव्यक्ति

–डॉ. बहादुर सिंह परमार

लोक साहित्य में लोकमन का प्रतिबिम्बन होता है। लोकाचरण लोकदर्शन से प्रेरित होकर लोक मूल्यों के आदर्शों को अपनाता है। लोकांचल में व्याप्त लोक विश्वासों से जन-जीवन प्रभावित होता है। प्रत्येक लोक साहित्य में अपने अँचल की सुगंध परिव्याप्त रहती है। बुन्देलखण्ड में ईश्वर के प्रति आस्था व अनास्था दोनों भाव प्राप्त होता है। सहज व सरल जीवन में मानव ईश्वर के प्रति आस्था रखकर उसे दीनबंधु, गरीब नवाज, दीन दयालु और न जाने, क्या-क्या उपमायें देता है किंतु जब वह अन्याय, अत्याचार व शोषण से परेशान व व्याकुल होता है, तो वह ईश्वर को न केवल नकारता है बल्कि उसके प्रति अपशब्दों का प्रयोग भी करता दिखाई देता है।

बुन्देलखण्ड अँचल में प्रयुक्त बुन्देली में विपुल मात्रा में साहित्य सर्जना की जा रही है। ख़ुशी की बात यह है कि अब यहाँ का रचनाकार केवल भक्ति व रीतिकालीन परिपाटी की रचनाएँ नहीं लिख रहा बल्कि वह समकालीन राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर अपनी कलम चला रहा है। आतंकवाद, नोट बंदी, सर्जिकल स्ट्राइक, बेरोजगारी, राजनैतिक शोषण व भ्रष्टाचार के साथ कोरोना महामारी पर भी अपनी कलम चला रहा है। अचानक एक दिन स्व. शिव सहाय चतुर्वेदी की पुस्तक 'बुन्देलखंडी लोकगीत' देख रहा था तो पृष्ठ १५५ पर वृद्धों की दुर्दशा पर निम्न लोकगीत मिला –

डुकरा तोखों मौत कितऊँ नइयाँ।
डुकरा की खाट मरैला में डारी, मरैला के भूत लगत नइयाँ।
डुकरा की खाट बमीठे पै डारी, करिया नाग डसत नइयाँ।
डुकरा की खाट मड़ैया पै डारी, टूट बड़ैरौ गिरत नइयाँ।
डुकरा की खाट नदिया पै डारी, आउत नदिया बहत नइयाँ।।

इसे मैंने फेसबुक पर पोस्ट किया तो मित्रों की बहुत प्रतिक्रियायें मिली। मैंने लिखा था कि साधारण रूप से इसे हास्य गीत के रूप में मान लिया जाता है किंतु इसके भीतर जो करुणा की धार प्रवाहित है, उसे नहीं देखा जाता। इस पर तरह-तरह के मत आए। फिर मैंने सोचा कि इसका विवेचन करने के साथ उन कविताओं को भी देखा जाए, जो बुन्देली में वृद्धों को केन्द्रित कर लिखी गई हैं। सर्वप्रथम इस लोकगीत को लें। घर में नाती-पोतों, बेटों-बहुओं द्वारा वृद्ध व्यक्ति के मरने की कामना करना, कहीं से भी जायज व नैतिक नहीं ठहराई जा सकती किंतु परिस्थितियों के कारण लोक यथार्थ कुछ और बुन्देलखंड की परिस्थितियों को देखें तो यहाँ गरीबी, अभाव ग्रस्तता इतनी है कि आदमी अपना व अपने परिवार को पेट भरने के लिए हाड़तोड़ मेहनत करता है, तब भी उसका ढंग से निबाह नहीं होता है। रहने के लिए संकीर्ण घर-बखरी और जीवन-यापन के लिए अन्न, वस्त्र तथा अन्य संसाधनों की आवश्यकता होती है। यहाँ की जनसंख्या में छोटे बच्चों से लेकर बूढ़े तक श्रम करते हैं। कुछ नहीं तो पशुओं को चराने या खेत की रखवाली वृद्धों द्वारा की जाती है किन्तु अशक्त व बीमार वृद्ध जब इस लायक नहीं रह जाते तो वे परिवार पर बोझ बन जाते हैं और लोग सामने नहीं तो पीछे रहता है कि भगवान इनकी अब सुन ले। वृद्धों की दशा तब और खराब हो जताी है, जब पति-पत्नी में से एक का निधन हो जाए। लड़का-बहुओं में वह सेवा भाव व लगाव नहीं रह जाता है। आर्थिक विपन्नता के चलते अधिकांश वृद्धों के पास उत्तराधिकार में सिवाय ऋण के कुछ नहीं रहता जिससे इस स्वार्थी संसार में उसके मरने की कामना करते हैं। आप कहेंगेकि यह नहीं हो सकता। ठीक है, सार्वजनिक रूप से कोई भी लोकमूल्यों के दबाव में यह नहीं स्वीकारेगा किंतु वास्तविकता यही है जिसे अँचल में जाकर देखा-परखा जा सकता है। लोक इसे हास्य का पुट देकर कहीं न कहीं वास्तविकता पर चोट पहुँचाता हैं।

वृद्धों की दशा पर जब हमने बुन्देली कवियों की रचनाओं की पड़ताल की तो कई रचनाकारों की रचनाएं नजर में आई जिनमें वृद्धावस्था की दुरावस्था, शरीर के अंग-प्रत्यंगों की शिथिलता, परिजनों की उपेक्षा, निराशा, ईश्वर के प्रति आस्था तथा अतीत के प्रति मोह परिलक्षित होता है। यह शाश्वत सत्य है कि जो जन्मा है उसे मरना ही होगा। जीवन का एक क्रम है। बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था तथा प्रौढ़ावस्था से गुजर कर वृद्वावस्था तक पहुँचना ही है, जो शरीर वृद्धावस्था के पूर्व रहता है, वह वृद्धावस्था में शिथिल होकर साथ छोड़ने लगता है। सुरूपता-कुरूपता में एवं क्षिप्रता-शिथिलता में परिवर्तित होने लगती है। शरीर की त्वचा सिकुड़ जाती, दाँत झर जाते, कान अपना श्रवण दायित्व छोड़ देते, आँखों से दृष्टि गायब होने लगती तथा नाना व्याधियाँ घेर लेती हैं। इसका चित्रण शंकर दयाल खरे 'शंकर' कुछ इस तरह करते हैं –

बुड़ापौ कॉंसैं आ गओ राम, सिकुर गओ तन चाम।
हाँत-पाँव सब थकत भए हैं, बनैं न करतन काम।।
कॉंनन पे पथरा से धर गए, आँखें भइँ बेकाम।
बोलत बोल बनैं न मुख सैं, जैसें लगी लगाम।।
गाल सेव से भये छुहारे, काँस फूल भए केस।
बत्तीसी मौं सैं गायब भइ, बदलौ-बदलौ भेस।
रात-रात भर खाँसी-खुर्रा, भओ आराम-हराम।
बुढ़ापौ कॉंसैं आ गओ राम, सिकुर गओ तन-चाम।। [१]

परिवारों में वृद्धों की उपेक्षा की जाती है, उन्हें खाने-पीने में रूखा-सूखा भोजन वह भी देर-सबेर मिलता है। इन्हें

सबसे अधिक सहानुभूति, सेवा व प्रेम की आवश्यकता होती है किन्तु समय का चक्र देखिए कि लोगों के पास वृद्धों के लिए समय नहीं है। उपेक्षा से आहत वरिष्ठ लोग अपने परिजनों से मीठे दो बोल चाहते हैं किन्तु वे उनके लिए दुर्लभ हैं। देखने में तो यहाँ तक आ रहा है कि खेती-बाड़ी, घर गृहस्थी हड़प कर बुढ़ापे में सन्तानें घर से निकालने में गुरेज नहीं करती। जिन बच्चों का मल-मूत्र साफकर, पाल-पोसकर बढ़ा किया, वही बच्चे विवाहोपरांत पत्नी के मार्गदर्शन में चलकर घर से माँ-बाप को घर से निकाल देते हैं। कुछ घर में तो रखते हैं परन्तु उनके साथ अपमानजनक व्यवहार कर, यहाँ तक कि मारपीट तक कर देते हैं। इस सम्बंध में बीना के महेश कटारे, 'सुगम' की रचनाएँ देखें - हम जिनखाँ मौड़ा कै रये हैं

बेइ हमें लातैं दै रये हैं
फूल बोत रये जिनके लानें
बेइ रोज काँटें बै रये हैं
जिनें मूड़ पै बैठारो तो
डग-डग पै धोकौ दै रये हैं

इन धोखेबाज सन्तानों की प्रताड़ना से बूढ़े अपमान का घूँट विवशता में पीकर रह जाते हैं क्योंकि अशक्तता के कारण वे कुछ कर भी नहीं पाते। ऐसे में मानव-मन अपने सुनहरे अतीत की स्मृतियों में खो जाता है और उसी में प्रमुदित व उल्लसित होता रहता है। बुढ़ापे में बचपन, किशोर तथा युवा अवस्था की घटनाएं फिल्म की ताँई याद आती हैं। बूढ़े अतीत जीवी होकर पुरानी बातों का स्मरण कर वर्तमान से असंतुष्ट रहता है। चाहे मँहगाई सी बात हो या शुद्धता की। चाहे चरित्र, चाल-चलन या आचरण की बात हों या सामाजिक सौमनस्य की वृद्ध अतीत को ही श्रेष्ठ सिद्ध करते हैं। बुन्देली के कवि 'गुप्तेश' की कुछ पंक्तियाँ देखें -

पूँछ बड़न सें लेव हमारी मानों चाय न मानों।
इतइँ सेर भर कौ घी खा लव सोरा गेउं बिकानों।
लातन मारो फिरो लठारा की खों जवा पुसाये।
भाजन बारन लौ ने उनके लानें मों गुड़याये।
काँ के गुटका-चाय, होत रइँ हनकें दूध बियारीं।
कैसीं-कैसीं घरीं निकर गइँ, रइँ प्रानन सें प्यारीं। [२]

यहाँ वृद्ध बालकों द्वारा अविश्वास प्रकट करने पर बड़ों से गवाही दिलवाने की बात करता है। पुराने अनाज लठारा-जवा को याद करता है। दूध रात्रि भोजन में स्मरण आता है। वे सब अतीत की बातें रह जाती हैं। मउवा, डुबरी, लटा, दूध, महेरी, मठा आदि को स्मरण करते हुए उसे अपने कच्चे आँगन, पौंर उसारे, ठाट-बड़ेरै और अटारी याद आती हैं जिनमें प्रेम था आज सीमेंट लोहे की ऊंची अट्टालिकायें तन गईं हैं, किन्तु उनमें प्रेम-सद्भाव नहीं है। वह सोचता है कि, 'मूत देत ते जिनें देखकें, बऊ द्दा के वे गटा भूल गए है।' आज के नाती-पोता तो सिर पर बैठकर नंगा नाच कर रहे हैं। यह संसार नश्वर है। सब स्वार्थ के नाते-रिश्ते हैं। कोई किसी का सगा नहीं है। इसी तरह की बातें स्मरण करते हुए कवि संतोष सिंह बुन्देला का नायक सोचता है -

आज बा सांस समीर नहीं
अपनी काऊ खाँ पीर नहीं
जे जग की मनमोहक बातें हैं सब भूल भुलइयाँ
भाई रे कोऊ काऊ कौ नइयाँ
जीवन निशा बीत गई बहुतम सूखन लगी प्रान की बाती
इतनी लम्बी रात में अब लौ कौऊ मिलो न सांचौ साथी। [३]

जीवन के उतरार्द्ध में काया के कमजोर होने से कमर दुखने लगती है। घुटना-काम नहीं करते। जब शरीर में पीड़ा होती है तो न दिन चैन मिलता न रात चैन। तरह-तरह नीम-हकीम, वैद्य, गुनियों, डॉक्टरों आदि की दवायें असर नहीं करतीं और आदमी बैचेन हो जाता है। अंगों की शिथिलता से चला नहीं जाता। तन साथ नहीं देता परन्तु मन अपनी उड़ान भरता रहता है, इसी असंगति से पीड़ा-बेचैनी-व्याकुलता बढ़ती है जिससे चित्त ठिकाने नहीं रहता। पेट साथ नहीं देता, जिह्वा रस को आकर्षित होती परिणाम अपच। इसी तरह की अनेक व्याधियाँ घेरती हैं बुढ़ापे में। कवि श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम' ने एक छन्द में शरीर दशा बताई है आप भी देखिए -

आँखिन न सूजैं रंग, कानकं न दैबें संग,
थकित भए हैं अंग पाँवन अधीर है।
पेट न भरत आय, दाँतन करौ अन्याय
गओ है बुढ़ापो आय, दूबरो शरीर है।।
कँपन लगे हैं हाँत, बाय नें चपेटौ गात,
अब न कछू सुहात, बदन में पीर है।
माया-मोह डूबौ 'श्याम' उरझौ है आठों आम,
जपत न हरि नाम, हालत गंभीर है। [४]

बुढ़ापे में हरिनाम स्मरण न कर मोह-ममता ग्रसित होता है। इस समय की मानसिकता अलग हो जाती है। हर बूढ़ा चाहता है कि वह न मरे। जिजीविषा उसे सांसरिक भोग में प्रवृत करती है। वह नातियों का विवाह देखना चाहता है। उनका विवाह हो जाए तो वह उनकी संतान दर्शन का लालसी हो जाता है। शरीर साथ नहीं देता, उसे घर की पौर में रखा जाता है। पौर के दरवाजे से घर की सभी बहुओं-बेटियों को गुजरना पड़ता है जिससे उनकी आजादी में खलल पड़ता है। इसलिए वे मन ही मन कामना करती हैं कि इन्हें ईश्वर उठा लें। इसी तरह के भाव राठ के कवि हरगोविन्द सिंह ने व्यक्त किए हैं -

बब्बा खे रढ़ना परी, पन्ती दिख लउ और।
किसमिसात बहुएँ उतै, कभी रीच हैं पौर।।

बुढ़ापे के विविध प्रसंग बुन्देली कविता में मिलते हैं। बुढ़ापे में जब पति-पत्नी दोनों रहते हैं। डुकरा को सुनाई नहीं देता, डुकरिया उसे बाजार पहुँचाती है, तो कुछ का कुछ ले आता है। इसकी शिकायत पर वह पत्नी को क्रोध में देखता है, वह उसका साथ भी चाहता है, और गुस्सा भी होता है। कवि

नवल किशोर सोनी 'मायूस' की कविता का यह दृश्य देखिए-
बस परो परो जौ सोबै, तन-तन कामन पै रोबै।
छिन-छिन पै गटा नटेरत है, सुनौ तौ ओ गुइयाँ।
जो कछू काम की कइये, सौ-सौ बातें सुन लइये।
बिगना कैसौ ऊ हेत है, सुनौ तौ ओ गुइयाँ।
बोलत है अपने अटकें, ऐंगर बैठत है सटकें।
फिर खाँस-खाँस कें टेरत है, सुनौ तौ ओ गुइयाँ।। [5]

जिस तरह हिन्दी कवि केदारनाथ अग्रवाल वृद्ध दम्पत्ति के प्रेम को हिन्दी कविता में रचते हैं, उसी तरह बुन्देली में भी कवियों ने बुढ़ापे दाम्पत्य-जीवन के चित्र उकेरे हैं। यदि पत्नी बेमेल या आयुगत कम उम्र की हुई तो उसकी विडंबना के चित्र देखने को मिलते हैं। कवि मायूस ही एक जगह लिखते हैं कि - ''बैठी मालपुआ खा रइँ बउ। बब्बा खाँ सतुआ चटा रइँ बउ।'' इतना ही नहीं वे रात-दिन बनी-ठनी रहतीं और होटल से चाय, खाना, मँगाकर खाती। बब्बा को यह सब बर्दाशत नहीं होता परिणामस्वरूप आपसी कलह। पत्नी की मृत्यु पर बुढ़ापे में विवाह की दशा भी काव्य में वर्णित है। इस बेमेल विवाह पर कवि कह उठता है कि ''बब्बा तुमनें अरो अरो। ई उम्मर में ब्याव करो'' इसी तरह अभावग्रस्त व विवशता में अधिकांश बूढ़ों का जीवन बड़ा दयनीय व उपेक्षित हो जाता है, जिसका अनुभव करके कवि उसे अपनी कविता में रचता है -'

बुढ़ापों आ गओ रे हत्यारौ
लरका-बहू सें रोटी माँगी
सो कुत्ता सौ ललकारौ।'

इसके उलट स्थितियाँ भी मिलतीं है। साधन-सम्पन्न घरों में तथा संस्कारित गरीब घरों में वृद्धों को सम्मान से रखा जाता है। उनकी सेवा करना परम कर्तव्य समझा जाता है। उन्हें हर संसाधन उपलब्ध कराए जाते हैं। ऐसे में वृद्ध भी वृद्धावस्था को अलग नजरिया से देखते हैं। कवि शंकरदयाल खरे 'शंकर' की कुछ पंक्तियाँ देखिए जिसमें वे अलग नजरिये से बुढ़ापे को देखते हैं -

''भार गिरसती कौ सब छूटौ, मिट गए सोच तमाम।
छिटकी सुख की झक्क चाँदनी, कड़ गओ दु:ख कौ घाँम।
जानैं काए बुढ़ापै कोसत, करत लोग बदनाम।
बुड़ापौ भलौ दओ हे राम! हैं सब सुख आराम।। [6]

इस तरह कवि यहाँ बुढ़ापे को सकारात्मक भाव से ग्रहण करता है और अपने सुखमय निवृत्त जीवन से प्रसन्न है। कामना करते हैं कि ऐसा सुखमय जीवन सभी को मिले। यथार्थ तो निश्चित ही आदर्श की तुलना में खुरदरा है। अत: बुन्देली कविता यथार्थ के अधिक निकट है, यह उक्त विवेचन से स्पष्ट है।

संदर्भ संकेत -

१. शंकरदयाल खरे 'शंकर', बाँकी बनी बुन्देली बानी, प्रकाशक-चित्रांश प्रकाशन, नौगांव, पृष्ठ ७०
२. बाबूलाल गुप्त 'गुप्तेश' बुन्देली पानी, प्रकाशक -गुप्तेश प्रकाशन, बड़ामलहरा, पृष्ठ ४१
३. संतोष सिंह बुन्देला, मिठौआ है ई कुंआ कौ नीर,प्रकाशक- संतोष सिंह बुंदेला साहित्य परिषद्, छतरपुर, पृष्ठ ७०-७१
४. श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम' मन मसोस रै जात, प्रकाशक-सर्वोत्तम साहित्य संगम, मिहोना(भिंड)म.प्र. पृष्ठ ३४
५. नवल किशोर सोनी 'मायूस' बुन्देली बगिया, प्रकाशक- सरस्वती सदन पुस्तकालय पब्लिक ट्रस्ट, छतरपुर, पृष्ठ ३४
६. शंकरदयाल खरे 'शंकर', बाँकी बनी बुन्देली बानी, प्रकाशक-चित्रांश प्रकाशन, नौगांव, पृष्ठ ६८

-एम.आई.जी.-7, न्यू हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी,
पन्ना रोड, छतरपुर (म.प्र.)卐

अपनी -माटी

-स्व. प्रदीप खरे 'दीपक'

छाती चौड़ी छत्रसाल की, जा बुन्देली माटी है
आला-ऊदल विकट जवानी ,वालन की जा थाती है
मानों यह आपा-धापी में, पिछड़ो है पर नीको है
महईयर वाली मात भवानी, डेरा डारें अम्बा हैं ।

कुण्डेश्वर में औघडदानी,अपनी धुनि रमाये हैं
छोड़ अयोध्या राम लला जी ,जा माटी के प्यारे हैं
चन्देलन की खजुराहो में ,शिल्प कला जग न्यारी है
भीम कुण्ड की थाह अवे लो,कोऊ नहीं ले पाई है

उम्दा ऐसों रचो करम-फल,शानी धरती पै नईयाँ
कविवर की पलकी खों कन्धा ,दैवे वारो भओ नईयाँ
मर्दानी लक्ष्मी वाई सौं ,दुनिया में दूजो नईयाँ
ई माटी में गुण हैं ऐसे ,जगत भरे में कऊं नईयाँ

डुबरी लटा महेरो कोदौं ,जुन्डी की बलिहारी है
भतुआ सरसौं चौइ भाजी,शोधक कथा निराली है
बेर मुकईयाँऔर करौंदा ,सीताफल सुखकारी है
झरबेरी संग बीच सिघाड़ा, कमलगटा मनहारी है

जा माटी बचपन में खा कें, बूढ़े वारे ज्वान भये
ई माटी की सौंध सूंघ के, दिलवर गुणी महान भये
रची बसी है नश-नश में जा, कण-कण देह विहान भये
तन-मन करो निछावर जाने ,शूर वीर बलवान भये

गंगे जैसी बहे नर्मदे ,भगतन की दुखहारी है
चंबल देवे तेज ऊर्जा,भय विपदा जग तारी है
जमुना जी चरन पखारे ,माटी की बलिहारी है
टोंस नदी को अपनों आपा ,बुन्देलन की थाती ह

-नौगांव (म.प्र.)卐

लोक कवि ईसुरी की फागों में नीतिबोध

–डॉ. (श्रीमती) गायत्री वाजपेयी

बुन्देलखण्ड के फाग साहित्य को समृद्धि के शिखर पर ले जाने वाले बुन्देली बृहतत्रयी के लोकप्रिय कवि ईसुरी की काव्य कला पर विचार करते समय 'अमरकोश' की यह उक्ति सहज ही स्मृति पटल पर कौंध जाती है–''कवयति सर्वं जानाति सर्वं वर्णयतीति कविः!'' निसन्देह नैसर्गिक प्रतिभा सम्पन्न कवि की यही विशिष्टता है कि वह सब कुछ जानता है और सभी विषयों का वर्णन करने में समर्थ होता है। सर्वप्रिय कवि ईसुरी भी ऐसी ही नैसर्गिक प्रतिभा से विभूषित थे, उनमें काव्य सृजन की विलक्षण शक्ति थी वे आशु कवि थे और अपनी प्रत्युत्पन्नमति से तत्क्षण किसी भी विषय पर काव्य –सृजन कर सकते थे। अपनी इसी नैसर्गिक प्रतिभा से उन्होंने विविध विषयों पर सहस्त्रों फागों की रचना की है उनके फाग संसार में धर्म, दर्शन, भक्ति, विरक्ति, नीति, प्रीति, रूप सौन्दर्य एवं श्रृंगार आदि भावों का विशुद्ध वर्णन देखने को मिलता है। फाग वाचिक परम्परा के अन्तर्गत आने वाली एक अत्यन्त प्राचीन काव्य विधा है जिसका उत्स संस्कृत और अपभ्रंश की रचनाओं में मिलता है। श्री कान्ति लाल बल्देवराम व्यास ने फाग या फागु शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के फाल्गुन शब्द से मानते हुए इसका शब्द विकास निम्नानुसार बताया है – संस्कृत फाल्गुन →अ फग्गु →गु. रा. फाग।[१] फाग फाल्गुन मास तथा वसंत ऋतु में गाया जाने वाला विशिष्ट गीत है। बुन्देलखण्ड में लोकरागिनी में निबद्ध इस गीत को गाये जाने की एक सुसमृद्ध परम्परा मिलती है। लोककवि ईसुरी ने इस गीत को नूतन रूप प्रदान किया हैं। उनके द्वारा रचित फागों को चौकड़िया फाग कहते हैं। इसमें चार कड़िया रहती हैं कहीं–कहीं अधिक भी हो जाती हैं। छन्द की दृष्टि से यह नरेन्द्र और ललित पद की श्रेणी में रखा जाता है जिसमें १६ और १२ मात्राओं पर विश्राम होकर पूरी २८ मात्राएँ होती हैं अन्त में दो गुरू होते हैं। फाग का यह आधुनिक रूप बुन्देलखण्ड में अत्यन्त लोकप्रिय है। ईसुरी लोक कवि थे। लोक जीवन की उन्हें गहरी समझ थी। मानव जीवन की अमूल्यता का भी उन्हें बोध था। वे यह भलीभाँति जानते थे कि सुर दुर्लभ मानव देह अनेक जन्मों के संचित सुकृत्यों का सुफल है। अतः मानव का कर्त्तव्य है कि वह अपने जीवन को सुन्दर, सफल एवं देव तुल्य बनाए। नीति निर्दिष्ट सूत्रों को अंगीकृत कर मानव जीवन के प्रधान उद्देश्य की प्राप्ति करे। इसीलिए उन्होंने अपनी फागों में नीति विषयक विविध सूत्रों को सुन्दर ढंग से संजोया है। यहाँ नीति शब्द पर विचार कर लेना भी समीचीन होगा। नीति शब्द का अर्थ है पहुँचाना या ले जाना। 'नीयन्ते उन्नीयन्ते अर्था अनया।' णीञ् = नी + क्तिन[२] अर्थात् जिसके द्वारा जाना जाये अथवा अर्थ समझा जाय वह नीति है। अथवा 'नीयते' पुरुषार्थ फलाय सर्वं जगत् यया सा नीतिः[३] अर्थात् जो विद्या अपनी युक्तियों द्वारा सारे जगत को तथा प्रत्येक मानव को उसके मुख्य उद्देश्यों की ओर अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के सम्पादन में उचित मार्ग पर ले जाय उसी का नाम नीति है। यह शास्त्रोक्त सत्य है कि यदि मनुष्य नीति द्वारा निर्धारित मार्ग का अनुगमन करता है तो अपना अभीष्ट फल अवश्य प्राप्त करता है और यदि नीति विरूद्ध आचरण करता है तो असफल हो जाता है। अतः आवश्यक है कि मनुष्य नीति, धर्म, एवं दर्शन की मूल कही जाने वाली सद्प्रवृत्तियों को मनसा, वाचा, कर्मणा, अंगीकार कर जीवन को सार्थक बनाये क्योंकि जीवन जीना अलग बात है और सार्थक जीवन जीना अलग बात है। वास्तव में जीवन उनका ही सफल है जिन्होंने सार्थक जीवन जिया है। लोक कवि ईसुरी ने सार्थक जीवन जीने के लिए जो सूत्र दिये हैं उन पर विचार करना ही शोधालेख का अभीष्ट है। क्योंकि शुक्राचार्य ने स्पष्ट रूप से यह उद्घोषित कर दिया है कि न कवेः सदृशी नीति स्त्रिषु, लोकेषु विद्यते [४] अर्थात् कवि की नीति के समान कोई दूसरी नीति तीनों लोकों में नहीं है। 'श्रीवाल्मीकि रामयण' में कहा गया है –

अध्रुवे हि शरीरे यो न करोति तपोऽर्जनम्।
स पश्चात् तप्यते मूढ़ो मृतो गत्वा ऽऽत्मनो गतिम।[५]

अर्थात् यह शरीर क्षण भंगुर है इसमें रहते हुए जो जीव तप का उपार्जन नहीं करता वह मूर्ख मरने के बाद, जब उसे अपने दुष्कर्मों का फल मिलता है तब बहुत पश्चाताप होता है।

लोककवि ईसुरी भी मानव देह की नश्वरता की ओर संकेत करते हुए चेतावनी देते हैं इस मनुष्य शरीर का तनिक भी भरोसा नहीं है। इसकी लज्जा ईश्वर के हाथ में है। जैसे पेड़ से पत्ता गिरने पर पुनः डाल पर नहीं लगता। वैसे ही यह मानव देह जल कर मिट्टी में मिल जाती है फिर तो उसकी राख को चिड़िया भी नहीं चुनती हैं। मानव देह कुछ भी काम नहीं आती जबकि पशु काया की तो पनइयाँ अर्थात् जूते बन जाते हैं –

तन कौ तनक भरोसौ नइयाँ, राखे लाज गुसइयाँ।
तरवर पत्र गिरै धरनी में, फिर ना लगत डरइयाँ।
जर बर देह मिलै माटी में, चुनै न राख चिरइयाँ।
जा नर देही काम न आवै, पशु की बने पनइयाँ।[६]

इस शाश्वत सत्य को स्वीकारते हुए मनुष्य को अपने जीवन में सत्कर्म पर बल देना चाहिए। 'जियो और जीने दो' की युक्ति को चरित्रार्थ करते हुए अपने स्वभाव में सत्य, न्याय, सहिष्णुता, परमार्थ, दया, प्रेम, विवेक, परदुःखकातरता, कर्तव्य परायणता, करुणा, त्याग एवं सौहार्द जैसी सद्प्रवृत्तियों को विकसित

करना चाहिए। धर्म के मार्ग का अनुगमन करना चाहिए क्योंकि सांसारिक संबंधी तो जीव का साथ शरीर धारण तक ही देते हैं लेकिन धर्म, परलोक तक साथ देता है। यथा-'धर्मानुगो गच्छति जीव लोक:' इस संसार में अर्थ, काम, पद-प्रतिष्ठा, यश एवं अन्य सभी विषयों की प्राप्ति में परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, संघर्ष, कलह और अशान्ति दिखलाई पड़ती है लेकिन धर्म ही एक ऐसा तत्व है जो पूर्ण निरापद,शान्ति प्रदायक, रक्षक मोक्ष साधक एवं स्पर्धारहित है। इसका कारण है कि धर्म लोक द्वारा धारण किया जाता है और धर्म ही लोक को धारण करता है। यथा-

ध्रियते लोकोऽनेन इति धर्म: धरति लोकं वा धर्म:।

इसी प्रकार जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है। यथा-'धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षित रक्षित:'। लोककवि का दर्शन भी यह मानता है कि यह संसार मिथ्या है। यहाँ कि प्रत्येक वस्तु क्षणभंगुर या नाशवान है। यह मन पंछी भी ऐसा ही है इसकी कितनी भी रखवाली कर लो एक दिन इसे जाना ही है। ये बड़े-बड़े महल अट्टालिकाएँ अपनी नहीं हैं। यहाँ तो जब तक हैं तब तक खा-पी लो और कुछ ले दे लो। यही सार तत्व है। उस दिन के लिए कुछ धर्म पुण्य कर लो जिस दिन अनंत यात्रा के लिए प्रस्थान होगा। ईसुरी कहते हैं-कहना मान लो। यह मेला उजड़ने ही वाला है। यथा -

राखें मन पंछी ना रानें, इक दिन सब खाँ जानें।
ना जे अटा-अटारी अपने, ना बखरी दालानें।
खा लो, पीलो दै लो लै लो, जेई लगै ठिकानें।
कर लो धरम कछू वा दिन खों, जा दिन होत रमानें।
ईसुर बात मान लो मोरी, लगी हाट उठ जानें। [७]

लोक कवि का दर्शन न तो विशिष्ट दार्शनिक सम्प्रदायों के गूढ़ातिगूढ़ विवेचन में उलझता है और न ही किसी विशेष सिद्धान्त के प्रति उसका आग्रह होता है वह तो अत्यंत सहजता से लोकमन की बात को वाणी देता है। वह तो बस इतना भलीभाँति जानता हैं कि इस नाशवान देह का क्या भरोसा करना? आखिरकार एक दिन तो मरना ही है। यह संसार तो ओस की बूँद जैसा है जो हवा लगते ही नष्ट हो जाता है। जिसके जीवन की डोर जितनी लम्बी है, उसे उतने दिन भरना भुगतना है। अत: ईसुरी कहते हैं इस संसार में आए हो तो बुरे काम से बचो। फाग द्रष्टव्य है -

तन कौ कौन भरोसों करने, आखिर इक दिन मरनें।
जौ सिंसार ओस कौ बूँदा, पवन लगे सें ढुरनें।
जौ लौं जी की जियन् जोरिया, तौलौं जै दिन भरनें।
ईसुर ई सिंसार आनकें, बुरे काम सें डरनें। [८]

सभी शास्त्रों में समवेत स्वर में यह कहा गया है कि धर्म ही वह तत्व है जिससे मनुष्य अभ्युदय को प्राप्त करता है। धर्म से ही इह-लोक एवं परलोक सजता संवरता है। धर्म से ही मानव कल्याण सम्भव है। कहा गया है -

धर्म: सतां हित: पुंसां धर्म श्रैचवाश्रय: सताम्।
धर्माल्लोकास्त्रयस्तातु प्रवृता: सचरा चरा:।

अर्थात् धर्म में ही सत् पुरुषों का हित है। धर्म ही सत्पुरुषों का आश्रय है। यहाँ तक कि तीनों लोक एवं चर-अचर प्राणी भी धर्म से ही संचालित हैं।

धर्म के चार पाद बतलाए गए हैं - सत्य, तप, दया और पवित्रता। दया को सर्वोपरि मानते हुए ईसुरी लिखते हैं कि दीपक दया धर्म का प्रज्वलित कर लो। उसका सदैव प्रकाश रहेगा। धर्म के बिना कर्म नहीं खुलता है जैसे बिना चाबी के ताला नहीं खुलता। हम तुम्हें बारम्बार समझा रहे हैं दीपक के नीचे अंधेरा मत किए रहना। तुम्हारे कल्याण का मार्ग यही है इसी से तुम्हारा बेड़ा पार हो जाएगा। यथा -

दीपक दया धरम कौ जारौ, सदा रात उजयारौ।
धरम करें बिन करम खुलै ना, कुची बिना ज्यौ तारौ।
समझा चुके करें ना रइयो, दिया तरें अँदयारौ।
कात 'ईसुरी' सुन लेव प्यारी, लग जै पार निबारौ। [९]

भारतीय परम्परा परोपकार को भी धर्म मानती है। महर्षि वेद व्यास जी ने तो स्पष्ट ही लिख है -

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम।
परोपकार: पुण्याय पापाय परपीऽनम्।। [१०]

संत शिरोमणि तुलसीदास जी ने भी 'श्रीराम चरितमानस' में उद्घोषित किया है -
परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।''

ईसुरी भी परोपकार को सबसे बड़ा धर्म मानते हैं। उनका कहना है कि यह शरीर परमार्थ के लिए ही बना है। जिससे परमार्थ करते बने कर ले। ये महल, दुमंजिले भवन और दालानें अपने नहीं है। ये सब माया के चक्कर हैं। इनमें व्यर्थ, भूले फिर रहे हो। मनुष्य का अन्तिम समय आ जाएगा तो आत्मा का हंस अपना कोटर यहीं छोड़कर चला जाएगा। यथा-

जौ तन परस्वारथ के लानै, जो कोउ करकें जानें।
नई जे महल दुमंजिला अपने, ना बखरी दालानें।
जे सब माया के हैं चक्कर, बिरथाँ फिरत भुलाने।
कैड़ा कैसो छोड़ ईसुरी, हंसा होत रमानें। [१२]

ईसुरी मानते हैं मनुष्य संसार की चकाचौंध और यौवन के अभिमान में जीवन के यथार्थ सत्य को भूल जाता है लेकिन जिस दिन मनुष्य के जीवन की अवधि पूरी हो जाती है उसी दिन विधाता उसे बुलबा लेता है। उसमें एक पल का विलम्ब नहीं होता, उसके यहाँ उसका सच्चा लेखा जोखा रहता है इसलिए जितना सत्कर्म करना हो उसे शीघ्र कर लेना क्योंकि मानव देह बारम्बार नहीं मिलती है। फाग द्रष्टव्य है -

जिदना खतम होय बई खाता, बुलबा लेय विधाता।
घड़ी पलक की देरी नाहीं, सत्य हिसाब कराता।
करना होय सुकर लो जग में, फेर न वो दिन आता।
कहत ईसुरी भज लो रामें, नई पाछें पछताता। [१३]

मनुष्य को अपने जीवन की अन्तिम बेला में पश्चाताप न करना पड़े इसीलिए सभी ऋषियों, मुनियों, आचार्यों, उपदेशकों तथा स्मृति शास्त्रों आदि ने यह बतलाया है एवं निर्देशत भी

किया है कि अन्याय, बेईमानी, ठगी, धोखाधड़ी, अत्याचार एवं किसी भी प्रकार के बुरे कर्म से धनार्जन न करें क्योंकि ऐसा धन मनुष्य जीवन के समस्त प्रयोजनों को समूल नष्ट करने वाला होता है। इतना ही नहीं उसके आश्रितों को भी अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। शास्त्रों में इस तथ्य का स्पष्ट संकेत दिया गया है कि मनुष्य के सत्कर्म ही उसके साथी हैं शेष सब मिथ्या है –

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे, नारी गृह द्वारि जनाः श्मशाने।
देहाश्चितायां परलोक मार्गे, धर्मानुगो गच्छति जीव लोकः।।

अर्थात् तुम्हारा धन भूमि पर रह जाएगा तथा गाय, भैंस, पशु खूँटे पर बंधे रह जाएंगे और प्रिय स्त्री घर के दरवाजे तक साथ देगी, भाई-बंधु एवं समस्त प्रियजन श्मशान तक साथ देंगे तथा तुम्हारा शरीर केवल चिता तक साथ देगा किन्तु तुम्हारा धर्म परलोक की अनंत यात्रा में सदैव साथ देगा और साथ रहेगा।

लोककवि ईसुरी सांसारिक नाते-रिश्ते के मिथ्यात्व को स्वीकारते हुए कहते हैं कि इस जगत में अपने पुरजन एवं परिजनों से मनुष्य का मिलन उसी प्रकार का है जैसा नदी और नाव का संयोग होता है। थोड़े समय के लिए ही हम परस्पर मिलते है और फिर अलग हो जाते हैं। मरणोपरान्त चिता पर कोई दूसरा साथ नहीं देता और यमराज का बुलावा आने पर कोई एक पल के लिए रुक भी नहीं सकता। इस संसार में सभी अकेले आते हैं और अकेले जाते हैं। ईसुरी फाग में लिखते हैं –

जौ है नदी नाव कौ भेरो, कऊँ हम कऊँ तुम खेलो।
मरती बेर धरत अरथी पे, दिखा न परत दुकेलो।
घर जैबे की घरी आये जब, एक घरी ना झेलो।
ईसुर कोऊ काऊ कौ नैयाँ, सब संसार अकेलो।।[१४]

जब इस संसार में अकेला आना है और रिक्त हस्त जाना है तो फिर मोहान्ध एवं लोभान्ध होने से क्या लाभ है? तथा 'अति तृष्णा न कर्त्तव्या' अर्थात् अधिक तृष्णा भी नहीं करना चाहिए। मनुष्य को चाहिए कि वह जगत के यर्थाथ सत्य को स्वीकारते हुए अपने जीवन में संयम, सदाचार, सुसंस्कारता एवं इन्द्रिय निग्रह पर बल दे। जैसा कि 'पद्म पुराण' में उल्लेख है-

यो दान्तो विगुणै र्मुक्तो नीति शास्त्रार्थतत्वगः।
ए चैश्च विविधैः प्रीतः स भवेत सुरलक्षणः।।[१५]

अर्थात् जो मनुष्य जितेन्द्रिय, दुर्गुणों से मुक्त तथा नीति शास्त्र के तत्वों को जानने वाला है और ऐसे ही नाना प्रकार के उत्तम गुणों से प्रसन्न दिखाई देता है, वह देव स्वरूप है।

लोक कवि ईसुरी भी कहते हैं – जो कोई योग युक्ति करना जानते हैं वे सीधे परमधाम को प्राप्त होते हैं। ऐसे लोगों के लिए ही ब्रह्मा ने बैकुण्ड की रचना की है। जब वे इस लोक से प्रस्थान करते हैं तब देवता उन पर फूलों की वर्षा करते हैं। और सब के देखते-देखते वे ब्रह्मलीन हो जाते हैं। फाग द्रष्टव्य है –

जो कोऊ जोग जुगत कर जानें, चढ़ चढ़ जात विमानें।
ब्रह्मा ने बैकुण्ठ रचो है, उनई नरन के लानें।
होन लगत फूलन की बरसा, जिदना होत रमानें।
ईसुर कात सबई के देखत, ब्रह्म में जात समानें।।[१६]

संसार में मनुष्य को अत्यंत सावधानी के साथ रहना चाहिए। वह मन, वचन और कर्म से किसी का अहित चिंतन न करे किसी से ईर्ष्या, द्वेष आदि न रखे। सदैव दूसरे के प्रति प्रेम, सौहार्द एवं सहयोग का भाव रखे वाणी से कभी भी कोई ऐसा शब्द न बोले जो दूसरे के कान तक पहुँच कर उसके हृदय को दुःखी कर दें। एक सज्जन व्यक्ति का व्यवहार कैसा होना चाहिए? इसका स्पष्ट संकेत 'पद्मपुराण' के इस श्लोक में मिलता है –

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समा चरेत्।।[१७]

अर्थात् धर्म का सर्वस्व क्या है, सुनो। और सुनकर उसका अनुगमन करो। जो आचरण स्वयं के प्रतिकूल हो, वैसा आचरण दूसरों के साथ न करो।

लोककवि ईसुरी भी कहते हैं इस संसार में संभल-संभल कर पैर रखो। धर्म के मार्ग का अनुगमन करो तथा राम का विस्मरण न करो। बुरे कामों और चुगलखोरी से सदैव बच कर रहो। यह कलियुग है अतएव यत्नपूर्वक समय काटो। यथा-

अपने सँवर सँवर पग धारौ, संसारी में यारौ।
चलबो करे धरम कौ मारग, रामैं नहीं बिसारौ।
बुरए काम, चुगली सें हरदम, कड़ियौ काट किनारौ।
जो कलजुग कौ वक्त 'ईसुरी', जतन जतन सें टारौ।।[१८]

मनुष्य स्वार्थ के वशीभूत होकर अनेक धर्म-विरूद्ध कार्य करता है। ईसुरी कवि समझाते हुए कहते हैं – हे मानव! क्षणिक सुख के लिए अपने धर्म ईमान को नहीं छोड़ना चाहिए। थोड़े से आनंद के पीछे करोड़ो जन्म बिगड़ जाते हैं। यह अटल सत्य है कि जो जैसा कर्म करेगा वैसा ही फल उसे भोगना पड़ेगा। अतः ईसुरी परामर्श देते हैं कि बुरे कर्यों से बचते रहो क्योंकि एक दिन परमात्मा के घर जाना है। यथा-

अपने को खेबे ईमानें घरी भरे के लानें।
एक बूँद रंग रस के लाने कोटन जनम नसानें।
जो जैसी करनी कर है सो देने पर है छानें।
जे बातें बरकाव ईसुरी परमेश्वर घर जानें।।[१९]

फिर यह भी तो शाश्वत सत्य है कि जिस घर अर्थात् शरीर में हम रह रहे हैं वह भी भाड़े का है। जिसे पिया अर्थात् परमेश्वर ने हमको रहने के लिए दिया है। इस घर की दीवारें कच्ची हैं और मिट्टी की बनी हुई है जिसका छप्पर घास-फूस का है। इसमें किसी प्रकार की ठीक व्यवस्था नहीं है न कोई परकोटा है। ऊपर से दस दरवाजे (इन्द्रियों के) खुले पड़े हैं। किबाड़ खिड़की एक भी नहीं, यह शरीर रूपी घर बिना चाबी ताले का है। ईसुरी कहते हैं – इस नश्वर घर में रहने का क्या लाभ? चाहे जब इसमें से निकाल दिया जाए।

बखरी रइयत हैं भारे की, दई पिया प्यारे की।
कच्ची भींत उठी माटी की, छाई फूस चारे की।
बे बंदेज बड़ी बेवाडा, जीमें दस द्वारे की।

किवार किवारियाँ एकऊं नइयाँ, बिना कुचीतारे की।
ईसुर चाय निकारौ जिदना, हमें कौन उआरे की।।[२०]

लोक कवि ईसुरी की चिन्तन दृष्टि अनुपमेय है वे मानते हैं कि यह जीवन परमात्मा का दिया हुआ है और निश्चित समय के लिए ही प्राप्त है अतः जितना हो सके मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म करने चाहिए। मीठी वाणी बोलना चाहिए। अपने मुख से कोई-भी ऐसा शब्द नहीं बोलना चाहिए जो दूसरों को पीड़ा पहुँचाए क्योंकि शब्द नित्य होता है इसका विनाश नहीं होता, इसीलिए हमारे यहाँ शब्द की बड़ी महिमा मानी गई है। शास्त्रकारों एवं कवियों ने मधुर शब्द बोलने का परामर्श दिया है। 'भविष्य पुराण' में कहा गया है -

न तथा शीतल सलिलं न चन्दन रसो न शीतला छाया।
प्रह्लदयति च पुरूषं यथा मधुर भाषिणी वाणी।।[२१]

अर्थात् शीतल जल, चन्दन का रस, अथवा ठण्डी छाया भी मनुष्य के लिए उतनी आह्लादजनक नहीं होती जितनी मृदु वाणी होती है।

लोक कवि ईसुरी भी कहते हैं सबसे मीठी बानी बोलो। यह जीवन थोड़ा है। हमारी वाणी हमें स्वर्ग का सुख प्रदान करती है और यही वाणी नर्क की यातना दे देती है। शुभ बोलने वाले हाथी पर बैठाए जाते हैं और अशुभ बोलने से मान घट जाता है। इसी वाणी के माध्यम से ही बड़े-बड़े ऋषिमुनि तर गए हैं। यथा -

सब सौ बोलो मीठी बानी, थोरी हैं जिंदगानी।
जेई बानी सुर लोक पठावै, जेई नरक निसानी।
जेई बानी हाती चड़बाबै, जेई उतारै पानी।
जेई बानी सों तरे 'ईसुरी', बड़े-बड़े मुनि ज्ञानी।।[२२]

अन्त में यह कहना समीचीन होगा कि जब वर्तमान समय में राष्ट्र का नैतिक चरित्र हासोन्मुख हो रहा है। मन की मलिनता निरन्तर बढ़ती जा रही है। अन्तःकरण की पवित्रता भी नष्ट हो रही है। ऐसी स्थिति में हमारी आर्ष मनीषा एवं कवि मनीषा इस दिशा में पथ-प्रदर्शन का कार्य कर सकती है। उनके द्वारा दिए गए सूत्रों के चिंतन-मनन से मन निर्मल हो जाएगा एवं अन्तःकरण पवित्र हो जाएगा। तब आत्मोत्कर्ष एवं आत्म कल्याण का मार्ग खुल जाएगा। जिससे न केवल व्यक्ति का उन्नयन होगा वरन् समाज, राष्ट्र एवं संस्कृति का भी अभ्युत्थान होगा।

संदर्भ -

१. कान्ति लाल बल्देव राम व्यासः वसंत विलास प्राक्कथन पृ० ३८
२. कल्याण नीतिसार अंक जनवरी एवं फरवरी २०२२ ई. गीताप्रेस गोरखपुर पृ० १७१
३. वही, पृ० १७३
४. शुक्राचार्य : शुक्रनीति ११५
५. वाल्मीकि : श्री वाल्मीकि रामयण ७/१५/२२
६. घनश्याम कश्यप : ईसुरी की फागे पृ० ७८
७. वही, पृ० ११४
८. डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त : ईसुरी की प्रामाणिक फागें पृ० ५८
९. वह, पृ० ५६
१०. वेदव्यास :
११. गोस्वामी तुलसीदास : श्रीराम चरितमानस ७/४०/१
१२. डॉ० नर्मदा प्रसाद गुप्त : ईसुरी की प्रामाणिक फागें पृ. ५८
१३. रमेश गुप्त : बसंत के रंग पृ० ७८
१४. वही, पृ० १४५
१५. पदम पुराण सृष्टि ७/४/१३४
१६. रमेश गुप्त : बसंत के रंग पृ० १५१
१७. पद्मपुराण सृष्टि १९/३५७/३५८
१८. घनश्याम कश्यप : ईसुरी की फागें पृ० ८२
१९. रमेश गुप्त : बसंत के रंग पृ० १४३
२०. वही, पृ० १४८
२१. भविष्य पुराण ब्रह्म पर्व ७३/४८
२२. घनश्याम कश्यप : ईसुरी की फागें पृ० ८६

- प्रोफेसर, हिंदी, 'श्रीकृपा निकेत', आदर्श नगर,
हायर सेकेण्ड्री स्कूल नं. ०१ के पीछे, छतरपुर (म.प्र.) 卐

पनहारी

-प्रभुदयाल श्रीवास्तव 'पीयूष'

अंग अंग अल्हड़ पन भरकें, भरकें नेह नजरिया
चलत चपल चंचल पनहारी, ओढ़े चटक चुनरिया
समर समर धरती पग धरती, रै रै आँगें बड़रइ
उनके उन अरूनारे अधरन सें मुसकानें झड़रइ
रूप रंग दमकत है ऐसें, जैसे चड़ी दुपरिया चलत चपल.......
घैला पसकें खूबइ कसकें, उमरा देतीं नैचें
बे नटखट मनमथ घट मटकत, जब घट ऊपर खैचें
धनियाँ की करधनियाँ झूलत, लचकत लरम कमरिया चलत चपल...
चलरइ पवन झकोरा लै लै अँचरा उड़ उड़ जावै
पानी भरतन उनें देख कें, पानी भर-भर आवै
रसकी भरी गगरिया अपने सिर पै धरें गगरिया चलत चपल...
खेप धरें गागर घैला की, एक हाँत लयें डोरी
विजयी मुद्रा में घूंघट पट, खोलत करत किशोरी
गगर छलकतन भींजत है तन, निगतन लेत लहरिया,चलत चपल...
भार न कछु गागर घैला कौ, रूप रास है भारी
कैसे कें चल पाइ हुइयै,चलत फिरत फुलवारी
कोंमल कदम सुकोमल तरवा,ककरन भरी डगरिया, चलत चपल
गोला मों कजरारीं आँखें, हँस हेरन प्यारी की
बा नोंनी छबि बसी हिये में, बानोंनी बारी की
देखौ तौ चमकत आरइ 'प्रभु', बदरा बिना बिजुरिया
चलत चपल चंचल पनहारी, ओढ़े चटक चुनरिया

- चित्रांश कॉलोनी, वर्मा शैल पेट्रोल पंप के पास
टीकमगढ़ (म.प्र.) पिन-472001 卐

अनेक राम कथाओं के लेखक नवल सिंह प्रधान

–एन.डी. सोनी

रामायण या रामचरित मानस का नाम लेते ही मन में एक पवित्रता का भाव अपने आप आ जाता है। बरबस ही 'तुलसीदास चन्दन घिसत तिलक करत रघुवीर' का चित्र आँखों के सामने आ जाता है। कविवर रहीम याद दिलाते हैं – 'चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवधनरेश। जा बिपदा परत है, सो आवत इहि देश।' इहि देश यानि बुन्देलखण्ड, जहाँ राम अयोध्या से ओरछा रानी कुँवर गनेश की गोद में आये और आज भी राजा के रूप में यहाँ विराजमान हैं। उस समय की स्वर्ण नगरी ओरछा भले ही उजड़ कर पुनः बसी हो मगर आज भी वहाँ के महल मंदिर, किले और बेतवा के कंचना घाट स्थित मकबरों की बहुआयामी शिल्पकला तथा हरीराम व्यास, मित्र मिश्र महाकवि केशव दास और उनकी नृत्यांगना शिष्या प्रवीण राय के निवासों को देखने देश–विदेश से लाखों पर्यटक आकर अपने आप को धन्य मानते हैं। बुन्देलखण्ड यानि विश्व प्रसिद्ध खजुराहो के मंदिर, मैहर की शारदा माई, मंदिरों की नगरी पन्ना जहाँ प्राणनाथ के आशीर्वाद से वीर छत्रसाल के घोड़े की टापों ने रत्नगर्भा धरती को नापने के साथ ही बुन्देलखण्ड की सीमाओं का विस्तार किया (इत यमुना अत नर्मदा ......) बुन्देलखण्ड जिसके जल, जंगल और पहाड़ों ने ऋषि–मुनियों, प्रतापी राजाओं और अनेक कवियों के साथ महात्मा तुलसीदास को जन्म दिया है। प्रसिद्ध कवियों के अलावा यहाँ ऐसे अगणित कवि हुए हैं जिनके ग्रन्थ प्रकाश में नहीं आ सके। ऐसे ही कवियों में एक हैं स्वर्गीय नवल सिंह प्रधान, जिनके ग्रन्थों की खोज अनेक साहित्यकारों के साथ ही नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी ने सन् १९०६ से १९०८ के बीच की। इसमें उनके ३० ग्रन्थों का उल्लेख है।

कवि नवल सिंह के जो हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध हुए उनसे उनकी बहुमुखी प्रतिभा उजागर होती है। नवल सिंह जी ने जहाँ राम कथा और कृष्ण कथा पर अनेक ग्रन्थों का लेखन किया, वहीं अन्य विषयों पर भी कलम चलाई है। रामचन्द्र शुक्ल जी ने नवल सिंह के २९ ग्रन्थ खोजे तो बाबूलाल जी गोस्वामी ने ३२ ग्रन्थों की बात कही। नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा जिन ३० ग्रन्थों की खोज हुई उनमें बृजभूमि प्रकाश और उर्दू रामायण नहीं है। इन्हें मिलाकर ३२ ग्रन्थों की बात सही बैठती है। खोजकर्ताओं में कुछ ने उन्हें झाँसी का, कुछ ने दतिया का और कुछ ने समथर का बताया है जबकि टीकमगढ़ के उनके वंशज उनका जन्म टीकमगढ़ में बताते हैं। चूंकि नवल सिंह जी कार्यस्थली उपरोक्त चारों नगर रहे हैं और सभी नगरों में उन्होंने ग्रन्थों की रचना की इसलिए विवाद भी लाजमी है। नवल सिंह को संस्कृत, हिन्दी और उर्दू भाषाओं का अच्छा ज्ञान था इस बात की पुष्टि तीनों भाषाओं में लेखन से होती है। उन्होंने संस्कृत के ग्रन्थों का गहन अध्ययन करके राम और कृष्ण के चरितों को विभिन्न हिन्दी ग्रन्थों के माध्यम से हिन्दी के पाठकों तक पहँचाने का सराहनीय कार्य किया है। जहाँ एक अच्छे कवि होने के नाते नवल सिंह ने अधिकांश ग्रन्थों की रचना पद्य विधा में की है, वहीं उर्दू रामायण गद्य लेखन की कुशलता की परिचायक है।

इस आलेख में नवल सिंह रचित राम कथा से सम्बन्धित उनके बारह ग्रन्थों की चर्चा का प्रयास है। ग्रन्थों की चर्चा का मूल आधार नागरी प्रचारिणी सभा की हिन्दी ग्रन्थों की खोज तथा कुछ अन्य संदर्भ ग्रन्थ है। यहाँ ग्रन्थों की चर्चा राम के जीवन क्रमानुसार इस प्रकार है।

१. जन्मखण्ड – अट्ठानवे (९८) पृष्ठों के इस ग्रन्थ में रामचन्द्र जी के जन्म और बाल चरितों का वर्णन है जिसे कवि ने रामचन्द्र बिलास का एक अंग माना है। वर्णन में दोहा, चौपाई, सोरठा व छन्दों का प्रयोग है। ग्रन्थ का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है–

"श्री गणेशाय नमः ।। श्री सीता रामचन्द्राय नमः
अथ श्रीमद्रायचन्द्र बिलासान्तर्गत जन्म षंड प्रारम्भ।। दोहा।।
जन्मोत्सव श्री राम कौ वरनहिं मोद प्रदान।।
युक्ति भरन कलमल हरन करन मुक्ति अवसान।।१।।
चौपाई–
उमा विनय कीनी जुर हाथा।।
आदि षंड तुम भाषे उ नाथा।।"

उमा–महेश्वर संवाद के रूप में लिखे गये ग्रन्थ की भाषा सहज ग्राह्य है। ग्रंथ का अन्त सोरठा के साथ करते हुए लेखक का मुकाम दिया गया है – सोरठा

तैसहि सव सुत व्रात।।
उठ प्रभात कर नित्य क्रम।।
षेलन (खेलन) हित हरषात।।
आवत प्रभु के निकट मह ।।१११।।

इति श्रीमद्रामचन्द्र बिलासे उमा महेश्वर संवादे प्रधान नवल सिंह विरचिते श्री राम जन्म षंडे सरजू उतपत्ति वर्णनं नाम द्वादसोध्यायः १२ जेठय सुदि ४ संवतु १९२४ मुकाम टिकमगढ़ मध्य।।"

२. पूर्व श्रृंगार खण्ड – यह पुस्तक १०५ पृष्ठों की हैं जिसमें राम को रसिक सिरोमनि बताते हुए उनकी लीलाओं का वर्णन किया है। राम का विद्याग्रहण, आखेट एवं रास क्रियाओं को उमा–महेश्वर संवाद में दर्शाया है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही कवि स्पष्ट लिखता है – "वंदहु रास रसिक रघुनन्दन।। रसिक सिरोमनि सिव अज वंदन।। आखेटक के षेल (खेल) सुहाये। विद्या के अभ्यास सुनाये।।" ग्रन्थ का समापन करते हुए वे अपनेको श्री सरन रामानुज दासभिधेय प्रधान नवल सिंह लिखते

हैं जो कवि का उपनाम और नाम दर्शाता है। ग्रन्थ के समापन पर।।इति श्री पूर्व श्रृंगार षंडे संपूर्नम।।सुभंभयातु।।आसाढ़ वदि ११ बुधे संवत १९५५ मुकाम टीकमगढ़।। लिष्यतं लाला राम सेवक।।'' लिखा गया है। रामसेवक लिपिकार होना चाहिए।

३. सीता स्वयंवर - ग्रन्थ के नामानुसार इसमें सीता स्वयंवर और परशुराम संवाद की कथा १४८ पृष्ठों में कही गई है। ग्रन्थ के शुरू में ही बड़ा सुन्दर दोहा लिखा गया है - ''तिय मुष सुन सिय आचरन सुमरहि जनक महेस।। तिन। सासन कर धनुष पन रचै स्वयंवर वेस।।'' आगे चौपाई में कवि कहता है ''जय ज य हर को दंड विषंडन।। जय जय माला उर मंडन।। जय जय जामदागिन भ्रम भंजन।। जय जय सुर सज्जन मनरंजन।।'' नवल सिंह जी के वर्णन में शोभा और सादगी की जो विशेषता है वह प्राय: सभी ग्रन्थों में देखी जाती हैं।

४. राम विवाह खण्ड - अन्य ग्रन्थों की तरह इस ग्रन्थ को भी उमा-महेश संवाद से शुरु किया गया है। उमा की शिव से विनय है कि ''अब विवाह उत्सव प्रभु केरा।। सुनवे कौ हुलसत मन मेरा।।'' इस प्रसंग में शिव जी का कथन इस प्रकार है - ''श्रवन करहु गिरजे चतुर तुमे राम जस चाह।। मंगल कौ मंगल करन सिय रघुवीर विवाह।।'' मुझे लगता है कि नवल सिंह ने अपने वर्णन में तुलसीदास जी से बहुत कुछ सीखा है और उनका लेखन अनेक जगह उनके समकक्ष लगता है। छन्द की ये पंक्तियाँ अवलोकनीय हैं - ''लागी सुअवधि दिषान मुदित प्रनाम सबही ने करी।। गुरु कह्यौ करब निवास चलब प्रभात अति सुंदर घरी।। जह असिस मंगल मूल राम विवाह मंगल मानियै।। जे पढ़हि गावहि सुनहि सुमरहि तिनहि सुभप्रद जानियै।।''

५. मिथिला खण्ड - कवि ने रामचन्द्र विलास के अंतर्गत ग्रन्थों की एक श्रृंखला बनाई है। उसी श्रृंखला में यह ग्रन्थ भी है। रामचन्द्र विलास से तात्पर्य राम की ऐसी लीलाओं से है जो राम के साथ ही उनके परिजनों, सम्बन्धियों, दर्शकों, भक्तों और वर्णन के अध्येताओं को आनंदित करती हैं। विवाह पश्चात, मिथिला में जो आनन्द बिखरा वही इस ग्रन्थ में वर्णित है। पाठकों को ये पक्तियां भी आनन्द में डुबाती हैं- ''वातें दसरथ सदन की रानिन प्रति कहि धाइ।। सिय तन तैं तिम वधुन प्रति सुभगा कहहि सिहाइ।।१।। चौपाही।। जय जय श्री मिथलेश कुमारी।। जय अवधेस कुमार बिहारी।। जय दंपति मिथिला किय भूषन।। जय मैथिल कुल कौमुद पूषन।। वंद चरन वर क्षेम निवासा।। बरनहु मिथला के सुविलासा।।'' यह ग्रन्थ ११७ पृष्ठों में मुकाम टीकमगढ़ में १९२७ संवत में लिखा गया।

६. विलास खण्ड - नवल सिंह जी का यह ग्रन्थ रस से सरावोर है। इसमें विवाह पश्चात् राम और उनके अनुजों के परिवार सहित आनन्द का वर्णन है। उमा का शिव से अनुरोध ग्रन्थ की विषय वस्तु को स्पष्ट करता है। यथा - ''नाथ राम कौ कहेउ विवाहू।।अब वरनिय श्री अवधि उछाहू।।सीतादिक वहुयें जे आईं।। केहि विधि कौसल्या लड़ल्याई।।'' सब परिनय उत्तर की लीला।। भाषहु प्रैम निरत सुभ सीला।।'' उमा के अनुरोध अनुसार ही कवि ने ग्रन्थ की शुरूआत की है - ''सुभग कुतूहल ब्याह के वरनहि मोद प्रदान।। आयैं बहुत वरात के मंगल विविध विधान।। महा रुचिर रस कौ जु निवासा।। वरनहु सानुज जुगल बिलासा।।''

विवाह पश्चात् बरात के अयोध्या आने पर राम और अनुजों की मातायें किस प्रकार महलों में बहुओं की आवभगत करती हैं इसका वर्णन भारतीय संस्कृति और पारिवारिक स्नेह को करने वाला है। यथा - ''उत्तरी सीतादिक सुकमारी।। आगे आन मिली लई लगाय कंठ सन ऐसै।। विछुरी फनिहि मिलै मन जैसे।। चूम बदन सूंघ प्रवीनी।। मुद आसुन सौं सिंचित कीनी।।'' कवि ने बुन्देलावासी होने के कारण मतवारी शब्द का सुन्दर प्रयोग करते हुए सास के मिलन की जो उपमा दी है वह अद्‌भुत है। ग्रन्थ झाँसी मुकाम १९०७ में लिखा गया।

७. अध्यात्म रामायण - इस रामायण में अयोध्याकाण्ड का वर्णन है। राम विवाह के बाद दशरथ जी के महलों में आनन्द का वातावरण है। इसका संक्षिप्त वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है- ''एक समय निज मंदिर माही। सोभित दंपति राम गुसाहीं।। रतन दंड अस चवर पुनीता।। ढोरत लिलत ऊपर सीता।। आगे राम के वनवास का वर्णन है। वनवास में क्या होगा संक्षिप्त सार इन पंक्तियों में है - ''पुत्री पतिवृत्ता कर आगैं।। प्रिय ढिग रहियौ अनुरागैं।। दस सिर जीति सुरन सुष दैहैं।। कुशल राम अवधहि अैहैं।।''

८. रामायण कोश - इस ग्रन्थ में राम जन्म से लेकर उत्तर काण्ड तक का वर्णन है। कोश किस हेतु लिखा गया यह कवि की वाणी में ही जानिये - ''राम अयन है राम नाम के अैन।। कहौं नाम रामयनहि नाम न मैं मति कोस दोहि दोहा रचत पढ़ सब होंइ समर्थ।। क्रम सों राम चरिल लगत जाहि जिन अर्थ।।'' दोहों का प्रयोग करते हुए कवि ने अपने बारे में भी लिखा है - ''नवल सिंह कायस्थ कुल श्री वास्तव सन संप्रदाय श्री वैष्णवी दुतिय श्री सरस नाम।। तिहि मैं तिन मति भूषित करी प्रसार।। बहु वस्तुन के नाम जुत दोहा रचे विचार। भुक्ति मुक्तिहि लहै पढ़ सुन समझ सु देष।। विविध नाम संग्याहोवहु ग्यान विसेष ।।''

९. आल्हा रामायण - बुन्देलखण्ड में आल्हा मनोरंजन का एक स्वस्थ साहित्यिक स्वरूप है। वीर रस का यह काव्य विशेष रूप वर्षा ऋतु में गाया और सुना जाता है जो लोगों में जोश भर उनकी भुजायें फड़काने की सामर्थ्य रखता है। आल्हा का अपना छन्द है। जिसमें रामायण लिखकर नवल सिंह जी ने राम बुन्देली स्वरूप देने का एक प्रयास किया है। ग्रन्थ का प्रारम्भ इस प्रकार किया गया है - ''श्री रामानुज चरन भज भज राम दास।। आला रामायन भनत समझत अल्प प्रयास।। सब वसतन सरस जो आला कहियत ताहि।। त्यों सव देव कथान में आलाजाहि'' कवि राम और आल्हा की महिमा बताते हुए आल्हा छन्द में कहता है -''आला जे जन भजत राम कौ करै न पिय की आस। आला लैषे राम भजन कौ तेई सत्य राम के दास। आला जथा राम की पूजा आला है जिम नाम। तैसे जह आला रामायन जन के पूर्न करै सब काम।'' इस प्रकार

पूरी रामायण आला छन्द में लिखी गई है। अन्त में कवि स्पष्ट करता है कि – ''आला छंदन की चौकरी कही सात सै सोइ।। करहै निज अभ्यास गान मै जिनके चित्त आला रुचि होइ।। आला के लालच सौं जे जन पढ़ हैं श्रवन कराहि।। गाहै वही सौ नीकैं ते सब अंत परम पद जाहि।।'' कवि के अनुसार उत्तर काण्ड की समाप्ति भादौ वदी।। संवत् १९३७ को मुकाम झाँसी में हुई।

१०. रूपक रामायण – बारह पृष्ठों की यह छोटी रामायण लोगों को नित्य पारायण हेतु लिखी गई प्रतीत होती है। इसे हर गीतका छन्द में लिखा गया है, यह बात कवि प्रारम्भ में ही स्पष्ट करता है – ''हर गीतका सुभ छन्द मैं श्री सरन मै मन मण्डनी।। वितनोतु रूपक नाम रामायन महा अघ षंडनी।। प्रतिरूप परम अनूप मति अनुरूप बरनत प्रीत सौं।'' जिहि पढ़त समुझत सुनत वाधित होइ नहि भव भीति सौं।। रघुवंश के प्रति राम के कारण पूजा की जो आस्था बढ़ी उसकी सराहना और विश्वास से कवि भी ओत-प्रोत है – ''तिहि तै सुपोषन प्रजन कौ रघुवंस कौ विस्तार कौ।। नय निपुन तिन राजान सोभित सर्व विधि संसार भौ।। अकलेस कर्म रमेस के सव जनन हित जग में करैं।। जे सुनहि गावाहि करहि सुमरन निरघ हो कैं ते तरैं।।''

११. रामायण सुमिरनी – भगवान राम की गाथाओं को भक्तों द्वारा सुमरन करने हेतु यह चार पृष्ठों की छोटी-सी पुस्तक नवल सिंह ने लिखी है। भवसागर पार करने में यह सुमिरनी माध्यम बने यही कवि का ध्येय है – ''हृदय की सोधिनी है ग्यान की प्रबोधिनी है कुमति विरोधिन है कल्मष की हरनी।। संत मन रंजन है प्रीति भ्रम भंजन है नीति द्रग अंजन हैं मंगल की करनी।। भक्ति कौ सु कारन है अधम उघारन है तारन अपार भव सागर की तरनी।। वंदौ पद माथ धर साधुन के साथ करौ हाथ रघुनाथ जू की गाथ की सुमिरनी।।''

नवल सिंह प्रधान कृत उपरोक्त काव्य ग्रन्थों में क्रमांक २ से लेकर क्रमांक ७ तक के सभी ग्रन्थों में माधुर्य रस की प्रधानता है। राम और सीता के श्रृंगारी रूप और उनकी रास क्रीड़ाओं का वर्णन कवि ने सफ्लतापूर्वक किया है। डॉ. रेणु श्रीवास्तव ने नवल सिंह जी के विलास खण्ड का विशेष अध्ययन कर उसकी विशेषताओं को लिखा है। उनके अनुसार 'रास खण्ड में' भक्ति के माधुर्य रूप का दर्शन होता है, भीतर-भीतर श्रृंगार उपासना और बाहर-बाहर मर्यादा भावना देखने को मिलती है। मधुर रस के विषय श्रीराम परम सुन्दर, परम मधुर, बलिष्ठ, नवयौवनशाली, प्रिय भाषी, कृतज्ञ, विदग्ध रमणीजन मनोहारी और सौंदर्यशाली हैं। उनकी रास-क्रीड़ा से सभी का मन विमोहित हो जाता है। रास का वर्णन कृष्ण-लीला में बहुत मिलता है मगर राम रास के विषय को कुछ विशिष्ट कवियों ने ही छुआ है जिनमें श्री नवल सिंह भी एक हैं। उन्होंने राम के श्रृंगारी रूप और मधुर क्रीड़ाओं व विलास के क्रिया-कलापों का उत्कृष्ट और संयत वर्णन सफ्लतापूर्वक किया है। उन्होंने अपने काव्य में उस समय प्रचलित सभी प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया। उनकी भाषा सरल व सहज ग्राह्य होने के साथ ही मधुर है। उस समय की प्रचलित भाषा आज से कुछ भिन्न हो सकती है। जैसे तालव्य श का प्रयोग अनेक शब्दों में जहाँ होना चाहिए वहाँ नहीं होता था। ख अक्षर की जगह ष का प्रयोग, ब की जगह व का प्रयोग और ण की जगह न का प्रयोग उस समय होता था और वह नवल सिंह ने भी किया है जिसे पाठकों का ध्यान में रखना चाहिए। कौमा या अर्धपूर्ण विराम का प्रयोग भी प्रायः नहीं हुआ है। उनकी लेखन-शैली और भाषा अनेक जगह गोस्वामी तुलसीदास की रामायण से मेल रखती हुई प्रतीत होती है।

काव्यमय राम कथा के ग्रन्थों के अलावा नवल सिंह जी ने गद्य में भी रामायण का लेखन किया है जो 'उर्दू रामायण' के नाम से है। नवल सिंह प्रधान कृत 'उर्दू रामायन' के सम्बन्ध में श्री के.बी.एल.पाण्डे ने अपने लेख में स्पष्ट किया है कि लेखक ने उर्दू रामायन को स्वयं तवारिख कहा है जिसमें घटनाओं की तिथियाँ दी गई हैं। ग्रन्थ के नाम से उसकी भाषा उर्दू होना चाहिए मगर वह शुद्ध उर्दू न होकर उर्दू के शब्दों के साथ उस समय की प्रचलित (हिन्दी-उर्दू) भाषा का प्रयोग गद्य लेखन में हुआ है। गद्य के रूप में बृजभाषा की प्रकृति के साथ कुछ बुन्देली शब्दों का हुआ है। गद्य के रूप में बृजभाषा की प्रकृति के साथ कुछ बुन्देली शब्दों का भी प्रयोग है। उदाहरण स्वरूप-'तव रामन ने फरेब कर कालनैम कौ रास्ता छेड़ राजनै वास्तै भेजा।। तिसनैं हनूमान कौ फरेव सौ बातौं में लगाइ विलमायै चाहा।' नवल सिंह ने सरल छोटे वाक्यों का प्रयोग किया है। पाण्डेय जी ने यह स्पष्ट किया है कि लेखक ने स्वीकारा है कि उन्होंने उर्दू रामायन समथर स्टेट के मुख्त्यारकार रहते मेजर डंकिन मालकम साहिब बहादुर के हुकुम से बनाई। इकसठ् पृष्ठों का यह ग्रन्थ संवत् १९११ में लिखा गया। लेखक के अनुसार इस रामायण का उपजीव्य ग्रंथ 'रघुवंश' है। रामायण वर्णन शैली में लिखी गई है। इसका विशेष महत्व यह है कि प्रचलित भाषा और विद्या से लिखी गई राम कथा है।

उक्त बारह ग्रन्थों के अतिरिक्त नवल सिंह कृत २० और ग्रन्थ हैं जो कृष्ण कथा, भाषा, काव्य तथा अन्य विषयों पर लिखे गये हैं जों हमारी विषय वस्तु में नहीं हैं। इतने अधिक सफ्ल लेखन के बाद भी कवि का प्रकाश में न आप दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ –

१. हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों की खोज का विवरण भाग३, संपादन डॉ. श्याम सुन्दर दास

२. ठाकुर नवल सिंह प्रधान कृत रामचन्द्र विलास: पाठालोचन एवं मूल्यांकन, डॉ. रेणु

३. दतिया उद्भव एवं विकास, सम्पादक डॉ. के.बी.एल पाण्डेय

४. मिश्र बन्धु विनोद

५. बुन्देली बसंत २००७ – पृष्ठ १०१ व १०२

– राजमहल के पास, टीकमगढ

मोबा0-7999375995 卐

कहानी-

भोर के भूले

-अनीता श्रीवास्तव

बिलात दिनन सैं परिहार जू के मुखमंडल की आभा मुरझाए फूल घाईं होत जा रई ती। वे अपने आप में गुमसुम रहन लगे ते। अखबार पड़त ते सो ऐसो लगत तो जैसें अखबार देख भर आ रए। टी वी देखती बेरां उनको मौ फर्श पै बिछी टाइल्स घाई सपाट दिखत तो; मानै चेहरा पै कौनउ भाव न दिखात ते। भीतरई भीतर जैसें कछू मर रओ होए। हाँ, बे खुद मगर जियत हते- खा-पी, सो, बोल रए ते, जियत मांसन की नाईं। उनकी घरबारी नै भी अब टोंट कसबौ छोड़ दओ तो। घरवारी मानै निर्मला, बे हमेशा ई बात पै नाखुश बनी रई कि परिहार जू नै मौड़ा खौं बिदेस जाबे की अनुमति काए दई। ई बात पै बिलात टें-टें हो चुकी ती, सो अब निर्मला जू तटस्थ भाव सैं रैबे कौ अभ्यास करन लगीं तीं ,मगर, ई काम में उनके दुख भरे मातृत्व के कारण बिघ्न पर जात तो।

''तुम तौ जाय पल्लू सैं बांद् कैं राखबौ चाउतीं निर्मला। इतेक ममता कुन अच्छी होत! तुम घर में कुड्डत रैओ सो बाहर ऊकौ मन न लगहै काम में।'', बड़े प्रैम सैं समझाई ती परिहार जू नै, लेकिन निर्मला ऐसे मौकन पै खालिस मताई हो कैं रै जात ती, ''मताई और बाप के जिउ में अंतर होत। अपुन नई समझ सकता परिहार जू!'' कतन, दनदनात चली गईं।

निर्मला और परिहार जू के बीच ,बेटा नवल के कारण, आए दिन किड़ी कौं-कौं हौन लगी ती। मौड़ा उनसैं दूर तौ तबई हो गओ तो जब ऊँची पढ़ाई पढ़बे गओ तो; मगर निर्मला जा आस लगाऐं हतीं कि लरका खौं सरकारी नौकरी मिल जैहै, फिर देर-सबेर तबादला करा कैं अपने घरै आ जैहै। लेकिन अब उनैं अपनी आस टूटत दिखा रई ती। बे तनक निराशा भरे सुर में बोलीं, ''कम्पनी की नौकरी में जा रए सो अब तौ उनै सदा महानगर में रनैं।''

परिहार जू नै ऐसैं समझाओ जैसैं कि लरका-बिटियन खौं समझाओ जात, बोले, ''देखौ नवल की अम्मां ,नवल के संग के सबरे लरका पनैंयां चटकाउत फिर रए कौनऊं खौं धेला कौ काम नई मिलो। अपने नवल की तौ किस्मत अच्छी निकरी कि ऊ कौ कैम्पस सिलेक्शन हो गओ। तुमै तौ खुस भओ चइए। बात खौं समझौ नवल की 'मॉम' ''...हें हें हें...''

...लेकिन परिहार जू की मसखरी भी निर्मला के ओंठन पै मुस्कान न लिया सकी। एक बेटा और एक बिटिया के बाप लालमणि परिहार की, बिटिया बिदा भए के बाद सैं एकई साध हती कै बेटा कमाउन लगै और ऊकीं चैयां -मैयां पर जाऐं। नवल नै कम्पनी जॉइन करी औ बिटिया वारे देरी खूंदन लगे। परिहार जू औ निर्मला कछू कते, ई के पैलां बिटिया निधि ने फोन पै अपनी मताई खौं बता दई कि भैया नै अपनी कम्पनी में संगै काम करबे वारी एक लड़की पसंद कर लई।

निधि की बात सुन कैं निर्मला रै गई मौ बाऐं.....मनौ ज सुनकें कलेजे में तनक ठंडक सी परी कि बिटिया अपनी बिरादरी की है........परिहार जू खौं बताई सो वे खिच्चया परे, ''न भी होती अपनी बिरादरी की तौ तुम का कर लेतीं?'' चोट खा कैं दोई जनैं एक दूसरे सैं अपनी चोट छुपाउत भए ब्याऔ की तैयारियन में व्यस्त हो गए।

ब्याऔ के बाद, नवल परिहार अपनी नई नवेली दुलैया जू के संगै बंगलौर में हँसी-खुशी दिन बिताउन लगे। इतै परिहार दम्पति भगवान सैं दोईयन की खुशहाली की प्रार्थना करत भए अपने रोज के काम काज में लग गए।

एक दिना, सोबे के पैलां, निर्मला की छाती में बबूला सौ उठो, कन लगीं, ''आज ईकौ फौन नईं आओ?'' कह कैं बे परिहार जू कौ मौ देखन लगीं........ ''तुमैं फौन करबे के अलावा उन औरन खौं कौनऊं काम नइयाँ, है कै नईं!....'' परिहार जू नै टोंट कसो औ मौ फेर कैं पर रए।

असल बात तौ जा है कि दोई जनन खौं दिन भर बेटा-बहू के फौन को इंतज़ार रहत तो....बाटई हेरें रहत ते। जब तक बात न हो जाए उन औरन कौ मन कौनऊ काम में न लगत तो......फिर भी दोई जनै अपनी-अपनी व्याकुलता एक दूसरे से दुकाबे की कोसिस करत ते।

पुरुष खौं ऊ कौ पौरुष दुर्बल नईं दिखन देत, भलाईं भीतरई-भीतर टूट जाए। मगर स्त्री से जे बातें दुकाउतन नईं बनतीं।

''अच्युतम केशवम......'' रिंग टोन बज उठी। परिहार जू नै तुरतईं लपक कैं मोबाइल उठा लओ। निर्मला पालक सोदबौ छोड़ कैं झट्ट बगल में आन ठांड़ी भई। कुशल-खैरियत कीं बातें जल्दी बड़ा गई और परिहार जू नै मोबाइल निर्मला की तरपन बड़ा दओ।

''तुम तौ हमें जा बताओ कि तुम्हें चीन काए खौं जानैं?''

''ज़रूरी है मॉम। इट्स अ ग्रेट ऑपर्चुनिटी फ़ॉर मी।''

''लेकिन बेटा, पूनम(बहू), ऊ कौ का हुईए? बा बिचारी कहाँ रैहे?''

''वो मेरे साथ ही जाएगी...''

आगें कछू नई सूझी निर्मला खौं ....फौन कट गओ। निर्मला नै पति परमेसुर की तरपन मौ घुमा लओ। औ जैसी सुनी ती सो बताउन लगीं, ''मौड़ा चीन जाबे की कै रओ। कम्पनी पौंचा रई।''

परिहार जू,''हूँ.......'' वे अपनी खिचड़ी दाढ़ी हाथ पै टिकाएं दूर कहूँ देख रए ते।

निर्मला, ''कछू कत काए नैइयाँ!''

''का करें......''

''रोकौ बाए''

''तीस लाख कौ पैकेज हो जैहै!''

निर्मला नैं सुन कैं गटा काड़ दए, ''मतलब तुमैं सब पतौ है!'' परिहार जू संयत स्वर में बोले, ''हमाओ ऊ सैं बतकाव हो चुको। बे दोई जनै पैलऊं चीन जाबे कौ मन बना चुके हैं।''

निर्मला जू, ''काए पइसा सब कछू होत का? बाप-मताई कछू नई होत? आगैं बुढ़ापे में हम कौन के सहारे जीहैं ?''

''भगवान के'' परिहार जू नैची मुड़ी करैं बुदबुदात रै गए।

तीज-त्योहारन पै वीडियो कॉल आऊन लगे। ऐसे मौकन पै निधि बिटिया भी ज्यादातर मायकें आ जात हतीं; सो, वे और उनके मौड़ा-मौड़ी समेत घर के सबइ जनै अपनो-अपनो काम छोड़ कैं गोला बना कैं बैठ जात ते। सबरे के सबरे मोबाइल के कैमरा में झाँकबे की कोसिस करन लगत ते। ऐसई एक मौका पै घर में लगी केसर बाई सामने पायदान सरका कैं बैठ गई और तनक मिठ्या कैं निर्मला सैं बोली, ''जिज्जी हमें दो दिना की छुट्टी तौ दै दो।''

निर्मला-''काय। छुट्टी काय चानें? बीमार सीं तौ तुम लग नहीं रईं!''

केसर-''महादे बब्बा की किरपा है जिज्जी,सब कुशल- मंगलहै। बात ऐसी है कि हमाए बेटा-बहू आ रए मुरादाबाद सें सो कछू समय उनके संगै बिताऊँनै और.............''

''और का.....?''निर्मला एकटक ऊ कौ मौ देखन लगीं। बाए पतौ लौ नैइयाँ कि मैं काम पै लगी हौं......''

निर्मला नैं सुनी सो रै गई। कछू बोल ना निकरे मौ सैं। भगवानई जान सकत , उनखों तो जलन सी होंन लगीं केसर के भाग पै........मनईं मन वे केसर सैं अपनी तुलना करन लगीं ....'कहाँ केसर कहाँ हम ...मगर.......फिर भी......हैं तो दोई स्त्री हैं तौ दोई मताई.....हम्म्म्म........'

निर्मला की छाती में गतकौ सौ लगो, अकेलें करतीं का ? सो रै गईं मौ में ऊमर सौ ठूँस कैं। मगर उनकी चुप्पी खों केसर ने छुट्टी की मंजूरी समझ लई। पैर चप्पलें निकर गई।

''कित्ते दिनन के लाने जा रए चीन?'' निर्मला नैं पूछ धरी परिहार जू सैं काए सैं कि उनै उम्मीद हतीं कि बाप होबे के नाते उनके पास तनक ज्यादा जानकारी हुईए।

''कै तौ रए कि छै महीना!''

मगर ऐसई कत-कत महीना और साल बीतत गए। ई दिवारी, ऊ होरी तौ कभऊं नए साल के वादा होत रए। एई बीच परिहार दम्पति दादा-दादी बन गए। अब वे दोई जनै नियति मान कैं सब मंजूर कर चुके ते और बिना शिकायत जीबौ सीख गए ते सो दोई जनै टी वी खोल कैं बैठ गए। समाचार देखत में उनके मौ सैं निकर गई, ''जा कैसी भावई आए....जाने कहाँ की बला आए! जे चीन वारे कुजाने का का खात ''वे तकिया कौ टिकौना छोड़ सीधे बैठ गए और कान चढ़ा कैं समाचार सुनन लगे। संगै -संगै कछू बुदबुदान सोई लगे।

निर्मला हमेशा समाचारन सैं कनाव काटत ती मगर जब सैं बेटा बिदेस बसो तबई सैं वे भी समचारन में परिहार जू कौ संग दैन लगीं, बोलीं, ''का के रए? कैसी भावई?कैसी बला?''

परिहार जू बताउन लगे कि चीन में चमगादड़ कौ सूप पिए सैं एक बीमारी फैल रई जी कौ नाम है कोरोना।

''सो अपन काए खौं चिंता में सूखन लगे, अपन कुन चमगादड़ कौ सूप पियत।'' निर्मला जू ने अपनी राय बताई। परिहार जू ने रोग की गम्भीरता बताई, ''एक बेर इंसान में आए के बाद ई कौ संक्रमण फर्र-फर्र फैल जात, पूरी मानव जाति में। हर इंसान खौ संक्रमित होबे के लाने चमगादड़ को सूप पीबे की ज़रूरत नई रत।''

निर्मला नै सुनी सो रै गई सिट्ट की पिटट्! कन लगीं ऐसो सोई होत! काए खौ डरा रए।

जा बीमारी इत्ते छोटे कीरा सैं फैलत कि बौ आँखन सैं नई दिखात। देखत-देखत जापान, इटली, अमरीका, फ्रांस सबई देसन सैं रोग फैलबे की खबरें आऊँ लगीं। लक्खन आदमी संक्रमित हो गए और मर रए।। ए ई बीच में एक कमाल हो गओ फ्रांस के राष्ट्रपति कौ एक वीडियो वायरल हो गओ जीमें वे भारतीय पद्धति सैं अभिवादन करत दिखाई दै रए। ई टैम पै पूरी दुनियाँ नें भारतीय संस्कृति, आहार-विहार और जीवन पद्धति की खूबई तारीफहो रई।''

ई प्रकार के बतकाव अब परिहार दम्पति की रोजीना की दिनचर्या बन गए ते। तबई...एकदिना, बेटा नवल कौ फौन आओ,

''हैलो पापा!''

''...नवल!!....बेय तुम सब जनै अच्छे हौ?...देखौ बायरें न निकरियो। ऐसो करौ तुम छुट्टी लै लो। उतै कोरोना भौत फैल रओ।''

''पापा हम लोग इंडिया आ रहे हैं।''

''अबई ?''

''हाँ। यहाँ हालात काफी ख़राब हैं। हमें यहां वेज खाना भी नहीं मिल आ रहा है। टोटल लोकडाउन है हम लोग काफी परेशान हैं।''

''मगर बेटा तुम्हारी कम्पनी....पैकेज ....'' परिहार जू पूरी तरह आश्वस्त होबो चाह रहे ते।

''पापा मैं अपनी प्रीवियस कम्पनी जॉइन कर लूँगा। मेरी बात हो गई है।''

ऊतरपन सैं फौन कट गओ। परिहार जू नै जा बात जाकें निर्मला खौं बताई सो वे खुसी के मारें चिरैया सीं चिच्यान लगीं। बोलीं, 'बैंगलौर तौ बौ बाद में जैहै, पैलां तौ हमाए पास आ है।' परिहार जू सोई कम खुश नई हते। कीला पै सैं ऊपर के कमरा की चाबी उतारी और सामने रख दई जी सें कि साफसफाई हो जाए। कन लगे, ''स्वदेश की बातई अलग है बे औरें कभऊँ भी आ-जा सकत।''

निर्मला ने जोड़ी, ''बे नई आएं तौ अपन औरें जाकें मिल सकत। ...काए केसर?''

''हओ जिज्जी

सामने मेज पै आज को अखबार धरो तो। ऊ में, मौ पै कपड़ा बांदें आदमियन कीं भयाक्रांत फोटुएं छपीं हतीं। लेकिन परिहार दम्पति आज बड़े प्रसन्न हते उनको भोर कौ भूलौ मौड़ा घरै लौट रओ।

- चित्रांश कॉलोनी, मऊचुंगी टीकमगढ़ म प्र
मों0-9424348200 卐

राजा हरदौल

-प्रेमचंद

(वीर हरदौल बुन्देलखंड के ऐसे महापुरुष हैं। जिन्हें पूरे अँचल में लोक देवता के रूप में पूजा जाता है। यह अपने वीरत्व व त्याग से मानव से महामानव बने। इनकी कथा सामान्यतः भाभी द्वारा विष बुझा भोजन करने से मृत्यु को वरण करने को मिलती है किंतु हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ कथाकार प्रेमचंद ने इसे नए ढंग से लिखा है। आपको पता ही होगा कि प्रेमचंद बुन्देलखण्ड में रहे हैं और उन्होंने यह कथा किसी न किसी रूप में जरूर सुनी होगी किंतु उन्होंने अपनी कहानी 'राजा हरदौल' में रानी को हत्या के दोष से मुक्त कर जुझार सिंह को हत्यारा ठहराया। पाठकों हेतु इस कहानी को पुनर्प्रकाशित किया जा रहा है-संपादक)

बुंदेलखंड में ओरछा पुराना राज्य है। इन बुंदेलों ने पहाड़ों की घाटियों में अपना जीवन बिताया है। एक समय ओरछा के राजा जुझार सिंह थे। ये बड़े साहसी और बुद्धिमान थे। शाहजहाँ उस समय दिल्ली के बादशाह थे। जब लोदी ने बलवा किया और वह शाही मुल्क को लूटता-पाटता ओरछे की ओर आ निकला, तब राजा जुझार सिंह ने उससे मोरचा लिया। राजा के इस काम से गुणग्राही शाहजहाँ बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने तुरंत ही राजा को दक्खिन का शासन-भर सौंपा। उस दिन ओरछे में बड़ा आनंद मनाया गया। शाही दूत खिलअत और सनद ले कर राजा के पास आया। जुझार सिंह को बड़े-बड़े काम करने का अवसर मिला। सफर की तैयारियाँ होने लगी, तब राजा ने अपने छोटे भाई हरदौल सिंह को बुला कर कहा, ''भैया मैं तो जाता हूँ। अब यह राज-पाट तुम्हारे सुपुर्द है। तुम भी इसे जी से प्यार करना। न्याय ही राजा का सबसे बड़ा सहायक है। न्याय की गढ़ी में कोई शत्रु नहीं घुस सकता, चाहे वह रावण की सेना या इन्द्र का बल लेकर आये, पर न्याय वही सच्चा है, जिसे प्रजा भी न्याय समझे। तुम्हारा काम केवल न्याय ही करना न होगा बल्कि प्रजा को अपने न्याय का विश्वास भी दिलाना होगा और मैं तुम्हें क्या समझाऊँ, तुम स्वयं समझदार हो।''

यह कह कर उन्होंने अपनी पगड़ी उतारी और हरदौलसिंह के सिर पर रख दी। हरदौल रोता हुआ उनके पैरों से लिपट गया। इसके बाद राजा अपनी रानी से विदा होने के लिए रनिवास आये। रानी दरवाजे पर खड़ी रो रही थी। उन्हें देखते ही पैरों पर गिर पड़ी। जुझार सिंह ने उठा कर उसे छाती से लगाया और कहा, ''प्यारी, यह रोने का समय नहीं है। बुंदेलों की स्त्रियाँ ऐसे अवसर पर रोया नहीं करती। ईश्वर ने चाहा, तो हम-तुम जल्द मिलेंगे। मुझ पर ऐसी ही प्रीति रखना। मैंने राज-पाट हरदौल को सौंपा है, वह अभी लड़का है। उसने अभी दुनिया नहीं देखी है। अपनी सलाहों से उसकी मदद करती रहना।''

रानी की जबान बंद हो गयी। वह अपने मन में कहने लगी, ''हाय यह कहते हैं, बुंदेलों की स्त्रियाँ ऐसे अवसरों पर रोया नहीं करतीं। शायद उनके हृदय नहीं होता, या अगर होता है तो उसमें प्रेम नहीं होता।'' रानी कलेजे पर पत्थर रखकर आँसू पी गयी और हाथ जोड़ कर राजा की ओर मुस्कराती हुई देखने लगी, पर क्या वह मुस्कराहट थी। जिस तरह अँधेरे मैदान में मशाल की रोशनी अँधेरे को और भी अथाह कर देती है, उसी तरह रानी की मुस्कराहट उसके मन के अथाह दुःख को और भी प्रकट कर रही थी।

जुझार सिंह के चले जाने के बाद हरदौल सिंह राज करने लगा। थोड़े ही दिनों में उसके न्याय और प्रजावात्सल्य ने प्रजा का मन हर लिया। लोग जुझार सिंह को भूल गये। जुझार सिंह के शत्रु भी थे और मित्र भी, पर हरदौल सिंह का कोई शत्रु न था, सब मित्र ही थे। वह ऐसा हँसमुख और मधुरभाषी था कि उससे जो बातें कर लेता, वही जीवन भर उसका भक्त बना रहता। राज भर में ऐसा कोई न था जो उसके पास तक न पहुँच सकता हो। रात-दिन उसके दरबार का फाटक सबके लिए खुला रहता था। ओरछे को कभी ऐसा सर्वप्रिय राजा नसीब न हुआ था, पर सबसे बड़ा गुण जो उसमें था, वह उसकी वीरता थी। उसका वह गुण हद दर्जे को पहुँच गया था। जिस जाति के जीवन का अवलम्ब तलवार पर है, वह अपने राजा के किसी गुण पर इतना नहीं रीझती जितना उसकी वीरता पर। हरदौल अपने गुण से अपनी प्रजा के मन का भी राजा हो गया, जो मुल्क और माल पर राज करने से भी कठिन है। इस प्रकार एक वर्ष बीत गया। उधर दक्खिन में जुझार सिंह ने अपने प्रबंध से चारों ओर शाही दबदबा जमा दिया, इधर ओरछे में हरदौल ने प्रजा पर मोहन-मंत्र फूँक दिया।

२

फाल्गुन का महीना था, अबीर और गुलाल से जमीन लाल हो रही थी। कामदेव का प्रभाव लोगों को भड़का रहा था। रबी ने खेतों में सुनहला फर्श बिछा रखा था और खलिहानों मे सुनहले महल उठा दिये थे। संतोष इस सुनहले फर्श पर इठलाता फिरता था और निश्चिंतता इस सुनहले महल में तानें अलाप रही थी। इन्हीं दिनों दिल्ली का नामवर फेकैत कादिर खाँ ओरछे आया। बड़े-बड़े पहलवान उसका लोहा मान गये थे। दिल्ली से ओरछे तक सैकड़ों मर्दानगी के मद से मतवाले उसके सामने आये, पर उससे कोई जीत न सका। उससे लड़ना भाग्य से नहीं, बल्कि मौत से लड़ना था। वह किसी इनाम का भूखा न था। जैसा ही दिल का दिलेर था, वैसा ही मन का राजा था। ठीक होली के दिन उसने धूम-धाम से ओरछे में सूचना दी कि ''खुदा का शेर दिल्ली का कादिर खाँ ओरछे आ पहुँचा है। जिसे

अपनी जान भारी हो, आ कर अपने भाग्य का निपटारा कर ले।'' ओरछे के बड़े-बड़े बुंदेले सूरमा वह घमंड-भरी वाणी सुनकर गरम हो उठे। फाग और डफ की तान के बदले ढोल की वीर-ध्वनि सुनायी देने लगी। हरदौल का अखाड़ा ओरछे के पहलवानों और फ़ेकैतों का सबसे बड़ा अड्डा था। संध्या को यहाँ सारे शहर के सूरमा जमा हुए। कालदेव और भालदेव बुंदेलों की नाक थे, सैकड़ों मैदान मारे हुए। ये ही दोनों पहलवान कादिर खाँ का घमंड चूर करने के लिए गये।

दूसरे दिन किले के सामने तालाब के किनारे बड़े मैदान में ओरछे के छोटे-बड़े सभी जमा हुए। कैसे-कैसे सजीले, अलबेले जवान थे, - सिर पर खुशरंग बाँकी पगड़ी, माथे पर चंदन का तिलक, आँखों में मर्दानगी का सरूर, कमर में तलवार। और कैसे-कैसे बूढ़े थे-तनी हुई मूँछें, सादी पर तिरछी पगड़ी, कानों में बढ़ी हुई दाढ़ियाँ, देखने में तो बूढ़ें, पर काम में जवान, किसी को कुछ न समझने वाले। उनकी मर्दाना चाल-ढाल नौजवानों को लजाती थी। हर एक के मुँह से वीरता की बातें निकल रही थीं। नौजवान कहते थे-देखें आज ओरछे को लाज रहती है या नहीं। पर बूढ़े कहते-ओरछे की हार कभी नहीं हुई, न होगी। वीरों का यह जोश देख कर राजा हरदौल ने बड़े जोर से कह दिया-''खबरदार'', बुंदेलों की लाज रहे या न रहे, पर उनकी प्रतिष्ठा में बल न पड़ने पाये-यदि किसी ने औरों को यह कहने का अवसर दिया कि ओरछेवाले तलवार से न जीत सके तो धाँधली कर बैठे, वह अपने को जाति का शत्रु समझे।''

सूर्य निकल आया था। एकाएक नगाड़े पर चोट पड़ी और आशा तथा भय ने लोगों के मन को उछाल कर मुँह तक पहुँचा दिया। कालदेव और कादिर खाँ दोनों लँगोट कसे शेरों की तरहअखाड़े में उतरे और गले मिल गये। तब दोनों तरफ से तलवारें निकलीं और दोनों के बगलों में चली गयीं। फिर बादल के दो टुकड़ों से बिजलियाँ निकलने लगीं। पूरे तीन घंटे तक यही मालूम होता रहा कि दो अँगारे हैं। हजारों आदमी खड़े तमाशा देख रहे थे और मैदान में आधी रात का सा सन्नाटा छाया हुआ था। हाँ, जब कभी कालदेव गिरहदार हाथ चलाता या कोई पेंचदार वार बचा जाता, तो लोगों की गर्दन आप ही आप उठ जाती, पर किसी के मुँह से एक शब्द भी नहीं निकलता था। अखाड़े के अंदर तलवारों की खींचतान थी। पर देखने वालों के लिए अखाड़े से बाहर मैदान में इससे भी बढ़कर तमाशा था। बार-बार जातीय प्रतिष्ठा के विचार से मन के भावों को रोकना और प्रसन्नता या दु:ख का शब्द मुँह से बाहर न निकलने देना तलवारों के वार बचाने से अधिक कठिन काम था। एकाएक कादिर खाँ 'अल्लाहो-अकबर' चिल्लाया, मानो बादल गरज उठा और उसके गरजते ही कालदेव के सिर पर बिजली गिर पड़ी।

कालदेव के गिरते ही बुंदेलों को सब्र न रहा। हर एक के चेहरे पर निर्बल क्रोध और कुचले हुए घमंड की तस्वीर खिंच गयी। हजारों आदमी जोश में आ कर अखाड़े पर दौड़े, पर हरदौल ने कहा - खबरदार। अब कोई आगे न बढ़े। इस आवाज ने पैरों के साथ जंजीर का काम किया। दर्शकों को रोककर जब वे अखाड़े में गये और कालदेव को देखा, तो आँखों में आँसू भर आये। जख्मी शेर जमीन पर तड़प रहा था। उसके जीवन की तरह उसकी तलवार के दो टुकड़े हो गये थे।

आज का दिन बीता, रात आयी: पर बुंदेलों की आँखों में नींद कहाँ। लोगों ने करवटें बदल कर रात काटी जैसे दु:खित मनुष्य विकलता से सुबह की बाट जोहता है, उसी तरह बुंदेले रह-रह कर आकाश की तरफ देखते और उसकी धीमी चाल पर झुँझलाते थे। उनके जातीय घमंड पर गहरा घाव लगा था। दूसरे दिन ज्यों ही सूर्य निकला, तीन लाख बुंदेले तालाब के किनारे पहुंचे। जिस समय भालदेव शेर की तरह अखाड़े की तरफ चला, दिलों में धड़कन-सी होने लगी। कल जब कालदेव अखाड़े में उतरा था, बुंदेलों के हौसले बढ़े हुए थे, पर आज वह बात न थी। ह्रदय में आशा की जगह डर घुसा हुआ था, कादिर खाँ कोई चुटीला वार करता तो लोगों के दिल उछल कर होंठों तक आ जाते। सूर्य सिर पर चढ़ा जाता था और लोगों के दिल बैठ जाते थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि भालदेव अपने भाई से फुर्तीला और तेज था। उसने कई बार कादिर खाँ को नीचा दिखलाया, पर दिल्ली का निपुण पहलवान हर बार सँभल जाता था। पूरे तीन घंटे तक दोनों बहादुरों में तलवारें चलती रहीं। एकाएक खटाके की आवाज हुई और भालदेव की तलवार के दो टुकड़े हो गये। राजा हरदौल अखाड़े के सामने खड़े थे। उन्होंने भालदेव की तरफ तेजी से अपनी तलवार फेंकी। भालदेव तलवार लेने के लिए झुका ही था कि कादिर खाँ की तलवार उसकी गर्दन पर आ पड़ी। घाव गहरा न था, केवल एक 'चरका' था, पर उसने लड़ाई का फैसला कर दिया।

हताश बुंदेले अपने-अपने घरों को लौटे। यद्यपि भालदेव अब भी लड़ने को तैयार था, पर हरदौल ने समझा कर कहा कि ''भाइयो'' हमारी हार उसी समय हो गयी जब हमारी तलवार ने जवाब दे दिया। यदि हम कादिर खाँ की जगह होते तो निहत्थे आदमी पर वार न करते और जब तक हमारे शत्रु के हाथ में तलवार न आ जाती, हम उस पर हाथ न उठाते, पर कादिर खाँ में उदारता कहाँ ? बलबान् शत्रु का सामना करने में उदारता को ताक पर रख देना पड़ता है। तो भी हमने दिखा दिया है कि तलवार की लड़ाई में हम उसके बराबर हैं और अब हमको यह दिखाना है कि हमारी तलवार में भी वैसा ही जौहर है! इसी तरह लोगों को तसल्ली देकर राजा हरदौल रनिवास को गये।

कुलीना ने पूछा - लाला, आज दंगल का क्या रंग रहा ?

हरदौल ने सिर झुकाकर जवाब दिया - आज भी वह कल का-सा हाल रहा।

कुलीना - क्या भालदेव मारा गया ?

हरदौल - नहीं, जान से तो नहीं पर हार हो गयी।

कुलीना - तो अब क्या करना होगा ?

हरदौल - मैं स्वयं इसी सोच में हूँ। आज तक ओरछे को कभी नीचा न देखना पड़ा था। हमारे पास धन न था, पर अपनी वीरता

के सामने हम राज और धन कोई चीज न समझते थे। अब हम किस मुँह से अपनी वीरता का घमंड करेंगे ? ओरछे की और बुन्देलों की लाज अब जाती है।

कुलीना - क्या अब कोई आस नहीं है ?

हरदौल - हमारे पहलवानों में वैसा कोई नहीं है जो उससे बाजी ले जाय। भालदेव की हार ने बुंदेलों की हिम्मत तोड़ दी है। आज सारे शहर में शोक छाया हुआ है। सैकड़ौ घरों में आग नहीं जली। चिराग रोशन नहीं हुआ। हमारे देश और जाति की वह चीज जिससे हमारा मान था, अब अंतिम साँस ले रही है। भालदेव हमारा उस्ताद था। उसके हार चुकने के बाद मेरा मैदान में आना धृष्टता है, पर बुंदेलों की साख जाती है, तो मेरा सिर भी उसके साथ जायेगा। कादिर खाँ बेशक अपने हुनर में एक ही है, पर हमारा भालदेव कभी-भी उससे कम नहीं। उसकी तलवार यदि भालदेव के हाथ में होती तो मैदान जरूर उसके हाथ रहता। ओरछे में केवल एक तलवार है जो कादिर खाँ की तलवार का मुँह मोड़ सकती है, वह भैया की तलवार है। अगर तुम ओरछे की नाक रखना चाहती हो तो उसे मुझे दे दो। यह हमारी अंतिम चेष्टा होगी। यदि इस बार भी हार हुई तो ओरछे का नाम सदैव के लिए डूब जायगा।

कुलीना सोचने लगी, तलवार इनको दूँ या न दूँ। राजा रोक गये हैं। उनकी आज्ञा थी कि किसी दूसरे की परछाहीं भी उस पर न पड़ने पाये। क्या ऐसी दशा में मैं उनकी आज्ञा का उल्लंघन करूँ तो वे नाराज होंगे ? कभी नहीं। जब सुनेंगे कि मैंने कैसे कठिन समय में तलवार निकाली है, तो उन्हें सच्ची प्रसन्नता होगीं। बुंदेलों की आन किसको इतनी प्यारी नहीं है ? उनसे ज्यादा ओरछे की भलाई चाहने वाला कौन होगा ? इस समय उनकी आज्ञा का उल्लंघन करना ही आज्ञा मानना है। यह सोच कर कुलीना ने तलवार हरदौल को दे दी।

सबेरा होते ही यह खबर फैल गयी राजा हरदौल कादिर खाँ से लड़ने के लिए जा रहे हैं। इतना सुनते ही लोगों में सनसनी-सी फैल गयी और चौंक उठे। पागलों की तरह लोग अखाड़े की ओर दौड़े। हर एक आदमी कहता था कि जब तक हम जीते हैं, महाराज को लड़ने नहीं देंगे: पर जब लोग अखाड़े के पास पहुँचे तो देखा कि अखाड़े में बिजलियाँ-सी चमक रही हैं। बुंदेलों के दिलों पर उस समय जैसी बीत रही थी, उसका अनुमान करना कठिन है। उस समय उस लम्बे-चौड़े मैदान में जहाँ तक निगाह जाती थी, आदमी ही आदमी नजर आते थे, पर चारों तरफ सन्नाटा था। हर एक आँख अखाड़े की तरफ लगी हुई थी और हर एक का दिल हरदौल की मंगल-कामना के लिए ईश्वर का प्रार्थी था। कादिर खाँ का एक-एक वार हजारों दिलों के टुकड़े कर देता था और हरदौल की एक-एक काट से मनों में आनन्द की लहरे उठती थीं। अखाड़ों में दो पहलवानों का सामना था और अखाड़े के बाहर आशा और निराशा का। आखिर घड़ियाल ने पहला पहर बजाया और हरदौल की तलवार बिजली बनकर कादिर के सिर पर गिरी। यह देखते ही बुन्देले मारे आनन्द के उन्मत हो गये। किसी को किसी की सुधि न रही। कोई किसी को गले मिलता, कोई उछलता और कोई छँलागें मारता था। हजारों आदमियों पर वीरता का नशा छा गया। तलवारें स्वयं म्यान से निकल पड़ीं, भाले चमकने लगे। जीत की खुशी में सैकड़ों जानें भेंट हो गयीं। पर जब हरदौल अखाड़े से बाहर आये और उन्होंने बुन्देलों की ओर तेज निगाहों से देखा तो आन-की-आन में लोग सँभल गये। तलवारें म्यान में जा छिपीं। ख्याल आ गया, यह खुशी, यह उमंग क्यों और यह पागलपन किस लिए? बुन्देलों के लिए यह कोई नयी बात नहीं हुई। इस विचार ने लोगों का दिल ठंडा कर दिया। हरदौल की इस वीरता ने उसे हर एक बुन्देले के दिल में मान-प्रतिष्ठा की ऊँची जगह पर बिठाया, जहाँ न्याय और उदारता भी उसे न पहुँचा सकती थी। वह पहले ही से सर्वप्रिय था और अब वह अपनी जाति का वीरवर और बुन्देला दिलावरी का सिरमौर बन गया।

३

राजा जुझार सिंह ने भी दक्षिण में अपनी योग्यता का परिचय दिया। वे केवल लड़ाई में वीर न थे, बल्कि राज्य-शासन में भी अद्वितीय थे। उन्होंने अपने सुप्रबन्ध से दक्षिण प्रांतों को बलवान राज्य-शासन बना दिया और वर्ष भर के बाद बादशाह से आज्ञा लेकर वे ओरछे की तरफ चले। ओरछे की याद उन्हें सदैव बेचैन करती रही। आह ओरछा! वह दिन कब आयेगा कि फिर तेरे दर्शन होंगे। राजा मंजिलें मारते चले आते थे, न भूख थी, न प्यास, ओरछेवालों की मुहब्बत खीचें लिये आती थी। यहाँ तक कि ओरछे के जंगलों में आ पहुँचे। साथ के आदमी पीछे छूट गये। दोपहर का समय था। धूप तेज थी। वे घोड़े से उतरे और एक पेड़ की छाँह में जा बैठे। भाग्यवश आज हरदौल भी जीत की खुशी में शिकार खेलने निकले थे। सैकड़ों बुंदेला सरदार उनके साथ थे। सब अभिमान के नशे में चूर थे। उन्होंने राजा जुझार सिंह को अकेले बैठे देखा, पर वे अपने घमंड में इतने डूबे हुए थे कि इनके पास तक न आये। समझा कोई यात्री होगा। हरदौल की आँखों ने भी धोखा खाया। वे घोड़े पर सवार अकड़ते हुए जुझार सिंह के सामने आये और पूछना चाहते थे कि तुम कौन हो भाई से आँख मिल गयी। पहचानते ही घोड़े से कूद पड़े और उनको प्रणाम किया। राजा ने भी उठकर हरदौल को छाती से लगा लिया, पर उस छाती में अब भाई की मुहब्बत न थी। मुहब्बत की जगह ईर्ष्या ने घेर ली थी और वह केवल इसीलिए कि हरदौल दूर से नंगे पैर उनकी तरफ न दौड़ा, उसके सवारों ने दूर ही से उनकी अभ्यर्थना की। संध्या होते-होते दोनों भाई ओरछे पहुँचे। राजा के लौटने का समाचार पाते ही नगर में प्रसन्नता की दुंदुभी बजने लगी। हर जगह आनंदोत्सव होने लगा और तुरती-फुरती शहर जगमगा उठा।

आजा रानी कुलीना ने अपने हाथों भोजन कराया। नौ बजे होंगे। लौंडी ने आ कर कहा-महाराज, भोजन तैयार है। दोनों भाई भोजन करने गये। सोने के थाल में राजा के लिए भोजना परोसा गया और चाँदी के थाल में हरदौल के लिए।

कुलीना ने स्वयं भोजन बनाया था, स्वयं थाल परोसे थे और स्वयं ही सामने लायी थी, पर दिनों का चक्र कहो, या भाग्य के दुर्दिन, उसने भूल से सोने का थाल हरदौल के आगे रख दिया और चाँदी का राजा के सामने। हरदौल ने कुछ ध्यान न दिया, वह वर्ष भर से सोने के थाल में खाते-खाते उसका आदी हो गया, पर जुझार सिंह तिलमिला गये। जबान से कुछ न बोले। पर तीवर बदल गये और मुँह लाल हो गया। रानी की तरफ घूरकर देखा और भोजन करने लगे। पर ग्रास विष मालूम होता था। दो-चार ग्रास खा कर उठ आये। रानी उनके तीवर देख कर डर गयी। आज कैसे प्रेम से उसने भोजन बनाया था, कितनी प्रतीक्षा के बाद यह शुभ दिन आया था, उसके उल्लास का कोई पारावार न था: पर राजा के तीवर देख कर उसके प्राण सूख गये। जब राजा उठ गये और उसने थाल को देखा, तो कलेजा धक् से हो गया और पैरों तले से मिट्टी निकल गयी। उसने सिर पीट लिया-ईश्वर! आज रात कुशलतापूर्वक कटे, मुझे शकुन अच्छे दिखायी नहीं देते।

राजा जुझार सिंह शीश महल में लेटे। चतुर नाइन ने रानी का श्रृंगार किया और मुस्करा कर बोली-कल महाराज से इसका इनाम लूँगी। यह कह कर वह चली गयी: परंतु कुलीना वहाँ से न उठी। वह गहरे सोच में पड़ी हुई थी। उनके सामने कौन सा मुँह ले कर जाऊँ? नाइन ने नाहक मेरा श्रृंगार कर दिया। मेरा श्रृंगार देख कर वे खुश भी होंगे? मुझसे इस समय अपराध हुआ है, मैं अपराधिनी हूँ, मेरा उनके पास इस समय बनाव-श्रृंगार करे जाना उचित नहीं। नहीं नहीं, आज मुझे उनके पास भिखारनी के भेष में जाना चाहिए। मैं उनसे क्षमा माँगूगी। इस समय मेरे लिए यही उचित है। यह सोच कर रानी बड़े शीशे के सामने खड़ी हो गयी वह अप्सरा-सी मालूम होती थी। सुंदरता की कितनी ही तस्वीरें उसने देखी थी, पर उसे इस समय शीशे की तस्वीर सबसे ज्यादा खूबरसूरत मालूम होती थी।

सुंदरता और आत्मरुचि का साथ है। जल्दी बिना रंग के नहीं रह सकती। थोड़ी देर के लिए कुलीना सुंदरता के मद से फूल उठी। वह तन कर खड़ी हो गयी। लोग कहते हैं कि सुंदरता में जादू है और वह जादू, जिसका कोई उतार नहीं। धर्म और कर्म, तन और मन सब सुंदरता पर न्योछावर है। मैं सुंदर न सही, ऐसी कुरूपा भी नहीं हूँ। क्या मेरी सुंदरता में इतनी भी शक्ति नहीं है कि महाराज से मेरा अपराध क्षमा करा सके? ये बाहु-लताएँ जिस समय उनके गले का हार होंगी, ये आँखें जिस समय प्रेम के मद से लाल हो कर देखेंगी, तब क्या मेरे सौंदर्य की शीतलता उनकी क्रोधाग्नि को ठंडा न करे देगी? पर थोड़ी देर में रानी को ज्ञात हुआ। आह यह मैं क्या स्वप्न देख रही हूँ। मेरे मन में ऐसी बाते क्यों आती हैं। मैं अच्छी हूँ या बुरी हूँ उनकी चेरी हूँ। मुझसे अपराध हुआ है, मुझे उनसे क्षमा माँगनी चाहिए। यह श्रृंगार और बनाव इस समय उपयुक्त नहीं है। यह सोच कर रानी ने सब गहने उतार दिये। इतर में बसी हुई रेशम की साड़ी अलग कर दी। मोतियों से भरी माँग खोल दी और वह खूब फूट-फूट कर रोयी। हाय! यह मिलाप की रात वियोग से भी विशेष दु:खदायिनी है। भिखारिनी का भेष बना कर रानी शीश महल की ओर चली। पैर आगे बढ़ते थे, पर मन पीछे हटता जाता था। दरवाजे तक आयी, पर भीतर पैर न रख सकी। दिल धड़कने लगा। ऐसा जान पड़ा मानो उसके पैर थर्रा रहे हैं। राजा जुझार सिंह बोले, ''कौन है ?-कुलीना। भीतर क्यों नहीं आ जाती ?''

कुलीना ने जी कड़ा करके कहा - महाराज, कैसे आऊँ? मैं अपनी जगह क्रोध को बैठा पाती हूँ।

राजा-यह क्यों कहती कि मन दोषी है, इसीलिए आँखें नहीं मिलने देती।

कुलीना-निस्संदेह मुझसे अपराध हुआ है, पर एक अबला आपसे क्षमा का दान माँगती है।

राजा-इसका प्रायश्चित करना होगा।

कुलीना-क्योंकर ?

राजा-हरदौल के खून से।

कुलीना सिर से पैर तक काँप गयी। बोली-क्या इसलिए आज मेरी भूल से ज्योंनार के थालों में उलटफेर हो गया?

राजा-नहीं, इसलिए कि तुम्हारे प्रेम में हरदौल ने उलटफेर कर दिया।

जैसे आग की आँच से लोहा लाल हो जाता है, वैसे ही रानी का मुँह लाल हो गया। क्रोध की अग्नि सद्भावों को भस्म कर देती हैं, प्रेम और प्रतिष्ठा, दया और न्याय सब जल के राख हो जाते हैं। एक मिनट तक रानी को ऐसा मालूम हुआ, मानों दिल और दिमाग दोनों खौल रहे हैं, पर उसने आत्मदमन की अंतिम चेष्टा से अपने को सँभाला, केवल इतना बोली-हरदौल को अपना लड़का और भाई समझती हूँ।

राजा उठ बैठे और कुछ नर्म स्वर से बोले-नहीं, हरदौल लड़का नहीं है, लड़का मैं हूँ, जिसने तुम्हारे ऊपर विश्वास किया। कुलीना मुझे तुमसे ऐसी आशा न थी। मुझे तुम्हारे ऊपर घमंड था। मैं समझता था, चाँद-सूर्य टल सकते हैं, पर तुम्हारा दिल नहीं टल सकता, पर आज मुझे मालूम हुआ कि वह मेरा लड़कपन था। बड़ों ने सच कहा है कि स्त्री का प्रेम पानी की धार है, जिस ओर ढाल पता है, उधर ही बह जाता है। सोना ज्यादा गरम होकर पिघल जाता है।

कुलीना रोने लगी। क्रोध की आग पानी बन कर आँखों से निकल पड़ी। जब आवाज वश में हुई, तो बोली-आपके इस सन्देह को कैसे दूर करूँ ?

राजा-हरदौल के खून से।

रानी-मेरे खून से दाग न मिटेगा ?

राजा-तुम्हारे खून से और पक्का हो जाएगा।

रानी-और कोई उपाय नहीं है ?

राजा-नहीं।

रानी-यह आपका अंतिम विचार है ?

राजा-हाँ, यह मेरा अन्तिम विचार है। देखो, इस पानदान में पान का बीड़ा रखा है। तुम्हारे सतीत्व की परीक्षा यही है कि

तुम हरदौल को इसे अपने हाथों खिला दो। मेरे मन का भ्रम उसी समय निकलेगा जब इस घर से हरदौल की लाश निकलेगी।

रानी ने घृणा की दृष्टि से पान के बीड़े को देखा और वह उलटे पैर लौट आयी।

रानी सोचने लगी–क्या हरदौल के प्राण लूँ। निर्दोष, सच्चरित्र वीर हरदौल की जान से अपने सतीत्व की परीक्षा दूँ ? उस हरदौल के खून से अपना हाथ काला करूँ जो मुझे बहन समझता है ? यह पाप किसके सिर पड़ेगा ? क्या एक निर्दोष का खून न लायेगा? आह! अभागी कुलीना। तुझे आज अपने सतीत्व की परीक्षा देने की आवश्यकता पड़ी है और वह ऐसी कठिन ? नहीं, यह पाप मुझसे न होगा। यदि राजा मुझे कुलटा समझते हैं, तो समझें, उन्हें मुझ पर संदेह है, तो हो। मुझसे यह पाप न होगा। राजा को ऐसा संदेह क्यों हुआ ? क्या केवल थालों के बदल जाने से ? नहीं, अवश्य कोई और बात है। आज हरदौल उन्हें जंगल में मिल गया। राजा ने उसकी कमर में तलवार देखी होगी। क्या आश्चर्य है, हरदौल से कोई अपमान भी हो गया हो। मेरा अपराध क्या है ? मुझ पर इतना बड़ा दोष क्यों लगाया जाता है ? केवल थालों के बदल जाने से ? हे ईश्वर ! मैं किससे अपना दुःख कहूँ ? तू ही मेरा साथी है। जो चाहे सो हो, पर मुझसे यह पाप न होगा।

रानी ने फिर सोचा–राजा, क्या तुम्हारा हृदय ऐसा ओछा और नीच है ? तुम मुझसे हरदौल की जान लेने को कहते हो ? यदि तुमसे उसका अधिकार और मान नहीं देखा जाता, तो क्यों साफ–साफ ऐसा नहीं कहते ? क्यों मरदों की लड़ाई नहीं लड़ते ? क्यों स्वयं अपने हाथ से उसका सिर नहीं काटते और मुझसे वह काम करने की कहते हो ? तुम खूब जानते हो, मैं यह नहीं कर सकती। यदि मुझसे तुम्हारा जी उकता गया है, यदि मैं तुम्हारी जान की जंजाल हो गयी हूँ, तो मुझे काशी या मथुरा भेज दो। मैं बेखटके चली जाऊँगी, पर ईश्वर के लिए मेरे सिर इतना बड़ा कलंक न लगने दो। पर मैं जीवित ही क्यों रहूँ, मेरे लिए अब जीवन में कोई सुख नहीं है। अब मेरा मरना ही अच्छा है। मैं स्वयं प्राण दे दूँगी, पर यह महापाप मुझसे न होगा। विचारों ने फिर पलटा खाया। तुमको पाप करना ही होगा। इससे बड़ा पाप शायद आज तक संसार में न हुआ हो, पर यह पाप तुमको करना होगा। तुम्हारे पतिव्रत पर संदेह किया जा रहा है और तुम्हें इस संदेह को मिटाना होगा। यदि तुम्हारी जान जोखिम में होती, तो कुछ हर्ज न था। अपनी जान देकर हरदौल को बचा लेती, पर इस समय तुम्हारे पतिव्रत पर आँच आ रही है। इसीलिए तुम्हें यह पाप करना ही होगा, और पाप करने बाद हँसना और प्रसन्न रहना होगा। यदि तुम्हारा चित तनिक भी विचलित हुआ, यदि तुम्हारा मुखड़ा जरा भी मद्धिम हुआ, तो इतना बड़ा पाप करने पर भी तुम संदेह मिटाने में सफल न होगी। तुम्हारे जी पर चाहे जो बीते, पर तुम्हें यह पाप करना ही पड़ेगा। परंतु कैसे होगा? क्या मैं हरदौल का सिर उतारूँगी ? यह सोच कर रानी के शरीर में कँपकँपी आ गयी। नहीं, मेरा हाथ उस पर कभी नहीं उठ सकता। प्यारे हरदौल, मैं तुम्हें खिला सकती। मैं जानती हूँ तुम मेरे लिए आनंद से विष का बीड़ा खा लोगे। हाँ, मैं जानती हूँ तुम 'नहीं' न करोगे, पर मुझसे यह महापाप नहीं हो सकता। एक बार नहीं, हजार बार नहीं हो सकता।

४

हरदौल को इन बातों की कुछ खबर न थी। आधी रात को एक दासी रोती हुई उसके पास गयी और उसने सब समाचार अक्षर–अक्षर कह सुनाया। वह दासी पानदान ले कर रानी के पीछे–पीछे राजमहल के दरवाजे पर गयी थी और सब बातें सुन कर आयी थी। हरदौल राजा का ढंग देख कर पहले ही पड़ता गया गया था कि राजा के मन में कोई–न–कोई काँटा अवश्य खटक रहा है। दासी की बातों ने उसके संदेह को और भी पक्का कर दिया। उसने दासी से कड़ी मनाही कर दी कि सावधान ! किसी दूसरे के कानों में इन बातों की भनक न पड़े और वह स्वयं मरने को तैयार हो गया।

हरदौल बुंदेलों की वीरता का सूरज था। उसकी भौंहों के तनिक इशारे से तीन लाख बुंदेले मरने और मारने के लिए इकट्ठे हो सकते थे, ओरछा उस पर न्योछावर था। यदि जुझार सिंह खुले मैदान उसका सामना करते तो अवश्य मुँह की खाते, क्योंकि हरदौल भी बुंदेला था और बुंदेला अपने शत्रु के साथ किसी प्रकार की मुँहदेखी नहीं करते, मारना–मरना उनके जीवन का एक अच्छा दिलबहलाव है। उन्हें सदा इसकी लालसा रही है कि कोई हमें चुनौती दे, कोई हमें छेड़े। उन्हें सदा खून की प्यास रहती है और वह प्यास कभी नहीं बुझती। परंतु उस समय एक स्त्री को उसके खून की जरूरत थी और उसका साहस उसके कानों में कहता था कि एक निर्दोष और सती अबला के लिए अपने शरीर का खून देने में मुँह न मोड़ो। यदि भैया को यह संदेह होता कि मैं उनके खून का प्यासा हूँ और उन्हें मार कर राज पर अधिकार करना चाहता हूँ, तो कुछ हर्ज न था, राज्य के लिए कत्ल और खून, दगा और फरेब सब उचित समझा गया है, परंतु उनके इस संदेह का निपटारा मेरे मरने के सिवा और किसी तरह नहीं हो सकता। इस समय मेरा धर्म है कि अपना प्राण दे कर उनके इस संदेह को दूर कर दूँ। उनके मन में यह दुखाने वाला संदेह उत्पन्न करके भी यदि मैं जीता ही रहूँ और अपने मन की पवित्रता जनाऊँ, तो मेरी ढिठाई है। नहीं, इस भले काम में अधिक आगा–पीछा करना अच्छा नहीं। मैं खुशी से विष का बीड़ा खाऊँगा। इससे बढ़ कर शूरवीर की मृत्यु और क्या हो सकती है ?

क्रोध में आकर मारू के भय बढ़ानेवाले शब्द सुन कर रणक्षेत्र में अपनी जान को तुच्छ समझना इतना कठिन नहीं है। आज सच्चा वीर हरदौल अपने हृदय के बड़प्पन पर अपनी सारी वीरता न्योछावर करने को उद्यत है।

दूसरे दिन हरदौल ने खूब तड़के स्नान किया। बदन पर अस्त्र–शस्त्र सजा मुस्कराता हुआ राजा के पास गया। राजा भी सोकर तुरंत ही उठे थे, उनकी आलसायी हुई आँखें हरदौल की

मूर्ति की ओर लगी हुई थीं। सामने संगमरमर की चौकी पर विष मिला पान सोने की तश्तरी में रखा हुआ था। राजा कभी पान की ओर ताकते और कभी मूर्ति की ओर, शायद उनके विचार ने इस विष की गाँठ और उस मूर्ति में एक सम्बन्ध पैदा कर दिया था। उस समय जो हरदौल एकाएक घर में पहुँचे तो राजा चौंक पड़े। उन्होंने सँभल कर पूछा, ''इस समय कहाँ चले ?''

हरदौल का मुखड़ा प्रफुल्लित था। वह हँस कर बोला, ''कल आप यहाँ पधारे हैं इसी खुशी में मैं आज शिकार खेलने जाता हूँ। आपको ईश्वर ने अजित बनाया है, मुझे हाथ से विजय का बीड़ा दीजिए।''

यह कह कर हरदौल ने चौक पर से पानदान उठा लिया और उसे राजा के सामने रख कर बीड़ा लेने के लिए हाथ बढ़ाया। हरदौल का खिला हुआ मुखड़ा देख कर राजा की ईर्ष्या की आग और भी भड़क उठी। -दुष्ट, मेरे घाव पर नमक छिड़कने आया है। मेरे मान और विश्वास को मिट्टी में मिलाने पर भी तेरा जी न भरा। मुझसे विजय का बीड़ा माँगता है। हाँ, यह विजय का बीड़ा है, पर तेरी विजय का नहीं, मेरी विजय का।

इतना मन में कहकर जुझार सिंह ने बीड़े को हाथ में उठाया। वे एक क्षण तक कुछ सोचते रहे, फिर मुस्करा कर हरदौल को बीड़ा दे दिया। हरदौल ने सिर झुका कर बीड़ा लिया, उसे माथे पर चढ़ाया, एक बार बड़ी ही करुणा के साथ चारों ओर देखा और फिर बीड़े को मुँह में रख लिया। एक सच्चे राजपूत ने अपना पुरुषत्व दिखा दिया। विष हलाहल था, कंठ के नीचे उतरते ही हरदौल के मुखड़े पर मुर्दनी छा गयी और आँखें बुझ गयी। उसने एक ठंडी साँस ली, दोनों हाथ जोड़ कर जुझार सिंह को प्रणाम किया और जमीन पर बैठ गया। उसके ललाट पर पसीने की ठंडी-ठंडी बूँदें दिखायी दे रही थीं और साँस तेजी से चलने लगी थी, पसीने की ठंडी-ठंडी बूँदें दिखायी दे रही थीं और साँस तेजी से चलने लगी थी, पर चेहरे पर प्रसन्नता और संतोष की झलक दिखायी देती थी।

जुझार सिंह अपनी जगह से जरा भी न हिले। उनके चेहरे पर ईर्ष्या से भरी हुई मुस्कराहट छायी हुई थी, पर आँखों में आँसू भर आये थे। उजेले और अँधेरे का मिलाप हो गया था।

- मानसरोवर खण्ड-छह से साभार 卐

चंद बुंदेली दोहे

- उमाशंकर खरे 'उमेश'

हल लेकरर के खेत में, देखो खड़ा किसान।
माटी माथ लगा रहो, हलधर सखे महान।।

तम की चादर ओढ़कर, बैठा आज किसान।
एक दीप उजयार दो, सखे! बीच खलिहान।।

कनक थाल सौ लग रहे, सखे! धान कौ खेत।
मेंढ़न पर लहररा रहे, केतु काँस के सेत।।

चन्दन माटी खेत की, मधुर बरय कौ नीर।
अन्न देव हलधर सखे, धीर, वीर, गम्भीर।

हरी चुनर ओढ़े धरा, करके नव सिंगार।
अम्बर से मिलने चली, सखे चांद के पार।।

धनियां ठांड़ी खेत में, फूली नहीं समाय।
जड़तारी ओड़े चुनर, हलधर लख हरसाय।।

गोरी चढ़ी मचान पै, लेकर गुथना हात।
हरिआ हरिआ के कतन, हरि आये मुस्कात

खेती ही पूजा जिन्हें, खेती ही षत्कर्म।
खेत-हार तीरथ जिन्हें, खेती उनका धर्म।।

ढवुआ में बैठे रमू, कोंड़े खों सुलगात।
बिन सदरी कैसे कटे, पूस मास की रात।।

धनुआं चढ़ौ मचान पै, ओढ़ पिछौरा सेत।
थर-थर कांपै ठण्ड से, रखा रहो है खेत।।

धनियां नींदे खेत खों, ननदी सों बतराय।
भौजी के सुन बैन वह, मन ही मन मुस्काय।।

बरा रही पानी धना, ठांढ़ी खेत मँझार।
करे ठिठोली सजन सें, जो उस पर बलिहार।।

काट रहीं चारो धना, अधरों पर मुस्कान।
हांक रहे हल खेत में, साजन चतुर किसान।।

मोर बनक बिछिया पहिन, धना चलें गज चाल।
बिछियन खों लख व्याल अब, पलट जात तत्काल।।

धनियॉ ठाड़ी खेत में, झुक काटे धान।
चुअत पसीना माथ सें, भींज गयो परिधान।।
भोर सुहानी आ गयी, करकें नव सिंगार।
माथे बेंदा दमक रव, जैसें हों अंगार।।

- बोड क्लव के पास, राधा सागर ताबाल टीकमगढ़ रोड,

- पृथ्वीपुर, जिला निवाड़ी (म.प्र.)
मोबा.-6266663080 卐

चौरी भर कुदई

(ग्रामीण अंचल में पुरानी बुजुर्गों से सुनी सत्य घटना)

-डॉ. स्वामी प्रसाद श्रीवास्तव

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र

वर पक्ष	स्त्री पात्र
(1) लखपतराम-उर्फ दूल्हा भैया (लड़के का पिता)	(1) कस्तूरी बाई (लडके की मॉ लखपतराम की पत्नी)
(2) भूपत-साना (साना-नौकर)	
(3) कुंदन (लखपत राम का पुत्र)	
(4) खुदई खवास (खवास)	

कन्या पक्ष	
(1) गरीबदास मुखिया (लड़की का पिता)	(1)गोमती(लड़की की मां) गरीबदास की पत्नी
(2) भास्कर महराज(पुरोहित)	
(3) पारीक्षत कक्कू (बुजुर्ग ग्रामीण)	
(4) सटोले (ग्रामीण)	
(5) टुन्टाई (खवास)	
(6) छिदामी (ग्रामीण)	

दृश्य-प्रथम

संकेत - (स्थान-अथाई पर गांव के मुखिया गरीबदास के साथ ग्रामीण)

गरीबदास - भैया सटोले तनक तुम हमाई पौर में जाकैं-हमाओ हुक्का-चिलम तौ लियाओ ठलबाई में तम्बाखू पिवत जे औ बतकाव होत रे।

सटोले - मोओ सब जानो है, अबै ल्याउत जू।

गरीबदास- काये छिदामी ! आसौं मोड़ा को व्याव कर डारो, अरे लड़ुवन कौ डोल औ बरातै जाबे तौ मिले गांव बारन खौं।

छिदामी - मुखिया भैया का ब्याव मोय आय करने, तुमाव लरका तुम जानो।

गरीबदास - (हंसते हुए) सो तौ है। कब को बन रओ?

छिदामी - जेठ मास लौ, बोई बैसाख में।

पारीक्षत कक्कू - काये मुखिया तुमने किसुरिया बिटिया के लाने देखो कौनऊं घर-स्यानी हो गई-काय हांतन पै हांत धरैं बैठे अपुन-तान पिछोरा सो रये-ऊ की चिन्ता करो भई।

गरीबदास - कैऊ घर देखे, लरका देखे, पै अबै एकऊ में मन नई भरो, भास्कर पुरैत महराज ने एक घर बताओ कंचनपुरा को, भौत सुबीते में है। जिमींदार हैं दस-बीस गांवन में चलता है उनको अब महराज खौं लिबा कैं जेहें तबईं पंथ परहे।

पारीक्षत कक्कू- तौ पुरेत महराज से पूंछ कैं जल्दी जाव,ऐसो घर न छोड़ो।

सटोले - (सामने देखते हुए) लो मुखिया, महराज को नाव लओ-देखों बे आ रये सांमू सैं।

छिदामी - चलो ठीक रई-अबई बात होजे-देखो बे कबै जाबे की कात।

भास्कर महराज-(आते हुए) राम राम भैया सब जनन खों।

गरीबदास - राम राम महराज आओ-तुमाई चर्चा हो रईती और अपुन सामूं सै आउत दिखा परे।

भास्कर महराज-हमाई चर्चा? काय का बात है?

गरीबदास- अरे पारीक्षत कक्कू ने आय किशोई बिटिया के व्याव की बात छेड़ी सो मैने कई कै पुरेत महराज नै बताओ तौ कंचनपुरा को घर-ओई कै लाने पूंछने तौ, कै कबै चलने उतै ?

भास्कर महराज-हम तौ फुरसत हैं भोरई चलो, अच्छो दिन है, दिशाशूल नैयां,प्रभू की कृपा हुए तौ काम बनजे।

छिदामी - मुखिया भैया चलेई जाव,अब देर दार को काम नैयां-सब काम छोड़ कैं। भगवान ने चाओ तौ काम सिद्ध होजे।

गरीबदास - तौ पक्की रई महराज, भोर की, खवास खौं और संगे लिवा चलें।

भास्कर महराज-खवास खौ लिवा लेव तौ ओरई अच्छो रे है। (लोगों के आपसी बातचीत के स्वर)

छिदामी - चलो भैया,गिल्लू, हरदास-कलेवा करकैं हार तांई देखो भालो,काल ढोरन ने हरैया भर खेत उजार दओ।

गरीबदास - ठीक है देखों भैया हरो,खेतनईं सैं तो सब लगो। जयराम जी की सब जनन खौं। (एक साथ रामराम के स्वरों के साथ सबका प्रस्थान)

(अन्तराल ध्वनि के साथ यवनिका का गिरना)

दृश्य-द्वितीय

संकेत - (स्थान-कंचनपुरा-लखपतराम दूल्हा भैया का घर, गरीबदास मुखिया, पं.भास्कर महराज और टुन्टाई खवास का पहुंचना)

भास्कर महराज-काये भैया-जिमींदार दूल्हा भैया घरे हैं, तो उनै बुलाओ, कईओ कै टपरियन गांव सें गरीबदास मुखिया लरका देखबे आये सो बायरें अबाई होय।

भूपत साना- (मुंह देखते हुए) लरका देखबे ? आबो होय, कचेरी में तखत पै बिराजो,हम बुला कैं लिआउत। (तीनों का कचेरी में बैठना)

भूपत साना- बड़ी बाई ! दूल्हा भैया खौ बुलाओ, कईओ कैं लला खौ देखबे कछू जनै टपरियन गांव सै आये, कचेरी में बैठे सो उनसैं बात करले, मैं जल-पानी को इन्तजाम करत हों।

कस्तूरी बाई– देखबे आय सौ देख लें, लरका कुन कनुवा–लूलो है ढूढ़ें न मिले हमाये लरका जैसो।

लखपतराम– (अटारी से नीचे आंगन में आते हुए) का है, को आव ?

कस्तूरीबाई– कौनऊं गांव के लला खौं देखबे आये–जाव देखो, ढंग के होंय तौ दिखादो लरका–लैन–दैन की बात पक्की कर लिओ–औ बिटिया को रंग–रूप, चेरा–मौंरा सब जान केइऊँ आगे की बातें करिओ।

लखपतराम – हम देख समज केई बात करहे। तुम मोड़ा खौ अच्छो सजा–बदां कै तैयार कर दियो और हां जो कऊं बे रात कैं रुकै तौ ब्यारी करावनेईं परहे सो तुम लुचई–भटा कौ इन्तजाम कर लिओ।

कस्तूरीबाई – सब होजे, तुम साजे उन्ना पैर कैं जाव औ रुआव –रुतवा सैं बातचीत करियो–गुगरमुंदी न रै जाये कौनऊं बात।

लखपतराम– ई की चिन्ता न करो कुंदन की बाई जू, दूल्हा भैया खों तुम का उल्लू समजतीं, अरे हम ढोर नई आदमी आय चराउत(साना की ओर देखते हुए) साना! तुम गड़ई–गिलास लेकें उनै पानी–आनी पिआव, जोलौ हम तैयार होकैं आ रये।

भूपत साना– हओ भैया–सरबत–अरबत तौनई ले जाने ?

लखपतराम– अबै पांनुअई प्याओ, सटन–पटन लगी–तब देखी जै। पैलऊं सैं काय खौं लड़ईन में गोली खोउत।

(अन्तराल ध्वनि)

संकेत – (केशरिया रंग को साफा, धोती–कुर्ता जाकिट पहिन, कंधे पर बन्दूक टांग मूंछ ऐंठते हुए लखपतराम का कचेरी नाम के कमरे में प्रवेश)

भूपतसाना – (आगन्तुकों की ओर इशारा करते हुए) दूल्हा भैया आ गये जू।

गरीबदास – जै राम जी भैया साब, अबाई होय, हम टपरियन गांव सैं आये, जे हमाये पुरेत जू पंडित भास्कर शास्त्री महराज औ टुन्टाई खवास है। अपुन को लरका देखवे आये, एक मोई बिटिया है, ओई के लाने।

लखपतराम – अच्छे आये बिराजो, लरका देखलो, हमाओ लरका तो हीरा है हीरा खौ जोहरीय पैंचानत, देखबे बारे तो पच्चीसन जनै आये, जित्ते आय सब नंगा आये। अरे हमाई हैसियत सैं उनइस–बीस तो चल सकत, बड़ो घर देखों औ चले आये मौं उठायें–बिना सौचैं बिचारैं, कां राजा भोज कां गंगुआ तेली। (साना की ओर देखकर) साना! जाव कुंदन बेटा खौ लिवा ल्याओ, देख कै मन भर लेबै सब जनै।

साना– हओ जू–जो हुकम!
(साना के साथ कुंदन का शरमाते हुए प्रवेश–सामने पड़े तख्त पर बैठना)

भास्कर महराज– का नाव है बेटा तुमाओ ?

कुंदन – (झेपते हुए) कुंदन

भास्कर महराज – पढ़ो–लिखों है कछू ।

कुंदन – हओ गांवई के पंडित जू पढ़ाउत रये। चिठिया लिखलेत औ बांच लेत।

लखपतराम– भौत है ई सैं जादां पढ़ाकैं हमें कौन पटवारीगिरी आय करावने। इत्तो बड़ो डेरा–डाड़ी सब ऐई खौं तो है सात पैरी लो नईं बड़ाने।

भास्कर महराज–लरका तौ हीरा सौ है मुखिया कैं नईं ?

गरीबदास – भौत अच्छो लगो, लरका तौ सांचऊं हीरा सो है।

लखपतराम – पंडित जू–हीरा की खदान सै हीरई तो निकरत। कुंदन को मतलब सोनो होत, बताओ सोने सो चमक रओ हमाओ बेटा कैं नईं। अरे सोचो इत्ती बड़ी मिल्कियत को मालिक कौनऊ लूला–लगड़ा, कनवा–गूंगा–बैरा थौरई हुए। राजन के राजकुमारन सैं कम नईयां–हमाओ बेटा। अब तुम भीतर जाओ बेटा, हमें और बतकाव करने।(लड़के का घर के अन्दर जाना)(पुनश्च) पंडित जू! अपुन बुरओ न मानियो हम जो कछू कात चोखी–चोखी औ ठोक बजा कैं–घरी भर कौ बुरआसन सब दिन कौ आराम। व्यावकाज बराबरी बारन सेई होत वा हम पैलई बता चुके।

भास्कर महराज–सई कैबो है जू अपुन को।

लखपतराम – देखो महराज हम 20 गांव के जिमींदार, सात सौ वीधा जमीन के मालिक, बाग बगीचा बैल–ढोर भैसें गैयां औ जो गढ़ी सौ मकान अपुन देखई रये। दस ठऊवा हल–बखर चलत। सोनो–चांदी पईसा रुपैया हमाये कोनिन में डरे फिरत। असपेर में पतो करलो बीस गांवन में हमाई चलत–मजाल कोऊ आंख उठाके देखे–कदां पै लटकी ई दुनाली बंन्दूक खौ देख थर–थर कपत जनता।

साना – बीस गांवन की अमल बसूली सैं कल्दारन सैं बोरा के बोरा भर जात, कौनऊं कमी नईया महराज।

लखपतराम – हमने तौ सब बता दओ, अब अपुन तो बताओं अपनी हैसियत, तबई तौ अगांऊ बात बड़े।

भास्कर महराज–मुखिया कैं दौ सौ बीघा जमीन, आंमन को बगैचा औ पांच गांव की जमीदारी, कच्ची–पक्की एक रात की बखरी, दो ढुरऊं बखरीं औ चार बखर चलत, सबई कछू है भौत है गुजर–बसर के लाने।

लखपतराम– ये लो, जा तौ सेर में पौनी के बरोबर नईयां। अब तुमई बताओ पंडित जू जे मुखिया हमाई बराबरी के है का ?

गरीबदास– भैया साब, बिटिया को व्याव अपने सैं सबाये–ड्योड़े–दूने बड़े घर में करो जात, हम अपुन की बराबरी के नईयां–हम तौ गरीब आदमी है अपनी रोटी–भाजी चलाउत।

लखपतराम– तौ भैया अपुन अंत देखलो लरका, टपरियन के

हो, कौनऊँ टपरिया बारो ढूढ़ लो।

गरीबदास – जा कैसी मर्जी भैया जू। हमाई हैसियत से का लेने–देने अपुन कैसो संबंध चाउत सौ बताओ– जो हमाये बुते को हुए तौ–हम हां कै दै नईतर घरै लौट जें।

(अन्दर से खुदई खवास का आना)

खुदई खवास – भोजनन खौ चलवो होय जू–थारी परस गई

लखपतराम – चलो–चलो–संबंध होय न होय–पैले व्यारी करो–फिर बाते करवे खां रात डरी।

(सबका उठकर खाने के लिए प्रस्थान)

–अन्तराल ध्वनि–

(यवनिका का गिरना)

दृश्य–तृतीय

संकेत – (स्थान पुनः कचहरी में सब लोगों का बैठ कर बातचीत करना)

लखपतराम – पंडित जू, भोजन ठीक–ठाक रये ?

भास्कर महराज – भौत अच्छो स्वादिष्ट भोजन हतो, बड़े राजदारन को भोजन आये।

लखपतराम – (हंसते हुए) ह–ह–ह चलो अपुन के जजमान मुखिया जान गये हुऐं बड़े लोगन को खान–पियन कैसो होत–अब इत्ते सेई समज लेबे–बड़े छोटन को फरक। का जे हमाई बराबरी लाख है।

गरीबदास – हम तो पैलऊं बता चुके कै हम अपुन की बराबरी नई कर सकत पै बड़े लोग गरीबन खों निभा लेत, बड़प्पन होत उनके दिल में तबई तौ वे बड़े कुवाउत।

लखपतराम – इन बातन में का धरौ, निबाबे की बातें सब करत, बिटिया बारे सब गरीब कात अपने खों, ऐसो कै–कैं चूना लगा देत लरका बारे खों–चलो अब जा बताओ बिटिया कैसी है रंग–रूप सैं ई बड़े घर लाख है।

टुन्टाई खवास– (बीच में) ओ जू बिटिया तौ गोरीनारी, सुन्दर रैन की पुतरिया सी लगत,सब कामन में हुशियार, गाउत–बजाउत है औ रामान अच्छे स्वर में बाचत। भौतई नौनी जोड़ी रेहे।

लखपतराम – (मूंछो पर हाथ फेरते हुए) हूं – ऊं।

गरीबदास – भैयाजू, अपुन तौ बताओ, अपुन का चाउत, कैसो ब्याव, दैबो–लेबौ, स्वागत–सत्कार नेंगचार का कैसो ?

लखपतराम– खवास के मौं से बिटिया की बड़ाई सुनी सो लगत जोड़ी तौ अच्छी बनत–पै व्याव को बोझ न उठा पै हो मुखिया तुम–देखो ईसुर कौ दओ सब कछू है, हमें कछू नई चाने पै इज्जत के हिसाब सैं व्याव करने परै सो ऊ लाख तुमाओं बुतौ नई दिखात हमें।

गरीबदास – गरीब हों, नावई गरीबदास है पै अपुन की तों सुनले, हुकुम करो, जो कऊं मोय बस कौ ना हुऐ तौ भुन्सारे अपने घर की गैल धरौं।

लखपतराम – हमाओ नाव लखपतराम है, हमाये पुरखन कै लखूरो जरत रओ। एकई मोड़ा है, व्याव में कोऊ नाव न धर पाये–कैबे खौं हो जाये कैं दूल्हा भैया इत्ते धनवारे होके मोड़ा व्यावे मंगना कै इतै पौचे –हमाई भलमुन्सियात सब धूरा में मिल जे।

गरीबदास – जई सैं तो मैं पूंछ रओ अपुन सैं।

लखपतराम – देखो, हमाये इतै–पक्क्यात,सुतकरा,लगुन टींका–बेला सब नेंगन में चांदी के एक सौ एक रुपैया आउत रये। दान–दायजे में हड़ा–कुपरा,कलश, पांव पखराई को कुपरा कांसे की टाठीं–बेला और तमाम वर्तन–भांड़े, लगुन में रेशमी बागे को लरका के लाने कपड़ा जोई सब, अरे हड़ा तों इत्तो बड़ो कैं घर के द्वारे से नई कड़त–ठांट टोर कै भीतर धरे गये–तो जोई सब करने परै अपुन खो। दायजो देखतई रऐं गांव बारे।

गरीवदास– हओ जू–और बरात–स्वागत सत्कार को कैसो का?

लखपतराम – हां भैया बरात–देखो हम बीस गांव के जमींदार–तौ हल्की–पतरी बरात तौ हुये ना। सो सब गांवन के किसान जिनके पईसा सैं हम बड़े आदमी बने,छक्के–पंजे उड़ा रये उन्हें कैसे छोड़ो जा सकत –सब किसान, व्योहारी बराते जैहै। मोय तो लगत हमाये गांव सें तुमाये गांव तक बैलगाड़ियन को तांतो न टूटहे–अंग्रेजी बाजे बारे कम सैं कम सौ आदमी, कानपुर की नौटंकी,बीसक घुरवा, दो–चार हाथी, सिकरम बग्घी, आतिशबाजी बारे, नट भाट नचैया, पालकी–डोलन के कहार, बहुरुपिया, पतुरियां, नौकर–चाकर सब बरात में आहे हम कांलौ गिनाऐं–जमीदार दूल्हा भैया को जैसो नाव है ऊसी बरात–कौनऊं भूके–भैराने की थोरई आये।

गरीबदास – पांत–पंगत कैसी चाउत जू ?

लखपतराम – लो अब जो सोऊ बताउने परहे–चार दिना की बरात–टीका के दिना पौनछक, दूसरे दिना कच्ची पंगत–जी में दार–चावर,माड़े–बरा–साग–सब्जी, घी शक्कर–देखी सुनी हुऐं ऐसी पंगते–कुन नई बात आये।

गरीबदास – औ तीसरे दिना ?

लखपतराम – पक्की पंगत–दो तीन तिरकारीं,रायतो,शक्कर,लुचई औ पचमेर–सतमेर मिठाई–दौनाभर कै। एक बात पै ध्यान दिओ–चढ़ाये में हम बहू खौ एक सेर सोने को गानों जीमें–बीज,शीशफूल,बेंदी,हार, बाजूबंद, चूरा, हथफूल, लरलरी, बिचैली, ठुसी, तिदानो,ककना, चुरियां, अंगूठी, करदौनी सबई पांवन को जेबर, लच्छा–झांझे, अनौखा, पायजेब और भौत कछू–सो ई खों रखाबे चार–छै मुचंडा सोऊ आहें बरात में।

गरीबदास – और कछू रै गओ अबै बतावे खो, बो सो बता दो।

लखपतराम – अब का इत्ती बड़ी बरात के ठेरबे खौं जनबासे को इन्तजाम,पानी–पंगल,रिस्तेदारन खौं पलका–बिछौना, छांयरे खौ पाल–पलेरियां, बैल, घोड़ा–हांतियन खो बांदवे, चारो बन्दो रातब सब को इन्तजाम–जा कछू बतावे की आय–अपुन इत्तोई नई जानत, का कभऊं बड़े लोगन की बराते नई गये का।

गरीबदास – नेंग–चारन को कैसो का है ?

लखपतराम – सब तौ बतादओ,लरका खों बंद छुराई औ कलेवा रै गओ–सो जो दूला मांगे बो देने परे।

गरीबदास – ठीक है सब सुनलई–जो कछू हमसें बन परे सो करें–कछू कमीं रै जाये तो क्षमा कर दियो।

लखपतराम – बन परै नईं–करने पर हे। हम इज्जतदार जमींदार बड़े आदमी आयें कहाउत–गड़बड़ी भई तौ की खौं मौं दिखाहों–ई सैं खुली बात है पंडित जू अपुन गवाह हों,जो कऊं मांग पूरी न करी, बरात न संमार पाये औ हमाई तौहीन भई तौ ओई बेरां हम बरात लौटा लियायें, बिटिया क्वारी बैठी रये तौ ई के हम जुम्मेदार नईं– बोलो–मंजूर है।

गरीबदास – निबा लियो, ऐसो न करियो, बिगरी सुधार बेई में अपुन को बड़प्पन रे है।

लखपतराम – जे चीकनी–चुपरी बातें ऐंकऊ न चलहें, जैसो बताओं बो सब कर सको तौ हम संबंध करबे खौं तैयार हैं नईंतर भैया घरैं जाव–अंत कऊ ढूढ़लो अपनी बराबरी को घर।

भास्कर महराज– सब होजे मुखिया, हां कैदो न। भगवान सब पूरो करें। (हाथ दबाते हुए धीरे से) आदमी घमंडी दिखात।

गरीबदास – महराज हमाई तौ हओअई है। (धीरे से) पुरैत जू अबै ऊंट पारबा के नेचे से नई कड़ो।

लखपतराम – हओ है तौ करदो लरका छिकाई को नेंग–रक्खो लरका के हांत पै एक सौ एक चांदी के कल्दार औ खुबा दो पान–रिस्तो पक्को।

गरीबदास – जैसी मर्जी–बुलउवा करादो गांव में हम नेंग करबे तैयार हैं।

संकेत – (गांव के बुलउवा बालों के समक्ष लड़का छिकाई की रस्म अदायगी– महिलाओं के मंगलगीत तथा रमतूला, ढोल बजने के स्वर)

(यवनिका का गिरना)

दृश्य–चतुर्थ

संकेत – (गरीबदास का घर, पत्नी गौमती के साथ आंगन में बैठ गरीबदास से बातचीत)

गोमती– हमने सुनी कंचनपुरा सैं समदी जू ने खबास के हांतन चिट्ठी पौंचाई, बा पढ़ी कै नई का लिखो ऊ में ?

गरीबदास– पैलें तुम खबास खौ खुवा–पिया औ सिरोपाव दे कै बिदा करो फिर फुरसत सैं बांचे चिठिया औ तुमें सुनाऐं का लिखो ऊ मैं।

गोमती – खबास खौ खुआ–पिया दओ, सिरोपाव देकें बिदाई कर दई जैसी होत की आय। अब खलीता सैं चिठिया निकार बांच के सुनाओ, पनमेश्वरे नैं और कौनऊं रट्टो तो नईं बिदै दओ। हे राम जाने कैसें पार परत जो ब्याव ?

गरीबदास– तुम चिन्ता न करो किशोई की मताई सब ठीक हुए–लौ बैठो जा है चिट्ठी हम बांच कैं सुनाउत तुमें (गोमती का शान्त होकर बैठना, गरीबदास का चिट्ठी पढ़ना)

गरीबदास– ऐते कंचनपुरा सैं बीस गांव के जिमींदार लखपतराम दूल्हा भैया की रामराम बांचनैं। जा चिठिया हम जो बातें हमने बताई तीं उनकी फिरसैं खबर कराबे खौं भेज रये जी सैं ब्याव में कौनऊं भूलन न होय–सुतकरा भेज दओ अब लगुन आंओने सो जैसी बात भईती ओई हिसाब सैं भेजियो हम लगुन की पंगत में बीसऊ गांवन के लोगन खां बुलारये–चार–छै मन तौ अकेले बतासा बुलउवा में बट जाने–बे सब बराते आहें सो जित्तो इन्तजाम हमने बताओ तौ,कर लिओ, कऊं गड़बड़ी भई तौ हमने पैलऊं बता दई ती कै हम मड़वा तरे सैं भांवरन में सैं लरका खौ उठा लियायें, हम बड़े आदमी कहाउत,हमांई इज्जत पै पांनू न फिरै ई सैं एक बेर फिर बता दई,अब अपुन जानो हम अपनी इज्जत पै दांग न लगन देहें। जैराम जी की।

गोमती – (आह भरी स्वांश लेते हुए) कैसे बड़े आदमी है, इनै बड़प्पन छू तक नईंगओ– बरात लौटाबे की धमकी का ऐसौ करे सैं उनकी भलमुन्स्यात खौ बट्टो न लगहे ?

गरीबदास– हम सब निपट लेंहैं तुम काय रुआयदीं हो रईं।

गोमती – ऐसे बुरये औ घमंडी आदमी के घर में मोई गऊ सी सीदी–सादी बिटिया किशोरी को कैसें निबारो हुऐ अपने पेट को पथरा सबैं प्यारो होत,ऐई चिन्ता आय सता रई मोरे मन खौं किशोई के बापू।

गरीबदास– सब ठीक होजै– जे सब ब्याव की बातें आये, हम उनकी घौंस–धपट सैं नई डरात–बरात तौ आन देव। हम कछु ऐसो औठपाव करबी कै उनको घमंड पानी–पानी होजै (तुम तनक धीरज धरौ) अरे जो कोऊ सूतना सिलाउत ऊ मूतबे खौं गली पैलऊं बनाउत। अरे मूंड़ मुड़ाव तौ ओरन को का डर।

गोमती– लगुन लिखी धरी, ई पखवारे में पौचों चईये, अब व्याव के कैं दिना रै गये, नेवते रिस्तेदारन लौ पौंच गये।

गरीबदास– आजईं पौंचा रये, पंडित जू औ खबास आऊतई हुऐ, बे लेकैं जा रये, और सुनो, उनकी चिठिया

के जबाव में हम सोऊ एक चिट्ठी पौंचा रये।

गोमती– का लिखो जबाब में ?

गरीबदास – तुमें ईसै का कन्ने,तुमें एक काम बताउत सौ बो करो।

गोमती– का काम ? बताओ।

गरीबदास – तुम एक नई सी चौरी ढूढ़ कैं लियाओ और ओई भर कुदई।

गोमती – चौरी औ कुदई ? कैसे हो, ई कौ अबै ब्याव– –काज में का काम। जिदना मैर कीं मांयें बनहे ऊ दिना चून नापबे खौं जरूरत परत।

गरीबदास – ई मैं न परौ, तुम सैं जो कई सौ करो। नये उन्ना में चैरी औ कुदई बांध कै हमें देओ।

संकेत – (गोमती का अन्दर जाना–थोड़ी देर में पोटली में चैरी और कुदई बांध कर लाना गरीबदास को देकर बापिस जाना–तभी भास्कर महराज औ टुन्टाई खबास का प्रवेश)

गरीबदास(पुनश्च)–अरे तुम कां जा रईं किशोरी की मां, देखो पुरेत महराज औ टुन्टाई खबास जू आ गये। इने लगुन को सामान बता दो (टुन्टाई खबास की ओर इशारा करते हुये) खवास जू लगुन को सब सामान लगौ धरौ, सौ उठाकैं बैलगाड़ी में धरौ। (पंडित की ओर इशारा करते हुये)महराज लगुन के सामान के संगे–ई उन्ना में बदौ सामान औ जा चिट्ठी(चिट्ठी देते हुए) समदी साब के हांतन में दिओ।

भास्कर महराज–चिट्ठी औ पुटरिया? ईमें का बंदौ मुखिया जू।

गरीबदास – ईमें न परौ पुरैत महराज अपुन तौ दे दिओ। उनकी चिठिया को जबाव ई चिट्ठी में लिखो है सो बे खुद बांच लेहे।

भास्कर महराज– ठीक है तौ अब हम चलत हैं खबास जू चलो भैया, हकवाओ बैलगाड़ी।

संकेत – (पंडित और खबास का बैलगाड़ी पर बैठ कर कंचनपुरा के लिये प्रस्थान)

(अन्तराल ध्वनि)

(यवनिका का गिरना)

दृश्य पंचम

संकेत – (स्थान कंचनपुरा–लखपतराम परेशान से माथा पकड़ कुछ सोचने की स्थिति में आंगन में बैठे पत्नी कस्तूरी बाई ने आकर हाथ पकड़ कर ध्यान भंग करते हुए)

कस्तूरीबाई – का सोच रये कुंदन के दद्दा,सब होजे–इत्ती चिन्ता में काय परे, तुम कौन बिटिया को ब्याव आय कर रये, अरे लरका व्यावन आय जा रये।

लखपतराम – अब का बताऐं तुमें कुंदन की बाई, हम अपने बुने जाल में खुदई फंस गये–बड़ीं–बड़ी बातें करकैं एक सेर सोने के जेबर बहू खौ चढ़ावे की हूंक दई, सोचो तौ कौनऊ सेठ–साहूकार सैं मांग कैं चढ़ा देहै, सो खूब वाहवा हुए, बहू घरै आजे सो उतार कै जां कौ तां दे आये। सब लौं फिर आये कोऊ देबे खौं तैयार नईयां। हमाओ विस्वासई नईयां काऊ खौ।

कस्तूरीबाई – बड़ी–बड़ीं बातें हांकबे की तुमें आदत पर गई– मैं हटकत रात कै उत्ती बात करो जित्ती बस की होय पै तुम मानतई नईया जब देखो तब लाटसाबी दिखाउत रात।

लखपतराम– ना घोड़ा न हांती, नौटंकी अंग्रेजी बाजे कछू नई बांद पाये औ ब्याव ऐंगर आ गओ–अरे बे इत्तौ मौं बाउत कै हिम्मतई नईं परत–बताओ कां सै ल्याऐ पईसा–टका। बराते चलबे खो जी सैं कात ओई बहानो बना देत–अब बताओ कां से इकट्ठे करें बराती।

कस्तूरीबाई– जैसो बोहो ऊसई तो काटबे मिले–ऐसेई मौंकन पै तौ आदमी के व्योहार को पतौ चलत–गरीब –गुरुअन खौं सताबो अच्छो नई होत–कौ देहे ऐसे आदमी को संग–सब बेगार सैं बचत।

लखपतराम – तुम का जानों, अमियां निबुआ बानियां मसके सैं रस देत,ऐसो न करें तौ कैसैं इत्ती धन दौलत के मालिक होते।

कस्तूरीबाई– सब है अकेलें संतोष नैयां अपुन खौं–अरे–गौ धन गजधन बाजधन और रतन धन खान, जब आबै संतोष धन, सब धन धूरि समान।

लखपतराम – (उत्तेजित होकर) मोई बदौलत रानी बनी बैठी गर्रा रईं औ मोई खौं उपदेश। तुमाओ मौं कतन्नी सौ चलत, ईऐ बंद रक्खो, हम सब इन्तजाम कर लेहे– सब बिदीं पचैंटीं जानत हम।

कस्तूरीबाई – गरबे हो सौ गरबे रओ–जैसो दिखाये सो करो, मोय कांय खौ गरयाउत। (साना का प्रवेश)

साना– दूल्हा भैया, ! टपरियन सैं पंडित औ नांऊ लगुन लेके आये हैं हमने उनै कचेरी में ठैरा दओ चलकैं लगुन को सामान देखलो। कल्ल बुलउवा करवा दियो–अकेलें बतासा मंगवाने पर है। लरका के हांत पै लगुन धरी जै हे तो बटाउने परहे।

लखपतराम – उन्हें पानी–सरबत–अरबत पिलाओ–हम आउत हैं। (कचेरी की ओर जाना) रामराम पंडित जू लगुन ल्याये, उतै सब ठीक–ठाक है जैसो हमने कओ तौ।

भास्कर महराज–हओ जू–हमाये जजमान मुखिया नें कोशिश भर सब कछू को इन्तजाम कर लओ। लगुन के सामान के संगे एक चिठिया पौचाई सौ पढ़ लय जाये–और एक पुटरिया में जाने का बांध कैं पौचाओ, औ कई कै समदीय साब के हांत में दियो–सो संमार लई जाये।(पोटली हाथ में देना)

लखपतराम– साना ! खबास सैं जो सामान भीतर पौंचादो, जा चिट्ठी औ पुटरिया हम लैके आ रऐ। सरतारे मे पढ़े। (खबास का सामान ले जाना–अन्दर चिट्ठी

खोल कर पढ़ना)

कस्तूरीबाई – जोर सैं बांचिओ, हमऊं सुनै का लिखो समदी जू नैं।

लखपतराम – लो सुनो–''ऐते टपरियन सैं गरीबदास की समदी जू श्री लखपतराम–दूला भइया जिमींदार साब खौ रामराम औ चरन छूबो पौंचे। आपर इतै हम ब्याव के इन्तजाम में लगे हैं जो कछू मौं सैं बन रओ सो ओई करबे में जुटे हों, सबरे गांव बारे गांव खौं दुलैन घांई सजावे में लगे है–दस बीगा के बगैचा में जनबासो बनाओ जी में रसूखदारन के लाने,दस–बारा रावटीं, जिनमें पलका–बिछौना सब हुऐं लगा दई। पाल–पलरियां,चांदनियन ने पूरौ बगैचा ढांक लओ जी में बराती विश्राम करहे। एक अंग्रेजन के बंगला घांई पाल,जी में चैबीस कोठा हैं बीच में चैकोर आंगन सो है,लगा दओ। कोठन में मानदान ठेंरैं औ बीच आंगन में जाजम, गलीचा कालीन बिछे रे हैं–ओई में हो कै पंचडेरा, राछबधाव जैसे सब दस्तूर हुऐं–दरबार सौ सजौ– छड़ी–पंखा झलबे, अतर–फुलेल की वर्षा करबे बारे, भाट, नट, बहुरुपिया नांचबे बारी बेड़नी– पतुरियां अपने–अपने करतब दिखाहें, जे सब अपुन बरात में लियाईरये। डेरा में पानी के लाने डारियां, हांती घोड़ा, सिकरम बंग्घीं बैलगाड़ियन के लाने एक बड़े बाड़े में प्ररबन्ध कर दओ उतई चारो–बंदो, रातब की व्यवस्था रेहे। पांत–पंगतन के लाने मिठयन नै काम शुरू कर दओ।अब और कौनऊं कसर रै गई होय तौ पंडित जू खौं बता दियो, उये पूरी करबै की कोशिश करहों।

समदी जू साब ब्याव में लुगाई गाउती कैं–''कोट नवै पर्वत नवै जब साजन आवै'' मैं तौ अपुन की अबाई के पैलऊं इतनौ नव गओ कै मोई करयाई झुक गई सो मोई विनती है ई गरीब खौ निवा लियो– भूल–चूक हो जाये तौ बड़े लोगन की तरां–आई–गई करकै मोंहां क्षमा कर दियो–मै पांवन की धूरा बरोवर नईयां–सो बा धूरा मोय मांथे पै लगावन दईयो।

एक विनती और है कै भौत बड़ी संख्या में बरात को बोझ न लादियो मोई पीठ पै–ऐई सैं मैनें एक हल्की पुटरिया में ''चौरी भर कुदई'' पौंचाई सो कुदई के दाने गिनवां लियो–जितने दाने होंय उत्तेई आदमी बरात में ले कैं पधारियो– ई सैं कम–बढ़ नईं जी सैं मैं बरात को स्वागत– सत्कार अच्छे सैं कर सकों–मोरी लाज रखियो। जै राम जी की। मौजा टपरियन।

कस्तूरीबाई – चौरी भर कुदई के दानन बरोवर बरात ? ऊ में तौ केऊ लाख दाने हुऐ–इत्ते आदमी कां सै जोर हो बरात के लाने–कुंदन के बापू ?

लखपतराम – (निडाल हो दीवाल के टिक बैठ उसांस भरते हुए) सौ सुनार कीं एक लुहार की – जो सब हमाई अबाई – तवांइन को नतीजा है, हम धन के नशा में चूर हो इन्सानियत खौं भूल गये ते कुंदन की मां–आकाश में उड़न लगे ते–समदी ने हमें जमीन पै पटक दओ–घमंड कीं धज्जीं उड़ा दई।

कस्तूरीबाई – अपुन नै कभऊं आदमी खौं आदमी नई समझो, जीखौ देखो तीखौं लतयाउत रये–कभऊं दया धरम गम्भीरता औ नम्रता जैसे साजे गुनन के ऐंगरई सैं नई कड़े। समदी खौं तौ देखो बिना हल्ला–गुल्ला करैं मसकऊं तुमें धरती पै बिठार दओ–पंडित तक खौं नईं पतौ की ई पुटइया में घमंड की बीमारी की दबाई आय बांद कैं पौचाई दूला भैया जू कै लाने।

लखपतराम – रावन खौं मंदोदरी ने कित्तो समजाव तौ पै अहंकार के बसीभूत सोने की लंका के राजा ने काऊ की न मानी, बिभीषण ने नीत की बात कई सो ऊखौ लात मार कैं भगादओ तौ–ओई हाल हमाओ रओ –समदी की चौरी भर कुदई नै धन कें अहंकारी पैलबान खौ कुश्ती में तरीछों कर दओ।

कस्तूरीबाई – चलो देर आये दुरुस्त आये–भौर के भटके संजाकें घरै आ गये–अब बताओ आगूं का बिचार है।

लखपतराम– अब हम न केवल उनकी बिटिया खौं घर की लक्ष्मी बनाके ल्यायें बल्के उनके करजदार बनकें अपनी गल्तीयन, बड़बोलेपन औ अभद्रता के लाने माफी मांग हे।

कस्तूरीबाई– तौ उठो अब आंगू को काम देखो।

(दोनों का अपने अपने कामों में जुटने के लिए जाना)

(सुखद अन्तराल ध्वनि)

(यवनिका का गिरना)

दृश्य-षष्ठ

संकेत – (ग्राम टपरियन में बरात का आगमन–गांव के लोगन द्वारा जनमासे में ठहराना–पानी शरवत पिलाना–एक ओर से गरीबदास का बाजे–गाजे के साथ स्वागत के लिये जनवासे पर पहुंचना)

गरीबदास– (लखपतराम की ओर बढ़ हाथ जोड़ पैर छूने को झुकते हुए)स्वागत है समदी जू–अपुन के चरन परे सैं मैं ओ ई गांव की धरती धन्य हो गई।

लखपतराम– (झुक कर गरीबदास के हाथों को अपने हाथों में लेते हुए)हमाये पांव न छुओ समदी साव जे भले मनुष्य के पांवन घांई पवित्र,धरती पै चलवे बारे पांव न होंय जे घमंड अभिमान अशिष्ट मद और अमानवीय अवगुणन सै बोझल हैं,जे धरती पै नई आकाश में उड़त रये।

गरीबदास– कैसीं बातें कर रओे अपुन–हम कब सैं तरस रये

इन पांवन खौ धौके पीबे-मोरी बिटिया किशोरी खौ इन चरनन को सहारो मिलो ऊ को कन्यादान करकैं हमाई तौ सात पैरी धन्य हो गई।

लखपतराम - (एकायक गरीबदास के पैरो की ओर झुकने और गिरने की चेष्टा करते हुये) मोहां क्षमा कर दो समदी जू ऐसौ बतकाव करकै मोहां और लज्जित न करो-छू लेन देव इन चरनन खो-अपुन देवता हो, मानवता के गौरव हो और हम बड़े आदमी को दम भरबे बारे बड़े नईं तुच्छ इन्सान हैं। अपुन ने मोहां आकाश सैं धरती पै उतार लओ, जो अबैं लो मानव के रूप में जनम लेंके इन्सानियत छोड़ हैवानियत की गलियन में भटक रओ तौ, माया के जाल में फंस मतिमंद - अभिमान के गंदे नाले में डुबकी लगा रओ तो।

गरीबदास - समदी जू साब! का हो गओ अपुन खौ,जी खौ बिटिया सौपी जात बो मानदान होत पुरखन सैं परम्परा चली आई उने सम्मान देवे की सो हमाओ सम्मान स्वीकार करो जे उल्टी बातें काये कर रये, का गल्ती हो गई मौसैं, उल्टे मोय पांव छू कैं पाव में न डारों जू। अपुन पूज्य है, बड़े है काय पुरैत महराज है कै नई, समजाओ समदी साब खौं।

भास्कर महराज-जिमीदार साब, गरीबदास मुखिया को कैबो सई है आप बड़े हो, मानदान ऊंची पदवी और सम्मान के अधिकारी हो सो मुखिया खौं निभाउन दो लौकिक परम्परा।

लखपतराम - नई पंडित जू, हम तौ ऊ नदिया सैं भी गये बीते है जी खौ कात-छुद्र नदी भर चल उतराई, जस थोरे धन खल बौराई। महराज अपुन गवाह हो, हमने धन-दौलत रहीसी ओ घमंड के नशा में कैसीं-कैसीं अबाई-तबाई दई,धृष्टता सैं पेश आये -ऐसे गरजत रये-जैसे घन घमंड नभ गरजत घोरा -कित्तो भलो-बुरो कओ-अरे मंगना तक कै डारो ऊ दिना मुखिया जू खां-जो क्षमाशील औ पर उपकारी लोगन में सैं हैं, भौत बड़ी भूल हो गई मो सैं। भूल गये ते कै मंगना तौ हम हैं, का-का मांग लओ दायजे में, जे दान कर रये औ हम ले रये। जे कन्यादान कर रये, जो हमाये घर की लक्ष्मी बन हे, स्वागत-सत्कार हमाओ कर रहे, पांव पूजरये-जे दानदाता औ हम लेबे बारे भिखारी-अब बताओ को बड़ो है ?

भास्कर महराज-जै हो जिमींदार साब, जो महानता औ बड़प्पन आये अयोध्यापति महराज दशरथ जू जैसे सुन्दर विचार सुनकैं, हमाये गांव की धरती, जजमान गरीबदास औ हम सब धन्य हो गये।

लखपतराम - नई-नई। पंडित जू, धन्य तो हम आये हो गये, हमाये समदी गरीबदास विदेह की तरां गम्भीर, शील स्वभाव औ मानवी गुणन की खान है एक संत स्वरूप हैं जिनने काम क्रोध मद लोभ की भौंर में फंसे अमानव खों मानव बना दओ- बची जिन्दगी खों जीबे की नई दिशा औ गली धरा दई-अब गरीबदास जू समदीयअ नईं हमाये गुरू बन गये-अब जानो मैंने कै-'''जिन्ह के जस प्रताप के आगे,शशि मलीन रवि शीतल लागे।

गरीबदास - पाप में न डारो जू हम तौ अपुन के सांमू कछू लौ नैइयां और अपुन मोहां गुरू जैसे पवित्र पद पै बिठा रये।

भास्कर महराज-हमाई कछू समजई में नई आरओ तुम दोऊ जनन को बतकाव, ऐसौ कौन सो चमत्कार हो गओ जी से अपुन के हृदय में ऐसौ आश्चर्य जनक बदलाव औ हमाये जजमान मुखिया जू के लाने ऐसे सुन्दर भाव पैदा भये?

लखपतराम - एक जादू की पुटरिया पंडित जू-जिये अपुन लगुन के संगे ले गये ते।

भास्कर महराज- का हतौ ऊमैं ऐसो भैया जू ?

लखपतराम- **''चौरी भर कुदई''**-जी ने हमाई धन्नासेठी, अहंकार, अशिष्टता, अमानवीयता औ अभिमान जैसे दुरगुनन कीं धज्जी उड़ा दई और मनुष्य के रूप में नओ जनम दओ।

गरीबदास - (आत्मविभोर हो) मैं .... मैं (दोनों का सीने से सीना लगाकर लिपटना) (पार्श्व से सुखद संगीत स्वरों का गूंजना)

भास्कर महराज - (आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठा कर)

मिले जनकु दशरथु अति प्रीती, कर वैदिक लौकिक सब रीती।
मिलत महादोउ राज बिराजे, उपमा खोजि खोजि कवि हारे।।

संकेत- (रमतूला-ढोल-शहनाई के तेज स्वरों के साथ बारात का पैठाई के लिए प्रस्थान)

(संम्बेत स्वर में कलश लिए महिलाओं द्वारा पारंपरिक गीतों की बौछार)

नाचत आबै सजन जू के घुड़ला,
बाजत तबला निशान,मोरे लाल
काहे पै आबै साजन समधी,
काहे पै लाड़ले दमाद, मौरे लाल
हथिया पै आवे साजन-समधी,
घुड़ला पै लाड़ले दमाद-मौरे लाल

संकेत- (यवनिका का धीरे-धीरे गिरना-उठना-स्वरों का लोप होना)

पटाक्षेप

- बजरंग नगर, छतरपुर(म.प्र.)
मोबा. 8435474258 卐

बुन्देली लोककथा-

मिन्दो रानी

- डॉ. ओमप्रकाश चौबे

ऐसई ऐसें एक मिन्दोरानी हती। बा मिंदरिया कूंदत-कूंदत जा रयीती सो भैया उतई गली में एक डुकरिया धूरा में गांकरें सेंक रईती। मिन्दो ने देखों कै डुकरिया धूरा में गकरियां सेंक रई है सो मिन्दो ने डुकरिया सें कई काये बऊ तुम धूरा में गांकरें कायें सेंक रयीं? डुकरिया बोली बिन्नां हम तो आंदरे पबरत हैं, ने दिखाय, ने सुजाय अब तुमई बताव कै हम कांसें कंडा नकरिया ल्यांय! मिन्दो ने पहार सें कंडा ल्यान दये। डुक्को ने गांकरें सेंकी। दो गांकरें सिकीं हती कै मिदरिया उनपै कूंदन लगी। डुक्को ने कई कायेरी मिंदरिया मोरी गांकरें काये खराब कर रयी?

मिन्दो बोली - हार गई, हार सें कंडा ल्याई
कंडा मैंने तोय दीने,
तूं का मोय एक गांकर ने दैहे।

डुकरिया ने एक गांकर दै दई। मिन्दो गांकर लैके चलीं। आंगे एक कुम्हार को मोंडा रो रओ हतो, मिन्दो ने ओय गांकर पकरा दई। कुमार के घरै दो मटका टंगेते सो वा मिन्दरिया उनपै कूंदन लगी। कुमारन बोली कायेरी मिंदरिया तें मोरे बासनों पै काये जुलम जोत रई?

मिंदरिया बोली - हार गई, हार सें कंडा ल्याई,
कंडा मैंने डुक्को दीने,
डुक्को नें मोय गक्कू दीनी,
गक्कू मैंने तोय दीनी,
तू का मोय एक मटकी नें दैहें।

कुमार ने ओय एक मटकिया पकरा दई। मटकिया लैकं मिन्दों चलीं तो का देखत हैं कै उतई गली में एक ग्वाल कौ घर मिलो, वो ग्वालन उखरी में सें मई भां रयी हती। मिन्दो ने देखो तो ऊये दया आ गई अर मिन्दो ने ग्वालन खों मटकिया दै दई। ग्वालन मटकिया में दही भाऊन लगीं। मिन्दो ने देखो कै ग्वाल की दो भैसें बंदी हैं सो मिन्दो जाकें उनपै कूदन लगी वा ऐपें कूदे अर औपे कूंदे। ग्वाल ने देखो तो बो बोलो कायेरी मिंदरिया तें मोरी भैंसों खों काये मारें डार रयी।

मिन्दो बोली - पहार गई, पहार सें मैं कंडा ल्याई,
कंडा मैंने डुक्को दीने,
डुक्को ने मोय गक्कू दीनी,
गक्कू मैंने कुमार दीनी,
कुमार ने मोय मटकी दीनी,
तूं का मोय एक भैंस ने दैहें।

ग्वाल नें मिन्दों हे एक भैंसिया पकरा दई। मिन्दो भैंसिया खों डुरया कै चली सो आंगे एक राजा कौ घर मिलो। मिंदरिया ने देखो कै राजा रूखो भात खा रये हते सो बा कान लगी, काये राजा तुम रूखो भात काये खा रये। राजा बोले बिन्ना तुमाये जैसी भैंस कांसे पाये? मिन्दों ने उने बा भैंसिया पकरा दई। मिन्दो ने देखो कै राजा की दो रानी हैं सो वा मिंदरिया ऐपै कूंदे अर ओपै कूंदे। राजा बोले कायेरी मिंदरिया तें जो का करन लगी।

मिन्दो बोली - पहार गई, पहार सें मैं कंडा ल्याई,
कंडा मैंने डुक्को दीने,
डुक्के ने मोय गक्कू दीनी,
गक्कू मैंने कुमार दीनी,
कुमार ने मोय मटकी दीनी,
मटकी मैंने गूजर दीनी,
गूजर ने मोय भैंस दीनी,
भैंस मैंने तोय दीनी,
तूं का मोय एक रानी ने देहैं।

सो भैया हरो राजा ने मिन्दो खों एक रानी दै दई। मिन्दो रानी है लैकें आंगे चली सो आंगे एक बसोर की घरवारी मर गईती सो बसोर अपने हांत भूंजके रोटी बनाउतते सो मिन्दो खों देखकें बड़ी दया आ गई। मिन्दो ने बसोर खों रानी दै दई। मिन्दो ने देखो कै बसोर के घरें दो अच्छे ढ़पला टंगे हैं। सो वा ऐपै कूंद अर ओपै कूंदे। बसोर ने देखो सो बो बोलो काये मिन्दा तुम मोरे ढपलो पै काये कूंद रयी, अरकंऊ फूट गये तो का हुइये?

मिन्दो बोली - पहार गई, पहार सें मैं कंडा ल्याई,
कंडा मैंने डुक्को दीने,
डुक्को ने मोय गक्कू दीनी,
गक्कू मैंने कुमार दीनी,
कुमार ने मोय मटकी दीनी,
मटकी मैंने गूजर दीनी,
गूजर ने मोय भैंस दीनी,
भैंस मैंने राजा दीनी,
राजा ने मोय रानी दीनी,
रानी मैंने तोय दीनी,
तें का मोय एक ढपला ने दैहो?

मिन्दो की बात सुनकें बसोर ने ओय एक ढपला दै दओ। मिन्दो ढपला लैके चलीं। चलत-चलत दिन डूब गब अंधेरो हो गव मिन्दो ने देखो कै सामने एक अखैबर कों पेड़ो है सो मिन्दो ढपला लैकें ऊ अखैबर के पेड़ पै चढ़ गई। ओ पेड़े के नेंचे कछू चोर बैठे हते वे अपनी चोरी कों बटवारों कर रये हते। इतै मिन्दो पूरे दिनां चलत-चलत हार गई हती सो ओये नींद आ गई। नींद में ऊके हांत सें ढपला छूटकें गिरो। ढपला गिरबे सें ऐरो भओ सो वे चोर समजे कै गाज गिर गयी है सो बे अपनी माया छोड़कें उतै सें भग गये। मिन्दो की नींद खुली तो नेचें माया दिखानी सो मिन्दो वा माया लैके अपने घर चली गई। "हती किसा सो पूरी भई"

- श्रीराम कालोनी, गोपालगंज, सागर (म.प्र.) 470001
मो.नं. 9893931888 卐

समय की मांग

– **स्व. लक्ष्मी शर्मा**

बाबू जी अपनी बिटिया पे गुस्सा हो रये हते। उनकी बिटिया देवकी आंगे पढ़वे के लाने लगी हती। बाबूजी और आंगे ने पढ़ाउन चाहत हते।

बाबूजी कहन लगे-''अब तुम्हें और कित्तो पढ़ने है, हो गई पढ़ाई''

''बाबूजी, अबै हमें आंगे पढ़ने है।''

''बस हो गई पढ़ाई, जित्तो पढ़ने हतो सो पढ़ लओ है।''

रामप्रकाश की बिटिया बी.एस.सी. पास हो गई है। अब एम.एस.सी. पढ़न चाहत है, पे बाबूजी नई पढ़ा रये। देबकी रोन लगी और अपनी माँ से कन लगी-''तुम जान के बाबूज से कहो के बे हमें आंगे पढ़ लेन देवें।''

देबकी की माँ ने जान कें रामप्रकाशजू से कही-''मोड़ी जब से किलप रई आंगे पढ़बे के लाने तो तुम हामी काय नई भर देत हों।''

''अब तुम ऊ की सिपारिस ले कें आ गईं। हम कै बेर कहें के अब हमें नई पढ़ाने, तुमें तो कछु अक्कल नइयां। देबकी के व्याओ के लाने हमें तो अभईं लरका नईं मिल रओ है नई तो हम अभंई भांवरें पार देते। अबै और आगे पढ़ा के का कर हैं।''

''अब बा पढ़न चाहत है, भीतरे रौबे लगी है।''

''अब हम जा कहत हैं के देबकी छोटी तो नईं है, व्याओ के लाने देवे नगद रुपैया चाने ओर दहेज सोई चाने। हम तो जा चाहत हैं, ब्याओ कर देवें। अब इत्तो तो पढ़ लओ है। हमें का नौकरी करवाउने है।''

''जब लों लरका देख हों, परख हों, तब लों तो बा अपनी पढ़ाई पूरी कर लेहे।''

''हमने तो चार, छह: जनन के घरे देबकी के ब्याओ के लाने चिठठी पत्री डार दईं है।''

''अब जैसो तुम्हें दिखाये सो करो। हमाई मंशा तो देबकी को पढ़ावे की है।''

देबकी के बड़े मामा कल्याण में नौकरी करत हैं। वे सागर स्टेशन से रेलगाड़ी से निकर रये हते सो रामप्रकाश ने कही - ''के इते उतर जओ। तुमाई बैन तुम ओरन के लाने खूबई हीड़ रईं हतीं सो इते उतर के सबसें मिल जुर के चले जाओ।''

सारे रामकुमार चौबेजू ने जीजा की कही मान लई और रूकबे के लाने गाड़ी से उतर कें बैन के घरे चले आये। बैन ने भैया की खूबई आव भगत करी और उते के भौजी के भतीजे-भतीजी के हाल चाल पूंछे।

मामा के आये सें देबकी कों बड़ो अच्छो लगे और मामा सें तनक आसरो दिखाने। देबकी कें मामा कों देख कें रोन लगी। मामा ने पूंछी-''काय देबकी, तुम काय रोन लगी? का कछु पिरा रओ है तुमाओ? का बात है, हमें बताओ। हमें रोउत मोड़ी मोड़ा अच्छे नई लगत हैं।''

देबकी ने कही-मम्माजी, हमें आगे पढ़ने है। हम और पढ़न चाहत हैं।''

मम्मा ने कही-''जा तो बड़ी अच्छी बात है के तुम्हें और आंगे की पढ़ाई करने है। हमें तो बड़ी खुशी भई के तुमाओ पढ़वे में मन लगत है।''

देवकी बोली-''मम्मा, बाबूजी कहत हैं के अब हो गई पढ़ाई। अबै और कित्तो पढ़ हो? वे आगे पढ़वे की नाहीं कर रये हैं। आप उनसे के हो तो बे आपकी बात मान हैं।''

बैन बोली-''भैया, तुम तनक जीजाजू से समझा कें कहो तो हो सकत है के बे तुमाई बात मान जावें। ई की किलपना मों से देखी नई जा रई।''

भैया मनई मन भारी परेशान रहे के कैसें जीजाजू के लाने समझावें। वे तो अपनी बात कर हैं ओर बे न माने तो हम का कर हैं। सब बातन को सोच विचार करत रये।

संजा बेरा जीजाजू दफतर से आये। दोउ जनों को मिलबो भओ। सबरीं इते की उते की बातें भई। सबके हाल-चाल पूछे। जीजाजू ने कही - ''तुमाय उते कल्याण में अच्छो लरका होय तो बताओ, देवकी को ब्याओ करने है। ''

भैया बोले-''का कह रये हो जीजाजू, देवकी को ब्याओ? अबै तो बा पढ़ रई है,अबै पढ़न दो। जब पढ़ जैहे तब देखहें।''

''अरे, कैसी बातें कर रये। पढ़ाई जित्ती करने हती सो हो गई। अब और आंगे नई पढ़ाने हैं। अब तो लरका देखकें ब्याओ करने हैं। अबै पढ़ाई में पैसा लगाओ, फिर दान दहेज में लगाओ। अब हम आगे और नई पढ़ाउन चाहत हैं।''

''आप ठीक के रये हो पै हम कहत हैं, कैं बिटिया को पढ़ा लिखा के अपने पाँवन पै ठाड़ौ करबो जरूरी है। पढ़-लिख जेहे तो खुदई कमाउन लग है।''

''काय फिर ब्याओ कर हैं तो का बिना नगद रुपैया और दहेजके हो जेहे?''

''बिटिया को पढ़ लिख कें नौकरी से लग जान दो, फिर दहेज की चिंता नइयां। बिना दहेज के ब्याओ हो जेहे''

''जा का कै रये चौबेजू? अपनी बिटिया कोउ ने बिना दहेज के ब्याही है?''

''हम सांची या कह रये जीजाजू, फिर तो एक नईं चार लरकावारे ब्याओ के लाने ठाड़ें दिखा हैं, तुमाय सामने।''

''अरे भैया, जे तुमाई बातें हैं। ऐसों कबहूँ भओ है के बिना नगद और दहेज के कोउ लरका बारे ने अपनो लरका

ब्याह दओ होय।''

''अब हम का कहें, आप तो हमाई बात कों झूठ मानबे लगे हो।''

मम्मा ने कही-''अभई ब्याओ करने है का?''

रामप्रकाश त्रिवेदी जी बोले-''हौ, अबै करने है, काय सें अबै कम रुपैयन में ब्याह हो जेहे।''

''अब आप कहत हो के मोड़ी की ज्यादा उमर नइयां सो अच्छो लरका मिल जेहे और दहेज कम देने पड़ है। मान लो आपकों खात पियत नौकरी वारो लरका मिल जेहे तो आप कित्ते कम में ब्याओ कर देहो?''

त्रिवेदी जी बोले-''लाख दो लाख दहेज में और पचास साठ हजार ऊपरे लग हैं और ब्याओ हो जेहे।''

मामा कहन लगे-''जीजाजू हमाई बात सुनो। अबै शादी ब्याओ के मुहूरत हैं और कालेज खुलबे सोई टेम है। हम तुमाई बात मानत हैं। आप ऐसो करो के लरका ढूढ़ लो और शादी करो। एक लाख रुपैया हमसें ले लो और ब्याओ कर दो। कुल मिला कें ढाई तीन लाख से ज्यादा खर्च न करियो, हमाई एक शर्त है। शर्त जा है के इत्ते रुपैयन में ब्याओ ने हो पावे तो आपको बिटिया कों आगे पढ़ानों पढ़ है और पढ़ाई के बाद ई कों नौकरी सोई करन दियो। फिर देबकी की अच्छे लरका के संगे ब्याहो करबे की हम गारंटी देत हैं। शादी आप करियो और जित्ती दहेज की मांग हुइये हम देंहे। जा हमाई बात पक्की रही। ''

मामा चले गये। त्रिवेदी जी लरका की तलास में लग गये। उन्हें एक मिडिल स्कूल में मास्टर को पता परे। त्रिवेदी जी एम.ए. पास शिक्षक के घरे जानके उनके पिता श्री श्यामलाल शुक्ल से मिले। उनके लरका के संगे अपनी बिटिया के ब्याओ की चर्चा करी।

शुक्ल जी कहत हैं-''आपकी बिटिया बी.एस.सी. पास है, सुंदर है, हमाये लरका को पसंद आउत है तो हम शादी के लाने तैयार है।''

त्रिवेदी जी बोले-''आप ओरें बिटिया को देख लों, पसंद आ है।''

शुक्ल जी बोले-''शादी तो आप अच्छी कर हो?''

''त्रिवेदी जी ने हामी भर दई। शुकुल जी ने बताई इतबार के दिना हम लरका, बिटिया और उनकी मां के संगे लड़की देखन आ हैं और पसंद आ गई तो दूसरे दिना आपको जबाब दे देहें।''

शुक्ल जी परिवार के संगे त्रिवेदी जी के इते लड़की देखबे आये। त्रिवेदी जी ने उनको खूबई सत्कार करे। सब ओरें बिटिया देख गये। दूसरे दिना शुकुल जी ने त्रिवेदी जी को अपने घरे बुलाओ और अपनी बात कही-''आपकी कन्या सुंदर है, हम औरन को पसंद है। अब एक बात है, हमाये लरका की रिस्तेदारी में बात चल रई हैं, हम तो आपके इते करन चाहत हैं। बे ओरें पांच लाख दहेज में दे रये हैं, ऊपर को खर्चा अलग से कर हैं। अगर आप इत्तोई दे दो तो आपके इते शादी पक्की समझो। हमाय लरका के लाने तो दस लाख तक मिल रये हैं, पे हम दहेज के लालची नइयां।''

त्रिवेदी जी बोले-''हम घरे चर्चा करके आपकों बता हैं।''

घरे आन के सला भई। इत्तो दहेज देवे की तो हिम्मत ना हती सो बात उतई खतम हो गई। दूसरो लरका रेल्वे में क्लर्क को काम करत है। त्रिवेदी जी ऊ लरका के पिता जी से बात करत है।

ऊ लरका के पिताजी बड़े गुरूर बारे हते। बे कहन लगे-''हमाओ लरका सरकारी नौकरी में है। पूरे हिंदुस्तान में घूमवे पास मिलत है। मुफत में इलाज होत है और सरकारी क्वाटर मिलत है। त्रिवेदी जी आप पन्द्रह लाख दे सकत हो तो हम लड़की को देखवें आवें।''

त्रिवेदी जी तो सुन कें सटट मार गये और अपने घरे आ गये। आगे कछु कहबे हिम्मत नई रई। लरका बारे इत्तों मों बा रये थे तो त्रिवेदी जी ने सोची मामा की कही मान कें देबकी की आगे की पढ़ाई करा देवें। त्रिवेदी जी के मन में आ रई थी के जब हम देबकी से आगे पढ़वे कें लाने केहें तो देबकी को कित्ती खुशी हुइये।

भगवान ने बहुतई अच्छो करे के हमें सारे चौबेजू ने अच्छी बात बताई। सही रास्ता सुझाओ और हमाई आंखें खोल दईं।

देबकी सें बाबूजी ने कही-''देबकी, तुम आगे पढ़वो चाहत हो सो पढ़ो। कालेज में अपनों नाम लिखा लों।''

देबकी सुन कें भौंचक रह गई, अबै तो ब्याओं की चर्चा में लगे हते। लरका बारन के इते जाबो लगे हतो जों कैसे हो गओ? बाबूजी सांचऊ आगे पढ़ा हैं।

देबकी बोली-''बाबूजी आप सच्ची के रये हो? कालेज में नाम लिखा लयें। आप जा बात गुस्सा सें तो नईं के रये हो?''

माँ कन लगी-''अरे, तोरे बाबूजी तोहे आगे पढ़ाबे राजी हो गये हैं, तोरे बड़े भाग उनने हामी भर दई।''

देबकी बोली-''बाबूजी आपने बहुतई अच्छो करे के हमें पढ़बे के लाने कह दई। देखियो अब हम खूबई मन लगा कें पढ़ हैं।''

देबकी ने एम.एस.सी. पढ़बे के लाने कालेज में नाम लिखा लओ और कालेज पढ़न के लाने जान लगी। सुमित्रा और चित्रा को लगे के बाबूजी देबकी जीजी को आगे पढ़ा रये हैं तो हम ओरन को सोई आगे पढ़बे मिल है।

त्रिवेदी जी के घरे पन्ना बुआ आईं हतीं। सब बातें होत रईं। जब उन्हें पतो परे के देबकी कालेज में अबै और आगे पढ़ रई है तो उने जा बात अच्छी नईं लगी। बिटिया के ब्याओ की चिंता हो गई।

फुआ ने कही-''काय बहू कमला, बिटिया को तुम्हें ब्याओ नई करने का? देबकी को पढ़वे के लानें भेंजन लगी हों। और कित्तो पढ़ान चाहत हो। लरका देख कें ब्याहों कर दो। बिटिया सयानी हो गई है।''

बहू कमला बोली-''फुआ मोड़ी पढ़न चाहत हती,

खूबई रोउत, किलपत रई सो फिर पढ़वे हामी भर दई।''

''काय रामप्रकाश मोड़ी केहे कुंआ में गिरने सो तुम हामी भर देहो। हमें का भैया तुमईं भुगत हो। हमें तो देख सुने को सुख है, हमें के दिना जीने। अब तुमाई मोड़ी है, जैसो तुम चाहो सो करो। हम तो रीत की बात केहें।''

रामप्रकाशजी बोले-''फुआ, हमने ब्याओ के लाने खूब लरका देखे, पे बे इत्ती मांग करत हैं के हम उत्तो पूरो नई कर सकत हैं। पढ़ लिख जेहे तो दहेज की मांग लरका बारे ने कर हैं। देबकी के ब्याओ की गारंटी देबकी के मामा ने लई है।''

''अब तुमाये गारंटी लये दये में कहूँ बिटिया के ब्याओ की उमर ने निकर जावे।''

बुआ की बातन में कमला कों बड़ों बुरओ लगे। बड़ों दुखी मन हो गओ।

रामप्रकाश जी कमला से बोले-''काय मों लटकाय हों, फुआ ने कही सों कन दो, बे बड़ी आंय, बड़े बूढ़न की चार बातें सुन लओ चैये। पैले के और आज के जमाने में फरक है, वे जा बात ने मान हैं तो का करिये। तुम उनसे कछु ने कइयो।''

देबकी बड़ी हुशयार हती। मन लगा कें पढ़त रही। देबकी की पढ़ाई पूरी हो गई और एम.सी.ए. पास हो गई। कछु दिनन में देबकी की नौकरी पूना में लग गई। देबकी अब कमाउन लगी। मामा कों तो भारी खुशी भई के जीजाजू ने हमाई बात मान कें देबकी को पढ़ाओ और अब नौकरी सोउ करन दई। देबकी अच्छी नौकरी कर रई है।

त्रिवेदी जी ने मामा से कही-''के अब हमने तुमाई बात मान के देबकी कों पढ़ा दओ है, और अब नौकरी करके अच्छा कमा रई है। अब तुम लरका देखो तो हम ब्याओ कर देंवे।''

मामा ने शादी के विज्ञापन में देबकी के ब्याओ के लाने विज्ञापन दे दओ। त्रिवेदी जी के घरे लरका बारन के फोटो और सबरी बातन की चिठठी आउंन लगी। त्रिवेदी जी को भारी खुशी हो रई थीं, के लरका बारे उपत के चिट्ठी पत्री डार रये। बिटिया सें ब्याओ करन चाहत हैं।

सबकी सला से दिल्ली में अच्छी कंपनी में नौकरी करत लरका विजय पाठक कों पसंद करे। लरका के पिता शरद कुमार पाठक सें सबरी बातें भईं। पाठक जी ने दहेज के लाने साफ नाहीं कर दई। त्रिवेदी जी को बड़ों अच्छो लगे।

देबकी और विजय पाठक को ब्याओ बड़े धूमधाम से भओ। सब जने ई ब्याओ की वाह वाही कर रये हते के पढ़ी लिखी नौकरी बारी बिटिया को कैसों अच्छो ब्याओ हो गओ बिना दहेज के।

रामप्रकाश त्रिवेदी जी ने सुमित्रा और चित्रा को सोऊ खूब पढ़ाओ और जब नौकरी करन लगीं सो फिर ब्याओ कर दओ।

-1020 शक्ति नगर, गुप्तेश्वर रोड, जबलपुर (म.प्र.)482001 (कोरोना ने हमसे लेखिका लक्ष्मी शर्मा को छीन लिया है, विनम्र श्रद्धांजलि) 卐

ऐंचातानी

-रामस्वरूप पांडे

न कोउ की काउ सें कइये, न ऐंचा तानी सइये।
बड़ी जिजी पानी खों गई, फिर मन मानी बातें भईं।
तोइ सों जिज्जी ऐसी भई, धीरे सें कानन में कई।।
जे बातें न कोउ सें कईं, अपनी जान तुमईं सों कईं।
धरैं खेप न तकैं अवेर, मोंड़ा घर पै मारैं टेर।।
बड़ी जिजी कौ फूलौ पेट, की सों कै लंय, बांटे फेंट।
आड़ै मिल गईं, सिमरा बाई, सुनौ जिजी फिर कसम धराई।।
ऐसईं ऐसें फैली बात, सब आपस में कौल धरात।
एक जनी नें उनईं सें कई, काय जिजी का ऐसी भई।।
आय जिजी जा कीने कई, की सौतन ने आगी दई।।
जे बातें न सपनन भईं, जे कीनें बीचई गड़ लईं।।
ठटरी उनकी बांदे आज, मोरे घर की लुट गई लाज।
एक मिनट में लग गई आग, दिखनारीं मिल खेलैं फाग।।
करजा तैं प्यारे कौ कौल, ऐसैं बड़ौ न्याव कौ डोल।
पूतै खाव कै खसमै खाव, नातर सबरौ भेद बताव।।
आँखन की सों हम न कई, जे झूटीं सोतन गड़ लईं।
घर बाखर में लग गई आग, खूना खच्ची खेलें फाग।।
घर-घर सें खाटन पै गये, थानेदार के वर पक गये।
चलौ मामलौ पेसीं भईं, चीजें बस्ते सब बिक गईं।।
कैऊ साल नौ सिलगी आग, दोउ जनन के फूटे भाग।
फिर विरादरी जुरौ समाज, दोउ जननखों लग गई खाज।
न कोऊ की काऊ सें कइये, न ऐंचा तानो सइये।।

- टीकमगढ़ (म.प्र.) 卐

कैसी जा बैरन बीमारी

- आचार्य भगवत दुबे

कैसी जा बैरन बीमारी, कोरोना हत्यारी।
चली चीन से और जकड़ लइ, ई ने दुनिया सारी।।
इटली, फ्रान्स, अरब, अमरीका, सबकी गत कर डारी।
रोज हजारों मारत जा रइ, क्रूर संक्रमणकारी।।
भारत में कम फैली है पै, घेरै चिन्ता भारी।
भैया चेत गये पैलउँ से, उनने बात सम्हारी।।
ई की कोई दवाई नइयां, चिन्ता में नर-नारी।
अपने घर से कढ़ौ न बाहर, लॉकडाउन है जारी।।
कर्फ्यू को पालन कर लइयौ, हुकम भऔ सरकारी।
अड़ियल भीड़ बढ़ा कै जबरइ, कर रये हैं गद्दारी।।
कइयक मूढ़ पाँव पे अपने, मारत खुदइ कुल्हारी।
हॉत धोत रइयौ साबनु सें, रखौ सफाई सारी।।
दूर-दूर रइयौ इक मीटर, मानौ बात हमारी।
मुहड़ो, नाक ढाँक कै रइयो, फैले ने बीमारी।।
कोरोना हारेगी भगवत, हुइये जीत हमारी।

- जबलपुर (म.प्र.) 卐

एक बुन्देली लोक गाथा-

जगदेव कौ पंवारौ

– **स्व. डॉ. दुर्गेश दीक्षित**

लोक गाथाएं मानव जीवन की मर्म स्पर्शी झाकियां है। जिनका लोक साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है ये मानव के प्रत्येक अंग का स्पर्श कराती है और एक विशाल-भण्डार के रूप में हमारे समक्ष उपलब्ध हैं। इन लोक जीवन की साधारण-असाधारण घटनाओं का लोक भाषा में स्वाभाविक चित्रण होता है। यही कारण है कि गाथा साहित्य में मानव जाति के आचार-विचार, रीति-रिवाज, धार्मिक-विश्वास, आशा-निराशा और सुख-दुख की सजीव झाँकी दिखाई देती है। यदि यह प्रश्न उभरता है कि गाथा क्या है? और वह कहाँ से अवतरित हुई है? तो यह कहा जा सकता है कि वे मानव-हृदय के सीधे-सादे उद्गार हैं। जो गाथा साहित्य के रूप में मानव-मुख से निसृत हुए हैं। जिस स्वाभाविक और अकृत्रिम प्रेरणा से इनका सृजन हुआ है। उसी प्रेम से वे सुनी भी जाती हैं। यही कारण है कि छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य की प्रमुख अध्येता डॉ. शकुन्तला वर्मा ने अपने ग्रंथ 'छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य में लिखा है कि: – लोक साहित्य के गीत जहाँ, रसकी वर्षा करते हैं और हृदय को आप्लावित करते हैं वहाँ गाथाएं और कहानियां मनोरंजन के उत्कृष्ट साधन हैं। मानसिक तृप्ति कथा रस से होती है। गाथा मानव-जीवन का एक उत्स है और एक कौतूहल भी। जीवन स्वयं सत्य है और गाथा उसका प्रतिबिम्ब है।

कहानी और गाथा का आविर्भाव मानव-जीवन के साथ ही हो गया था। जन-जीवन का सहज प्रेम, करुणा, कौतूहल, अनुभव एवं विचार लोक गाथाओं के रूप में नैसर्गिक अभिव्यक्ति पाते हैं।

सच पूछा जाये तो लोक-मानस स्वयमेव अपने मनोनुकूल एवं आवश्यकता के अनुसार विविध कथाएं और गाथाएं गढ़ता रहता है। कभी उनमें ठोस यथार्थ दिखाई देता है और कभी कल्पना का बाहुल्य। कहीं धर्म प्रबलता है तो कहीं घोर सांसारिकता। ये मानव-समाज की अमूल्य निधि हैं। इन्हें अपने हृदय-स्थल में रखकर मानव-समाज सृष्टि से लेकर आज तक गाता चला आ रहा है। यही मानव जीवन का शाश्वत सत्य है। गाथाएँ इतिहास और कल्पना का मिश्रित रूप हैं। इन्हें लिपिबद्ध करने का प्रयास नहीं किया गया। लोक-मुख में सुरक्षित रहने के कारण समय-समय पर उनमें परिवर्तन होते रहे। कभी-कभी तो उनके मुख्य-पात्र और घटनाएं भी विलुप्त हो जाती हैं और कल्पना से नवीन पात्र और घटनाएं जुड़ जातीं हैं।

बुन्देलखण्ड में लोकगाथाओं के रूप में 1. रासो 2. रायछे 3. राछरे 4. साके 5. चरित्र 6. पंवारे गाये जाते हैं। हमारे समस्त धर्म-ग्रंथ गाथा साहित्य की आधार-भित्ति हैं। वेदों, पुराणों, उपनिषदों और जैन धर्म ग्रंथों में गाथाएं भरी पड़ी हैं। गाथा साहित्य का बीज रूप हमें वेदों में दिखाई देता है। वेद, पुराण, महाभारत से लेकर आज तक के किसी न किसी रूप में हमारे समक्ष विद्यमान हैं। समस्त हिन्दी साहित्य लोक साहित्य से प्रभावित है। हिन्दी साहित्य पर सर्वाधिक प्रभाव लोक-गाथाओं का ही है। वैसे लोक कथा और लोक गाथा महाकाव्य और खण्डकाव्य की आधार-भूमि है। काव्य की सारी विधाओं पर किसी न किसी रुप में गाथा का प्रभाव होता है।

दसवीं शताब्दी से लेकर आज तक जितना साहित्य लिखा गया, वह सबका सब गाथा साहित्य की भित्ति पर खड़ा है। उदाहरण स्वरूप आप, आल्हा खण्ड को ही लीजिए। उसमें वर्णित 52 लड़ाइयां लोक गाथाओं के ही विकसित रूप हैं। आदिकाल का नाम 'वीर गाथा' काल है। इस काल में केवल वीरों की ही गाथाएं गाई गई जिन्हें 'रासो' कहा जाता है, जो लोकगाथा के ही एक प्रकार है। भक्तिकाल में प्रेमाख्यानक सूफी महाकाव्यों की रचना की गई थी। वे सब अवध में प्रचलित लोक गाथाओं के आधार पर लिखे गये थे। रीतिकाल में लिखे गये आचार्य केशव के समस्त ग्रंथों का मूलाधार लोक गाथाएं ही हैं। महाकवि जयशंकर प्रसाद का कामायनी महाकाव्य और चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, जनमेजय का नागयज्ञ, अजातशत्रु और ध्रुव स्वामिनी नाम के नाटक, और कंकाल, तितली नाम के उपन्यासों की एक मात्र आधार भूमि लोक गाथाएं ही हैं। कहानीकार और उपन्यासकार जैनेन्द्र कुमार जैन और यशपाल जैन के उपन्यासों का मूलाधार लोक गाथाएं ही हैं। श्री वृन्दावनलाल वर्मा को उपन्यास लिखने की प्रेरणा लोक गाथाओं से ही मिली है। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त के सारे ग्रंथ लोक गाथाओं के आधार पर ही लिखे गये हैं।

पंवारौ लोक गाथा का एक प्रमुख प्रकार है। इसमें परमार वंशीय क्षत्रियों के शौर्य और भक्ति-भावना का वर्णन किया जाता है। पंवार वंशीय धार नगरी के राजा जगदेव आदिशक्ति शारदा भवानी के परम भक्त थे। रात-दिन देवी जी की आराधना में जुटे रहते थे। वे एक अनन्य साधक और भक्त थे। एक बार आराधना करते-करते उन्होंने माँ के चरणों में अपना शीश काट कर चढ़ा दिया था और कुछ समय बाद माता की कृपा से उनके धड़ में से नवीन सिर उत्पन्न हो गया था। यह एक बहुत बड़ी लोक गाथा है, जो चौसठ दरबारों में विभक्त हैं जो किसी महाकाव्य से कम नहीं है। नवरात्रि में नौ दिन-रात गाये जाने के बाद भी पूरी नहीं होती है। अब तो जबारे भी बहुत कम बोये जाते हैं। निम्नवर्गीय जातियों के लोग हैं। इसमें थोड़ी सी रुचि ले पाते हैं। कुछ भजन-गायकों को पंवारे के कुछ अंश स्मरण है जिन्हें वे ढोल-नगड़िया के साथ गाया करते

हैं। वे हर भजन के अंत में गाया करते है– 'राजा हो जगत से माँ भले हो माय' जिससे परम भक्त राजा जगदेव का संकेत मिलता है। मराठी में 'पंवार' शब्द गाथा के लिए प्रयुक्त होता है। कुछ क्षेत्रों में 'पंवारे' का अर्थ युद्ध और संघर्ष है। इनमें वीरता और भक्ति का भी वर्णन होता है। राजा अमर सिंह के पंवारे में भी गाया जाता है:–

'अमर सिंह कौ कियो पंवारो, कहों तों गाय सुनाऊँ।
कहाँ से उत्पन्न भई, कहाँ ते भई लराई।
दीघ शहर उत्पन्न भई, अगरे तें भई लराई।'

गाथाकार ने कचहरी का वर्णन किया था:–

'जल में खम्म–खम्म में जल, जा में कमल विराजे।
जग–मग जोत जगैं ठाकुर की, सकल भड़ाभड़ बाजे,
काउ नें लादी लोंग सुपारी, कोउ ने लादीं राई।
कबीर लादों राम नाम, वैकुंठ की गादी पाई।'

वे बड़े संयमित और सहृदय व्यक्ति थे:–

'पैलों ग्रांस कियों धरती कूँ, दूजौ गऊ चढ़ायौ।
तीजौ ग्रास कुत्ते कूँ, चौथों राम चढ़ायौं।।
पाँचई ग्रास किये राजा नें, थार दियो सरकायौ।

जगदेव कौ पंवारौ, इतिहास से प्रभावित है। इसमें तत्कालीन मुगलों के हमलों, चंद्रभाट और जगदेव की वीरता और राष्ट्रीय भावना का वर्णन है। राजा जगदेव के पंवारे में तत्कालीन संस्कृति के दर्शन होते हैं। उन दिनों धनी–मानी लोग सोने के थालों में भोजन किया करते थे। देवताओं को बैठने के लिए चंदन चौकी डाली जाती थी। उनके भोजन के लिए विशेष प्रकार का भोजन तैयार किया जाता था। राजा जगदेव के राज–भवन में देवी जी का आगमन होता है। उन्हें देखते ही भक्त भावुक होकर कह उठता है:–

'काहे कौ डारौ माइ बैठका, काहै कैं पखारों पांव हो मांय।
चंदन की चौकी डारौं बैठका, दूदन पांव पखारो हो मांय।
धरियक बिलम्ब करो मोई माता, भाव बना तो दैंय हो मांय।
दार बनाई रजमूंग की, रांदे कमोदन भात हो मांय।

भाषा की दृष्टि से पंवारा बहुत सम्पन्न हैं, उसमें पात्रानुकूल और प्रसंगानुसार भाषा का प्रयोग किया गया है। वैसे इसमें स्वाभाविक और सहज बुन्देली अपनाई गई है। जगदेव की महारानी माता से निवेदन कर रही है:–

'धरियक बिलम्ब करों मोई मइया,
मैं गंगा असनान कर आऊँ हो माय।

सपर खोर ठाँढ़ी भई रनियां, लहर पहर पटोर हो माय, सिर पर तिलक, तिलक पर बेंदी, नैंना करे रतनार हो माय, ऐंच खड़ग, रानी माथों उतारत, देवी नें गै लई बाँह हो माँ बड़ी ही सीधी और सहज भाषा है। मानसिक व्यायाम करने की जरा भी जरूरत नहीं है।

'उठि–उठि हेरैं दलपांगुरे, काली आंगन आई हो माय
आई–आई हो मोरी भवानी, हमें बाँयनौ ल्याई हो माय।
सेर चार कीं ल्याई पथरियां मनदस की लै जाय हो माय।

बाँयने में अतिशयोक्ति अलंकार के दर्शन होते हैं।

अधिकांश पंवारे वीर रस प्रधान हैं उन दिनों विदेशी आक्रामक आये दिन रक्षा के लिए राजपूत राजा अपने प्राणों की बाजी लगाने के लिए सदैव तत्पर रहा करते थे। शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिए आदि शक्ति की आराधना की जाती थी। जगदेव की राजधानी धारा नगरी पर जब मुगलों ने आक्रमण किया, तब राजा जगदेव ने अपने शौर्य के बल पर उन्हें पीछे की ओर खदेड़ दिया था। पंवारे में उनके शौर्य का वर्णन किया गया है:–

'चिरई घाट पै होय री, बड़े राव सें न्याव।
अरे जगदेव सों न्यावं,
डेरी लड़े कालिका, दाहिनें हनुमान।
सम्मुख लड़े भवानी, लंगरे अंगवान।
खप्पर लयें हात, नरियल लयें हात।
हतिया रे हतिया, घुड़वारे घुड़सवार।
तेगा चलें बज्जुर कौ, माई कौ त्रिशूल।
बरछी चलें लंगर की।
इंदर लोक लो, दल भागत जाय,
मुगला दल भागत जाय।
जमुना तोरों नीरा, राजा जगत सेमां भले हो मांय।

मुगलों की सेना को भगाकर जगदेव के, मन में शान्ति हुई। सारी की सारी सेना अपने प्राण बचा कर भाग गई। युद्ध के लिए प्रयाण करते समय, जगदेव की साज–सज्जा देखने योग्य है:–

'आज्ञा भुमानी सुन दै दई, जगदेव बांदौ तरबार,
डेरी सोहैं कटरिया, दायी सौहैं तरबार।
लंगरे अगवान, खप्पर लयें हात, नरियल लयें हात,
उतरी कमान जगत की, अयें दुर्गा देत चढ़ाय,
राजा हो जगत से माँ भले हो माय।

पंवारे में माता जी की वाटिका के प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण किया गया है:–

'अबकी लाज राखियों हो मांय।
सोरा गउबन कौ गोबर मंगायो।
ढिक धर आंगन लिपाव हो मांय।
मुतियन के नौंने चौक पुराये,
कंचनं –कलश धराये हो मांय।
आम, नीम, मौआ, गुलजार वेला,
चमेली उर, केवरों, निबुंवन के बाग,
लोंगन के बाग हो मांय।

मुगल शत्रुओं के द्वारा धारा नगरी के घिर जाने पर जगदेव की राजकुमारी चिंतित होकर अपनी माँ से कह रही है:–

'माँ सें बोलें बेटी जगत की, सुन बाबुल बात,
भारी दल मेलों मुगल कौ,
आबै मुगल कौ राज, अये मुगल कौ राज,
मोइयै तो लै जैय मुगल कौ।

बेटी को चिंतित देखकर जगदेव उसे धैर्य धराते हुए कह रहे हैं कि बेटी मेरे ऊपर माँ की पूर्ण कृपा है। मुझे कोई पराजित

नहीं कर सकता। तुम निश्चिंत होकर राज-भवन में विश्राम करो। जरा भी भयभीत नहीं होना है। तुम्हारे पिता के सिर पर माँ का वरद हस्त है, और वे तलवार लेकर तैयार खड़े हैं:-

'अरे बेटी करियों राज, बाँदें तलवार,
राजा रे जगत से माँ भले हो माय।
हीन जिन बोलियों बेटी राजकुमारि,
छत्री धरम नसाय।
इक लख मारे मुगल खौं, दूजे तुरक पठान,
तीजे मारे दिल्ली आगरो, चौथे गुजरात।
हनो किवरियां, मोरों नाँव पुकार,
राजा रे जगत से माँ भले हो माय,
आज्ञा भुमानी सुन दै दई, जगदेव बांदौ तलवार
डेरी सौहें कटरिया, दांई सौहें तलवार,
लंगरे अगवान खप्पर लयें हात, नरियल लयें हात
उतरी कमान जगत की, दुर्गा देत चढ़ाय,
राजा हो जगत से माँ भले ही मांय।

जगदेव देवी जी का परम भक्त तो था ही। वह देवी जी की आज्ञानुसार उनके चरणों मे शीश काटकर चढ़ा देता है। गाथाकार उस बलिदान की स्थिति का चित्रण किया है:-

मैं पूछों जगदेव की रानियां, जगदेव शीश मंगाये हो माय
धरियक विलंब करियो मोइ माता, गंगा करों असनान हो माय
सपर खोर ठांढ़े भये जगदेवा, पीताम्बर पहराव हो माय।
सिर पर तिलक, तिलक पर कलगी, नैंना करें रतनार हो माय।
ऐंच खड्ग जगदेव माथौ उतारो, धरदओ थार मंझार हो माय

कहा जाता है कि देवी जी ने जगदेव की रानी को शीश लौटाना चाहा, किन्तु वे दिया हुआ दान वापिस नहीं लेना चाहती। माताजी ने प्रसन्न होकर अपनी छिंगुरी चीरकर जगदेव के धड़ पर छिड़क दिया, जिससे उसके धड़ में से नवीन सिर उत्पन्न हो गया। वह जय महाकाली, जय महाकाली कहता हुआ खड़ा हो गया। ये है आदि शक्ति की भक्ति का प्रभाव (माता की कृपा) से वे सदैव युद्ध में विजय प्राप्त करते रहे और मुगलों के छक्के छुड़ाते रहे। परमार वंश राजपूत काल के अन्तर्गत आता है। भारतीय इतिहास के अनुसार सातवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक अर्थात् पांच सौ वर्ष का राजपूत काल माना जाता है। राजपूतों की वीरता और शौर्य, गाथाएं इतिहास प्रसिद्ध हैं। राजपूत क्षत्राणियों के जौहर को स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य हैं। राजपूतों की आपसीफूट का लाभ मुगलों को प्राप्त हुआ। हिन्दू धर्म और संस्कृति पर भारी वज्रपात हुआ। हिन्दू धर्म का प्रमुख केन्द्र राजा भोज की राजधानी धार नगरी की दुर्गति हो गई जहाँ राजा जगदेव राज्य करते थे। राजपूतकालीन स्थापत्य और वास्तुकला पर इस्लाम संस्कृति हावी हो गई थी। भोज की बनवाई गई इमारतों पर मुसलमानों का आधिपत्य हो गया था। भोज के बनवाये शिवजी के मंदिर, भोजशाला, सरस्वती मंदिर, भोज का कूप मुसलमानों की कब्रों, मकबरों और मस्जिदों के रूप में बदल गई थी। उनकी अश्वशालाएं और राजभवन बेगमों के हरम बन गये थे। आज धार नगरी की दुर्दशा को देखकर आक्रोश आता है और लोग मुगलों को कोसने लगते हैं जो हिन्दू धर्म और संस्कृति को समूल नष्ट करने पर तुले थे।

(डॉ. दुर्गेश दीक्षित का स्वर्गवास हो गया है। बुंदेली बसंत परिवार के ओर से श्रद्धांजलि)

- कुण्डेश्वर, टीकमगढ़ म.प्र. 卐

बुन्देली चौकड़ियाँ-

पाखण्ड

-श्याम बहादुर श्रीवास्तव, 'श्याम'

(१)
मन्दिर मड़ियन सें कहै, लगी गाँव में छोत।
सड़क किनारे अब चलौ, ऐंन चढ़ौती होत।।
ऐंन चढ़ौती होत, उतै सज-धज कें रइँये।
स्वाँग बिलात बनाय, ऐंन गैलारे ठगिये।।
धन बिन धरम न 'स्याम' कमइँए दौलत चल-फिर।
बदले सबई यार! काय ना बदलें मन्दिर।।

(२)
चंदन से माथौ रँगौ, डार जनेऊ-माल।
चले पंडिताई करन, पण्डित लोभी लाल।।
पण्डित लोभी लाल, टाँग कें झोरी-झण्डा।
करें ठगइ दिन-रात, लगत फासी के पण्डा।।
चोर, उचक्का, धूर्त तौउ मिल रइ पालागन।
पाखण्डी के माथ बहाबै आँसू चन्दन।।

(३)
चन्दन-मन्दन देख कें उनें दईती छूट।
धरम-करम के नाँव पै दुनिया डारी लूट।।
दुनिया डारी लूट तान्तरिक बन या बाबा।
सूनौ पा घर द्वार बोल रए बाबा धाबा।।
सावधान रव 'स्याम' रिझाउत नोंने बैनन।
लूटें लै रव यार! लगौ ठगियन तन चन्दन।।

(४)
कउआ, गेंगा औ सुआ. खेत चुनें सब लेत।
कन्तातौरी में लगे, काए बिड़ार न देत।।
काए बिड़ार न देत, लयें हौ तुम रखवारी।
भूले सब कर्तब्ब, लगत अक्कल गइ मारी।।
देस होय या खेत, कोउ ना और बचउआ।
ऐलकार अब 'स्याम' बन रये उजरा कउआ।।

-1001/ए, श्रीवास्तव निलय चुर्खी रोड,
बघौरा, उरई (जालौन, उ.प्र.), मो0- 7408439308 卐

बुन्देली सुर साज चले गये

– डॉ. के.एल. वर्मा 'बिंदु'

साज आवाज, काज, राज, नाज, लाज, ताज, यह सब उस मील के पत्थर हैं जिनको गिन–गिन कर आगे बढ़ व्यक्ति पड़ाव पर पड़ाव पार कर जीवन की मन्जिल पूरी करता है। प्राप्ति पर किलकता हैं, हँसता है, खिलखिलाता है। अभाव पर मन मसूस मसूस कर बिसूरता है, बिलबिलाता है। आने–जाने वालों को घूरता हैं और पगदण्डी पर चल पड़ता है अकेला सिर्फ अकेला। जिन्दगी के सात सोपान अन्योन्याश्रित गुत्थम गुत्था है।

आवाज है तो सद् काज है। सद् काज है तो जीवन में सबको नाज है। कर्म सौन्दर्य पर नाज है तो जीवन की धरोहर लाज है और लाज है तो फिर मनों पर प्रगति का, अपनत्व का सद्भावनाओं का आशीषों का ताज है, जीवन की अनबूझ पहेली का सुन्दरतम राज है। इसे समझने वाला ही साज है। इन सबसे मिलकर साज जब झंकृति होता है तो स्वर लहरी गुन्जरित होती है जो मोहक ही नहीं आत्मविभोर कर सर्वात्म को विभोर कर देती है।

विनय उपाध्याय के शब्दों में, ''महात्मा गांधी को भी इस संगीत की शक्ति पर अटूट भरोसा था। बापू संगीत को कामधेनु कहते थे। उनका मानना था, अमन, एकता और आपसदारी का सच्चा और सनातन सन्देश सात स्वरों की सोहरत से बड़ी ही सहजता से हासिल किया जा सकता है।

सुर साधक, बुन्देली लोक गायिकी के अमर गायक, अनूठी स्वर लहरी निनादित करने वाले पण्डित देशराज पटैरिया जू का जन्म गाँव की गलियों के एक साधारण घर में हुआ था। किलकारी किलकी थी, थाली बजी थी, सोहर गाये गये थे, तिदनी गाँव तहसील नौगाँव जिला छतरपुर में दिनाँक २५ जुलाई १९५३ को।

पं. देशराज पटैरिया जू ने बुन्देली लोकगायिकी की कामधेनु को दुहा था। होनहार विरवान के होत चीकने पात, पं. देशराज जू बुन्देली धरती के धूल धूसरित लाल थे। बचपन से हुनगारू, अध्ययनशील, और संगीत प्रेमी थे। कद काठी से अच्छे ढील–डौल के धनी, बुन्देली गबरू जुबान थे। स्वभाव से मिलनसार, हँसमुख एवं वाक्पटु , चन्ट चतुर हाजिर जबाबी में माहिर थे, सच्चे स्वरूप में रूप के आगार थे और ऐसे नौने लाल का विवाह संस्कार ग्राम बड़ागाँव तहसील मऊ जिला झाँसी की बुन्देली बेटी, श्रीमति उर्मिला पटैरिया के साथ सम्पन्न हुआ था। उर्मिला पटैरिया बुन्देली संस्कारों में पलीपुसी, सलौनी, नौनी, सुघर दुलइया इनके जीवन में वरदान बनकर आई। इन्हीं के सानिध्य से पटैरिया जू की संगीत साधना सफल हुई। कहा जाता है हर पुरूष के विकास मे नारी का अहम योगदान होता है। श्री पटैरिया जू एवं श्रीमती पटैरिया जी से मेरा परिचय पैंतीस वर्ष पूर्व छतरपुर में हुआ था। वह मेरे रिश्तेदार के घर किराये से रहते थे। इन दोनों विभूतियों के व्यक्तित्व से प्रभावित हुआ था। देशराज जू रातदिन संगीत साधनारत रह प्रगति के नये आयाम छू रहे थे। उनके पथकंटकों का निवारण, तिल–तिल जल–जल पूर्ण साधनारत कर्तव्यपरायण बुंदेली की सच्ची बेटी बनकर, उनको अविस्मरणीय सहयोग, हँस हँस कर, विनम्र भाव से, पूर्ण सर्मपण की कसौटी पर कसकर वंदनीय श्रीमती उर्मिला पटैरिया कर रही थीं। उनकी मौन मूक साधना पटैरिया जू की प्रगति को गतिमान बनाने में सबसे बड़ी सहायक रही है। सच्चे अर्थों में श्रीमती उर्मिला पटैरिया बुन्देली धरती की अनुपम गुड़िया है। उनके सम्मान में अंतस् से स्वर फूट पड़ता है।

आचरण से रामायण की सीता हो
कर्म सौंदर्य से कृष्ण की गीता हो
बुंदेली संस्कारों की साकार मूरत
देशराज जू की पावन परणीता हो

पन्ना में हीरा उपजते हैं तो महाराज छत्रसाल की नगरी के इर्द–गिर्द अनेकानेक विभूतियाँ नभ के तारे बनकर झिलमिलाते है। बुंदेली की अचल धरोहर ईसुरी, गंगाधर व्यास, ख्याली राम इसी धरती के अनूठे लाल हैं। राजा संतोष सिंह बुंदेला, जगन्नाथ प्रसाद सुमन, पं. देशराज पटैरिया अपनी अनूठी करनी से दमकते कोहनूर बन जनजन के मानस पर छाये हुये हैं। जगन्नाथ प्रसाद सुमन ने 'जग्गू' भइया बनकर आकाशवाणी द्वारा माँ बुंदेली की सेवा की। उनकी रचनायें बुंदेली की अनूठी धरोहर बन जनमन पर राज करती रही हैं। वर्तमान की यथार्थ स्थिति का जीवन्त उदाहरण रचना की प्रत्येक पंक्ति वर्तमान पर सशक्त प्रहार करती है। जिसकी चोट ह्दय पर आघात कर सोचने को विवश कर देती है। यथा –

जीके राज में रइयें, ऊकी उसी कइये,
ऊंट बिलैया लें गईं सो हाँजू हाँजू कइये।

इतना ही नहीं

मदन ड़िडौंका, गगरी में टोका,
धोंक बेटा धोंक ......

बुंदेली की सबल व्यंगात्मक रचनाएँ हैं जो बुंदेली भाषा की शब्द शक्ति का घोष करती सुनाई देती हैं। राजा संतोष सिंह जू बुंदेला दूसरे बुंदेली की धरोहर अनहोंने लाल है जिनकी रचनाओं में बुदेली संस्कृति कलरव कर किलोलें करती हैं। बुंदेली संस्कार, रिश्ते सर्वत्र नर्तन करते हैं। भाई–बहिन की शाश्वत अभिव्यक्ति इस बुंदेली पंक्ति में व्यंजित होती है–''एक चना दो देवली मोई साउन आई'' चना एक है देवल दो होकर भी एक से है, बुंदेली भाई–बहिन भी दो होकर एक है। इन्हीं भावों की सबल अभिव्यक्ति बुंदेला जू के बुंदेली गीत में गूँजती है।

मिठउआ ईं कुइया कौ नीर
पियें जा रे गैलारे............
मैंने लटक छुएं दोईं पाँव

''मैंने लटक छुएं दोईं पाँव'' पंक्ति में का सात्विक रूप,

भाई की निश्चल, निर्मल, आत्मीय, पावन भावना, जगमग जगमग कर नूतन प्रकाश विकीर्ण करती है। ऐसी अनूठी है बुंदेली भाषा की अनूठी शक्ति, जिसको बुंदेला जू ने देश के कोने-कोने में आसनारूढ़ किया है। बुंदेली को मान दिलाया है। कंठ-कंठ को भाव विभोर रूलाया है, हँसाया है। जब वह मंच पर कविता पाठ करते थे तो उनकी कद काठी बुलंद आवाज पर बुंदेली गौरवांवित होती थी जन-जन हर्षित होकर तालियाँ गड़गड़ाता था। इसी परंपरा में सोने में सुहागे का कार्य पं. देशराज जू पटैरिया ने किया है। बुंदेली गीतों को लोकगीतों के साथ लोकगायकी में गाकर मधुर मनमोहक स्वरलहरी की लहरों से तरंगायित कर देश-विदेश के कोने-कोने में लय ताल के बंधनों में बाँधकर जनमन को आत्मविभोर कर दिया है। संगीत साहित्य का प्राण कहा जाता है। बुंदेली भाषा की सशक्त रचनाओं को अपनी संगीत की चासनी में परिपक्व कर भारत के कोने-कोने में परोस दिया है।

देशराज जू के बड़े भइया श्री मदनमोहन जू पटैरिया कीर्तन गाया करते थे। उन्हीं से प्रेरित होकर कीर्तन गायन सुन सुनकर, मनई मन गुनगुन कर वह भी कीर्तन गाने लगे, उनकी संगीत साधना का मार्ग खुलने लगा। २१ जुलाई १९७६ आकाशवाणी छतरपुर के उद्घाटन के बुंदेली गायन हेतु खजुराहो से एक पार्टी छतरपुर आई थी उसमें कुरैशी की पार्टी को गायन करना था। नंदराम जी को ढोलक बजानी थी। आकाशवाणी केन्द्र पर श्री एल.के. बहल साहब कार्यक्रम अधिकारी थे, उन्होंने कुरैशी जी से गाने को कहा तो उन्होंने उर्दू की गजल गा दी। बादल साहब ने कहा यह नहीं चलेगाी। बुंदेली गायकी होनी चाहिए। कुरैशी ने बुंदेली गीत गाने से मना कर दिया। इसी समय नंदराम जी ने बादल साहब से कहा यह लड़का देशराज बुंदेली गीत गा सकता हैं। बादल साहब ने लिलोर किशोर की ओर निहारकर हामी भर दी। देशराज जू के ललक किलक उठी और उननें यह गीत गाकर समा बाँध दिया-

मोरे करम फूटे गुइयाँ री, सइयाँ मिले मूरखचंद्र
सखीं री सइयां मिले मूरखचंद्र...............

प्रस्तुत गीत की खुशी-खुशी रिकार्डिंग हो गईं और पटैरिया जी के प्रगति द्वार खुल गये। दूसरी अन्य घटना ने भी इन्हें कुछ से कुछ करने की ठान ठानने की दिशा दी। नौगाँव में बुंदेली संगीत कार्यक्रम में जब पटैरिया जू ने गीत गाया तो प्रभावित होकर अमरदान जू ने इन्हें आशीष देते हुये कहा था आगे तुम बुंदेली गायकी का नाम रोशन करोगे। वह वाणी सच साबित हुई। पटैरिया जू की करनी-धरनी से।

पं. देशराज जू तिदनी गाँव की गलियन गैलारै होते धूरा में सने, धूरा के घरघूला खेल खेले तो कबहुँ दंड पेले। हते गाँव अनहोने होनहार गवरारू जुवान सो हर हाँको, ढोर चराये, पोथी पढ़ पढ़कर पढ़ाई कर, संगीत साधना की। कीर्तन सुन हरमोनियम पै रियाज कर पगदण्डी से राजपथ की यात्रा की।

हर हाँकौं औ ढोर चराऐ, गोबर धरो बटोर।
सब सब रातन बैल चराऐ, घर आउत भऔ भोर।

यह संपूर्ण साधना करने के कारण ही उनके जीवन में संगीत की भोर हुई थी। देशराज जू का जीवन संघर्षो का दूसरा नाम है। दूध से जैसे दही, दही जैसे नैनू और नैनू से घी बनता है, इसी तरह वह यह सब कर्म कर देशराज, देशराज बने थे।

दूध हते सो दई बन बैठे, ऊखों लऔ बिलोर,
नैनू कढ़ौ तपाओ जीवन, घीऊ लवो निचोर,

घूरे से सोना खेतों में उपजत है, ऐसे ही देशराज उपजे थे। अनगढ़ पत्थर से सालिगराम की बट्इया बने थे। नदी में पत्थर लुड़कते ढुड़कते मूर्ति बन जाता है। सो वह बने थे। कहा जाता है मोहम्मद रफी जी को महान संगीतकार एक फकीर की दुआ ने बनाया था, फकीर गली-गली गाते थे। रफी साहब सुन सुन और गुन गुन कर गाते थे। इसी तरह पटैरिया जू के साथ हुआ। गाँव में कीर्तन होते थे। बड़े भइया कीर्तन गाते थे उन्हीं से प्रेरित हो साज और आवाज की आराधना करते थे। इसी साधना से देशराज जू बुंदेली गायकी धरोहर बन गये।

पं. देशराज जू पटैरिया जू ने दस हजार के लगभग बुंदेली लोकगीतों का गायन किया है। आल्हा की गायकी में वे सजे धजे ऊदल दिखते थे। वही जोश, वही जवानी, ऊँची कद-काठी बुंदेली रन बाँकुरे की आकृति अंकित कर जाती है जन-जन के मानस पटल पर। बुंदेली की संस्कृति की अभिव्यक्ति हेतु लोकगीतों के समस्त प्रकारों को पटैरिया जू ने अपनी वाणी प्रदान की है। भये बधाए, के सोहर गीत, विवाह गीत, सावन, होली, दीवाली के गीत, लड़कियों के गीत, लड़कों के गीत, पुरुषों के गीत, नारे सुआटा, मामुलिया, मौनिया नृत्य गीत दीवारी, बिलवारी, रमटेरा, रावला, कँड़रा, धुवयाई, ढिमरयाई आदि जन जन के कंठों में रचे पचे लोक प्रचलित आदिम संस्कृति की संरक्षक भावनापरक गीतों की झलक झिलमिल कर ज्योतिर्मान की है। उन्होंने हास्य-परिहास को ध्वनित कर नये आयाम दिये हैं। उन्होंने आकाशवाणी कार्यक्रम हेतु मेरा गीत गाकर मुझे नई गति दी है। गीत था -

बता दो मोरे बालमा तुम रात कितै बिलमाई।
उतै अथाई पै बजत नगरिया गवो तौ राम दुहाई।

अन्य गीत-पटैरिया जू का गाया हुआ अभी-भी घर-घर अलख जगाता है-

उठौ धना मगरे पै बोल गवो कउआ।
ऐसो लगत मायके सें आ गए लुवउआ।

गीत की लय बुंदेली जनमासस की सहज नौंक झौंक का अनूठा मिठास घोलती है। गीत में प्रयुक्त शब्द अनगइयाँ, विर्रा की रोटी, पनपथू, अछयाकें, कनकउआ, हुबइयाँ, टपकत, सपराती-मउआ आदि बुंदेली शब्द अपनी बपौती (अर्थवत्ता) अलग ही जोड़कर जड़ से जोड़ने का काम करते हैं। पटैरिया जू ने नौ रसों के गीतों को गाकर उन्हें गरिमामय बनाया है। श्रृंगार रस, रसराज कहलाता है। इसे उन्होंने तन्मय होकर गाया है। इसमें वे डूबे हैं और जनमन को भी डुबकिया लगवाई हैं क्योंकि श्रृंगार के उच्चतम स्वरूप को गाकर उसे अमृत्व प्रदान किया है। जिसमें सौंदर्य की मस्ती, मादकता का खुमार अविरल धारा बनकर प्रवाहित होता है। काम जैसी पावन प्रवृत्ति, आकर्षण का सम्मोहन, किलक कर अठखेलियाँ कर किलकारी भरता है। खजुराहो की प्राणिम आभा, मूर्तियों का लावण्य मर्यादित

रूप की पावन गंगा प्रवाहित करता है। सौंदर्य गीत जनमन में जवानी का जोश भर सृष्टि निर्माण की आवश्यक, पावनवृत्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। हर नारायण जी द्वारा रचित मर्यादित श्रृंगार गीत पटैरिया जू की सुमधुर वाणी, ढोलक की थाप, झीकें की झन्कार पर झंकृत होता है तो समस्त श्रोता मौन साध साधनालीन होकर रसानंद लेते है। रात से भोर हो जाती है पर थकान नहीं होती है। ताली गड़गड़ाती है। गीत –

नई–नई दुलइया सज गई ऐंन
घुगटा में दोऊ नैन कजरारे,
गोरे गाल दोउ ओंठ लाल
रेशम से बाल कारे–कारे
पनिया खों जात लटकत दिखात
करया में सात लर करदौनी
निकरी है खोर बिछियन कौ सोर
उम्मर लिलोर लगवे नौनी
गोरे गाल........................
कर दाँव पेंच रस्सी खों ऐच,
पानी खौं खेंच लफ लफ जावै।
जब उठत हात, लट लटकत जात
ओंठन में दाँत गप–गप जावें।
गोरे गाल........................

गीत का समग्र श्रृंगार बुन्देली अल्हड़ युवती के आकार को निर्मित कर मूर्तमान कर डॉ. वृन्दावनलाल वर्मा जू की मृगनयनी की झलक झलका देता है। बुन्देली के प्राणिम शब्द.......... कजरारे नैंन, गाल लाल, कारे कारे रेशम से बाल दोऊओउ लाल, उम्मर लिलोर, दाँव पेंच, ऐंच पेंच खेंच, लफलफ गप गप आदि नायिका के अंग अंग क्रिया कलाप को देदीप्यमान कर देते हैं, जो अनुपम है। रचयिता और गायक दौनौं को हार्दिक बधाई। ऐसी सलौनी रचना और ऐसी मस्ती भरी गायिकी को श्रोता सुनसुन गुनगुन जीवनभर याद करता रहेगा।

अन्त में अश्रुपूरित नयनों और भरे कंठ से कहना पड़ रहा है कि पं. देशराज पटैरिया जू अब नहीं रहे। यह अकाट्य सत्य स्वीकारना ही पड़ेगा किन्तु पटैरिया जू जिस धूल मिट्टी में पले–पुसे, जीवन साजा सँवारा, जीवन भर बुन्देली माटी के ऋण से उऋण होने के लिए, दिन–रात बुंदेली भाषा की तन, मन, धन से समर्पित होकर सेवा करते रहे, अन्तिम साँस तक। लोक गायिकी गाते–गाते यकायक उनकी आत्मा परमात्मा में लीन हो गई। परमात्मा से प्रार्थना है उनकी आत्मा को चिर शान्ति मिले। जहाँ वे जायें चिर सुखी रहें। दूद करूला करें।

जो कल थे वह आज चले गये।
लोक गायिकी के सरताज चले गये।
बुन्देली की आबाज चले गये।
पं. श्री देशराज चले गये।

काया की ढलान

देइया हती गठीली उनकी मीठे कमल गटा सी।
छाती छतरी जैसी फूली, बाँके लठा पठा सी।
नैनू कढ़ गऔ घीऊ निचुर गऔ,
रै गई मुमें मठा सी।
गुजरी बाते भईं पुरानी, खिसकी ईट अटा सी।
गुरा गुरा ढिलयानौ उनकौ, दुरगत कुटे लटा जी।

काया की ढलान

देखी जिन खों रैन पुतरिया, हो गई सूक पपरिया।
गुरा गुरा ढिलया गऔ उनकौ झकरो जैसे जरिया।
सवरी देय विजूकौ हो गई, निपकत फिरत घँघरिया।
गोरे गाल विला गई लाली, ढीली नाक पुँगरिया।
चुखी साँय की गोई हो गई, ढाँची सूक लकरिया।

कवियन की व्यथा

आँखन देखी जा अनहोनी, कती सेर नई पौनी।
लट्ठा की धुतिया पै पैरे, सब चाँदी कर दौनी।
कलेक्टर के आँमू साँमू भई, कवियन कविता बोनी।
वी सी और कमिनशनर आतन, पदम श्री ढ़ढ़कौनी।
आई.जी. और डी.आई.जी. आये, खुली न और खतौनी।
गजरा गुलदस्ता सब लै गये, कवियन खौ परचूनी।
सब अधिकारी 'सँत' चले गये, निजा गई ती धूनी।

– भोपाल, मोबा0–7425079493 卐

मुक्तक गीत

–डॉ. महावीर प्रसाद चंसौलिया

गजब है बुंदेली वर नार।
मुर्गा बोले सें उठें, चकिया डड़ा सम्हार।
गोबर दुहनी से निबट, बाहर–भीतर झार।।
मठा भाँय लौंनी धरें, करबी काटन जाय।
दे कलेऊ सब खाँ चली, सानी–पानी सार।।
गजब है बुंदेली वर नार।
पानी भरवे खाँ चली, बुंदेली पनिहार।
घड़ा शीश दो बगल, दो रस्सी काँधेडार।।
कड़ा, छड़ा पग पैंजनी, बिछियन झनक सुहाय।
बरा, बजुल्ला बाँह में, कमर करधनी धार।।
गजब है बुंदेली वर नार।
शीश फूल सिर नाक नथ, करन फूल नगदार।
अँचरन में मोती जड़े, गलहमेल लरदार।।
भौंहें खिची कमान सीं, हिरनी मोहत नैन।
अँखियाँ फकिया आम सी, कजरारी रसदार।।
गजब है बुंदेली वर नार।
नागिन सी चोटी लटक, कमर अंत तक डार।
नाग जुनैया देख मुख, पियन चहत शशि सार।।
गोरे मुँह घूँघट लगे, जैसे बदरी चंद।
लाली बिजली धार सी, दाँतन न–पाँत अनार।।
गजब है बुंदेली वर नार।

– ग्राम व पोस्ट – बँगरा, जिला–जालौन (उ.प्र.)
पिन–282121 卐

कायस्थ : चन्देल अभिलेखों के संदर्भ में

– डॉ. कन्हैयालाल अग्रवाल

(जाति का भारतीय समाज व्यवस्था में बड़ा महत्व व प्रभाव है। कायस्थों को लेकर शोधपरक लेख डॉ. कन्हैयालाल अग्रवाल ने लिखा है। जिसमें शोध संदर्भों सहित बात रखी गई है। यह उनके विचार हैं। – संपादक)

पूर्व मध्ययुगीन भारत में कायस्थों का एक नवीन जाति के रूप में विकास हो रहा था। इसके पहले उनका न तो साहित्य में और न ही अभिलेखों में कोई उल्लेख मिलता है। उनकी प्रसिद्धि मात्र एक बुद्धिजीवी वर्ग के रूप में थी। महान् वैयाकरण पाणिनि और पतंजलि ने कायस्थ शब्द का उल्लेख नहीं किया। न तो कौटिल्य के अर्थशास्त्र में उनका नाम मिलता है और न ही मौर्य अभिलेखों में। अत: उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि पहली शती ई.पू. तक उनका कोई अस्तित्व नहीं था।

कायस्थों का उल्लेख स्मृति साहित्य में भी नहीं मिलता। तो भी याज्ञवल्क्यस्मृति[१] में पहली बार उनका नाम आया है। याज्ञवल्क्य ने राजा सम्बोधित करते हुये कहा है कि यह प्रजा को चाटों (दुष्ट लोग), चोरों, दुश्चरित्रों, आततायियों और विशेषकर कायस्थों से बचायें। विज्ञानेश्वर[२] कायस्थ शब्द की व्याख्या करते हुये कहते हैं कि कायस्थ अर्थात् लेखक और गणकों से पीड़ित प्रजा की विशेष रूप से रक्षा करना चाहिये, क्योंकि राजाओं के प्रिय एवं मायावी स्वभावयुक्त होने से उनका निवारण कठिन होता है। मिताक्षरा में कहा गया है कि कायस्थ लोग हिसाब-किताब करने वाले (गणक), लिपिक, राजाओं के स्नेहपात्र और अत्यन्त धूर्त होते है। अग्निपुराण[३] से ज्ञात होता है कि कायस्थ राज्य कर्मचारी थे, जो भूमि सम्बन्धी कार्यों से सम्बन्धित थे। संभवत: वे भूमि कर वसूल करते थे और भूमि सम्बन्धी कागज पत्रों का काम उनके हाथ में था। वे प्रजा पर कर घटा अथवा बढ़ाकर बहुत अत्याचार करते थे। इसलिये राजा से कहा गया है कि वह प्रजा को कायस्थों से बचाये। उशना (३५) ने कायस्थों को एक जाति स्वीकार किया है और उसके नाम की एक अत्यन्त विचित्र व्युत्पत्ति बताई है। वे कहते हैं कि काक (कौआ) का पहला अक्षर का, यम का य और स्थपति का स्थ शब्दों को जोड़कर कायस्थ शब्द का निर्माण हुआ है। काक, यम और स्थपति क्र मश: लालच (लोभ), क्रूरता एवं लूट-पाट के परिचायक हैं।[४] व्यासस्मृति (१.१०-११) में कायस्थ नापितों, कुम्भकारों आदि शूद्रों के साथ परिगणित किये गये हैं। समन्त ने लेखक (कायस्थ) का भोजन तेलियों आदि के समान माना है और ब्राह्मणों के अयोग्य बताया है। वृहस्पति ने (स्मृतिचंद्रिका के व्यवहार से उद्धृत) गणक एवं लेखक की दो अलग संज्ञायें स्वीकार की हैं और उन्हें द्विज स्वीकार किया है। विष्णुधर्मसूत्र (७.३) में एक राजसाक्षिक को कायस्थ द्वारा लिखित बताया गया है।[५] इससे इतना स्पष्ट होता है कि कायस्थ न्यायाधीश से समन्वित रखे गये हैं ऐसा प्रतीत होता है कि बृहस्पति का लेखक शब्द कायस्थ का द्योतक है। ईसा की प्रारम्भिक शतियों में कायस्थ राजकर्मचारी के ही अर्थ में प्रयुक्त होता रहा है। किन्तु देश के कुछ भागों में जैसा कि उशना और व्यास के कथन से स्पष्ट होता है, कायस्थों की एक विशिष्ट जाति भी थी।

कायस्थों का उल्लेख गुप्तकालीन अभिलेखों में भी मिलता है। उनका प्रधान कार्य केवल लेखकीय ही नहीं अपितु वे लेखाकरण, गणना, आय-व्यय और भूमिकर अधिकारी का भी कार्य करते थे। हरिषेण (दसवीं शती ई.) ने उनके लिये लेखक और कायस्थ दोनों शब्दों का प्रयोग किया है। दामोदरपुर ताम्रपत्र अभिलेखों[६] में प्रथम कायस्थ अथवा ज्येष्ठ कायस्थ का उल्लेख मिलता है। इसीलिये राखालदास बनर्जी उन्हें लेखक मानते हैं। डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त[७] का कथन है कि प्रथम कायस्थ का तात्पर्य संभवत: उससे ही है, जिसे धर्मपाल का फ़रीदपुर[८] और ग्वालियर लेख[९] में ज्येष्ठ कायथ कहा गया है। इसका शाब्दिक अर्थ प्रधान लेखक मात्र है। इसीलिये दीक्षितार का कथन है कि वह प्रशासन का प्रधान सचिव था। किन्तु परिषद के अन्य सदस्यों के समान वह जन प्रतिनिधि ही रहा होगा। इस दृष्टि से संभवत: शिक्षित समाज के प्रतिनिधि के रूप में प्रथम कायस्थ का अनुमान किया जा सकता है। उपर्युक्त उदाहरणों से ऐसा प्रतीत होता है कि वे गुप्त युग तक एक वर्ग के रूप में थे, जो कालान्तर में एक जाति के रूप में प्रतिष्ठित हो गये। राजपूत काल में भी कायस्थ का उल्लेख लेखक के रूप में किया गया है। इस समय ये लोग अभिलेख[१०] भी लिखते थे। सहेत-महेत के गाहड़वाल अभिलेख[११] में उनका वर्णन लेखक के रूप में किया गया है। यहां कहा गया है कि सर्वशास्त्रविज्ञ सुरादित्य कायस्थ ने महाराज गोविन्दचन्द्र की राजाज्ञा तामपत्र पर अंकित कराई थी। किन्तु चन्देल, कलचुरि और चाहमान आदि राजवंशों के अभिलेखों में उन्हें कायस्थ जाति अथवा कायस्थ वंश का कहा गया है।[१२] ऐसा प्रतीत होता है कि नवीं शती ई. से उनका उल्लेख कायस्थ जाति के रूप में होने लगा। उशना और व्यास ने भी अपनी स्मृतियों में उन्हें जाति के ही रूप में उल्लिखित किया है।

कायस्थ का सम्बन्ध करण शब्द से भी स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है और उनका इतिहास करण शब्द के इतिहास से जोड़ दिया गया है। भारत के विभिन्न भागों में कायस्थों के अनेक पर्यायवाची नाम प्रचलित थे। ये नाम करण, कर्णिक, करणिन, शासनिन तथा धर्मलेखी थे। संभवत: किसी अधिकरण से सम्बद्ध होने के कारण लिपिकार करण कहलाता

था। करण शब्द का उल्लेख वैदिक साहित्य में भी मिलता है। कौटिल्य[१३] ने इसी धर्म में कारणिक शब्द का उल्लेख किया है। मनु[१४] ने करण का अर्थ वैधानिक परिपत्र किया है तथा कर्णिक को लेखा-जोखा रखनेवाला लिपिक बताया है। अत: कायस्थ को लिपिक का पर्यायवाची स्वीकार किया गया है। डॉ. दिनेशचन्द्र सरकार[१५] ने भी कायस्थ को करण का समानवाची बताया है। करण केवल कुछ ही भागों में लेखन कार्य करते थे, किन्तु कयस्थ सर्वत्र लेखक का कार्य करते थे। कालान्तर में कायस्थों ने एक जाति का रूप ले लिया। डॉ. राजबली पाण्डेय[१६] ने कायस्थों का वर्णों और जातियों से अलग प्रशासनिक कार्यों में संलग्न एक स्वतंत्र समुदाय के रूप में स्वीकार किया है। उनका कथन है कि यह पद (करण) कायस्थ का पर्यायवाची प्रतीत होता है। क्योंकि कायस्थ की ही तरह करण को भी स्मृतिकारों द्वारा अच्छी दृष्टि से नहीं देखा गया, इसलिये उसका वर्गीकरण वर्णसंकरों के साथ किया गया है। मनुस्मृति[१७] के अनुसार करण व्रात्य क्षत्रिय द्वारा सवर्णा स्त्री से उत्पन्न है। याज्ञवल्क्य[१८] का कथन है कि करण वैश्य पुरुष और शूद्रा स्त्री से उत्पन्न हुआ है। इसलिये कायस्थों के समान करण की सामाजिक स्थिति भी प्रभावित हुई। कीलहार्न[१९] कर्णिक की परिभाषा करते हुये कहते हैं कि व्यावहारिक कानूनी विवरणों (करणों) का लेखक करण कहलाता था। अत: कर्णिक शब्द जाति के अर्थ में प्रयुक्त न होकर लिखने वालों के अधिकारिक वर्ग के लिये प्रयोग किया गया है। करणिन[२०] शासनिन तथा धर्मलेखी[२१] शब्द क्रमश: अधिकरण के लिपिक, राजा अथवा अधिकारी के आदेशों का लेखक तथा व्यावहारिक विवरणों को लिखने वाले के अर्थ में प्रयुक्त हुये है।

कायस्थ शब्द की उत्पत्ति - संभवत: कायस्थ शब्द की उत्पत्ति करण से हुई है। यह संस्कृत भाषा का एक प्राचीन शब्द है।[२२] वैदिककाल में इसका अर्थ एक कुशल सहायक होता था।[२३] कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी करण शब्द का उल्लेख मिलता है।[२४] अमरकोष[२५] में इसका उल्लेख वर्णसंकर के लिये हुआ है। खजुराहो लक्ष्मण मंदिर अभिलेख[२६] से ज्ञात होता है कि पूर्व मध्यकाल में उन्हें करणिक कहा जाता था। कथासरित्सागर[२७] में सोमदेव ने कायस्थों को राजकीय दस्तावेजों का लेखक बताया है। वे मुगलकालीन दीवानों की तरह कार्य करते थे।[२८] इस प्रकार कायस्थ शब्द को लेखक का पर्यायवाची बताया गया है।[२९] कीलहार्न[३०] ने करणिक का अनुवाद विधिमूलक दस्तावेजों का लेखक किया है। संभवत: वे शासकीय कर्मचारी थे, जिनके अधीन अनेक प्रशासनिक विभाग होते थे।[३१] डॉ. बेनीप्रसाद[३२] का कथन है कि शासकीय लेखकों अथवा लिपिकों को कायस्थ कहा जाता था। किन्तु पी.वी. काण[३३] बेनीप्रसाद के मत में आंशिक सुधार करते हुये कहते हैं कि कायस्थ राजस्व विभाग के कर्मचारी थे। काणे का मत सम्पूर्ण सत्य पर आधारित नहीं हैं, क्योंकि कायस्थ केवल राजस्व विभाग के अधिकारी न होकर विभिन्न प्रशासनिक विभागों के भी अधिकारी होते थे। साम्राज्यवादी गुप्त वंश के समय लेखकों को कायस्थ कहा जाने लगा था। दामोदर ताम्रपत्रलेख[३४] से विदित होता है कि प्रथम कायस्थ स्थानीय प्रशासन के प्रति उत्तरदायी था और प्रतिनिधि सभा का एक महत्वपूर्ण सदस्य था।[३५]

कायस्थों की उत्पत्ति - कायस्थों की उत्पत्ति अत्यधिक गूढ़ रहस्य से आच्छादित है। पूर्व मध्य युग में राज परिवारों की उत्पत्ति किसी न किसी पारम्परिक वीर अथवा ऋषि-मुनि से जोड़कर बताने की परम्परा मिलती है। अत: कायस्थ जाति की उत्पत्ति भी राजपूतों की भांति पौराणिक है। धार्मिक आख्यानों में उनकी उत्पत्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा शूद्र वर्ण से बताई गई है। पद्मपुराण के सृष्टिखण्ड[३६] में कहा गया है कि कायस्थों की उत्पत्ति ब्रह्मा की काया से हुई। अत: ब्रह्मा की काया से उत्पन्न होने के कारण वे कायस्थ कहलाये। स्कन्दपुराण[३७] में वर्णन मिलता है कि कायस्थों की उत्पत्ति क्षत्रिय कन्या के गर्भ से हुई और ब्राह्मण राजा के अत्याचार ने एक महर्षि ने उस कायस्थ की रक्षा की। समय आने पर उस ब्राह्मण (परशुराम) ने क्षत्रियों का समूल नाश कर दिया। किन्तु उसने उस क्षत्रिय बाला का वध नहीं किया क्योंकि उसके पुत्र ने क्षात्र कर्म का परित्याग कर दिया था। इस कथानक से कायस्थों के क्षत्रिय होने की पुष्टि होती है। अवन्तिसुन्दरीकथा[३८] नामक ग्रंथ में कायस्थ जाति की उत्पत्ति क्षत्रियों से मानी गई है। कलचुरि अभिलेखों में एक सर्वथा नये सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया है, जिसके अनुसार कायस्थों का आविर्भाव शूद्र वर्ण से कहा जा सकता है। कर्ण के रीवा प्रस्तर अभिलेख[३९] के अनुसार शिव से उत्पन्न ऋषि काचर ने प्रसन्न होकर अपने एक शूद्र दास को एक विख्यात धार्मिक पुत्र होने का वरदान दिया, जिसकी जाति कायस्थ नाम से विख्यात होगी क्योंकि उसकी काया (शरीर) असंख्य शुभ गुणों से युक्त होगी। इसके साथ ही यह विवरण भी प्राप्त होता है कि इस पुत्र से उत्पन्न अनेक बुद्धिमान शुभ गुणों से युक्त कूटनीतिज्ञ उत्पन्न होगी। नैषधचरित[४०] के लेखक श्रीहर्ष का कथन है कि कायस्थों की उत्पत्ति मृत्यु के देवता यम के लेखक चित्रगुप्त से हुई। सोढल की उदयनसुन्दरीकथा[४१] के अनुसार वह वलभ नामक कायस्थ जाति में पैदा हुआ था। उसका संस्थापक कालादित्य नामक एक क्षत्रिय था। कालादित्य को क्षत्रिय जाति का आभूषण बताया गया है।[४२] उशनसस्मृति में कायस्थ को एक जाति स्वीकार किया गया है। उसके अनुसार कायस्थों का स्वभाव काक के समान लालची, यम के समान क्रूर और स्थपति के समान बलपूर्वक धन अपहरण करने वाला होता है।[४३] इसी कारण समाज में उनको हेय दृष्टि से देखा जाता है। किन्तु नवीं और दसवीं शती ई. से इस जाति का महत्व बढ़ गया[४४] और दसवी शती ई. के अन्तिम चरण में कायस्थ भी अनेक उपजातियों में विभक्त हो गये।

क्षेमेन्द्र[४५] ने कायस्थों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में एक रोचक आख्यान का वर्णन किया है। एक बार विष्णु द्वारा पराजित हो जाने पर दैत्यों के गणनापति ने वैतरणी नदी के

किनारे घोर तप किया। उसकी तपस्या और भक्ति से प्रसन्न होकर स्वयं कलि ने उसे कलमास्त्र देकर वरदान दिया कि वह पृथ्वी पर जाकर देवताओं और ब्राह्मणों का विनाश करे। उसका दिविर नाम इसलिये पड़ा कि वह दैत्यों के नष्ट होने पर आकाश (दिवि) में रोया (रोदित)। पृथ्वी पर उसका जन्म कसाई और कुदाल चलाने वाले की स्त्री से हुआ। शरीर पर स्याही पोते, सेवाकाल में चापलूस, लालची, और ठग उसके पुत्र दिविर पृथ्वी पर फैल गये। उसको हाथों में स्याही और भोजपत्र तथा बगल में बस्ते होते थे। स्वयं कायस्थ ने सबको लूटना प्रारम्भ कर दिया और कालान्तर में वह गृहकृत्य हो गया।

उत्पत्ति के सिद्धान्तों की समीक्षा

कुछ स्फुट टीका-टिप्पणियों के अतिरिक्त कायस्थ जाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कोई गम्भीर कार्य नहीं किया गया। उत्पत्ति सम्बन्धी इस जटिल समस्या के समाधान के लिये डॉ.एन.के. दत्त[४६] ने कायस्थों की उत्पत्ति के ईरानी सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है उनका मत है कि कायस्थों का भारतीय सामाजिक संगठन से कुछ लेना-देना नहीं है। इसलिये पारम्परिक भारतीय चतुवर्ण व्यवस्था में उनका उल्लेख नहीं मिलता। पुराणों[४७] के अनुसार अन्तिम मौर्य शासक वृहद्रथ के कारुणिक अंत के बाद मगध की सत्ता शुंगों के हाथ में आ गई। हर्ष का दरबारी कवि बाणभट्ट[४८] लिखता है कि दुष्ट सेनापति पुण्यमित्र शुंग ने सेना का निरीक्षण करते समय मौर्यशासक वृहस्थ का वध कर दिया। इसके बाद से ही उत्तर भारत पर लगातार विदेशी आक्रमण हुये। इनमें हिन्दू-यूनानियों, शकों, पल्हवों, और कुषाणों के आक्रमण प्रमुख हैं। भारतीय ईरानी सम्पर्क के कारण भारतीय भाषा में ईरानी शब्दों का प्रवेश हुआ। इसमें कहा गया है। यह शब्द शीघ्र ही भारतीय भाषा में घुलमिल गया और कायस्थ के रूप में प्रकट हुआ। कालांतर में विदेशी सैनिकों का क्षत्रिय के रूप में भारतीयकरण हो गया और प्रशासक वर्ग कायस्थ कहलाने लगा। डॉ. दत्त के उपर्युक्त सिद्धान्त पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है, किन्तु जब तक इस सिद्धान्त के पक्ष में और प्रमाण सामने नहीं आते, तब तक इसे पूरी तरह स्वीकार नहीं किया जा सकता।

मूल रूप से कायस्थ जाति लेखकों का एक वर्ग था। कालांतर में भारतीय समाज की सहिष्णुता अथवा गतिशीलता समाप्त हो गई। अत: लेखन का व्यवसाय करने वाला वर्ण व्यवस्था की संकीर्णता के कारण एक जाति में परिवर्तित हो गया, जिसे कायस्थ कहा जाने लगा। इस जाति में द्विज भी सम्मिलित हैं, जिनमें ब्राह्मण तत्व की अधिकता है।[४९] लेखन का कार्य ब्राह्मणों और क्षत्रियों द्वारा भी अपनाया गया। अत: जब जाति व्यवस्था कठोर होने लगी तब उनकी गणना भी कायस्थों में होने लगी।[५०] सौर पुराण[५१] में कहा गया है कि ब्राह्मणों को श्राद्ध के समय ऐसे ब्राम्हणों के यहां भोजन नहीं करना चाहिये, जिन्होंने कायस्थों, ज्योतिषियों, वैद्यों और सैनिकों का व्यवसाय अपना लिया है। आज भी पूना, नागपुर और सतारा के कुछ ब्राह्मण स्वयं को कायस्थ ब्राह्मण कहते हैं। यहां पर उपसर्ग कायस्थ महत्वपूर्ण हैं। क्षत्रिय कायस्थों से उन्हें अलग प्रदर्शित करने के लिये इस उपसर्ग की आवश्यकता प्रतीत हुई।[५२] ब्राह्मणों और क्षत्रियों के समान कायस्थों में भी गोत्र का प्रचलन है। यह विशेषता केवल द्विजों में मिलती हैं कायस्थों में गोत्र की चेतना इस तथ्य को बल देती है कि वे द्विज थे।

कुछ अशुभ कार्य गृहस्थ को सदा के लिये दास बना सकते हैं, और कुछ उसे केवल प्रभावित कर सकते हैं। किन्तु कुछ उसे प्रभावित ही नहीं करते, अपितु उसके वंश और जाति को नष्ट कर देते हैं। मनु[५३] ने राजसेवा, शूद्र स्त्री से सन्तान उत्पन्न करना, अनाधिकृत के यहां यज्ञ करने को अशुभ कार्य स्वीकार किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि विधि निर्माताओं को राजसेवा अत्यन्त अरुचिकर थी। संभवत: उनको राजसेवा में नहीं लिया गया, इसीलिये उन्होंने अपनी नियमावली में उसकी पूर्ण अवहेलना की है।

प्राचीन भारत में कायस्थ शब्द का प्रयोग प्रशासनिक अधिकारी के लिये होता था और इसका जाति से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध न था। क्योंकि यह व्यवस्था आनुवांशिक थी, इसीलिये कायस्थ का पद पिता के बाद पुत्र और पुत्र के बाद पौत्र को मिलने के कारण नवी शती ई. से जाति में परिवर्तित होने लगा।[५४] जब तक कायस्थ मात्र लिपिक अथवा लेखक के पद पर कार्य करते रहे, तब तक उनकी उत्पत्ति की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। किन्तु जैसे ही वे उच्च पदों पर नियुक्त किये जाने लगे उनका महत्व बढ़ गया अत: जो बुद्धिजीवी शासकीय सेवा में नहीं लिये जा सके वे ईर्ष्या करने लगे। यही कारण है पूर्व मध्यकाल के दौरान उन्होंने कायस्थों के चतुर्दिक उनकी निम्न उत्पत्ति का ऐसा मायाजाल बुन दिया, जिससे उनका निकल पाना अत्यन्त कठिन हो गया।

सामाजिक स्थिति

कायस्थों की सामाजिक स्थिति के सम्बन्ध में ब्राह्मणों द्वारा लिखित समकालीन साहित्य और अभिलेखों में अत्यधिक विरोधाभास है। राजतरंगिणी लेखक कल्हण ने ब्राह्मण शिवरथ की एक धूर्त कायस्थ के रूप मे कटु आलोचना की है। यह लिखता है कि "महान् षड्यन्त्रकारी अधिकारी कायस्थ शिवस्थ के द्वारा गला घोंटने से एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई।"[५५] लक्ष्मीधर का कथन है कि कायस्थ उत्पीड़नकारी अधिकारी होते हैं। अत: उनसे प्रजा की रक्षा करना चाहिये।[५६] क्षेमेन्द्र और कल्हण के अनुसार कायस्थ प्रजा से वसूले गये राजस्व का अधिकांश भाग खुद रख लेते हैं और अत्यन्त अल्प राशि राजकोष में जमा करते हैं।[५७] कायस्थों की इस आदत पर अंकुश लगाने के लिये उच्छल और जगदेव जैसे कश्मीर के प्रगतिशील शासकों ने अनेक उपाय किये। किन्तु इससे उच्छल को शासन चलाने में महान् कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और जगद्देव को उनसे घोर पराजय का सामना करने के कारण राजसिंहासनका परित्याग कर कश्मीर घाटी में शरण लेना पड़ी[५८]

यद्यपि १२वीं शती ई. तक उत्तर भारत में कायस्थों ने एक स्वतंत्र वर्ग का रूप धारण नहीं किया था, तथापि एक व्यावसायिक जाति के रूप में उन्होंने संगठित होना प्रारम्भ कर दिया था।[५९] क्षेमेन्द्र, सोमदेव, कल्हण और लक्ष्मीधर जैसे कश्मीरी लेखक उन्हें केवल राजकर्मचारी मात्र मानते हैं। किन्तु कलचुरि, चन्देल और चाहमान अभिलेखों से प्रकट होता है कि ग्यारवीं शती ई. तक वे न केवल एक जाति के रूप में अस्तित्व में आ चुके थे बल्कि उनमें अनेक शाखायें भी बन गई थीं। पूर्व मध्यकालीन अनेक अभिलेखों में कायस्थों में कायस्थों की बालभ, गौड़, माथुर, कयरिया, वास्तव्य अथवा श्रीवास्तव, नेगम, अथवा निगम शाखाओं का उल्लेख मिलता है। गुर्जर-प्रतीहार अभिलेखों[६०] में कायस्थों की केवल माथुर शाखा का नाम आया है, किन्तु चन्देल[६१] और गाहड़वाल[६२] अभिलेख गौड़ और श्रीवास्तव जैसी शाखाओं का उल्लेख करते हैं। वि.सं. ११७२ के गोविन्द्रचन्द्रा के कमौली ताम्रपत्र में कहा गया है कि गाहड़वाल वंश में शासनकाल में कुछ कायस्थों को सामन्ती स्थिति का द्योतक ठक्कुर का सम्मानजनक पद प्रदान किया गया था।[६३] किन्तु चन्देल अभिलेखों[६४] से ज्ञात होता है कि उनके यहां कुछ श्रीवास्तवों ने वंश परम्परा से सचिव पद सुशोभित किये।

कायस्थों की उपजातियों का नामकरण उनके निवास स्थान के आधार पर भी हुआ है। मथुरा निवासी कायस्थों को माथुर और गौड़ के निवासियों को गौड़ (कायस्थ) कहा जाने लगा। इसी प्रकार निगमों में लिपिक पद पर कार्य करने वाले कायस्थों को निगम कहा जाने लगा।

कायस्थों का भ्रष्टाचार

समकालीन साहित्य से कायस्थों द्वारा किये जाने वाले भ्रष्टाचार पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। कल्हण का कथन है कि उनका जन्म मंदिरों के आर्थिक स्थायित्व को समाप्त करने के लिये हुआ था। वे नये कर वृद्धि करने में इतने निपुण थे कि कशमीरी शासक कायस्थों के मार्गदर्शन और उनके दिशा निर्देश मानने के आदी हो गये थे।[६५] क्षेमेन्द्र, कल्हण और सोमदेव ने अपने लेखन में कायस्थों द्वारा उत्पीड़ित जनता की आवाज को सफलतापूर्वक व्यक्त करने का प्रयास किया है। यह कायस्थों की प्रशासनिक क्षेत्र में उनकी मजबूत पकड़ का संकेत देता है। इसमें सन्देह नहीं कि पूर्व मध्यकालीन भारतीय लेखकों ने कायस्थों के भ्रष्टाचार का अतिरंजित वर्णन किया है। तो भी, उनके इस वर्णन पर न्यूनाधिक ध्यान देना आवश्यक है। साहित्य समाज का दर्पण है। इसलिये तत्कालीन समाज का सन्तुलित ज्ञान प्राप्त काने के लिये तत्कालीन साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। समकालीन साहित्य में कायस्थों को डाकू, अपराधी, लुटेरा और अनैतिक कहा गया है। किन्तु अभिलेखों में उन्हें योग्य प्रशासक, विद्वान और शास्त्र ज्ञान में मर्मज्ञ कहा गया है।[६६] प्राय: अभिलेखों में उनकी विद्वता, बाहुबल प्रशासनिक कार्यों में उत्कृष्ट दक्षता और समाज में व्यापक प्रभाव के दुर्लभ संयोग का वर्णन किया गया है। इस प्रकार समकालीन मत सदैव लेखकों द्वारा व्यक्त किये गये हैं। किन्तु अभिलेखों में कायस्थों के प्रति उल्लिखित मत शासन द्वारा व्यक्त किये गये हैं। क्योंकि वे स्वयं शासन में प्रभावशाली स्थिति में थे, अत: अपने बारे में अच्छे से अच्छे विचार व्यक्त करना उनके अधिकार क्षेत्र में था। साधारण जनता से वे कोसों दूर थे और उससे उन्हें कुछ लेना-देना न था। इसलिये सामान्य जन के आवाज का कोई मूल्य न था। किसी भी प्रशासक के लिये जनता के बीच अच्छी छवि प्राप्त करना प्राय: एक असंभव कार्य होता है। तो भी, समकालीन साहित्य मे व्यक्त, जिनमें कायस्थों की धूर्त्तता का वर्णन किया गया है, महत्वपूर्ण है। शूद्रक के मृच्छकटिक नाटक में गुप्तकालीन सत्र न्यायालय का मनोरम वर्णन किया गया है। इसमें नाटक का नायक चारूदत्त न्यायालयीन कक्ष की भव्यता देखकर किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाता है। शाही राजधानी समुद्र के समान थी, जिसके तटों पर सार्वजनिक कार्यों की लहरें अजनबी जीव जन्तुओं के समान थी। राजनीतिज्ञ गहरे जल के समान थे और दूत नाविकों के समान थे। सैनिक मगरमच्छों के समान थे और मकर पहरेदारों के समान थे, जो सीमाओं की रक्षा करते थे। हाथी और युद्ध के अश्व मांसाहारी मत्स्य थे, जो गहरे जल में डुबकियां लगा रहे थे। वादियों और अशिष्ट पुकारें तटवर्ती पक्षियों की चीत्कार के समान थी और सर्पों की पोशाक में कायस्थ तट के नीतिरूपी पग थे। इस प्रकार महासागर के समान उस न्यायालय में सभी प्रकार के घातक जीव-जन्तुओं का आवास था। शूद्रक ने न्यायालय का एक ऐसा रेखाचित्र प्रस्तुत किया है, जिसमें धूर्तों की भरमार है। उसने इस रेखाचित्र में न्यायालयीन लिपिकों (कायस्थों) का सटीक वर्णन करने का भरपूर प्रयास किया है।[६७]

कायस्थों के उपर्युक्त धूर्त्ततापूर्ण और कपटी चरित्र समझने के लिये तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों का अध्ययन करना आवश्यक है। हूणों के भयंकर आक्रमण के फलस्वरूप भारतीय सभ्यता की जीवनशक्ति को तेजी से ह्रास हुआ। अरब और मुस्लिम आक्रमणों ने आग में घी का काम किया। इस समय भारत उथल-पुथल के महान् विनाशकारी युग से गुजर रहा था। इस स्थिति से मुक्ति पाने के लिये शस्त्र विद्या का विशेष प्रावधान किया गया। कथासरित्सागर[६८] से ज्ञात होता है कि ब्राह्मणों के लिये निर्धारित वैदिक अध्ययन के साथ सैनिक शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। भारतीय इतिहास में पहली बार इस प्रकार का लक्ष्य परिलक्षित होता है। समाज द्वारा इस आपदधर्म को स्वीकार किया गया। पूर्व मध्ययुगीन भारत की अस्थिर राजनीतिक अवस्था ने अधिकारियों को भ्रष्ट बना दिया। अस्थिरता और अराजकता के कारण शासकीय कर्मचारियों की सेवायें बाधित होती थी, जिसके कारण वे ईमानदार न रह पाते थे। नियोक्ता राजा की मृत्यु के बाद प्राय: उनकी समाप्त कर दी जाती थी। अत: सेवायें सुरक्षित न होने के कारण वे अपने सेवाकाल में येन-केन-प्रकारेण धन संग्रह करने का प्रयत्न करते थे। यह धन भ्रष्टाचार से

अर्जित किया जाता था, जिससे वे अपना शेष जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करते थे। यही कारण है कि साहित्य में उनके प्रति अच्छी राय व्यक्त नहीं की गई।

क्षेमेन्द्र का समय लगभग ग्यारहवीं शती ई. है। उन्होंने कायस्थों की करतूतों का विस्तृत वर्णन किया है। मोह कायस्थों के मुख ओर लेख में बसता है। वे क्षण भर में धन-सम्पत्ति (सस्य सम्पत्ति) लूट लेते हैं। उनकी कलाओं का कोई पार नहीं पा सकता। कालपुरुष के समान वे मोटे-मोटे डण्डों से लोगों को मार गिराते हैं। वे गणना में दक्ष होते हैं। राजश्री उनके कारनामों से विलाप करती हैं। उनकी लिपि कुटिल होती है। वह कायस्थ के भोजपत्र के सिरे परे गेंडुली मारे सर्पों की तरह प्रतीत होती है। विचित्र बुद्धि और गुप्त बातें करने वाले चित्रगुप्त कायस्थ केवल एक रेखा के हेरफेर से सहित को रहित कर देते हैं। लोक में उनकी सोलह कलायें प्रसिद्ध हैं। उनका वर्णन इस प्रकार है:-

(१) **वक्रलिपिन्यास कला :** टेड़े-मेड़े अक्षर लिखकर एक पंक्ति के अक्षर दूसरों में मिला देना, जिससे अर्थ का अनर्थ हो जाये।

(२) **सकलांक निमीलन कला :** गुप्त आकड़ों के सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी रखना। प्राय: व्यापारीगण वास्तविक मूल्य के स्थान पर सांकेतिक अंक रख लेते हैं। अत: उनके अतिरिक्त दूसरों को असल दाम की जानकारी नहीं हो पाती।

(३) **सतत प्रवेश कला :** हर बात में दखल देना।

(४) **संग्रह लोक कला :** हर व्यक्ति को अपने पक्ष में करने में प्रवीण करना।

(५) **व्यय निर्वचन कला :** व्यय को बढ़ाकर बताना।

(६) **ग्राह्य परिच्छेद कला :** लेने वाली वस्तु को पहले से ही बांटने का बांधन बांध रखना।

(७) **देय धन कला :** कर्ज देने की कला।

(८) **आदान धन कला :** कर्ज लेने की कला।

(९) **शेषस्य विवेक कला :** बाकी बचे माल को हड़प जाने की कला में दक्ष होना।

(१०) **संकलित राशि सर्वभक्षण कला :** जमा राशि का हजम कर डकार तक न लेना।

(११)**उत्पन्न गोपान कला :** उपज का छिपा रखना।

(१२) **नष्ट करना :** माल खराब कर देने की कला।

(१३) **विशार्ण कला :** माल गायब कर देने की कला।

(१४) **त्रज्यमाने: भरण कला :** अपने घर से खरीद कर खाने-पीने का दिखावा करना।

(१५) **योजनादिभि क्षय कला :** अनेक योजनायें दिखलाकर लेखा में घाटा प्रदर्शित करना।

(१६) अंत में भोजपत्र जला देने से आमदनी समाप्त हो जाती है, जिससे चोर स्वच्छन्द हो जाता है। जिस प्रकार सकलंक, घटनेवाले, नये-नये रूप पाने वाले, बढ़ने वाले और रात लाने वाले चन्द्रमा की सोलह कलायें होती हैं, उसी प्रकार कलंकभरी, माल घटानेवाली, नये-नये रूप प्रदर्शित करने वाली, दिन-दिन बढ़ने वाली, दोषों से भरी कायस्थ की सोलह कुटिल कलायें हैं।

कायस्थों की कुटिलता के बारे में क्षेमेन्द्र ने एक मनोरंजक आख्यान का वर्णन किया है। एक समय एक जुआरी अपना सर्वस्व हारकर घूमते-घूमते उज्जयिनी नगर पहुंचकर भक्तिपूर्वक महाकाल की आराधना करने लगा। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर जैसे ही शिव उसे वरदान देने को उद्यत हुये वैसे ही उनके मुखमण्डल के एक कपाल ने ऐसा करने से रोक दिया। शिव के पूछने पर कि उसने ऐसा क्यों किया? कपाल ने बताया कि दु:खी रहने पर वह जुआरी आपकी भक्तिपूर्वक पूजा करता है। परन्तु इच्छापूर्ति के बाद वह आपको भूल जायेगा। तब शिव ने कपाल से पूछा कि तुम कौन हो? कपाल ने कहा मैं मगध में कायस्थ कुल में उत्पन्न होकर भी स्नान, जप-व्रत और तीर्थयात्रा के फलस्वरूप गंगा नदी (काशी) में शरीर त्याग कर आपके पद को प्राप्त हुआ। शिव ने कहा-तू सचमुच कायस्थ हैं, जो कपालमात्र शेष रहने पर भी अपनी कुटिलता नहीं छोड़ता। यह कह कर उन्होंने जुआरी को वर दिया और उक्त कपाल को अपनी मुण्डमाला से निकालकर फेंक दिया।

देशोपदेश ३/५-६ में कहा गया है कि कायस्थ देवताओं, ब्राहाणों और भारी प्रजा को लूटकर गुरू के पास जाता है। प्रजा को लूटकर वह यज्ञ करता है। राजकर्मचारियों में क्षेमेन्द्र ने सर्वाधिक तीखा कटाक्ष कायस्थों के प्रति किया है। क्षेमेन्द्र के अनुसार कायस्थ किसी जाति विशेष का द्योतक न होकर प्राय: राजकर्मचारियों का द्योतक है, जिनमें गणक, परिपाललक, लेखकोपाध्याय, गंजदिविर, नियोगी, दिविर, गृहकृत्य इत्यादि सभी वर्ग के अधिकारी आ जाते हैं। कायस्थों के प्रति क्षेमेन्द्र की कुटिल दृष्टि के कई कारण संभव हैं। प्राय: राजाज्ञाओं के पालन कराने का कार्य राजकर्मचारियों का था। प्रजा से लगान और अन्य कर वे ही वसूल करते थे। पार्षदी और यज्ञों तथा पाठशालाओं से भी उन्हें पर्याप्त आय होती थी। राजाज्ञा अथवा स्वेच्छा से जब कायस्थ उनके इन आय स्त्रोतों को हरण करने का प्रयत्न करते थे, तब दोनों की शत्रुता होना आवश्यक थी।

क्षेमेन्द्र ने नर्ममाला शीर्षक अपनी रचना में कायस्थों के प्रति घृणा का भाव पूरी तरह उजागर किया है। कायस्थ की सबसे बड़ी महत्वकांक्षा गृहकृत्याधिपति अथवा गृहकृतमहतम पद प्राप्त करने की होती थी। कल्हण की राजतंरगिणी में इस पद की विशद चर्चा की गई है। शंकरवर्मा के शासनकाल में यह पद गजधर के पास था। उसके अधीन पांच दिविर काम करते थे।[६१] इस विभाग की आय का मुख्य स्त्रोत ग्रामों पर कर और तौल से हेरा-फेरी करने वालों से वसूला जाने वाल दण्ड था। चक्रवर्ती के शासनकाल में एक ऐसे ही गृहस्थ का वर्णन किया गया है। मंत्री तुंग प्रजापालन के लिये प्रसिद्ध था। बुद्धि भ्रम के कारण उसने भद्रेश्वर नामक एक नीच कायस्थ को अपना सहायक नियुक्त कर लिया। पहले वह गोबर बेचने जैसा निम्न कर्म करता था। कालान्तर में उसने भिश्ती का कार्य किया। तत्पश्चात् वह दिविरों के मसिपात्र ढोने लगा। तुंग ने पवित्र धर्माक को हटाकर भद्रेश्वर को गृहकृत्य बना दिया। इस दुष्ट ने

देव, ब्राह्मण, गौ और अनाथों की वृत्तियों समाप्त कर दी। अतिथि और राजा के अधीन अन्य लोग भी उसके अत्याचार से न बच सके।[७०] ऐसा प्रतीत होता है कि गृहकृत्य का यह पद गृहमंत्री के समान था, जिसके अधीन सेना, नागरिक तथा धर्मार्थ विभाग होते थे। उसके अधीन सात नियोगी और आठ अर्दली (भट्टमुख) होते थे, जिनका काम नागरिकों को लूटना और मारना था।[७१]

गृहकृत्य बगुला भगत की तरह धार्मिकता का ढोंग रचकर देवमंदिर में स्त्रोत का पाठ करता था, किन्तु उसका ध्यान सदैव लूटपाट की ओर लगा रहता था।[७२] घूसखोरी से उसका घर भरा रहता था। मंदिरों, ब्राह्मणों गरीबों को दान, जानवरों को चारा, राजकर्मचारियों को वेतन आदि पर उसका अधिकार था। इतना ही नहीं वह अपने कर्मचारी स्वयं नियुक्त कर सकता था।

संदर्भित लेख –

१.१.३३५. कायस्थगणकालेखाश्च।
२. कायस्थ लेखक गणकाश्च तैः पीद्यमान। विशेषतो रक्षेत।
तेषां राजवल्लभतयातिमायवित्वाच्च दुर्निवारत्वात्। वही, १.३३६.
३. सुभगाविटभीतेव राजवल्लभतस्करैः।
भक्ष्य माणाः प्रजाः रक्ष्याः कायस्थैन विशेषतः।।
४. का काकाल्लौल्यं यमात् क्रौर्य स्थापतेस्थ कुन्तनम्।
आद्यक्षराणि संगृहय कायस्थ इति निर्दिशेत।। उशना, ३५
५. राजाधिकरणे तन्नियुक्त कायस्थकृतं तेदप्यक्षकरचिन्हित राजसाक्षिकम्।७.३.
६. एपि.इण्डि., खण्ड १५ पृ. १३०, प्रथम कायस्थः कार्पस ऑफ दि बंगाल इंस्क्रिप्शन्स, पृ. ८०, ज्येष्ठ कायस्थ।
७. गुप्त साम्राज्य पृ. ३११–१२.
८. कार्पस ऑफदि बंगाल इन्स्क्रिप्शन्स, पृ. ८४, पं. ६.
९. वही, पृ. १०० पं. ४७.
१०. गुप्ता पालिटी, पृ. २५७–५८
११. श्रीमदगोविन्दचन्द्रस्यभूपतेराज्ञालिखितः ताम्रमेतात सुरादित्य कायस्थः सर्वशास्त्रवित्। एपि. इण्डि. खण्ड ११, पृ. १५
१२. वही, खण्ड २, पृ. ५३.
१३. कार्मिके चोपस्थिते कारणिकस्याप्रतिबहमतः पूर्वः साहसदण्डः। २.७.२२.
राजार्थे कारणिंकस्याप्रतिबध्यतः प्रतिषेधयतो वा आज्ञां निबन्धादायव्ययमन्यथा वा विकल्पयतः पूर्वः साहसदण्डः। २.७.३४.
१४. मनुस्मृति, ८.५१–५२.
१५. स्टडीज इन दि सोसायटी एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ ऐंश्यट मेडिवल, इण्डिया पृ. १५८–५९.
१६. इण्डियन पैलियोग्राफी, पृ. ९३.
१७. झल्लो मल्लश्च राजन्याद व्रात्यान्निच्छविखे च।
नटश्च करणश्चैव रेवसौ द्राविड़ एव च।। १०.१२२
१८. वैश्यान्तु करण शूद्रायां विन्नास्वेष विधिः स्मृतः।
१९. एपि.इण्डि. खण्ड १, पृ.८१, १२९, १६६: इण्डि.एण्टि., खण्ड १६, पृ. १७५: वही, खण्ड १८, पृ. १२.
२०. हर्षचरित (निर्णयसागर), पृ. २२.
२१. इण्डि.एण्टि., खण्ड२०, पृ.३३५: वही, खण्ड१६, पृ. २०८
२२. विष्णुधर्मसूत्र, ७.३१.
२३. दत्त, एम.के., ओरिजन एण्ड ग्रोथ ऑफ कास्ट इन इण्डिया, पृ. ५२१.
२४. अर्थशास्त्र, २५.८, २.७.८: २.११.१
२५. २.१०.२
२६. कार्पस, खण्ड ७, पृ. ३४६ 'रुचिराक्षरा प्रशस्तिः करणिक जद्धेन गौडेन।'
२७. XLII, ९०–९४: १०८–१३.
२८. मजूमदार, बी.पी., सोशियो इकोनामिक हिस्ट्री ऑफ नार्दर्न इण्डिया, पृ. ९६.
२९. जेयूपीहिसो, खण्ड १९, पृ. ८१–८२
३०. एपि.इण्डि., खण्ड १, पृ. १३५.
३१. धर्मशास्त्र का इतिहास, खण्ड ३, पृ. ९७९.
३२. स्टेट इन ऐंश्यंट इण्डिया, पृ. ४०७.
३३. धर्मशास्त्र का इतिहास, खण्ड ३, पृ. ९७९.
३४. एपि.इण्डि., खण्ड १५, पृ. १३० तथा आगे।
३५. डॉ. परमेश्वरलाल गुप्त (गुप्त साम्राज्य, पृ. ३११–१२) का कथन है कि प्रथम कायस्थ का तात्पर्य संभवतः उससे ही है, जिसे धर्मपाल के फरीदपुर और खालिमपुर लेख में ज्येष्ठ कायस्थ कहा गया है। इसका शाब्दिक अर्थ प्रधान लेखक मात्र है। दीक्षितार (गुप्त–पालिटी, पृ. २५७–५८) का मत है कि वह प्रशासन का सचिव था। किन्तु विषय–परिषद के अन्य सदस्यों की भांति वह जनप्रतिनिधि ही होगा। इस दृष्टि से संभवतः शिक्षित समाज के प्रतिनिधि को प्रथम कायस्थ कहा जाता था।
३६. अ. ३, श्लोक, १६४.
३७. १४.६६.
३८. GOS., पृ. ११.
३९. कार्पस, खण्ड ४, पृ. २७१, श्लो. ३५.
स ....(विमलत्रिनेत्रत्पवित्र) जन्मा किल काचराख्यः।
यौसो त्रिलोकीतिलककायमानां पुर कुलाञ्चामकरोन्मुनीन्द्र।।
४०. एपि.इण्डि., खण्ड २४, पृ., ११० तथा आगे।
४१. गायकवाड़ ओरियण्टल सीरीज, पृ. १.
४२. ए.म.ओ.रि.इं., खण्ड १४, पृ. ११७.
४३. उपनस, ३५.
४४. दि एज ऑफ इम्पीरियल कन्नौज, पृ. ३७४.
४५. नर्ममाला, १.९–३२.
४६. ओरिजन एण्ड ग्रोथ ऑफ कास्ट इन इण्डिया, पृ. ५२१.
४७. विष्णु, ४.२४.९: वायु, ९९–३३७: ब्रह्माण्ड, ३.७४.१५, मत्स्य, २७२.२७: भागवत, १२.१.१५,
४८. प्रज्ञा दुर्बलं च बल दर्शन व्यपदेशदर्शिताशेष सैन्यः सेनानीरनार्यो मौर्य बृहद्रथ पिपेष पुष्यमित्र स्वामिनम्। हर्षचरित, चतुर्थ उच्छवास।
४९. दत्त, पूर्वोत्तर, पृ. ५७.
५०. ओझा, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ. ४७.
५१. अ. १९
५२. दत्त, पूर्वोक्त, पृ. ३७.
५३. ३.६४–६६.
५४. उपाध्याय, सोशियो रिलीजस कण्डीशन ऑफ नॉर्थ इण्डिया, पृ. टि. ९,
५५. राजतरंगिणी, ८, २३८३.
५६. राजधर्मकाण्ड, पृ. ८३.
५७. राजतरंगिणी, IV, ६२९.
५८. वही, VIII, ८३–११४.
५९. एपि.इण्डि., खण्ड १, पृ. १२९–१४७: खण्ड XI पृ. १४, खण्ड १४, पृ. १०८–९.
६०. वही खण्ड १९, पृ. ६१, आसरि,१९२३–२४, पृ.१२२–२४.
६१. वही खण्ड १, पृ. ३३१, वही खण्ड १४, पृ. १४.
६२. वही खण्ड ४, पृ. १०३–४.
६३. वही खण्ड १०४, पृ. २७.
६४. वही खण्ड२८,पृ.९८–१०७: कापर्स, खण्ड ७,पृ.५१०–१५.
६५. राजतरंगिणी, प्ट, ६२३.
६६. एपि.इण्डि., खण्ड १, पृ. ३४.
६७. चिन्तासक्तनिमग्न मंत्रिसलिलंदूतोर्मिशंखाकुलं।
पर्यन्तस्थितराचारनक्रमकरं नामाश्वहिहस्राश्रयम।
नानवाशककं पक्षिरूचिरं कायस्थसर्पासपददम्।
नीतिक्षुण्णतंट च राजकरणं हिस्त्रैः समुद्रायते।। अंक ९.१४.
६८. LXXIX, २१
६९. राजतरंगिणी, ५.१७६.
७०. वही, ७.३७–४३.
७१. नर्ममाला, १.३३–४४
७२. वही, १.३९–४४.

– पलटन मस्जिद के पास, नौगांव, छतरपुर (म.प्र.)
पिन–471201, मोबा0–9424911221 卐

बुन्देली बोली का अस्तित्व : एक विवेचन

– सन्तोष कुमार पटैरिया

किसी भी क्षेत्र की पहचान वहां की बोली संस्कृति आदि से होती है। बघेलखण्ड में बघेली बोलते है, इसी प्रकार बुन्देलखण्ड में बुन्देली बोली जाती है। बुन्देलखण्ड प्रान्त की माँग बहुत समय से हो रही है किन्तु यहाँ की बोली का प्रयोग कम होता जा रहा है। घरों में बुन्देली का प्रयोग न करने पर नई पीढ़ी बुन्देली शब्दों बुन्देली व्याकरण से अनभिज्ञ है। अत: लोकसाहित्य के पढ़ने, समझने में रुचि कम होती जा रही है। भाषा और बोली में मूल अन्तर यह होता है कि भाषा की लिपि होती है जबकि बोली की लिपि नहीं होती है। यद्यपि प्राचीन भाषायें अपभ्रंश, प्राकृत, शौरसेनी, विन्दुमती, अवहट्ठ इत्यादि हैं। जिनका प्रतिनिधित्व हिन्दी, संस्कृत भाषाओं में मिलता है। इन दो भाषाओं से देश की कई बोलियां निसृत हुई हैं। लोकमुख में बोलते-बोलते लोकमुख की बोली हो गई। एक शब्द कई शताब्दियों की यात्रा करता हुआ रूप को प्राप्त करता है और उसके परिवर्तन पर विराम नहीं लगता है। क्षेत्रविशेष में पायी जाने वाली वस्तुओं, अन्न, जाति आदि के नामों का अलग अस्तित्व होता है। कहीं कहीं एक ही वस्तु के नाम विभिन्न बोलियों में अलग-अलग होते हैं। अब विज्ञान के युग में घरों में पुरानी वस्तुओं का उपयोग न होने से वर्तमान पीढ़ी उन वस्तुओं के नाम और उनके प्रयोग से अनभिज्ञ है। घरों में आटा मांड़ने के लिये कुपरा, फूल (मिश्रित) के बने बेला, पीतल के बने खुरआ, बिलिया नहीं दिखाई देते। खटिया की तो खटिया खड़ी हो गई। कमजोर पलंगों का बाहुल्य है। बोलचाल में यद्यपि, हालाँकि के लिए बुन्देली में घाल शब्द है। सुदृढ़ के लिये नीचट, कलिया के लिए खोर, शोर-गल्ला, मास्क-मुसीका, शौच-झाड़े, बारामदा दुगई, बाहर का कमरा-पौंर, आँगन-बखरी देशज शब्द हैं। पानी-पानू, पूडी-लुचई, सुहारी, पैर का निचला भाग-टिंघरो वीर्य-मिठोरा-तृप्त हुये अफरे, तुरन्त प्रस्थान-लइयॉ पैयाँ, समीप-ढिग, एंगर शब्द है कुछ शब्द बिगड़ कर बने है। चबूतरा से चौतरा, क्षत्र से छत, मासी-मौसी मॉ के समान, जामात से दामाद, संस्कृत शब्द श्याल से साला शब्द बने हैं। सपेती का स्थान रजाई ने ले लिया। गेंडुआ को तकिया बोला जाता है। शिक्षा जगत से पट्टी-बोरका, कलम का लोप हो चुका है। अक्षर के लिए बुन्देली में हरूफ हैं। अधिक-मुलक, अर्द्धनिद्रा-उसनीद बिना ध्यान की अवस्था-सरोधे, आहट-ऐरो, विश्वास-खातिरी, मानव-मड़ूड़, विलम्ब-अबेर। कुटेम शब्द संकर शब्द है। टाइम का अपभ्रंश टेम में कु उपसर्ग लगाया गया है जो नित्य निश्चित समय से पहुँचने के स्थान पर विलम्ब से पहुँचने पर उपयोग किया जाता है। बोलने में सुविधा होने के उद्देश्य के अक्षरों का व्यतिक्रम हो जाता है। लखनऊका नखलऊ, लकड़िया-नकरिया, जलेबी-जबेली।

बुन्देली व्याकरण में ए की मात्रा शब्दान्त में लगाने पर को का बोध होता है जैसे महोबे जा रये। इ से ही का बोध होता है। वैसइ वैसा ही खाँ ब हाँ का अर्थ भी को होता है। मोखाँ, तोखाँ, ऊहाँ, सबखों आदि बुन्देली किसी अन्य भाषा के शब्दों को उनके मूल रूप में बना ही स्वीकार करती है। जेल का जहल, फेल को फैल, बोलने का ढंग बदल जाता है। फारसी का दरख्वास्त शब्द बुन्देली में दरखास हो गया। वक्त का बखत हो गया।

बुन्देली के संरक्षण की दिशा में प्रयास तो हुए हैं, छतरपुर से प्रकाशिक त्रैमासिक पत्रिका मामुलिया में शब्द बोलते है, स्तम्भ प्रकाशित होता था। छतरपुर से ही 'अथाई की बातें' मासिक पत्रिका निकली किन्तु वर्तमान में छतरपुर से बुन्देली बसन्त, हटा से बुन्देली दरसन वार्षिक का प्रकाशन हो रहा है। बुन्देली शब्दकोशों का प्रकाशन हुआ है। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से 'डॉ. वृन्दावनलाल वर्मा' के उपन्यासों में बुन्देली शब्द म.प्र. में 'मुंशी प्रेमचन्द' के साहित्य में बुन्देली शब्द और बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय में ही 'बुन्देली और अवधी' का तुलनात्मक अध्ययन पर शोध हो रहा है। उज्जैन विश्वविद्यालय में 'बुन्देली लोक विश्वास के तत्व' पर एम.फिल, लोक काव्य आल्हा का सांस्कृतिक अध्ययन पर पी.एच.डी. विशेषांक प्रकाशित हो चुका है। आकाशवाणी छतरपुर से भी बुन्देली कहानी, वार्ता, कविता, नाटक का प्रसारण होता रहता है।

अवधी, भोजपुरी आदि के बोलने वाले अपनों के बीच अपनी बोली में ही बात करते है किन्तु बुन्देलखण्ड के लोग ऐसा कम ही करते है। यहां से दूसरे प्रान्तों जाकर श्रमिक खड़ी बोली के अभ्यस्त हो जाते हैं। बुन्देली लेखन में पुराने बुन्देली अनुवाद शब्दों की उपस्थिति कम है, ऐसा लगता है कि हिन्दी का बुन्देली, अनुवाद करने का प्रयास किया गया हो। आबाल वृद्ध मोबाईल में व्यस्त रहते हैं पहले दादा-दादी के समीप बैठ खोजते हैं। शब्दों के प्रयोग के अभाव में दिन अनुदिन बुन्देली शब्द मृत होते जा रहे हैं। पाठ्यक्रम में बुन्देली साहित्य है। विडम्बना यह है कि उस लोक साहित्य के रचनाकार जीवित है उनसे व्याख्या लिखने का आग्रह नहीं किया जाता, बल्कि अशुद्धियों की पराकाष्ठा का दिग्दर्शन कराती हुई दिग्दर्शिका पर अध्यापक व छात्र दोनों ही आश्रित हैं। परास्नातक में हिन्दी विषय का वैकल्पिक प्रश्नपत्र बुन्देली है किन्तु प्राध्यापक को बुन्देली में रुचि न होने के कारण भक्ति साहित्य के अध्ययन के लिये प्रेरित किया जाता है। विद्यालयों में बुन्देली नाटक, कविता आदि की प्रस्तुति कम ही होती है। हिन्दी कवि सम्मेलन के

नाम पर अश्लीलता, ह्रास, परिहास दिखाई देता है। बुन्देली कवि सम्मेलन का आयोजन सस्ता होने पर भी दुर्लभ है। अब तो बुन्देली और दूर चली गई क्योंकि हिन्दी ही संकट में आ चुकी है। अब घर में कोई दादा-दादी की नहीं सुनता, बच्चे को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाने के लिये उसकी माँ कृतसंकल्प है। जहाँ अंग्रेजी की दौड़ में हिन्दी बहुत पीछे रह जाती है। अंग्रेजी सम्भाषण को प्राथमिकता देने के कारण उसकी न हिन्दी शुद्ध होती है और न ही अंग्रेजी का शुद्ध लेखन होता है। संस्कार भी संकट में पड़ जाते है। राष्ट्रीय पर्वों पर अंग्रेजी में तो भाषण देना सिखाया जाता है किन्तु बुन्देली भाषण होता ही नहीं है। हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात इत्यादि में क्षेत्रीय नेता अपनी ही बोली में भाषण देते है किन्तु बुन्देलखण्ड में नेता खड़ी बोली में ही बोलते हैं। बुन्देली भाषण, वाद-विवाद, कविता पाठ आदि की प्रतियोगिता का आयोजन करके बच्चों को प्रोत्साहित करना चाहिये। जिस प्रकार झाँसी संग्रहालय में बुन्देली वीथिका है उसी प्रकार अन्य संग्रहालयों में भी बुन्देली-झलक दिखाई देनी चाहिए। बुन्देली खण्ड विकास निधि में बुन्देली के संरक्षण के लिए मद रखा जाये। वैवाहिक व अन्य आमंत्रण पत्र बुन्देली में ही हों। ओरछा की बुन्देली राज परम्परा के श्री मधुकरशाह द्वितीय अंग्रेजी के उच्च अध्येता है किन्तु वे बोलने में बुन्देली को प्राथमिकता देते हुये विशुद्ध बोलने में निष्णात हैं। वे ओरछा में बुन्देली के संरक्षण के लिये भव्य आयोजन करते है। लोकगीत गायकों से आग्रह है कि बुन्देली का स्तर बनाये रखें। घर में प्रातःकाल महिलायें गाते हुये चकिया में अनाज पीसती थीं और स्वस्थ रहती थीं। कई शताब्दियों पुराने लोकगीत इसी कारण विद्यमान हैं किन्तु अब बारह घण्टों के विवाह ने सर्वाधिक बुन्देली को ही आघात पहुँचाया है। साथ ही लोक संस्कृति भी आहत हुई है। अभी लोकलयों के संरक्षण की दिशा में लवकुशनगर (म.प्र.) के संगीतज्ञ श्री रामेश्वर दयाल चौरसिया ने लगभग एक हजार पृष्ठों की पुस्तक प्रकाशित कराई है जिसमें विलुप्त लोकगीतों की स्वरलिपियाँ भी सम्मिलित हैं। बुन्देली लोकगीतों के टेप का संग्रहालय भी होना चाहिये। बुन्देली के ह्रास की आहट आने लगी है अतः बहुत ही सजग रहने की आवश्यकता है। बुन्देली का मानकीकरण न होने से संविधान की अनुसूची में बुन्देली की प्रविष्टि न होने के कारण बुन्देली का विकास अवरूद्ध हैं। बुन्देली व्यजनों का उपयोग भी घर में होते रहने से व्यक्ति स्वस्थ रहने के साथ कम व्यय में सुस्वाद व पौष्टिक भोजन कर सकेगा।

- c/o रत्नमू ज्वेलर्स, सराफा बाजार, महोबा (उ.प्र.)
मो.- 9956959270, 7275552648 卐

बदले गाँव बुंदेलन के

-डॉ. अवधेश कुमार चन्सौलिया

बीस साल में गये गाँव जब
देख-देख हम भये हैरान।
जहाँ बुंदेला, कारस थापे
मिलौ न उनको भान।
जितै मड़ैयाँ बनी हतीं
पक्के ठुक गये उत्तै मकान।
बैला, बक्खर, गड़ला नैंया
मिलौ न गौड़ा, कहूँ मचान।
न चकिया, न मूसर बोले
तुक-तुक चक्की कौ फरमान।
मठा, महेरी गायब हो गये
मैगी खाबै बूढ़े, जवान।
कबहुँ कुँअन में भीर परत ती
हैंड पंप अब घर की शान।
फटफटिया घर-घर है ठाड़ी
कहूँ-कहूँ सोफा-दीवान।
पढ़े-लिखे मौंड़ा फिर रये ते
सिगरेटन को धुआं उड़ान
गओ हवेली के द्वारे जब
कौआ उड़ें, बोल रये श्वान।

कच्ची नाली मिली न हमको
पक्की अब तो मिली नहान।
जीन्स-पेंट, मच्छरदानी में
हमको दिख रये हते किसान,
परबतिया सरपंच मिलौ तौ
बाके बढ़िया ठाट महान।
बंदूकन के साये में रै।
बैठ बुलैरो गाये गान।
जरा-जरा से मौंड़ा खौंसें
कट्टा-चाकू बँगला पान।
कोउ-काउ की सुनतई नइयां
बापन कैंची चलै जवान।
मोबाइल पै बतियाँ कर रये
मेहमानन पे नइयाँ ध्यान।
हमें लगौ हम गलत आय गये
चलो चलें अपने स्थान।

-डी.एम. 242, दीनदयाल नगर,
ग्वालियर (म.प्र.) पिन-474005
मोबा.-9425187203 卐

बुन्देली कहानी –

दो डरैयाँ

– **शकूर मोहम्मद**

आज भौत उमस हती, आठ दिना सैं पानी नई बरसो। बारि लुका छिपी खेल रय ते। पसजीव नाय सैं माय ई रूख सैं ऊ रूख कौ ठौर ढूँड़त रयँ।

जगतराम अपनी नौकरी करकैं लौटे, घर के खौंपे सैं अपनी साइकल टिका दई और छपरी के छाँयरे में बैठ कै अपनी स्वापी सैं पसीना पौंछन लगे और चिल्लाकैं अपनी घरेनी राजदुलारी खौं टेरो, बे भीतर कछू काम काज में बीदीं तीं। उनने जो सुनी सो दौरी चली आई, अरे! अपुन कबके आ गय? गड़ई भर कैं पानी दऔ। जगतराम ने कुल्ला करो फिर दो चार घूंट लामे लामें पिये, को जाने कब के प्यासे हते। गतकौ लग गऔ, आँखें बायरैं कड़ आईं, तमारो आगऔ और उतई आड़े होत गय। पसीना देखो तौ गगरियन कड़न लगो। कुरता पजामा सब लत्थ पत्थ हो गय।

जगतराम गैर होंस हो गय, दत्ती बँद गई। राजदुलारी जौ सब देख सकपका गईं। का करें, का न करैं, राम! दोई लरका सोभाराम और लखन स्कूले गय ते मास्साब ने बुलाऔ तो। बायरैं दौरी आईं चिल्ला परीं, भइया! दौरियो, इने को जाने का हो गऔ। मौं नई बोल रय। परोसी कछू जनी मान्स दौरत आय। सन्तौफुआ इनकी परोसन हती दीवार सैं दीवार लगी ती। अपनी भैंसिया खौं साँनी बना रई तीं, राजदुलारी की टेर सुनकैं दौरी आईं।

कछू जनन ने जगतराम खौं खाट पै पारदऔ। कुरता पजामा उतार दये सब जने जिये जो मिलो हवा करन लगे, कछू बिजना सैं तो कोनऊँ अपनी स्वापी सैं। जगतराम अबे तक होस में नई आय ते। एक जने पानी की गड़ई सैं पानी मौं में डारन चाय कैं गरौ सूक कैं चिपक गऔ हुइये जो सन्तो फुआ ने देखो उनने हटक दऔ, भला गैर होसी में पानी नई पियाने आत। ई सैं कछू और मुसीवत आन ठांड़ी हुइये। हाँ, पानी के छींटा मौंपे मारो सो उनकी बात मानकैं जगतराम के मौंपे पानी के छीटा मारे उनकी आँखें चिलचिलानी,कछू होस आओ और कछू नई।

जगतराम तनक हराँ कै बोले, अरे हमें का हो गऔ। अरे सन्तो फुआ अपुन सोऊ। बे बोली कछू नई भऔ। घाम मै आय ते सो तमारो लग गऔ। कभऊँ कभऊँ येसो हो जात। ठीक भय जात। हौ, भइया बैन हौ तनक तनक दूर हो जाओ। हवा आन दो इकदम टटा न लगाओ। कन लगत कै आफत विपत कुन टेर कैं आउत। ये जो का, जगतराम फिर गैर होस हो गय, औंठ सूक गय।

सोभाराम और लखन ने सुनी, दौरत आय। खाट की दोई तरफ बैठ गय और दद्दा को पसीना पौछन लगे। सन्तो फुआ गाँव परोस में बड़ी हती। सब कोऊ उनको मान पान राखें ते। हर कोऊ कै सुख दुख में निसदिन ठाँड़ी रत ती। कोनऊँ ने नावते गुनिया की बात कई, सो ललकार दऔ। बे बोली, राजदुलारी! हम अपुन सब सैं बिनती करैं कैं अब झेल न करो, ना होय तो जगतराम भइये खौं अस्पताले ले चलो।

सन्तो फुआ ने राजदुलारी सैं हराँ सै कई, कै तुम पइसा धेला की चिन्ता न करो। भगवान चायें तो सब ठीक हुइये। सन्तो फुआ दौरी अपने घरे गई और पइसा टका ले आकें मस्काँ सैं सोभाराम के हाँत पैं धर दय। सोभाराम ने जो देखो सो सकपका गऔ कै भगवान! आज जो दद्दा खौं का हो गऔ। सन्तो फुआ ने दोई लरकन के मूँड़ पै हाँत धरो और कई कै बेटा हो तुमें अबे कोनऊँ चिन्ता नई करनें, न होय तो हम अपने दियाली खौं संगे पठे रय, अबे बो आन गाँव सैं लौटो नइयाँ जैसई लौटत हम ऊखौं पौंचात तुम फिकर न करो।

ईके लाने तो जो गाँव भौत नौनो हतो कोऊ काऊ खौं तनक दुख पिरातौ होवे तो पूरो गाँव बिना रागबैर कै कामै आउत रयं। कछू जनन ने सला दई कै अस्पताल की गाड़ी बुलालो तो काऊ ने कई कै ऊ गाड़ी खौं भौत झेल हो जेय का ठिकानों सरकारी रंज गंज आय अबै की खबर पठाऔ कऔ तो कुकरा बोलें आबे। सो ई सैं साजों है के अपुनौ साधन सबसै नौंनो।

देखतई देखत टेक्टर सज गऔ और खटिया पै पार कैं जगतराम खौं बड़ी अस्पताले ले चले। अनहोनी की संका बनी ती सो कोऊ बेर बेर नबज देखे तो कोऊ कान लगा कैं उनका स्वाँसा।

संजा सै लैकैं ब्यारी की बेरा हो गई ती। अस्पताल में को जाने आज भौत भीड़ हती। इते कोऊ खौं काऊ की का परी ती अपनी दौड़ धूप मै बिदे ते। जगतराम खौं स्टेचर पै पारकैं भीतर ले चले। पैला कई कै परचा बनने। परचा बनावे बारे ने सत्रा सवाल पूंछे, आधार कारड जो कारड तो वो कारड तब कऊ जाकैं परचा बनो।

रात बारे डाक्टर साव अपने कमरा मै बैठे एक सिस्टर सै बतया रय और गप्प सड़ाका मै बीद ते। सोभाराम और दियाली ने केऊ बेराँ टेरो उते का न हूँ और न हाँ, उनके कान तक गरीवन की आवाज नई पौंच पाई। सोभाराम चिल्लापरो डाक्टर साब – --------! अब डाक्टर साब खौं कछू होस सो आओ। हाँ----हाँ, बोलो क्या बात है? दियाली ने कई हजुर हमाय कक्का की तबियत भौत खराब है, मौ नई बोलत और आप है कै-----------?अरे भाई, यह सब तो है पर चिल्लाकर क्यों बात करते हो ? यह अस्पताल है, कोई मण्डी बाजार थोड़ी है। आफत विपत के मारे लरका दुख पिराते की पूछंबों तो दूर, डाक्टर साव ने हड़कारत भय ज्ञान की बातें कै डारी परवारी। चलो भाई चलता हूँ। इन दोई जनन खौं कछू आसा बँदी। जिते लगे भाग उतई लगे आग। सिस्टर ने छींको, जी सनाको खा गऔ। ठैन हो गई, अब न जाने आगे का होने, सोभाराम ने मनई मन भगवान खौं सुमरो, हे भगवान अब तुमई हो। अब होत का है कै कोनऊँ टाई फाई बाँदे करिया बड़ो बैग लय गली में डाक्टर साव सैं वतयान लगो। सोभाराम और दियाली को जी फरफराबे, पै का करै। अपने बस में तो कछू नइयाँ। एक एक छिन कस्टन को कट रऔ तो। गरीब को कोउ नई होत। लोग कन लगत कै डाक्टर

भगवान को रूप होत, पै सब कैनातैं बेकार।

इतै तो बोई है कै लोय की फैंक तमासो देख। जियों अपने भाग सैं और मरो अपने भाग सैं। टका में टका और ढका में ढका अबे कछू कौर कसर बाकी रै गई ती सो तनक डग आगे चले कै डाक्टर साब की जान पैचान के एक नेताजी मिल गय, उनके पाँव में खरौंच लग गई ती, डाक्टर साव उने नेवरे होकै उनके पाँव की देख परख करन लगे। जीके पाँव न फटी बिमाई बो का जाने पीर पराई।

येई टेरा टारी में भौत देर हो गई ती, अब डाक्टर साव की बेमन सै अबाई भई। जगतराम खौं स्टेचर से उठा कैं दालान में डरी निखन्नी टेबुल पै पार दऔतो, पास मै ठॉड़े कम्पोटर ने डाक्टर साव के कान में कछू कई। डाक्टर साव ने झट सैं अपने कानन में आला लगाओ, आँखें फारकें देखीं, नारी टटोली। डाक्टर साव ने अपने दोई हाँतन सैं जगतराम की जोर जोर सैं छाती दबाई। डाक्टर साहब ने अपनी जेब मैं सैं रूमाल काड़ो और अपने माथे को पसीना पौछंन लगे जैसैं खन्ती डारकें सुस्ताबै ठाँड़े भय होवें फिर सोभाराम और दियाली सैं बोले, अभी तक क्या करते रहे, हमें पहले नहीं बुला सकते थे ? अब कुछ नहीं हो सकता, कम्पाउण्टर सैं अपना सार्टीफिकेट बनवा ले और शीघ्र अपने घर ले जाओ। सोभाराम बिलखकैं रोन लगो, डाक्टर साव ! अबे तो दद्दा की स्वाँसा चल रई ती। डाक्टर साव चले गय ते। अब का अस्पताल की खाना पूरी भई फिर सब जने जगतराम की लास खौ टेक्टर पै धर कैं गाँव खों चल दय।

गाँव असपेर में जा खबर आग की नाई फैल गई। रात कै गाँव समाज ने उनको क्रिया करम करो, बाकी रात रोत डीपत कड़ी।

भुन्सरा भऔ जगतराम कोआपरेटिब बैंक में चपरासी हते, नौकरी मै रत भय जा घटना घट गई सो उनके हाकम अपसर समजाबे बुजावे पधारे, हाँ जो पइसा टका की मदद होत की आय करबे की कई। राजदुलारी दुखयारी हतीं, ई मौका पै कीसै का कै पायें सो सन्तोफुआ दोई हाँत जोर कै ठाँड़ी हो गई और कई कै हजूर! अब जो घर तो जगतराम भइया के जाबे सैं मिट गऔ, इनके पास न खेती किसानी न कोनऊँ काम धन्धौ, अब अपुन बताओ इनको ढबालो कैसै चले, अपुन मदद करो और न होय तो सोभाराम खौं इनकी जगाँ पै रख लऔ जाय, दसबीं जमात आसौं ईने पास कर लई। अपुन की बड़ी किरपा हुइये।

हाकम भौत भले आदमी हते, बोले आप लोग चिन्ता न करें जगतराम की जगह पर शोभाराम को रखने की कोशिश करेंगे। दो चार मइना कड़े हुइयैं जगतराम की जगा पै उनके बड़े लरका सोभाराम खौं नौकरी मिल गई। अंदयारे घर में उजयारो सौ फैल गऔ। हराँ हराँ परवार को ढवालो चलन लगो और फिर सै चैन की बन्सी बजन लगी।

एक दिना झुलीपरैं राजदुलारी की नाते की मौसेरी बेन खबर दबर लेबे होबे आई। ठंडे हतीं, गुर्सी में आगी परचाई, सब जने ताप रयते कै इतैक में सन्ताफुआ अपने नाती खौं कइयाँ लैकें आ गईं और राजदुलारी की बैन सैं बतकाव करन लगीं।

सन्तोफुआ ने राजदुलारी की बैन सैं दै कई कै तुम औरैं न जाने का कर रईं। सोभाराम के लाने कौनऊ नौनी सी विटिया देखो, काय ऊखौं यैसई बैठारै रैओ।

अब देखो तो नौने सैं पक्कन मैं नौकर हो गऔ, बऊ बिटिया घर मै आ जेय तो राजा के राम करैं, और राजदुलारी चकिया चूले सैं बचैं जो दोई दोई बेरा चूले में मूँड दयें रती, उनकी जा अवस्था। उनने देखों कै राजदुलारी ने अपने छोर सैं मसकाँ सैं अंसुआ पौछ लय और कई कछू नई। धुआँ सैं उनै खाँसी उठत और स्वाँस चलन लगत वा न्यारी सो बैन तुमाई आँखन मै कोनऊ मौड़ी होय तो -----------।

अरे कैसी बातैं करतीं सन्तोफुआ अरे तुमई तो हो जो सुख दुख में मदद के लानें ठाँड़ी रतीं, घर के का मदद करैं जो इनके हरेक काम मै ठाँड़ी रतीं। अपुन जैसो तो हमने आज लो देस दुनिया में काऊ खौं नई देखो, आज के समइया में दिया लैकें ढूँड़ो तो नई मिलत। हम औरैं तो फुआ अपुन की भौत बड़बाई करत रत।

फुआ अपुन ने कई सो ठीक है हमाई नजर में एक नई दो बिटियाँ हैं, दोई भबूकरा सीं है, घर अच्छौ है। उने दोई बिटियन को वियाव करने और संगे निपटाने। राजदुलारी जो सब बतकाऔ सुन रई तीं, गुर्सी की आगी उसकीरत भय हराँ सैं कई कै लखन तो अबै---------।

बैन तुम कौन की बात कै रईं ? अरे जिज्जी बेई, हमाई जिठानी के भइया, वे पैंलां दो एक बेर इते हो गय। बे नौकरी चाकरी करत, भगवान चायें तो बियाओ सोऊ नौनो हुइये। हमाऔ तो बक नई फट रऔ तो, बैसैं बिटियाँ हमाई देखी है, भौत नौनी हैं।

राजदुलारी ने फिर कई कै का बे दोई बियाऔ इकट्टे कर लेंय। अरे जिज्जी तुम कैसी बातें करतीं, बा हम पै छोड़ दो। हम सब समार लैंय। हम भियाने जा रय, हाँ, मराज के लिंगा मिलाई जुराई भर हो जावे फिर तुम सब भगवान पै छोड़ दो। राजदुलारी मनई मन भौत खुसी हो रई ती, अब हमाय इते दो बउयैं आय और बैठे बैठे सपनों देखन लगी।

भुंसरा भऔ गीता बैन भैट भलाई करकैं अपने घरै चली गई और दूसरे दिना दुपरै दो तीन फटफटियाँ जी पै दो दो जनें असवार हो कै भड़भड़ात आ गय। राजदुलारी घर में उसार पात कर रई ती, लखन इन्ट्रावल में रोटी खाबें आओ तो। सो उनने देखो कै पाँच छः जने नीम के छाँयरे में ठाड़े। राजदुलारी ने लखन सैं मस्का सैं कई कै पूछ तो काँ के आयें। उनने गीता की बात बताई,राजदुलारी फौरन समज गईं। पौर कै किवार खौल दय, खाट पै सब जनैं आन बिराजे। लखन ने चाय पानी की कराई।

एक जने उनमै सैं बोले कै, काल इतै सै गीता गई तीं सो जाकैं उनने हमें सबरी बातैं बताईं, सो जीके लाने हम औरैं आय। एक तो लरका जोई और दूसरो--------। लखन बीच मै बोल परो कै, बड़े भइया ! बे तो अबे नौकरी पै गय, संजा के आ पात। ठीक है ठीक, हमाओ नाम रामकिसन है और हमई बिटियन के पिता आँय। बड़े लरका खौं देखने तो। सामू जड़ी जड़ाई फोटू धरी ती लखन ने कई कै बड़े भइया की आय। उन सबने कई कै लरका तो ठीक है, अब अपुन खौं का देखने। लरका नौकर चाकर है घर दौर अपुन ने देखई लऔ। हमाई तो राय है कै अपुन तौ श्री गनेस करो। पै कछू बातचीत हो जाती।

राजदुलारी ने लखन खौं इसारो करो कै, कक्का खौं टेर लेओ और फुआ खौं बुलात लियाइये।

सन्तोफुआ संकोचन नई आई कै हम ठैरे औरत जनी जौ तो मुंसेलुअन को काम आय। हम का बतकाऔ करें सो दियाली खौ संगे पौंचादऔ और कई कै देखो बेटा कछू और बात होवे तो हमें इसारो करियो।

अबका बिटिया बारन ने खूब लामी लामी हाँकी, बातन कौ ठौर नई जिते हाँती सरीसे बिला जायें। कक्का ने कई कै जे बाते तौ भौत भई अब सुबीदे और ठौर ठिकाने की बातें हो जातीं तो-------।

रामकिसन ने कई कै हाँ बो तो हम चाउत है, अपुन औरन की अगर लेबे देबे की मन्सा होय तो हमें बताओ, हमाओ तो खुलो चिट्ठा है। हमाय इते कुन लरका बैठे, जो कि है सो सब बिटियन को आय।

कक्का तनक हाँत मलत भय बोले बो तो सब ठीक आय। आज कजन की दार आज हमाय बड़े भइया होते तो हमै कछू नई कने ती। गीता ने तो सब बताई हुइये, हमें का हमें तो बिटियाँ भर देखने, अपुन ठैरे बिटिया बारे सो लरका घर दौर सब कछू देखो। रामकिसन बोले बो हमें कछू नई देखने, हमाओ तो सोराना मन भर गऔ सो हमें तो जो रिस्तो पक्को करने।

दियाली ने कक्का सैं कई कै, कक्का ! बिटियन खौं तो देखो नइयाँ। रामकिसन ने जा सुनी सो जेब में सैं दो फोटू काड़ी और कक्का का के हाँत पै धर दईं। जा बड़ी और जा छोटी आय। दोई जनन ने देखी उने फोटू में बिटियाँ नोनी लगी। कक्का ने लखन खौ दोई फोटू दई कै, भौजाई खौ दिखा आओ बेटा।

लखन ने देखीं और राजदुलारी खौं दिखाईं। राजदुलारी खौं फोटू मै बिटियाँ जँच गई और लखन खौं मसकाँ सैं सन्तोफुआ खौं दिखावे पठे दऔ। बे तो येरौ लय बाट देखै बैठी तीं और न कई न सुनी और लखन के संगे चली आईं। बड़ी हो गई पै अदब कायदो सीखने होबे तो इनसैं सीखो। लठिया टेकत सीधी राजदुलारी कैं पौंची और कई कै, भौजी ! हम तो ठैरे अपड़ा पै अपुन औरन के संगे जा उमर हो गई। गीता ने तो सब बताओ तो रई बिटियन की बात तो हमें तो नौनी लगी फिर तुमें जैसो लगो होबे, हमाई पूंछो तो हाँ है। राजदुलारी ने खुसी के मारे सन्तोफुआ खौं गरे सैं लगा लओ और लखन सै कई कै कक्का सैं कै दो कै सब अच्छौ है, बात पक्की कर लो।

रामकिसन बोले कै तौ ठीक है, भगवान की जो इच्छा होय बोई हुइये, पै एक बात बताओ चा रय ते कै, हमाई बिटियाँ भौत लाड़ प्यार की पली पुसी हैं। उनने जो माँगो सो हमने ऊकीपूरती करी। मन को खाबो और मन को पैरबो, भौत छोछायली हैं।

कक्का ने कई कै इते उनकी हिसदारी के लाने और को बैठो। बे तो हँसी खुसी दोई बैने रानी बनकैं रयें। हाँ भौजाई की उतरी अवस्था इनकी भर सेवा अटर और पेट के लाने दो राटी मिलत रयें, हमाई तो जेई अभिलाखा है।

रामकिसन तो पूरी तैयारी सैं आयते झट सैं थैला मैं सैं मिठाई के दो डिब्बा काड़े और उनके संगे ग्यारा ग्यारा सौ रूपइया धरकैं कक्का के हाँत पै धरे और कई कै, लो समदी ! हमाई तरप सैं बात पक्की और हम तो लरका छैंक चले। फिर रामकिसन ने खाबो पीवो तो छोड़ पानी तक नई पियो और अपने घरे चले गय।

बियाव सुदवाऔ, भौत नीरो कड़ो पन्द्रा दिना को टेम मिलो और दोई तरप की वियाऔ की तैयारी होन लगी। काम काज और नेवते हकारे के लाने राजदुलारी ने कऊँ लखन खौ तो कऊँ काँ दियाली खौं पौंचाओ।

आज बो समइया आ गऔ खू ब धूम धड़ाके सैं बरात चड़ी और अच्छौ टीका पटा और अच्छौ चड़ाओ चड़ो, खूब फुलवार लुटी और दूसरे दिना दो पालकी मै सजी धजी दो रैन कैसी पुतइयाँ राजदुलारी के घरै आ गई, उनकी खुसी कौ कौनऊँ ठिकानौ नईं हतो।

राजदुलारी भौत खुसी हतीं उनके मन की बउयें आ गई तीं। हराँ हराँ दिन मइना कड़न लगे। बउयें केऊ बेरा मायके की आई गई हो गईं। घर मै सब हिल मिल गय। दोई देवरानी जिठानी कैलो चाय बैंने एक जगाँ, एक घर मैं रत रत उकता सी गई। काम काज में इस्कारो होन लगो और बड़ी बैन खौं जा बात भौत सालन लगी कै उनकौ आदमी कमउवा और लखन सरतारो जीसै दो धैला को कौनऊँ आसरौ नई। सो अपने आदमी के कान भरन लगी, अरई सी गुच्चन लगी।

अपने येरें घर में काम काज की ओसरी बँद गई। राजदुलारी की पारखी नजर मनई मन जो सब देख कैं सकपका गईं ती। घर में आफत विपत के आवे की घण्टी सुनाई देन लगी। रई सई कसर बा पूरी हो गई दोई लरका जोरू के गुलाम हो गय ते। अब की सैं कयै और कीसै नई कबैं। येई सोस फिकर मै सूक ठठेरो हो गई।

गिनी गुथी रोटी कभऊँ दार, कभऊँ चटनी संगे थारी ई बेरा जा बऊ तो बा वेराँ बा बऊ पटक कैं चली जाय। इनके प्रान मौ खौ आ गय। अब कयें तो की सै कयें, अपनी जाँग उगारो अपनई लाजन मरौं। इनने ढांकबे की भौत करी पै इनके सबई जतन बेकार। एक दिना सोभाराम सैं कई सो बो लाल पीरी आँखें काड़बे, जेई किसा लखन के संगे भई। अपनौ पइसा खौटो फिर परखैये का दोस देबें।

अब तो राजदुलारी खौं बियाई के लाने टक टकी लगाये रने परत पै उतै का बियाई के नाव पै कुतका। ई पापी पेट के लाने बेसरमाई सैं उठी, देखो दोऊ घरन के बजड़ किवार लगे। मनमसोस कैं चौका मै पौंची, देखें कऊँ कोने आँतरे में चौखरन सैं बचे रऔ होय तो रूखो सूखो टुकड़ा मिल जावे। ऊखौ भड़याई की नाईं कुतर कुतर कैं खा पीकें पानी पी कैं कुन्दा के बल जा परैं। जो हाल निसदिन को हो गऔ।

राजदुलारी ने एक दिना बड़ी बऊ सैं कन चाई फिर हल्की सैं, उनने ई कान हो सुनी ऊ कान हो कैं उड़ा दई। पानी मूंड़ सैं ऊपर होत दिखानो सो नामाधराई के डर सैं भौत सौसी कै घर की बात आय, ऊमर फोरो न पखा उड़ाओ। हँसी के करैया तो भौत ठाँड़े।

मन मारकैं संजा कैं सोभाराम और लखन खौं बुलाओ, बेटा ! और रोन लगीं। आखिर ई दुखयारी खौं ई अवस्था मै येसो काय कर रय और तुम औरें देख सुनरय दद्दा की आत्मा का कत हुइये, अरे तुमाय सिवा देस दुनिया में हमाओ को बैठो।

उने का मालूम कै दोऊ बउयैं कोरे सैं लगीं कान दैकें सुन रई ती कै कैसे धैरे चुगली हो रई उनने आव देखो और न ताव और भन भनाती आई, काय बुड़ो ! तुमाओ चेटका कूका दे रओ, तुम जो है हमाय आदमी खौं भरमारई, चाउती का हो ? हम तुमाय संगे का नई करत। चलो ! और दोऊ बउअन ने अपने अपने आदमियन के हाँत पकरे और छिररिया जैसौ कान पकर कें जैसी आइतीं बैसई चली गई।

राजदुलारी चार चार अंसुअन कथरी मैं मौं दैकै भूँकी प्यासी भौत देर तक रोत रई उनकी पीट पैं हाँत धरबे बारो कोऊ न हतो। रोत रोत अंसुआ सूक गय और पति जगतराम खौं सुमर कें रोबै कै अब तुमई हमाई सुनियो हमें अपने लिंगा बुला लो, अब जा जिन्दगी नईं जी जात। पूरी रात परीं परीं घर की कुरइयाँ गिनत रईं। उने लगो के उनके पति की आत्मा आई होवे, उनके पीट पै हाँत धरो कि साता सी परी। मुरगा बोले, ना चाउत भय इनकी आँखें मिच गईं।

ईसुर की के संगे का करन चाउत, बो काउखौं पतो नइयाँ। भगवान ने कितनी जिन्दगी बचा रखी ती, बो तो भगवान जानत। हमें तुमें तो छिन भर को पतो नइयाँ।

भुसराँ उठी पैलाँ तो मन मै आई कै कोनऊ कुआ बेर में सरक जायँ दूसरे मन ने कई के जो तो पाप आय, पँरिरयन खौं टाँको लग जेय जी सै तिरन तारन न हुइये। भगवान अब हम का करें न तो जी पा रय और न मर पा रय। कछू गली नई सुजा रई ती फिर भीतर बारे मै काँसै हिम्मत आ गई कै लठिया टेकत, पाँव कड़ोरत सन्तोफुओ के घर खौं चल दई।

सन्तोफुआ अपने आंगन मै मठा भाँ रई ती। कौनऊँ के आबे को यैरो ले कें ठैर गईं उनके दोरे मै राजदुलारी ठाँड़ी ती, सब छोड़ छाड़ कै उनै सहारो दैकै भीतर लै आई। उनकी आँखै भीतर खौं घुस गई, ओंठ सूक गय बे कउआ बिड़ारन सी लग रई ती। इनको जो हाल देख, सन्तोफुआ घबरा गई बे दियाली खौं चिल्ला परीं। दियाली ने सुनी दौरो आओ, अरे काकी खौं का हो गऔ। झुलयाकें उने खाट पै पारो। पेट पीट दोई एक हो रय ते, यैसें लगत तो कें इनने सालन सैं खाओ पिओ न होवे। सन्तोफुआ ने सोसी कै, कओ तो इने का हो गऔ। राजदुलारी हमाय सामने बियाई आईं। जगतराम भइया खौं अपने आँगन मै खेलत कूदत देखो।

राजदुलारी खौं पूरो होस आ गऔ, उनै खाट पै सैं उठबे की ता था नईं हती। सन्तोफुआ और दियाली ने सहारो दे कैं बैठाओ। उनके मौं सें बरया बटके आवाज कड़ रई ती। फुओ मै काऊ खौं अपनी नईं सुनाऔ चाउत ती पै अब हमाय बसकी नइयाँ। हम सैं कऔ तो गाँव असपेर मै कटोरा लै कैं भीक माँग खैं, फिर सोसी के इन नासमिटन की नामाधराई हुइये। फुआ जब सै इनके दद्दा ने आँखें मीची, मै तो इन दोइ बेटन खौं देखकै सब दुख भूल गई ती। सोसी ती कै भगवान ने घर में दो डरैयाँ दई ती इनई के छाँयरे में बची जिंदगी कड़ जेय, भौत रोईं।

फुआ ने कई कै, अबै हम कुन मर गय। अब तक हमै काय नई बताई, उन ठटरी के बदन खौं हम देखत। दियाली सैं कई कै, बेटा ! कौ जाने काकी कब की भूकीं है। जल्दी जा मठा लैआ और रोटी सिक गई हुइये, दो रोटी उठा ले भग। दियाली जल्दी सैं मठा रोटी ले आओ, मठा मै तनक नोन डार कैं रोटी बुड़ो कैं दई। राजदुलारी ने पैंला तो कई कै हमें भूँक नइयाँ, फुआ ने अपनौ कौल धराऔ। उनने फुआ के मौं ताँईं देखो फिर रोटी खा लई। फुआ की आँखन सैं अंसुआ टपकन लगे।

भीतर गई दो, ताकत आई सो। फुआ अब हम का करैं हमाई साँस फूलत, आँखन, कानन सै कम दिखात सुनात परवारो। अब में अपुन सै का बिनतीं करौं, खावे पीबे दवाई के लाने औसरी बंद गई। बो कत कै बो ले आय बो कत कै बो ले आय। संजा सवेरे रोज रोज की किलकिल। मइनन सैं तो वउअन ने मौ सैं बात नईं करी, अनबोलना साद लऔ। काय फुआ येई दिना के लाने जे दो दो बउयें ले आय ते, नौने सपने देखे ते पै ई बुड़ापे मै जे दिन देखबे बदे ते।

ठैरो मैं देखत, फुआ ने कई। दियाली ने टोका लगाओ, आँहा ओरी ! देस काल है खराब। सोभाराम ठैरे नौकर चाकर और अपनौ देरी दुआर को रैबो। हमसैं ऊसई बेरादारो मान बैठे। राजदुलारी ने कई कै, काय बेटा। तुम का हमाय लाने गैर आओ? काय जा तुमाई काकी येसई बिलख बिलख कैं मर जाबे। कछू तो ईमान धरम को लिहाज करो।

सन्तोफुआ ने कई कै रैन दो हमें कुन उनसे मूसर बल्दवाने। हमें कौनऊँ के डर नई परे। न हम काऊ के लैबे मै न देबे मै। फुआ ईमान धरम की ओर सैं कत आई और कत रैय। एक दिना मरने सबखौं है। हमें तो लगत कै हाँत सैं चंग डोर कट गई। अब न होय तो संजा कैं चार जने जोरो और अपनी सुनाओ, अबे नयाय और भगवान है। हमें सुनक लेबै जीये सुनकने होवे। दियाली ने फिर टोका लगाओ, ओरी ! लरका तैं मौंग जा।

सन्तोफुआ ने कई कै, अबई चलै कै ऊ बेराँ। राजदुलारी ने कछू नई कई और अपने घर खौं चल दई। फुआ ने सोसी कै गली मै डुकइया उपटा लै कैं न गिर परै सो उनके संगे चल दई।

जैसई इन दोई जनन ने बखरी मै पाँव धरो कै आँगन में गड़ई के फिकवे को यैरौ मिलो, भीतर जा कैं फुआ ने जो देखो उनके पावन तरे की धरती सरक गई और इतनौ नई दोई बउयें एक दूसरे की चुटइयाँ पकरें गुथ्थम गुथ्थाँ हो रईं। बे उये राँड़ बना रई बे उये। ठेर जाओ री जो का मचो, फुआ दलाँकी। तुमें लाज सरम है कें नई। तुमने तो ई घर खौं रन भाटौ कर दऔ।

हल्की बऊ फुआ पै बदलपरी, खबरदार फुआ ! जो तुम हमाय बीच में बोली। साँसी कयें तो तुमई लुगइया लगायें, नाय माय सैं आकें कान भरती। अपनौ घर तौ सुदार लो। लखत्तर सुनाई, जो मन में आई कई। को जाने कब की भरी बैठी ती। फुआ, बऊ को मौ देखत रै गई।

उनने गाँव मै भौत बउयें बिटियाँ देखी तीं, पै येसी डडचार पैली बेर देखी। बड़े बड़ेई होत, फुआ ने सोसी के लोहा तातो है तनक सिराजान दो। फिर फुआ ने कई कै काय बेटा, तुम तो हमई पै गुस्सा हो गई, हम कुन कोऊ के बीच में परत। भगवान ने तो हमें खूब दऔ और हमें तुमाई गिरस्ती नई बाँटने। मैने आजलों अपनौं घर और तुमाऔ घर जुदो नई मानो।

राजदुलारी सैं फुआ ने कई कै अब हमाई समज में आ गई, बा तुमाई अब कुन येसैं सटने संजा कें पंचायत बैठार लो। चार जने न्याय करैं, अब हम जादाँ का कयें। फुआ को मन गिर गऔ और

अपने घर ताईं चल दईं, देखती का हैं कै पाछें सैं राजदुलारी चली आरई। फुआ ने कई कै तुम धीरज धरौ सब नौनो हुइये, भगवान के इते देर है पै अंधेर नइयाँ। राजदुलारी रोन लगी कै हमाये पाछे तुमें सुनने परी। फुआ ने हिम्मत बंदाई, तुमाई बातें। जे तो घर घर के मटया चूले आयें, जो सबके इते मचो कोई अपनी कै लेत और कौनऊँ अपनी जबरदस्ती सै ढाँके रत। तुमें सोस फिकर नई करने।

फुआ और राजदुलारी टिरकत भईं घर घर गईं और जिते जैसी बनी सो अपनी बिनती करी और जा तै भई कै संजा कैं ब्याई की बेराँ अथाई पै पंचायत को जुरासन होने।

बियाई की बेराँ, अथाई पै सतपोन की पंचायत जुरन लगी। राजदुलारी और फुआ पैलाँ सैं आकै अपनी जगाँ बैठ गईं। गाँव के माते, मुखिया, सरपंच और जनवा पंच सब जनन की अबाई हो गई, सब जने बिराज गय।

सरपंच ने कई कै, अब कारवाई होन दो जी के लाने अपुन सब जने जुरे। राजदुलारी लठिया को सहारो लै कैं ठाँड़ी होन चाईं, उनमें ठाँड़े होबे की ताकत नईं हती, सो सन्तोफुआ हाँत जोर कैं ठाँड़ी भईं और कई कै पंचराजा हो अपुन खौं इतराज न होबै तो राजदुलारी की तरप सैं हम कबैं। उनमें इतनी ताथा नइयाँ कै बे ठाँड़ी होकैं अपनी बात कै पावें।

मुखिया बोले, अरे फुआ कैसी बातैं कर रईं, अपुनई तो गाँव में जेठी, स्यानी समजदार हो और काऊ की लत्ता लपेड़ी न कैकें न्याय की कतीं, सो अपुन पूरी बात बताओ। फुआ ने पंचन खौं राजदुलारी की पूरी किसा सुना दई, पंचन ने सुनी और गुनी। मुखिया ने कई कै बुलाओ सोभाराम और लखन खौ, दिखा नईं रय। बे काय नई आय, का उने पतो नई तो। एक जने ने कई कै हऔ जू उने सब पतो है, मौं दुकायें घरैं बैठे हुइयें।

तो, दो जनें सियाने से उने घर सैं लुआवे पौचाओ, बे काय नईं आय?

सोभाराम के इते दो जने पौंचे, उते किल किल हो रई ती। सोभाराम की दुलइया ने तो कौल धरादऔ कै तुमें पंचायत नईं जाने, तुम हमाऔ मरो मौ देखो। तुम नईं मानें तो हम बड़ेरे सैं टंग कैं अपने टका से पिरान दे दैं। तुम हमें चाउत हो और हमाओ जियत मौं देखन चाउत तो इने कऊँ आसरम, धरमसाला, दिवाले में पठे दो, नातर-------?

इतने में पंचन ने साँकर बजाई, जे सब जने सकपका गय। उनने कई कै सोभाराम और लखन खौं सब पंचन ने बुलाओ है, सो संगे चलो।

सोभाराम गुरभरो हँसिया होकैं रै गऔ, इतै गिरौ तो खाई उतै गिरो तो कुआँ। ऊकी अक्कल काम नईं कर रई ती, इतनी भर कई कै जब पंचायत में बुलाओ तो जाने तो परै। सो अपनी दुलइया सैं इतनी भर कई कै जब तक मैं लौट कैं न आओं तुम साता पकरैं रइयों, तुमें हमाओ कौल है। अब तुमाय बिना हमाओ को है।

अथाई पै जैसई सोभाराम और लखन पौंचे, सब चुपचाप हो गय। सब अपनी अपनी सांस साद कैं बैठ गय। मुखिया ने सोभाराम और लखन खौं अपनौपन दिखात भय अपने पास बैठारो, आओ बेटा, बैठो। दोई जने कौनऊँ अपराधी की नाईं सकोचन बैठ गय।

मुखिया बोले, बेटा हो! हम सबने तुमै ईके लाने बुलाओ कै तुमाई मताई ने जा पंचायत जोरी और आप बीती सुनाई। बे सब सुनकैं हमाओ तो माथो सरम सैं झुक गऔ तुमें फरक परो होय चाय नईं।

सुनो बेटा! आज तुमाई मताई अपने जुवान जवान लरकन के होत भय, रोत फिर रई। जो सोभा नई देत। काय येई के लाने कस्टन में नौ मइना पेट में राखो, जनम दऔ, पालो पोसो भूँकी रै कै तुमाय पेट भरे, खुद तींता मै परीं और तुमे सूके मै पारो। औलाद के सुखन के लाने अपने सब सुख तज दये और सात मड़िया पूजत रईं कै हमाई संसत हमाय बुड़ापे की अन्द नकरिया बने। वियाओ तो सबके होत पै जो तो नईं कै मात पिता को धरम भूल जाओ। बाप मताई औलाद के लाने सरग नसैनी होत। तुमाओ कैसैं तिरन तारन हुइये। जगतराम तुमाय लाने का नईं कर गय, बताऔ। मताई बाप सैं सात जनम नौ ऊरन नईं हो सकत। अबई चैत जाओ फिर समइया हाँत सैं निकरजात बो फिर पकराई नईं देत। हाँ तुमै कौनऊँ पइसा टका, कौनऊँ परेसानी होबे बा तुमै हम सब खौं बताओ चाइये।

दोई भइया डिड़या कै रोन लगे और बिना झेल करैं हाँत जोर कैं ठाँड़े हो गय और अपनी मताई के पावन मै जा डरे, जो सब देख सुनकैं सबई जनी मान्सन की आँखें भर आईं ती। दोई भइया पंचन के सामूँ हाँत जोर कै ठाँड़े हो गय। अपनी गल्ती मान लेबौ ईसैं बड़ो पछताबो कछू नईं होत।

मताई की ममता जो ठैरी दोऊ बेटन खौं छाती सैं लगा लऔ और फूट फूट कैं रोन लगीं।

सन्तोफुआ ने हिम्मत करकैं इतनी भर कई कै पंचराजा हो जो तो सब नौनो भओ पै वउयें तो पराये घर की आँय, सब कछू तो उतई विगरौ, बैल तौ उतई बैठो। काय सैं हम उनके परोसी आँय सो हम इनके हँडिया नौन तक की जानत। तनक उने ओर समजा बुजा दऔ जातो तो सब नौनो होतो।

सब पंच बोले, हाँ जा तो साँसी आय। पै बऊअन खौ तो इतै बुलाओ नई जा सकत। जा तो गाँव और पंचन की मरजादा की बात आय।

सन्तोफुआ ने कई कै एतराजी माफकरी जाय तो जा पंचायत उने समजाबे उनके घरे तो जा सकत। जा सुनकै सब पंच एक दूसरे को मौं देखन लगे फिर तनक झेल मै जा तय भई कै माते, सरपंच और मुखिया तो होतई के आँय और ठाय पंच और सन्तोफुआ जे सब राजदुलारी के घरे चलबे।

बऊअन ने पंचन खौं अपने दुआरे ठाँड़ो देखो उनकी सिट्टी बिट्टी बिला गई और घर की छानी के नैंचें ठाँड़ी हो कै रै गईं, उनने जा सपने मै नई सोसी ती कै चार जने हमाय द्वारैं आ ठाँड़े हुइयें।

मुखिया ने कई कै फुआ तुम स्यानी और बड़ी जेठी हो सो अपुन इन बऊअन खौं समजाओ जो हम सब पंचन को फैसला है।

फुआ ने कई कै देखो बेटा हो! आज जे पंच तुमाय दोरै आय और पंचन मै भगवान होत, सो जा मानो कै तुमाय दोरैं भगवान आय है। इन सब की बात मानवो तुमाओ धरम आय।

पंचन ने मौ अपड़ा खौं आँगे करो सो हमै काऊ की

लत्ता लपेड़ी नई कने। नातर हमाय कुरा की नास हुइये। हमै सोऊ भगवान ने आस औलाद दई।

हमाओ तो जो कैबो है कै सोभाराम और लखन ने चार जनन की बात मानी और कुन्नस मनाई और तीनई मताई बेटा मन सैं हिलमिल गय।

रई तुमाई बात एक बाप मताई मायके मै छोड़ कै आती तो दूजे सास ससुर के रूप मै बऊयें बिटियाँ पाती है, मानो तो भगवान नातर पथरा है। घर में चार बासन आपस मै टकरात सो येरो होत। हम तुमाय परोसी नईं घर के जादा आँय। हमने अपने लरका और इन लरकन मै कौनऊँ फरक नई मानो। तुमाई दई की चपिया चौराये पै फूटी सो हमने जानी और जग ने मानी। अरे हम कुन मर गय ते, अपने सुखदुख की हमसैं तो कतीं।

मताई जैसो वर विरछा देस दुनिया मै कौनऊँ दूसरो नई होत और जब लो जी की मताई बेठी मानो भगवान बिराजे उनके रतभय लरकन खौं बुड़ापौ नई आ पात और न कोनऊ चिन्ता फिक्र। मताई को आँचर मानो तो कुबेर को धन है। औलाद कौ सनेह उनसैं न छुड़ाऔ। हमाई बिनती है।

सनाखौं खिंच गऔ, अगर सूजी गिर जाबे तो टन्न की आवाज आवे। बेटा हो, ई गाँव ने कौनऊँ कोट, कचैरी और थाने नई जाने न आज लो कौनऊ पुलिस हाकम आय, कौनऊँ बात अथाई सै आँगे नई गई। रई बात राजदुलारी की कै दिना की जिन्दगी बची। दुखयारी ठैरी उनै तो दो रोटी प्रेम की चाने। हाँ, इनसैं कछू अनबन भई होबे तो बा बताओ, सो बेटा हो काँसे को सुर काँसे मै रन दो। हम सब जने जा आसा लैं कैं आय ते कै हम सब और गाँव की लाज राखो और राजदुलारी खौं अपनया लो। तुम भले घर की बिटियाँ आओ, कऔ तो भियाने तुमाय पिताजी खौं बुलाबैं। पैं कभऊँ आसरम, धरमसाला और न दिवाले की सोचियो।

दौऊ बऊयें पानी पानी हो गई, दौरत आई और राजदुलारी के पावन पै जा गिरीं उननें छाती सैं लगा लऔ फिर बड़ी बऊ फुआ के पावन खौ दौरी उनने बीच में झुलया लऔ। दोऊ बऊयें हाँत जोर कैं पंचन सैं माफी माँगन लगी। मुखिया ने इतनी भर कई के बेटा हो राजदुलारी ने तुमै माफकरो सो सबने माफकर दऔ। हम पंचन को काम तो जोर बे को आय टोर बे को नई। भुन्सरा को भूलो संजा के ठिकाने पै आ जाय उये भूलो नई कत।

सब पंचन ने आसीस दऔ और अपने अपने घरै चल दय। ई घर कें खुसयाली के दिन लौट आय ते।

– ग्राम व पोस्ट कुण्डेश्वर, जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो. – 7898640061 卐

बुंदेली गजलें

– प्रेमप्रकाश चौबे 'प्रेम'

(१)

कुजनै कैसे भाग हमारे ?
मूंड़ ढकत तौ पाँव उघारे ।
कबै ऊगहै ? सुख कौ सूरज,
मिटहैं जे दुख के अँधयारे ।
तपत घाम गुजरत खेतन में,
परत मूँड़ पै सब बसकारे ।
समझत नईं हैं, मरत ठंड में ,
हम तौ समझा समझा हारे ।
हम सें बेहतर बे जानत हैं,
''प्रेम'' नफा-नुकसान हमारे ।

(२)

सई कै रये कछु बदलो ना है ?
खूब गात रवो, बा सें का है ?
कीच भरे गाँवन के रस्ता,
घूँटन खच रए, हालत जा है ।
फसल खेत में, गैया ग्याबन,
जब सच्ची, जब मौं में आ है ।
अते-पते नइं है, बिजली के,
कल की गई है, कब नों आ है ?
''प्रेम'' दूर के ढोल सुहाने,
भुगतो, जबइं समझ में आ है ।

(३)

मन में चिंता, गम मत राखौ ।
सब से खूब मुहब्बत राखौ ।
पान तमाखू, गुटका छोड़ौ,
लिखबे-पढ़बे, की लत राखौ ।
झूठ, पाप को बाप होत है,
तुम अपने मन में, सत राखौ ।
अच्छौ- पैरौ-ओढ़ौ-खावो ,
जा सरीर की, इज्जत राखौ ।
नीच बिचार न मन में आबें,
भाब हमेसा, उन्नत राखौ ।

(४)

हरी फसल पै ओरे पर गये ।
हम तौ बिना मौत के मर गये ।
कां नौं सहें, करज में जीबौ,
अब तौ गरे-गरे नों भर गये ।
उतै जाय जा खेती-बारी,
हम तौ जासैं, खूब अफर गये ।
एक दिना नईं, रोजई जगनै,
तनक सोए, जनावर चर गये ।
लगत ''प्रेम'', मौसम, सरकारें,
सबरे हमरे पीछै पर गये ।

-ब्राह्मण मोहल्ला, कुरवाई, जिला विदिशा 卐

वृषभान कुँवरि का भक्ति साहित्य

– **हरिराम साहू 'हरि'**

भारत का हृदय स्थल बुन्देलखण्ड का विरासती वैभव समृद्धशाली रहा है, यहाँ की धरा पुरा सम्पदा से भरी पूरी है, पुरातत्व, संस्कृति के साथ-साथ चतुर्थ धाराओं की संगम स्थली रही है एवं ललित कलाओं को पुष्पित एवं फलित होने का पूर्ण अनुकूल अवसर प्राप्त हुआ है। इस धरा पर अनेंको साहित्यकारों ने साहित्य के क्षेत्र में जो साधना की उसको सदैव स्मरण किया जायेगा। यहाँ की साहित्य कला के अन्तर्गत कवि, मनीषियों में तत्कालीन ओरछा राज्य के बुन्देला वंश में साहित्यिक भक्ति काव्य की सेवा करने वाली राज परिवार से कवियत्री वृषभान कुँवरि ने पाण्डुलिपि साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, अतः आपकेभक्ति काव्य ने ओरछा राज्य के नाम को गौरवान्वित किया है। भक्ति के क्षेत्र में राजवंश के जो कवि हुये हैं, जिनका भक्ति काव्य अपने उपासक के लिये साधना के रूप में समर्पित है चाहे वह श्रीराधाकृष्ण या श्रीरामलला से संबंधित क्यों न हो, इन नरेश कवियों में सेवढ़ा दतिया के राजा पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' किशनगढ़ के राजा सावंत सिंह 'नागरीदास' और जयपुर के राजा प्रताप सिंह 'बृजनिधि' सम्मिलित हैं।[१] वृषभान कुँवर का भक्ति साहित्य श्रीराम कथांशक पर आधारित ओरछा के महाराज एच.एस. श्री सवाई महेन्द्र प्रताप सिंह प्रताप सिंह जू देव बहादुर के एस.आई. आपका शासन काल सन् १८७४ से १९३० ई. तक रहा आप दिगौड़ा के मदनसिंह जागीरदार के पुत्र थे। बीस वर्ष की उम्र में आपको गोदी में ओरछा की गद्दी पर आसीन किया गया था, आपका पाणिग्रहण संस्कार वृषभान कुंवरि के साथ सम्पन्न हुआ था। धार्मिक उदारता, सरल स्वभाव, साहित्य सेवा की लगन आपके जीवन में रही हैं। साहित्य सेवा से समाज को नई दिशा मिला है। पाण्डुलिपि भक्त विरदावली भक्तिकाव्य के साथ-साथ पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक ज्ञान का स्त्रोत है। यह काव्य बुन्देली की महत्वपूर्ण कड़ी है। इसमें पद छन्द का भाव लोकरीति में सम्पन्न है। यह पाण्डुलिपि राजकीय पुरातत्व संग्रहालय दतिया (म.प्र.) के पुस्तकालय में उपलब्ध है। ग्रंथ में एक लगायत व्यालीस पृष्ठ संलग्न हैं। पत्र के दोनों ओर काली एवं लाल मसी से लेख संपन्न है। साथ ही प्रत्येक पद छन्द के अन्त में अंक संख्या अंकित है, साथ ही छन्द के पूर्व में सम्बन्धित राग का नाम लाल मसी से लेखबद्ध है। यह श्रीराम की कथाशंकों की भक्ति का भावपूर्ण ग्रंथ हैं काव्य के माध्यम से कवियत्री ने रागों की अवधारणों को प्रस्तुत किया है।

ग्रंथ प्रारम्भ में मंगलाचरण का भाव श्री गणेश जी की वन्दना से है, पाण्डलिपि की प्रतिलिपि पं. चौबे रज्जू टीकमगढ़ के: संवत १९४४ मिती कार्तिक कृष्ण ५ को ही है। ग्रन्थ में प्रथम श्रीराम जी के जन्मोत्सव बधाई को पढ़ा गया है, संगीत एक ऐसी विधा है कि इसमें स्वर, ताल और आवाज का सामंजस्य रहता है। ग्रंथ में राग के साथ उसकी मात्राओं का भी उल्लेख हुआ है, क्योंकि प्रत्येक राग के वन्दश में भिन्न-भिन्न मात्राओं का योगदान होता है। अतः शास्त्रीय संगीत का भी ये ज्ञानवर्धक काव्य है। हिन्दुस्तानी संगीत में कई प्रकार के रागों का प्रचलन था, जब रागों का गायन नियमानुसार साहित्य परख स्वर संगति का प्रयोग होता है तो परिणाम अनेक राग उदय होते हैं, जब रागांग स्वर संगीत ही कही जाती है, और उसी के द्वारा एक राग के अनेक प्रकार के राग बने है। यथा-मलहार, तोड़ी, विलायत, कल्याण, केदार, भैरव, कानड़ा आदि है। इतिहास बहुत पुराना है, प्रथम शताब्दी में ध्रुवगान शैली का प्रस्फुटन हो गया था और गुप्त काल और हर्षवर्द्धन के काल तक ध्रुव गान समाज में सुप्रतिष्ठापित हो गया था।[२] भारतीय राग कालचक्र से घिरा हुआ है जैसे ग्रीष्म कालीन राग, वर्षाराग, मल्हार, बसन्त होरी आदि के प्रभाव के क्षेत्र विस्तृत हो गया है। पौराणिक कथाओं के आधार पर सर्वप्रथम संगीत ब्रह्मा के पास था, इन्हीं के द्वारा शिव को शिव से देवी सरस्वती को और इसी क्रम से नारद, गन्दर्भ, किन्नर, एवं अप्सराओं को संगीत प्राप्त हुआ एवं भू-लोक पर संगीत का नारद, भरत, हनुमान आदि ने अवतरित किया। शिव ने देवी पार्वती की शयन मुद्रा को देखकर अंग प्रत्यंगों के आधार पर 'रूद्रवीणा' बनाई और अपने पाँच मुखों से पाँच राग अर्थात भैरव, हिड़ोल, मेघ, दीपक और श्री की उत्पत्ति की गई इन्ही रागों की परम्पराओं में प्राचीन काल में अनेकों रागों का प्रादुर्भाव हुआ है।

पाण्डुलिपि में राग साझातार तितारों के अन्तर्गत पढ़ा गया है श्रीराम के जन्मोत्सव पर अबध की सखियाँ सामूहिक रूप में गीत गाती है, दादरो झूम को प्रस्तुत किया जा रहा है। नृपत दशरथ के गृह बधैया बाज रही है, आनन्द से मन को सुख का अनुभव हो रहा है इसी क्रम में राग मधुमाद का गायन प्रारम्भ कर बाल तितारौ यानी बन्दश की तीन ताल है। कुछ नगर की सखियों ने यह शुभ समाचार सुना तो कहने लगी कि महारानी कौशिल्या गृह चलो चार पुत्र हुये है। कुछ सखियाँ राग दादरो गा रही है कि आज अवधनगरी की सुन्दरता को निहारने के लिये ब्रह्माणी भी आई हुई है। राग खंमाच तितारौ की गायकी में भाव है।

बधाई सुन हर्ष हृदय न समाई, नृपत दशरथ सुखदाई। माई प्रगट भये चारो भाई, भरथ लखन रिपु दलन मनोहर पूर्ण रघुराई, नौमीतिथ मधुमास उजारी, चार जोग समुदाई ''जो जैसे तैसे उठधाई, जहाँ जी में मधु पाई'' कौशिल्या के कई सुमित्राराम की लेत बलाई।

वृषभान कुँवरि यौ नित जब आनन्द चरन कमल सिबकाई।[३] संस्कारों से अभिप्राय शुद्धि की धार्मिक क्रियाओं तथा व्यक्ति के दैहिक, मानसिक और बौद्धिक परिष्कार के लिये किये जाने वाले अनुष्ठानों में से है जिनसे वह समाज में पूर्ण विकसित सदस्य हो सके।[४] महाराज दशरथ के राजभवन में श्रीराम जी के विभिन्न संस्कारों का आयोजन समयानुसार

किया गया है। राग कंहारौ अंड़ानोतार पिस्नो का प्रदर्शन अवधेश के दरवाजे पर कलाकारों के द्वारा वाद्य यंत्रों को बजाकर किया जा रहा है। चहु ओर आनन्द का माहौल एवं गलियों में अतर का छिड़काव किया गया है रागों के आयोजन में राग तारगति तितारौ का स्थान आधारित है। इस राग में जो गीत गाया उसका भाव है कि अवध में चारों ओर सुखमार पृथ्वी का भार उतारने के लिये प्रगट हुये है। वहाँ सुमन की वर्षा हो रही है। प्राचीन भारतीय कलाराग के पुरावशेषों में प्राप्त हुये है। सिन्धुवासियों के कलानुराग के संदर्भ में हड़प्पा से प्राप्त एक मुद्रा में किसी समारोह का दृश्य उकेरा गया है। सिन्धु सभ्यता के अवशेषों में वीणा के भी चित्रांकन मिलते है जो कि सिन्धुवासियों की संगीत प्रियता के द्योतक है।[५] राग कौजिलौ दादरो की प्रस्तुति में महारानी अपने चारों पुत्रों को पालने में झूला-झूला रही हैं, राग सारंगदादरौ का स्वर अपनी गति पर है और माता कौशिल्या के राजभवन के द्वार पर याचक लोग आये है, जब संगीत का वातावरण निर्मित हो जाता है तो उस स्थान पर आनन्द की अनुभूति अंत:करण में होने लगती है। इसी क्रम में राग हमीर तितारौ गाया जा रहा है। जब श्रीराम एक वर्ष के हो गये तब वर्षगांठ का आयोजन राजभवन में सभी नगरपुरवासी दर्शन करने के लिये आये हुये हैं। बालरूप में राम अपने भाईयों के साथ सरजू के तट पर क्रीड़ा कर रहे हैं। साथ ही संगीत जनों ने राग पूरिया तितारौ का सुन्दर भाव प्रस्तुत किया है। रागों के उस्ताजों द्वारा समय पर स्थानिक राग का गायन किया गया है। जब मुनि विश्वमित्र नृप दशरथ गृह आये तो उस समय राग झंजौटी बिखरा हुआ था। जब समाचार मिथलेश ने सुना कि मुनि के साथ में राम लक्ष्मण आये हुये है, रागो का प्रचलन पुरातन काल से जारी है पाण्डुलिपि में राग सूहौ, तारधीमतितारो, दरबारी कन्हरौ, विहंगतारतितारौ, पीलूदादरौ का भाव प्रधान है। भारतीय रागों में भोपाली दादरो भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

<u>राग दरबारी</u>

श्याम अवधेश बेसरा बनेर बनै।
भरथ और लक्ष्मनसत्रघन तीनो जनै।
माथै मौर कंचन को पनरथ में हीरा घनै,
ब्याह के भूषन बसन है तड़ित धन ज्यौअतिसनै।
करती है सब आरती जनकपुर मंगल टनै,
निरख-निरख देव बधुवाराती भूषन भनै।
ब्रह्माणी बा कदांनी कहै, मेरे तो जीवन धनै।
वृषभान कुवर जुगल छवि परमाधुरी कवि को गनै।[६]

राग दरबारी कानड़ा (कन्हार) में आंदोलन भय मिश्रित गंभीरता के साथ भाव की स्पष्ट झलक स्थाई करने में अधिक सहायक होते है। इस राग के स्वरों की जो खूबियाँ है उनके बिल्कुल विपरीत मियाँ-मल्हार राग के स्वरों की रचना तानसेन ने की है। वर के रूप में जनकपुर की सखियाँ बर श्रीराम जी से अखियाँ लगाती हैं, इनकी स्थिति कमल अरूनकारी रतनारी और मदनखान की घायल करने वाली है। संगीत स्वर लहरियाँ जब ताल के साथ लय और गति के सफल बनाने के लिये संस्कारों की व्यवस्था की गई है, संस्कारों में पाणिग्रहण पुरातन है। रामजी सहित सभी भाईयों की शादी के शुभ अवसर पर महाराज जनक जी की ओर से जो सम्मान दिया गया उसको कभी भुलाया नहीं जा सकता साथ ही दोनों समधियों का पारस्परिक मिल ऐतिहासिक है। बुन्देली में रागों का भाव प्रधान था। राग बहारतारध, काफी, ईमन, अंगला, ईमनलेद, गाईकी, का दौर प्रचलन में था। इसके साथ-साथ विलावन यमन, काछीगारा, देशआरमी, पहाड़ी बरबा, कुमकुम, तोड़ी बहादुरी लोढ़ी, किरबानी आदि रागों का प्रभाव क्षेत्रांतर्गत था। जिनको वृषभान कुँवर ने रामभक्ति काव्य के अंतर्गत पढ़ा है। पाण्डुलिपि रीति में राग सारंग से बुन्देली शब्दावली में श्रीराम की फागुन मास में होरी की लालसा हेतु भाव है।

राग सारंग - रसिया मेराछैल अबध वासी।
मृदुमुस्काये बदन छवि, चितवन में डारी कासी।
खेलत रंग भरेसिम स्वामिन, पिचक न झरकन मगरासी
वृषभान कुवर कौ फगवादीजै, टहल महल की सब खासी।[७]

पाण्डुलिपि में उल्लेख हुआ है कि महाराज मधुकर शाह की धर्मपत्नि गणेश कुवर अवधनगर से पुष्य नक्षत्र में श्रीराम को लेकर ओरछा आई थी, यह भाव ग्रंथ के अंतिम पद में आया है। साथ ही इसी के अंतर्गत महाराज सवाई महेन्द्र प्रताप सिंह वृषभान कुँवरि की प्रभुताई का वर्णन किया गया है।

पद - यह भक्ति विरदावली नीकी।
प्याली परम पुनीत पावनी, रघुपति भक्ति अमीकी।
पुर औरछो विदित जग झांकी, रामचन्द्रसियपीकी।
रहत भर दर्शन हित निशादिन, संत महंत जती की।
तुंगारैण्य यह बहत तटधारा, सरिता वेत्रबती की।
तापुर नृपबुन्देल वीरबर, जिन सब बहुत मही की।
विक्रम नृप शोभा सर साई, टीकमगढ़ नगरी की।
श्री प्रताप महेन्द्र सवाई, सेवा रघुवर जी की।
तिहि पत्नी वृषभान कुवर जू, अनुचर अवधपति की।[८]

पाण्डुलिपि भक्त विरदावली में अनेक प्रकार के रागों को पढ़ा गया है। श्रीरामकथा पर आधारित भक्ति साहित्य की पारम्परिक शैली का संक्षिप्त में सरलीकरण भाव के साथ बुन्देली शब्दावली में प्रस्तुत किया है।

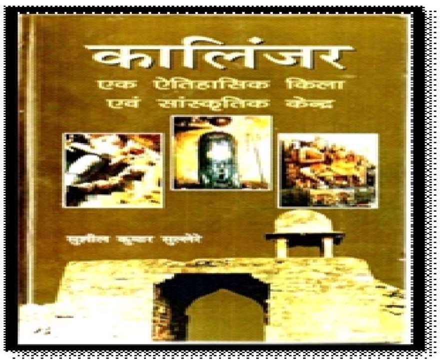
सदंर्भ :-

१. दतिया उद्भव और विकास-के.बी.एल. पाण्डेय, पृ. १५५
२. तानसेन समारोह स्मारिका-हरिनारायण अग्निहोत्री, पृ. १६
३. पाण्डुलिपि भक्त विरदावली-पं. चौबे रज्जू टीकमगढ़: छन्द सं.१७
४. प्राचीन भारतीय सामाजिक एवं आर्थिक संस्थाऐं-डॉ. कैलाशचन्द्र जैन पृ. ५९
५. प्राचीन भारत का इतिहास-गोपाल व्यास, पृ. २३
६. पाण्डुलिपि भक्त विरदावली-पं. चौबे रज्जू टीकमगढ़ : छन्द सं.२५
७. पाण्डुलिपि भक्त विरदावली-पं. चौबे रज्जू टीकमगढ़: छन्द सं.४१
८. पाण्डुलिपि भक्त विरदावली-पं. चौबे रज्जू टीकमगढ़: छन्द सं.१४५

-वरिष्ठ मार्ग दर्शक, पुरातत्व संग्रहालय
जिला दतिया (म.प्र.) मोबा.नं. 8720013664 卐

कालिंजर एक ऐतिहासिक किला एवं सांस्कृतिक केन्द्रः एक समीक्षा

समीक्षक-फरहत अली खान



बी0 आर0 पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली से प्रकाशित एवँ मुद्रित "कालिंजर एक ऐतिहासिक किला एवं सांस्कृतिक केन्द्र" नामक पुस्तक डॉ0 सुशील कुमार सुल्लेरे द्वारा लिखित कीमत रु. 650/- की कुल 60 पृष्ठीय पुस्तक के लेखन में प्रो0 आर0 एन0 श्रीवास्तव, डा0 हेमूलाल यदु, श्रीमति सुशील सुल्लेरे, प्रो0 ऋचा सुल्लेरे शर्मा और अनुराग सुल्लेरे का भरपूर सहयोग मिलने के बाद में इसमें प्रूफसम्बन्धी अशुद्धियाँ और तथ्यों की इस कदर लीपा-पोती की गई है कि पुस्तक लिखने का कोई उद्देश्य ही नहीं रह जाता हैं। यह निम्नांकित विवरण से स्पष्ट हो जाएगा।

तथ्य सम्बन्धी अशुद्धियाँ

पृ0-1 पर कहा गया है कि वेदों में कालिंजर को तपस्या स्थान कहा गया है, जबकि किसी भी वेद में इसका उल्लेख नहीं है।

पृ0-4 लेखक का कथन है कि बौद्ध साहित्य में कालिंजर का उल्लेख नहीं है, किन्तु जातक कथाओं में कालगिरी का नाम आया है। इस विश्व विद्यालयीन प्रोफेसर को यह नहीं पता कि जातक कथाएं बौद्ध साहित्य के अन्तर्गत हैं।

पृ0-5 लेखक का कथन है कि जबलपुर का उत्तरी भाग चेदि देश कहलाता था। इसकी राजधानी कालिंजर थी। जबकि कालिंजर चेदि देश की राजधानी कभी नहीं रही। चेदि देश की राजधानी शुक्तिमति नगरी थी, जिसकी पहचान जिला बाँदा की नरैनी तहसील के सिहुण्डा नामक गाँव से गयी है।[1]

पृ0-7 विद्वान लेखक महोदय चन्देलों की उत्पत्ति से सम्बन्धित साहित्य साक्ष्य प्रारम्भ से ही चन्देलों का सम्बन्ध कालिंजर से स्थापित करते हैं। कालिंजर को चन्देल वंश के सातवें राजा यशोवर्मा ने विजित किया था।[2] लेखक स्वयँ लिखता है कि इसके पहले वहाँ गुर्जर-प्रतीहार और राष्ट्रकूटों का शासन था।

पृ0-8 लेखक का कथन है कि कालिंजर दुर्ग का निर्माण चन्द्रवर्मा चन्देल ने कराया, किन्तु इसके पहले लेखक ने स्वयँ लिखा है कि पाण्डुवंशी उदयन और कलचुरियों ने वहाँ शासन किया था। अतः वहाँ कालिंजर दुर्ग विद्यमान न था, तब इन राजवंशों ने कहाँ से शासन किया और उनका दुर्ग कहाँ था ?

पृ0-11 लेखक का कथन है कि देववर्मा, कर्ण से पराजित हुआ। किन्तु पराजय के बाद भी कालिंजर पर उसका अधिकार बना रहा, किन्तु लेखक ने लक्ष्मीकर्ण कलचुरी के वि0स0 1111/सन् 1054 ई0 के उस ताम्र पत्र लेख का अवलोकन नहीं किया, जो कालिंजर से प्रचारित किया गया है।[3] अगर देव वर्मा कालिंजर का शासक था, तब कर्ण ने वहाँ से अपना ताम्र पत्र लेख किस प्रकार प्रचारित किया ?

पृ0-12 लेखक मदन वर्मा चन्देल और गुजरात के चालुक्य नरेश जय सिंह सिद्धराज का सम्बन्ध मामा-भांजा का बताता है, जो निराधार है। लेखक इस सम्बन्ध का कोई प्रमाण नही देता।

पृ0-13 परमर्दि का काले पत्थर का अंकित अभिलेख नीलकण्ठ मन्दिर के द्वार पर नहीं, कालिंजर के अमान सिंह महल संग्रहालय में प्रदर्शित है।

पृ0-14 कीरत राय चन्देल नहीं बुन्देला राजा है। पाण्डुलिपि 'छत्र प्रकाश' में दी गयी वंशावली के अनुसार उसका नाम कीरत शाह है।'अकबर नामा' के अनुसार दुर्गावती महोबा और राठ के चन्देल राजा शालिवाहन की पुत्री थी[4]। कीरत शाह बुन्देला की पुत्री नहीं थी। लेखक को रूद्र प्रताप की कालिंजर प्रशस्ति (वि0स0-1543/सन् 1486 ई0) देखना चाहिये, जिससे तथ्य सामने आ जावेगा।

पृ0-14 वीर भान मांडा का राजा नहीं है[5]। वह पाठा क्षेत्र का राजा है, जिसकी राजधानी गहोरा (कर्वी/इलाहाबाद मार्ग पर रैपुरा गाँव के सामने) में स्थित थी। उसका राज्य प्रयाग तक नहीं फैला था बल्कि रीवा की कायस्थ खास कलमी जमाबन्दी के अनुसार उसका राज्य उत्तर में जमुना से दक्षिण ने नर्मदा तक तथा पश्चिम में करिया आम घाट (पन्ना) से पूर्व में टेढ़ा आम घाट (सीधी) तक फैला हुआ था[6]।

लेखक के अनुसार वीर भान डरपोक था, जबकि वास्तविकता है कि वह निडर, निर्भीक और साहसी राजा था। शेरशाह के बुलावे पर वह उसके दरबार में उपस्थित हुआ। जब उसकी चौखट पर परम्परा के अनुसार धरती चुम्बन करके वीर भान बघेल ने ज्यों ही अपना सिर उठाया तो उसने देखा कि उसके सगे भतीजे प्रताप रूद्र देव बघेल व उदय भान देव बघेल[7], जो सोहागपुर के इलाकेदार थे और जो पाठा राज्य के बटवारे को लेकर बेईमानी करने के कारण अपने ताऊ वीर भान बघेल से नाराज थे। सुल्तान शेर शाह सूरी के पास बैठे वह दोनों वीर भान की शिकायत कर रहे थे। यह देखकर वीरभान के क्रोध की कोई सीमा नहीं रही। क्रोधित वीर भान ने भरे दरबार में शेरशाह के सामने अपने दोनों भतीजों को एक गन्दी सी गाली दी[8]। शेरशाह यह सुन कर स्तब्ध रह गया और उसने सिर उठा कर देखा तो कहा कि है कोई ? पकड़ो इसे। तब वीर भान बघेल वहाँ से भाग खड़ा हुआ और अपने मित्र कालिंजर के राजा कीरत शाह बुन्देला के यहाँ किला बन्द हो गया। शेरशाह ने उसी समय वीर भान को पकड़ने और दण्डित करने के लिये मियाँ मुहम्मद फार्मूली के नेतृत्व में कालिंजर फौज भेज दीं। एक दूसरी फौज की टुकड़ी अपने मँझले लड़के सलीम के नेतृत्व में रीवा भेज दी।

सलीम जिसका असल नाम जलाल खाँ था, रीवा की गढ़ी की मरम्मत करा कर वहाँ रहने लगा।

लेखक महोदय हम इस स्थान पर यह स्पष्ट कर देना उचित समझते हैं कि विज्ञान के गुरुत्वाकर्षण के नियम के अनुसार शेरशाह के द्वारा फेका हुआ हुक्का (गोला) किले की दीवाल से टकरा कर वापस लौट कर उसी स्थान पर नहीं आ सकता है और न ही उससे कोई विस्फोट हुआ। कालिंजर के पास कालिंजरी की पहाड़ी से जिस तोप से गोला फेका जा रहा था, वह तोप की मैग्जीन में फँस गया था। जिसे निकालने की कोशिश में शेरशाह लगा हुआ था कि उसी समय सत्तारिया सिलसिले के सूफी हजरत शेख मुहम्मद गौश ग्वालियरी के श्राप से वह गोला फट गया और शेरशाह बुरी तरह जल गया[9]। उसके अमीर जख्मी शेर शाह को अस्थायी कैम्प (खिरगाह) मे, जो कालिंजर के पास मसौनी गाँव में स्थित था, ले गये। वहाँ उसका उपचार हुआ। हकीमों ने उसके बदन में दही लगाया। मगरिब की नमाज के बाद शेरशाह ने आँखें खोली। उसने कुछ कलमात पढ़े। दो हसरतें अपने दिल में ले कर वह आधी रात को स्वर्ग सिधार गया[10]।

पृ0-15 जलाल खाँ जलवानी नहीं, बल्कि जलाल खाँ जल्लू, जो एक अमीर था[11]।

पृ0-17 लेखक का कथन है कि अमान सिंह का वध हिन्दूपत ने किया और दूसरी पंक्ति मे ही लिखता है कि हिन्दूपत का वध अमान सिंह के विश्वस्त्र शिव गोविन्द ने किया। यह तथ्य गलत है।

इसके अलावा डॉ0 सुल्लेरे ने सुधी पाठकों के लिये कोई नवीन सामग्री भी उपलब्ध नहीं कराई है। कालिंजर के इतिहास पर अपने को एक मात्र अधिकारी बताने वाले विद्वान डॉ0 सुल्लेरे साहब ने अपनी पुस्तक की शोभा बढ़ाने के लिये विद्याधर चन्देल के वि0सं0 1069 श्रावण सूदि 15/सोमवार 4 अगस्त, 1012 ई0 के अमरोहा ताम्र पत्र का भी उल्लेख नहीं किया। यह ताम्रपत्र प्राचीन सामग्री विक्रेता अमरोहा (उ0प्र0) के निवासी श्री तौफीक अहमद कादरी चिश्ती की सम्पति है। यह ताम्र पत्र डॉ0 सुल्लेरे की पुस्तक सन् 2016 ई0 में प्रकाशित होने से 7 वर्ष पूर्व सन् 2009 ई0 में ही प्रकाश में आया था। इसे सबसे पहले डॉ बी0आर0 मणि और डॉ0 टी0 एस0 रवि शंकर ने सम्पादित कर पुरातत्व अंक 39, 2009, पृष्ठ 125-30 में प्रकाशित किया था। कालान्तर में डॉ0 डी0 पी0 दुबे, प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवँ पुरातत्व विभाग, इलाहाबाद विश्व विद्यालय और उनके पुत्र आशीष कुमार दुबे ने सम्पादन करके 'भारतीय पुराभिलेख पत्रिका' वर्ष 2012 के अंक 38 के पृष्ठ 176-185 में प्रकाशित किया। इसकी भाषा संस्कृत और लिपि ग्यारहवीं शती ई0 की नागरी है। यह विद्याधर चन्देल का पहला ताम्र पत्र है, जिसमें उसे 'परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीकालंजराधिपति' जैसे साम्राज्यवादी विरुद प्रदान किये गये हैं। इसमें विद्याधर चन्देल के व्यक्तिगत गुणों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। पंक्ति 5 से 7 में निष्कुम्भ वंश के महाराजा रज्ज के पुत्र महाराज बलिराज द्वारा भुवन पाल को पराजित करने का उल्लेख है। इस ताम्र पत्र का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इस ताम्र पत्र के अन्त में विद्याधर का हस्ताक्षर 'श्री विद्याधर' अंकित है। फरिश्ता, निजामुद्दीन आदि को प्रामाणिक मानने वाले विद्वानों के अनुसार सन् 1018 ई0 में महमूद के कालिंजर हमले के समय विद्याधर का पिता चन्देल शासक गण्ड वहाँ शासन कर रहा था। विद्याधर का वि0 सं0-1060/स0-1003 का पहला ताम्र पत्र वर्ष 1971-1972 ई0 में प्रकाश में आया। यह ताम्र पत्र उसकी राजमहिषी सत्यभामा द्वारा ब्रहमशिला (आधुनिक कुण्डेश्वर, जिला-टीकमगढ़, म0प्र0) से जारी किया गया था। इस ताम्र पत्र को उसने अपनी निजी हैसियत से जारी किया था। उसके पश्चात् अब यह दूसरा महत्वपूर्ण ताम्र पत्र है, जिससे यह भ्रान्ति दूर हो जाती है कि कालिंजर पर महमूद गजनवी के हमले के समय उसका पिता गण्ड नहीं, बल्कि विद्याधर ही कालिंजर का शासक था।[12]

प्रूफ रीडिंग की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
कनिंग्रम	कनिंग्रम
पृ0-4 वाल्मिकी	वाल्मीकि
सहस्त्र	सहस्त्र
से-बड़ा	सिहुण्डा13(बाँदा जिला)
पानगुरिया	पानगुरडिया
पृ0-5 ब्रहदर्य	बृहद्रथ
प्रासाइके	कांलिजर नही है
दोहित्र	दौहित्र
पृ0-6 जाल्हण	जल्हण
पृ0-7 स्वणिमकाल	स्वर्णिमकाल
पृ0-8 भद्रारक	भट्टारक
परममहेश्वर	परममाहेश्वर
पृ0-9 लालयित	ललायित
989 ई0	998 ई0
हम्मीरपुर	हमीरपुर
नन्यौरा	ननौरा
पृ0-12 संलक्षणवर्मन	सल्लक्षणवर्मा
संस्था	संख्या
नचनी	नाचनी
पृ0-14 रावत	राउत
शेरशाह सूरी के गणना	शेरशाह सूरी की गणना
पृ0-15 सवातें	साबात
पृ0-16 बघेलबाड़ी	बघेलाबाड़ी
पृ0-18 पुररूद्धार	पुनरूद्धार
पृ0-19 हजबरूद्दीन इसन अर्नाल	हजब्ररूद्दीन हसन अदीब (बदायूँ का राज्यपाल)

लेखक की पुस्तक के केवल एक से अठारह पृष्ठों की समीक्षा की गयी है। अगर पूरी पुस्तक की समीक्षा की जाये, तब अलग-अलग पुस्तक लिखना पड़ेगी। विश्व विद्यालय स्तर का एक प्रोफेसर इतनी निम्न स्तर की पुस्तक लिख सकता है। यह सोच कर ही शिक्षा का भविष्य धुंधला दिखने लगता है।

सन्दर्भ सूची :-

1. डा0 कन्हैयालाल अग्रवाल, शुक्तिमतिपुरी का स्थान निर्धारण, पुराकल्प पत्रिका, वाराणसी 1974 एवं विन्ध्य क्षेत्र का ऐतिहासिक भूगोल, पृष्ठ-85,
2. डा0 कन्हैयालाल अग्रवाल, खजुराहो, दि मैकमिलन कम्पनी आफ इण्डिया, प्रथम संस्करण, 1984, पृष्ठ-9 एवं एपि0 इण्डिका, खण्ड-1, पृष्ठ-128, श्लोक-31 तथा कार्पस, खण्ड-7, पृष्ठ-345 (खजुराहो लक्ष्मण मन्दिर अभिलेख)
3. डा0 डी0 पी0 दुबे, लेख सम्पादक, एपिग्राफिक स्टडीज, नई दिल्ली, 2018,

पृष्ठ-47 से 68

4. अनुवादक एच0 बेवरिज, भाग-2, पृष्ठ-324
5. वीर भान के सम्पूर्ण चरित्र के लिये देखें कवि माधव उरूव्य द्वारा रचित वीरभानुदय काव्य, प्रकाशक-नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, सन्-1935
6. डा0 कन्हैयालाल अग्रवाल, कालिंजर का इतिहास, बी0आर0 पब्लिशिंग कारपोरेशन, दिल्ली,2020 मूल्य रू0-1750/-,पृष्ठ-132 एवं विन्ध्य क्षेत्र का ऐतिहासिक भूगोल, पृष्ठ-85, एवँ डॉ0 राजीव लोचन अग्निहोत्रि के शोध प्रबन्ध 'बघेलखण्ड के संस्कृत काव्य' से प्राप्त प्रकाशित वंशावली बांधौपति (जमाबन्दी खास) एवँ डॉ0 विक्रम सिंह बघेल की पुस्तक 'रीवा के बघेल राज्य का पर राज्य सम्बन्ध', शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, 2004, पृष्ठ-234, परिशिष्ठ-2 से उद्धृत।
7. पण्डित पदम् नाभ मिश्र, (मिथिला निवासी) वीरभद्र देव चम्पू काव्य, पाण्डुलिपि रचना काल वि0 सं0-1634/सन् 1577 ई0, सम्पादक डॉ0 यतीद्र विमल चौधरी, प्राच्य वाणी, कलकत्ता, सन् 1952 ई0, षष्ठ उच्छवास। काव्य में वीरभान के भतीजों की वंशावली दी गयी हैं। उसी से केवल उनके यह नाम लिखे जा रहे हैं।
8. मुहम्मद कबीर बिन शेख इस्माईल, अफशानये शाहान, ब्रिटिश म्यूजियम मैन्यूस्क्रिप्ट रियू. भाग-1, 243 बी, कहानी नं0-16, फोलियां-25 ए, रघुबीर लाईब्रेरी, सीतामऊ (म0प्र0) की रोटोग्राफप्रति।
9. मौलाना फजल अली हिसारी, कुल्याते ग्वालियरी, सम्पादक: प्रो0 मोहन कुमार माथुर, अनुवादक-श्रीमति हामिदा आलम एवँ मोहन कुमार माथुर, प्रकाशक-डा0 हरिहर निवास द्विवेदी रिसर्च फाउण्डेशन, ग्वालियर, वर्ष-2000, पृष्ठ-22।
10. अहमद यादगार, तारीखे शाही, बिब्लियोथिका इण्डिका सीरीज, कलकत्ता, 1939, फारसी, पृष्ठ 231-233।
11. वही, पृष्ठ-231
12. डॉ0 कन्हैया लाल अग्रवाल, चन्देलों का इतिहास, इलाहाबाद, वर्ष-2020, पृष्ठ-385
13. कनिंघम, आर्केलाजिकल सर्वे आफइण्डिया रिपोर्ट, खण्ड-21, पृष्ठ-55, बच्छि यू नि (वर्तमान ग्राम बछौन्द, जिला-छतरपुर, म0प्र0) से प्राप्त राजा भीलमदेव के वि0 सं0-1433/सन् 1376 ई0 के प्रकाशित शिलालेख में इस स्थान का शुद्ध पाठ 'सिहुण्डा' लिखा है।

- अलीगंज, बाँदा,
जिला-बाँदा (उ0प्र0) पिनकोड-210001,
मोबाईल नम्बर-9118195355 卐

ईश की मार

-ग्यासी राम गुप्त ''अटल''

बखत की मारन सों बड़े-बड़े तखत जात
समर-शूर, शक्ति-पुंज विशद वरदानी विलाने हैं।
धन-कुबेर, धर्मध्वज, ब्रह्मचारी, योगी, यती
विज्ञानी अरु ज्ञानी काल-गाल में समाने हैं।
भव-बंधन गठबंधन सुप्रबंधन निभाये जो
सुपंथ पग आये, सहज मुक्ति पाये, पाये ठिकाने हैं।
धर्म-मानव निभाओ, अशरण शरण जाओ,
मर्म मानव-जन्म जाने जिन, ईश उन्हें माने हैं।

- आलमपुर, भिण्ड (म.प्र.) 卐

शिशिर रितु कौ भऔ है शुभ अंत झूम के बगरो बाग बसंत

-जगतमोहन ''हरि''

(१)
हरीरी भइ धरती की कोर, लगै अब मखमल जैसी भोर।
चहकवें चिरवा चकइं चकोर, करन लागे बिरछन पै शोर।।
गीत गावें फुदकें अत्यन्त, बैठबें फिरबें उड़ें सुतन्त।
शिशिर रितु को भओ है शुभ अंत।।

(२)
मोरनी भयी मोर के संग, लगीं कलियाँ भौंरन के अंग।
पीत छायो सरसों पै रंग, चढ़ी टेसू पै लाल उमंग।।
आम बौरन लागे गुणवंत, कोकिलें कूँकैं मंगल मंत।
शिशिर रितु को भओ है शुभ अंत।।

(३)
फलनिया फरकैं खेलैं फाग, चढ़ो है यौवन पै अनुराग।
देह में परचन लागी आग, कटें सब सब रतियाँ अब जाग।।
शहद सी, पीरा लगै दुरंत, बान मारन लागो रतिकंत।
शिशिर रितु को भओ है शुभ अंत।।

(४)
सजावे वसुधा कौ घर दोर, रंग विधि नें डारे सब घोर।
सुगंधित पवन चला झकझोर, खिला दय फूला चारउँ ओर।।
कमल गेंदा चंपा जसबंत, लगे फैलाबे महक अनंत।
शिशिर रितु को भओ है शुभ अंत।।

(५)
दिशायें गाबैं मंगलचार, गले फूलन की माला धार।
जगत कौ करबे नव संचार, मदन नें धरो कँदन पै भार।।
मदन नें करो सबै परतंत, धरे रय रिसियन के सब जंत।
शिशिर रितु को भओ है शुभ अंत।।

(६)
डरइंयन में पीके नव पात, सँजीले भये बिरछन के गात।
ताप कौ बल अब बढ़त दिखात,शीत अब दिन दिन बूढ़त जात।।
दिना दिन बढ़न लगे दिनकंत, घटन लग गइ रजनी लजबंत।
शिशिर रितु को भओ है शुभ अंत।।

(७)
घाँघरे कौ उल्टौ रओ छोर, खुली रै गइ चोली की डोर।
गयी जल भरन कुँआ पै भोर, पूछबें सखियाँ कर किलकोर।।
सखिन से कहीं छा गयो हंत, रात में आ गय मोरे कंत।
शिशिर रितु को भओ है शुभ अंत।।

- राजर्षि पुरूषोतमदास टंडन हा.से. स्कूल, झाँसी (उ.प्र.)
मोबा0-9956546032 卐

वीना के अनसुने सुर

–आचार्य दुर्गा शरण शुक्ल

हमाये एक हितु हैं। पढ़े गुने बड़े पद सें रिटार्य भये नामी ग्रामी ज्ञानी माने जात हैं। कृपा करकें उनने, वीना पत्रिका हमें भेजी, संदेशो भेजो कै जा खों जरूर पढ़ने है, पत्रिका जब मिली तवै नींद आ रई ती। नींद के अजूबा खेल हैं जो जगतन में कर नई सकत वो सब कछु नींद में हो जात। बिना चलें कैलास पै पहुँच जात, बिना देखें देवतन के दर्शन हो जायँ, बिना खाँय मों मीठो हो जाय और बिना सुने बाजे बजत सुना जाँय। सो ऊ दिना ऐसोई हो गवो नींद आ गई। गैरे सपने में चले गये–वीना पत्रिका के पन्ना फड़फड़ाने और उनमें से किसम–किसम की वीना निकलन लगीं, बजन लगीं सुर झनकारन लगे, अनसुने सुर सुनान लगे। ऐसे सुर जों हमनें पैलें कबहुँ सुने नई हते वे सुने सो मन घबरान लगो, का बतायें, ऐसी बैचैंनी हो रई ती जैसी कबहुँ भई नई ती, मन न अपने हात को, जा खों न कै सकत परबस, न अपने बस।

हमाये जाने पहँचाने उपाध्याय महाराज कितऊँ से आ गये। आदी धोती पैरें और आदी कँदा पै डारें। खैरे महुँआ कैसो रंग, कड़क बोली ऐसे जे उपाध्याय जू गाँव के सबसें पुराने पंडित माने जात। इनें सब डरात, सब इनै सिद्ध मानत, पीठ पीछे बुराई करवे बारे कत हैं कि जे जाने कौन विद्या जानत; न कबऊँ कौनऊ ओखत खायें, न इनै ताप बुखर आय। काऊ सें कछु माँगत नईयाँ फिरऊ इनको खर्चा चलत जात। सो उपाध्याय जू ने अपनी कड़क बोली दाग दईं–काये घबरारये् बेटा। सुनों मोरी बात। जे सुर तुमैं अनसुने लग रयै वे सुर अन सुने हैं ईश्वर तुम सैं प्रसन्न हैं सो तुमें सुर सुना पर रये। जै स्वर तुमाये भीतर की वीना के स्वर हैं। जौंन बीना तुमने देखी है व नकली बीना है असली बीना तो तुमाये भीतर है। जो भीतर है सो बाहर जो बाहर है सो भीतर है। तुमनै सुनी नई रे जो पिण्ड में है बैई ब्रह्माण्ड में है ओर जो बाहर है, ब्रह्माण्ड में है बौई सब जा पिण्ड में है। घासीदास जू महाराज कौ नाव नई सुनो। रामपुर में उनके भौत भगत हैं। उन संत नै सुनाई है कि गंगा, जमुना, सबरे तीरथ जो बाहर हैं वे भीतर सौऊ हैं। भीतरई हैं गौरा–पार्वती, तो तुम जान लेव सो भीतर वीना है।

तुमाये दोऊ फैफड़े वीना के दो तूमा, साँस लेवे देवे बारी सटक जा बीना की उल्री है और मौं के भीतर कुऊअ दरौ, तरुआ, दाँत, ओंठ, जा बीना के वे जगहें है जिते जा जीभ छू–छू कें झनकार पैदा करते। जीब है सरस्वती कौ रूप। सरस्वती कों संस्कृत में सरस्वती कत हैं। ईकौ मतलब होत है, – तस में रैवे वाली। सो भीतरी बीना को वजाबे वारी जा जीभ सरस्वती है–कयै सें जा रस में सरवोर रत। जा बीना सरस्वती की वीना है जो भीतर रहत हैं। ई के सुर में सुर की 'झनकार' और 'राग' सब अपने आप झरत रहत। पर ईको सुनबो बड़ों कठिन है। बड़े जतन करव पै भागवानन को जा वीना सुनात है।

जा बीना सुना है जिन्हे वे ज्ञानी होत, वे गुनी होत, वे जोगी होत, वे जती होत, प्रेमी होत और जो भी के होत वे हजारन में एक होत। बड़े पुन्य सें जा वीना सधत हैं जी खाँ सद गई जा वीना वो हो गवो ''साधक''।

तुम वेद पढ़त हो? मैं घबरा गया कि उपाध्याय महाराज मुझे न जाने कौन से वचन सुना दें पर वे अपनी धुन में थे आगे कहने लगे वेद में जा बीना की बात आई है, एतरैय महाराज ने जा बीना की बता बताई है, बताई है कि जा बीन कों जीने साध लवो उनै अपनी जिन्दगी साध लई। ऊके दौऊ लोक सुधर गये, इतै आनन्द और देह छूट जावे पै मुक्ति, ऊके दोऊ हाथन में लड्डुआ, भुक्ति ओर मुक्ति के।

जा बीना से जो 'नाद' उठत है वो नाद ऊँकार की झनकार है, भगवान शिव कौ सरूप है, सब वेदन कौ सार है, ज्ञान कौ निचौड़ है, वो परमानन्द रस है जा जान लो।

जो जा बीना के 'नाद' में डूबो सो तर गवो, वो ऊपार पौंच गवो, जिते सें फिर कितऊ भटकने नई आऊत कत हैं। एक ऋषि महाराज हते भजनानन्दी इतै–उतै तीर्थन में विचरत रत ते। एक दिना उनके पुन्य उदय भये, उननै जा बीना के स्वर सुन लये, रीझ गये महाराज! एक जानकार ने उनै बताई कि जा ऐसी–ऊसी बीना नई है जा है रूद्र बीना, जो देवतन खौं दुर्लभ। लगन तो लगन है, जब लगन लगी होय तो छूटत नईयाँ। इतै रूद्र प्रयाग में संगम में, डट गये तपस्या में, सोच लई लेहैं तो भगवान की बीना, नई मिलहै सो देहैं टका से प्रान। जब बात पक्की मन में ठान लेत तो भगवान भी ऊकी टेक पूरी कर देत। सो ऋषि महाराज की समाध सध गई। देवता नो विनय पौंची, शंकर जू प्रकट भयै। भगवान भोलेनाथ ने उन नारद जू खों महती नाव की बीना दई और हँस के कही नारद तुम्हें हमाओ आशीष है आज तुमें बीना में सिद्ध मिल गई, तुम बीना के सिद्ध साधक हो गये, तुम बीना के नाद की भूम में सदा विचरो, आनन्द करो और तब से वे नारद जू ऋषि सें देव–ऋषी हो गये, तीनऊ लोकन में वे बीना के संगीत के गुरूवन के गुरू माने गये।

और बेटा आंगे सुनो! अकेले नारद जू नई और दूसरे की बात सुना रये। वे महाराज वैसमपायैन कें गुरूकुल में पढ़त ते। वैषमयापन जू महाराज उनै वेद विद्या और जज्ञ की विद्या कौ ज्ञान देत ते। पढ़वे में अच्छे हते, संगी साथियन में हुसयार हते, एक दिन कऊँ वन में घूम रये तो भाग से देवि सरस्वती महारानी जू की बीना की मीठी धुन के स्वर उनै सुन परे, अब का कनैं धार पै पानी चढ़ गवो, वर्तन को जिततौं समाओ होय उतौ पानी बनत। जादा पानी हो जाय तो वगरो–वगरो फिरत सो ऐसौई भवो। उमर कच्ची हती, ज्ञान जादा हो गवो। इनकी कौनऊ बात पै गुरू वैषमपायन महाराज एक दिना नाराज हो कें बोले जगवल्क तुम हमाई विद्या के लायक नहीं हो। तुम्हें जौ

भारी ज्ञान को अपच हो रवो है, गुरू से इतनी बात सुनी सो जे बोले महाराज लेव अपनी विद्या। इतनों कह कैं पड़ी गुनी सब विद्या उतै उगल दई और खाली होकें गुरू के आश्रम सें निकर आये। बाहर आकें सूरज सामने लगा दई समाधी। सरस्वती जू की कृपा सें समाधी सध गई। सूरज देवता ने कृपा करकें इन्हें बाज सैनी संघैता जीकों शुक्ल यजुर्वेद कत हैं उको ज्ञान दै दवो, जज्ञ की विद्या को मरम बता दवो। अब जे ज्ञानियन में ज्ञानी विज्ञानी ऋषि जागवल्क माने गये।

और सुनो बेटा, कौनउ हजारन साल पुरानी वेद पुरान की बात नई कर रयै। अबै एक हजार साल भयै तब के काशमीर की बात है, जौ काशमीर पैलें ऐसो थोड़ीं हतो जौ तब शारद पीठ कहाउत तो। अपने देश के ज्ञानी गुनी विद्वानन की भूम मानो जातते कासमीर। शिव जी के ज्ञानी भगतन की तब पुन्य भूम मानी जातती कसमीर। तब की बात है वा वेरां इतै महाग्यानी ऐसे आचार्य जू इतै झेलम नदियों के किनारे वसत ते। उनके चेला इतै कसमीर से लैंकें उतै केरल नों रहत ते, इनको एक ग्यानी चेला मधुराज केरल में अपने गुरू की महिमा में गीत रच रये ते। ऐसे वे आचार्य अभिनव गुप्त तब इतै कसमीर में रहत ते। कहत हैं कि उनके दस हजार चेला और वे सब सिद्ध हो गये हैं। उन महाराज अभिनव गुप्त ने लिखो है कि बीना की मधुर धुन सुनवे से, चन्दन के परस सैं जो हृदैय में एक गुदगुदी सी होत है वा आनन्द सक्ति की धड़कन है, व फड़कन में चित्त लगावो तौ भगवान भोलेनाथ के मिलन कौ अनुभव होत है। सो बीना के सुरन में डूबो, जो डूब जैहो सो पार उतर जैहो।

तुमै बीना के जे सुर सुन सुन कैं, बेचैनी हो रई जा बात नीकी नईयाँ। ई तुम रहत हो बुन्देलखण्ड में, बुन्देलखण्ड कौ पुरानों नाव है दर्साण जनपद। जा कौ मतलव होत है दस नदियन कौ देस। सो तुम जौन प्रदेस में बसत हौ ऊमै, कैन, टौंस, वेतवा, चम्बल, पार्वती, सिंध, छिप्रा, सोन और वनास। इतै जे दस नदियाँ सींचती हैं, और धसान (दशार्ण) तुमाये घर के बगल में बहत है, जा धसान कों ऐसो ऊसो न मानो अबै विक्रमाजीत के राज में ऐई धसान नदी में सरस्वती जू के वाहन कहावे वाले पंछि हंसन की भीड़ लगी रत ती। जा बात कवि गुरू कालिदास जू जानत हैं मानत हैं। तौ अब ऊभूम के बासी सरस्वती जू की बीना सुन कें विकल होवैं जा बात सरम की बात, अचरज की बात है।

अरे तुम्हारे पुरखा इतै एक छोटी नदिया के किनारे बैठे हुऐं सो उनने लहरें सुनी समझी, उनै लगी कै लहरन की धुन में बीना की सुर है, नाद है, सो उननै उ नदिया को नाव कर दवो बीना नदी। जी लहरन में बीना कौ नाद झनकारै व नदी है बीना। सो तुम उनके बेटा हौ, पहचानो नाद को, बीना की झनकार को।

अपने पड़ोस में जो वघैलखण्ड है, ईकौ मुख्य नगर है रीवा। आज सैं सात-आठ सो साल पैलें इतै एक महापंडित सारंगधर भये हैं। सारंगधर ने बीना के सुरन के जानकार पुराने पुरखा नारद भरत मुनि, मतंग, दतिल के विचारन कौ सार लै कैं संस्कृत में संगीत-रत्नाकर ग्रंथ रचो है। उ ग्रंथ में बीना के गुन बखाने हैं, फिर बाद खों मुगलन के राज में मियाँ तानसेन भये हैं। तानसेन ने संगीत रत्नाकर की लीक खों आंगे बढ़ावो है। हिन्दी भाखा में ये संगीत सार, और रागमाला नाव के दो ग्रंथ लिखे। दोउअन में नाद की महमा बखानी है। बीना कौ गुन गावे में कौनऊ कोर कसर नइँ छोड़ी और इशारे सें जौ बतादवो कै बीना आदमी के भीतर सोऊ है। बीना सें निकरो नाद दोऊ लोक सुधारत है। जा लोक में धन देवे जस देवै, चार जनन कौ प्रेम देवै और देह छूट जाय तौ बड़े घर में भगवान के दरस देवै। वे कहत हैं-

''एक नाद जो भुक्ति देय, दूजा रंजक जान।
तानसेन मन गुन कहै, सुन्दर नाद बखान।।''(संगीत सार)

आगें तानसेन बताउत हैं कै नादके दो भेद होत हैं, एक नाद कहाऊत है 'अनाहत नाद', जो हैं भीतरी बीना का नाद जो देह के भीतर सदा-सर्वदा बजत रहत है। पै जी खों जोगी, ज्ञानी जन सुन पाऊत हैं। और दूसरो नाद है 'अहत नाद' जो नाद बाहर की बीना में होत है जा आहत नाद खों सब सुन सकत हैं, जौ मन खों अच्छौ लगत, कानन खों सुख देत,

''नाहत नाद जो भुक्ति दें, आहत रंजक जान।
भौ मंजन मियाँ प्रगट, नादहि कियो बखान।।'' (राग माला)

तानसेन मियाँ बताअत हैं कि आहत नाद कैसे प्रकट होत।-

''वायु अग्नि संयोग से, उपजत आहत नाद।
तानसेन संगीत मत, कहयौ सुखद ब्रह्माद्।।'' (राग माला)

जा बीना जो नाद की जननी है ईके गुन निरगुनिया संतन नै खूब गाये हैं। पै उनकी वीना है भीतरी वीना और गुन गावे वारे हैं संत कबीर, गुरु गोरखनाथ, भीगा साहेब, धरनीदास, पलट साहेब, दयावाई, और सरजोबाई जैसे अनेकन। वे कहत कै बीना कौनऊ होय भीतरी कै बाहरी, है तो ब्रह्म कुण्डली -

अकेली जौई बात नईया कै निरगुनियाँ संतन ने जे गुनन कौ बखान करो है। हजारन बरस पैले सें अपने जा देश में बीना के गुनन के गीत गूँज रये हैं।

भोले के भगत बताउत हैं कै माता पार्वती और भगवान शंकर जू दोऊ जनै जब मिल कैं आनन्दित होत हैं तो वा आनन्द की जो पैली हिलोर उठत है वैई पैली 'नाद' है पूरा संसार सब जीवधारी सबकौ मूल बौई 'महानाद' है। वीना कौ नाद उकी नकल है। जा ऐसी नकल है जैसी समुन्दर की नकल एक बूँद करै, पै भईया बूँद में कम गुन नईयाँ, जैसें वर के बीज में वर कौ विसाल विरछा दिखाई नई दैत है पै होत तो है। सौ ऐसे पै नकल में असल के कछु गुन तौ होतई हैं। सो मन कौ आनन्द दैवे में नाद जा संसार के सब साधनन सैं ऊपर है। सबद सब नाद में मिल जात सो सब वेद पुरानन कौ ज्ञान जौ नाद सीधो आत्मा में पहुँचा देत। सुनो जाय, गुनो जाय, एक बार तुमाओं मन ईमें डूब गवो तौ फिर समझो बेड़ा पार हो गवो। देखो सामने पौ फट रई, मीठी भोर हो रई, सपना टूट गया। सौचऊ मीठी भौर हो गई। सब मीठो है; मन, तन, फूल से हल्के और फूल से खिल रयै हैं; बीना अब भी बज रई है।

- ५, नूतन बिहार कालौनी, टीकमगढ़(म.प्र.)卐

कवि पद्माकर की कविताओं में परिवेश

- डॉ. संध्या टिकेकर

बुंदेलखंडवासियों के लिए यह गौरव का विषय रहा है कि महाकवि पद्माकर बुंदेलखंड के हैं। पद्माकर रीतिकालीन कविता के,अंतिम चरण के सफल एवं महत्वपूर्ण कवि हैं। वे इन अर्थों में महत्वपूर्ण कवि हैं कि उन्होंने रीतिकालीन कविता में आई कठोरता, रूढ़िवादिता को अपनी मौलिकता, मधुरता, कोमलता और सरसता से भरा और सफल अभिव्यंजनाएं दीं।

पद्माकर की कविता में उनके समय और परिवेश की आहट पग -पग पर मिलती है। हिन्दी की रीतिकालीन कविता का समय संवत् 1700 से संवत 1900 तक का माना जाता है। पद्माकर रीतिकाल की परंपरा के कवि हैं। उनके कविता काल में अनेक अनूठी बातें सामने आती हैं।

रीतिकालीन रचनाकारों का मुख्य उद्देश्य धन और यश का अर्जन करना था। इस बात को उस समय की महत्वपूर्ण घटना के रूप में देखा जाना चाहिए कि इस समय के आश्रयदाता राजाओं ने अपने आश्रित कवियों को उनके रचनाकर्म पर प्रसन्न हो कर इतना धन, दौलत, गांव और सम्मान दिया कि वे कवि सम्पन्नता के राजसी ठाठ बाट का उपभोग करने लगे और उनका यष चारों दिशाओं में फैला। आंश्रयदाता राजा और आश्रित कवियों के मध्य ऐसे अनूठे संबंधों पर अनेक साहित्यिक एवं सामाजिक दृष्टियों का चौंक जाना स्वाभाविक है। पद्माकर की कविता में आश्रय-आश्रित के सहज मधुर संबंधों के दृष्टांत मिलते हैं। संवत्-1856 में सागर के राजा रघुनाथ राव के दरबार में जब पद्माकर ने कवित्त सुनाया कि -

गज गज बकस महीप रघुनाथ राव,
याही डर धोखे कहूं काहू देई डारै ना ।
याही डर गिरिजा, गजानन को गोय रही ,
गिरितैं, गरैंते, निज गोद तै उतारै ना ।

कवि की कल्पना से चमत्कृत हो कर और अन्य एक कवित्त में अपनी तलवार की प्रशंसा सुनकर रघुनाथ राव ने पद्माकर को एक हाथी, दस गांव एक लाख रुपये तथा दरबारी पद का सम्मान प्रदान किया था।

इस समय तक रचनाओं को पढ़ने का उतना चलन नहीं था। कविताओं को सुनने सुनाने का चलन था। कवि दरबारों में अपनी कविताओं को सस्वर सुनाया करते थे। कवि पद्माकर ओजपूर्ण वाचन में दक्ष थे। उन्होंने बड़े ही प्रभावी ढंग से संवत् 1875 में ग्वालियर के महाराजा दौलतराव सिंधिया की प्रशंसा में जब यह कवित्त सुनाया कि -

मीनागढ़ खड़े बंबई समुंदर मंदराज बंग,
बंदर को बंद करि बंदर बतावैगो।
दिल्ली दहपट्ट पटना हूं को झपटटी करि,
कबहुंक लत्ता कलकत्ता को उड़ावैगो।

यह सुन महाराज सिंधिया इतने अभिभूत हुए कि उन्होंने सारी दरबारी वर्जनाएं तोड़कर कुष्ठ रोग से पीड़ित कवि पद्माकर को गले से लगा लिया था तथा उन्हें धन धान्य और सम्मान सें संपन्न कर दिया था।

इस समय के कवियों में अपने आचार्यत्व और कवित्व दोनों को सिद्ध करने की होड़ सी रहती थी। रीतिकालीन में काव्यशास्त्रीय फ्रेम में कसी हुई, लगभग एक ही तरह की रचनाएं हो रही थीं। वर्ण्य-विषय भी अत्यंत सीमित थे, रीति निरूपण ,राजप्रशस्ति तथा श्रृंगार पर केन्द्रित। बुंदेली का उपयोग था पर वर्चस्व ब्रजभाषा का था। कुछ ही छंद अधिकता से प्रयुक्त हो रहे थे जैसे -दोहा, कवित्त, सवैया और कुंडलियां। पर इन सब के बावजूद कविता यदि प्रभावित कर रही थी तो वह मात्र चमत्कार या व्यंग्यार्थ के कारण। कवि कविता में क्रिया व्यापार और ध्वन्यात्मकता से चमत्कृत कर रहे थे। पद्माकर वर्णित होली का यह दृश्य देखते ही बनता है-

छीनी पितंबर कम्मर से, सु बिदा दई, मीडि कपोलन रोरी
नैन नचाय, कही मुस्काय, लला फिर आईयो खेलन होली।

पद्माकर कहीं कहीं क्रिया शून्यता से भी चमत्कार लाते हैं जैसे -

जैसी की तैसी रही पिचकी कर, काहू न केसरी रंग में बोरी ,
गोरिया के रंग बूड़िगो सांवरो, सांवरे के रंग बूड़ि गई गोरी।

उनकी कविताओं में व्यंग्यार्थ बिखरा हुआ है-

एरी ! मेरी बीर, जैसे तैसे इन आंखिन सों
कढ़िगो अबीर, पै अहीर को कढ़ै ना।

इस समय की कविता में स्त्री विचार की दृष्टि से दो विपरीत पक्ष सामने आते हैं। एक वह जिसमें स्त्री को भोग्या मानकर, उसके साथ वस्तु-उपयोग सा व्यवहार किया गया है। इस विषय में कवि और आलोचक मृत्युंजय ने लिखा है कि '' इन कविताओं में स्त्री छवि का वस्तुकरण है। उसका दोयम दर्जा है, यौनिक के अलावा उसकी और पहचान बहुत कम है और ये कविताएं पुरुष दृष्टि से देखी हुई स्त्री छवि है।''[१] - पद्माकर की कुछ कविताएं हमारा ध्यान इसके दूसरे पक्ष की ओर भी खींचती हैं। कहीं कहीं इनकी नायिका प्रेमाभिव्यक्ति में पूर्णतः स्वतंत्र दिखती है। उदा. -

फाग की भीर अभीरन में, गहि गोविंद लै गई, भीतर गोरी
भाई करी मन की पद्माकर, ऊपर नाई, अबीर की झोरी।

तो कहीं कहीं ऐसे भी चित्र मिलते हैं कि नायिका होली आदि के बहाने नायक से लिती तो है, किन्तु कुछ ही

समय बाद अपनी सामाजिक स्थिति का ध्यान कर वह स्वयं को अनेक प्रश्नों में घिरा पाती है। यथा-

कैसी करूं, कहां जाऊं, कासै कहौं, कौन सुने
कोऊ तो निकारो ,जासो दरद बढ़ै नहीं।

यह उदाहरण मन की ऊहापोह और व्यंग्यार्थ की सुंदर अभिव्यंजना है।

यौनिकता की दृष्टि से इस काल का परिवेश कालिदास से ले कर विद्यापति तक की उस परंपरा का निर्वाह सा करता दिखता है, जहां काम को कला का दर्जा प्राप्त है। ''तब का काम न तो निजी दायरे में बांधा गया था, न ही सार्वजनिक रूप से खारिज किया गया था।''[२] यही कारण है कि रीतिकालीन कवियों में यौनिकता को ले कर कोई नीतिगत अपराध बोध नहीं है।

पद्माकर के 'जगद्विनोद' में तत् समय के परिवेश के अनेक साक्ष्य मिलते हैं। उन्होंने हिन्दू धर्म की चर्चा करते हुए वर्ण व्यवस्था के क्षत्रीय धर्म का उल्लेख किया है- छत्रिन के छत्र छत्र, धारिन के छत्रपति, छटाव छिति छेम के छवैया है। इसी प्रकार ''नवल गूजरी ऊजरी निरखी ऊजरी सेज'' इस पंक्ति से उस समय की गूजर जाति के होने का संकेत मिलता है।[३] भारतीय समाज के परंपरागत ढांचे के अनुरूप, घर की स्त्रियां भोर से पहले उठती हैं और सबसे बाद में सोती हैं। पद्माकर कहते हैं कि - खान पान पीछू करति, सोवती पिछले छोर।
प्रान पियारे तें प्रथम, जगत भावती भोर ।

जगद्विनोद में पति-पत्नी, सास, ननद, जेठानी, देवर आदि के संबंधों की चर्चा है। सास-जिठानी की रुचि को ध्यान में रख कर पहरावा करने की सलाह बहू को दी जाती है -''तौ लौं न जाई तहां पहिरै, किन जौं लौ रिसाई न सासु जिठानी।'' घर में रहने वाली स्त्री पर अनेक बंधन होने का संकेत पद्माकर की कविता में है यथा-

''कहै पद्माकर सुभारन के गए आए
सांची कहु मोसो आजु कहां गई आई है ?''[४]

उस समय के लोक विश्वासों पर भी उनकी कविता प्रकाश डालती है कि शकुन-अपशकुन का विचार समाज में प्रचलित था। अंगों का फड़कना, सुबह दूध दुहते देखना, चौथ का चांद देखना आदि से जुड़ी मान्यताएं इस समाज में थीं ।''

पाहुनी चाहै चल्यौ जबहिं
तबहिं हरि सामुहैं छींकत आवै।''[५]

पद्माकर दरबारी कवि थे। उन्होंने आश्रयदाता राजाओं के युद्ध देखे थे। राजाओं की संपत्ति, उनके अस्त्र-शस्त्रों के भंडार, उनकी सेनाओं के हाथी, घोडे, ऊंट आदि, सुरक्षा व्यवस्था आदि को निकट से देखा जाना था। इसी कारण उनकी वीर रस की कविताओं में युद्धों के जीवंत दृश्य मिलते हैं। ध्वन्यात्मकता से युद्धों की स्पष्ट हुंकार सुनाई देती है। वीर काव्य ग्रंथ ' हिम्मत बहादुर विरुदावली' में पद्माकर ने बांदा के राजा गुमानसिंह के सेनापति अजयगढ़ वाले अर्जुनसिंह नोने के साथ हुए हिम्मत बहादुर के युद्ध का आंखों देखा वर्णन किया है जिसमें ध्वन्यात्मकता ध्यान खींचती है-

चलो तोप धां धां, धंधा धाई जग्गी।
धड़ा धड़ धड़ा धड़ धड़ होने लग्गी।

मूलतः पद्माकर की कविता दो स्वरूपों में सामने आती है। एक-रीति निरूपण विषयक और दूसरी-आत्मबोध संबंधी। प्रबोधपचासा तथा गंगालहरी उनकी आत्मबोध की रचनाएं हैं। इनमें उस वस्तुस्थिति की चर्चा है जो मनुष्य के जीवन के उत्तरार्ध में वैराग्य का भाव जगाती है। कहा जाता है कि कुष्ठ रोग हो जाने के बाद पद्माकर जी को अपने वैभव विलासितापूर्ण जीवन से संबद्ध कर्मों के प्रति वितृष्णा का भाव जगा था। फिर उन्होंने अपना शेष जीवन कानपुर में गंगा के किनारे बिताया था और वे गंगाजल के सतत स्पर्श रोग मुक्त भी हो गए थे। -

काहू ने न तारे , तिन्हें गंगा तुम तारे ,औरे
जेते तुम तारे तेते नभ में न तारे है।

वस्तुतः गंगालहरी पद्माकर के शारीरिक कष्टों से उपजी पीड़ा है। अनेक आलोचकों ने इनकी आत्मबोधपरक रचनाओं को भक्ति काव्य में सम्मिलित किया है किन्तु पद्माकर भक्त कवि नहीं थे। गंगा नदी के प्रति उनकी भक्ति नहीं, गहरी आस्था थी क्योंकि गंगा के जल तत्वों के निरंतर संपर्क से वे स्वस्थ हुए थे। उनकी रचनाओं में स्वकर्म के प्रति वितृष्णा का भाव है, ईश्वर को पाने की वह तड़प नहीं जो भक्तिकालीन संतो में मिलती है।

प्रकृति के सहज रूप के चितेरे पद्माकर ने अपने शब्द-रंगों की तूलिका से प्रकृति के अनेक चित्र उकेरे है। उन शब्द चित्रों में इतनी सजीवता अनुभूत होती है कि उनको पढ़कर वसंत, ग्रीष्म, वर्षा ऋतुओं के बीच रहने का भाव उपजता है। वसंत ऋतु की ये पंक्तियां तो पद्माकर की पहचान विशेष बन गई हैं -

कूलन में, केलिन में, कछारन में, कुंजन में
क्यारिन में, कलिन में, कलीन किलकंत है।
कहै पद्माकर, परागन में, पौन हू में
पानन में, पिकन में, पलासन पगंत है।

वस्तुतः पद्माकर ने शास्त्रीयता के बंधन से निर्जीव होती जा रही रीतिकालीन कविता को मधुरता और कोमलता के रस से सिंचित कर, पुनर्जीवित किया और कविता के, उत्तर मध्य काल के अंतिम चरण को समृद्ध बना दिया ।

संदर्भ सूची -

1- मृत्युंजय, आलोचना अंक-61, पृष्ठ-51 राजकमल प्रकाशन दिल्ली ।
2- वही, पृष्ठ 52।
3- दीपा, लेख - पद्माकरकृत जगद्विनोद में अभिव्यक्त सामाजिक जीवन मूल्य, साहित्य कुंज, विकीपीडिया से ।
4-वही
5- वही

-प्राध्यापाक हिन्दी शा. कन्या.महा.बीना (म.प्र.)
मोबा. 7987084135 卐

चबूतरा : एक दृष्टिकोण

– डॉ. ललित मोहन

क्या कभी आपने सोचा है कि कुछ दशक पूर्व तक हमारे आस-पड़ोस ही नहीं बल्कि समाज में जो एकजुटता, एक दूसरे के प्रति सामंजस्य की भावना हुआ करती थी, उसके तीव्रगति से पतन के कारण क्या हैं? मैं मानता हूँ कि उनमें से एक महत्वपूर्ण कारण है-हमारे घरों के बाहर से चबूतरों का लुप्त हो जाना। महानगरीय संस्कृति में जीवनयापन करने वाले, बगल के फ्लैट में कौन है इसकी जानकारी न रखने वाले आज के युवाओं को कदाचित इस बात का बोध भी न हो कि चबूतरा होता क्या था?

हमारे *बुंदेलखंड* में ''चबूतरे'' को ''चौंतरा'' कहते थे जो प्रत्येक घर का सर्वप्रथम हिस्सा हुआ करता था। उसके बाद होती थी ''पौर'' जहाँ बब्बा (दादाजी) एक और छोटे से दरी या गलीचा बिछे ''एल शेप'' के चौंतरे पर एक किनारे मिट्टी की बनी तकिया जैसी स्थायी आकृति पर हमेशा अधलेटे से टिके हुए बैठे बाहर की तरफ नज़र रखते और आतेजाते लोगों से निरंतर संवाद बनाये रखते। पौर के बाद या बगल में ''बैठक'' होती जिसे हम ''बैठका'' कहते, उसके बाद एक छोटी सी ऊँची जगह थी जिसे शायद मंच की तरह उठा होने से ''मंचपौरिया'' (छोटी सी पौर) कहा जाता। हमारे यहाँ जूते चप्पल यहाँ से आगे निषिद्ध होते और इन्हें करीने से पंक्तिबद्ध रखा जाता। उसके बाद ''आँगन'' जिसके बीचोंबीच ''तुलसीघरा'' होता था। नीचे कमरे होते उन्हें इस तरह नाम दिए जाते-''मड़ा'' (घर का भण्डार इसी में था), गायों का कमरा-''सार'', शौच वाला कमरा वाला कमरा- ''.'', नहाने वाला कमरा-''गुसलखाना'' कहलाता परंतु अधिकांश लोग आँगन में ही नल के नीचे नहाते (चौबीसों घंटे नगरपालिका का शुद्ध पानी फुल फ़ोर्स से आता था), जाड़ों में सुबह सुबह ही पीतल की बड़ी सी ''नाद'' में उस जगह पानी भरकर रख दिया जाता जहाँ सूर्य की पहली किरण आती हो। स्कूल जाने के पूर्व तक पानी प्राकृतिक गुनगुना होकर स्नान योग्य हो जाता। ऊपर की मंजिलों पर पच्चीस तीस फुट तक लंबे बड़े बड़े कमरों को ''अटारी'' कहा जाता, उनका बाकायदा नामकरण इस तरह होता-जहाँ ''ठाकुरजी'' का सिंहासन विराजमान था उसे ''पूजा वाली अटारी'' जहाँ भोजन बनता, खाया जाता उसे -''चौका वाली अटारी'' और बाहर का कमरा जिसकी छत पत्थर की छत्तियों की थी को-''छत्ती वाली अटारी'' कहते थे। ऊपर की छत को ''अटा'' कहते थे। आँगन से सटी कवर्ड जगह पर ऊँची पटरी पर पानी के मटके रखे जाते जिसे ''घिनौची'' कहते थे। सभी कमरों और अटारियों में दीवारों में खोखली पोल बनाकर बड़ी बड़ी ''बुखारियाँ'' होती थीं। घर के पीछे के हिस्से में कच्चे कमरे और खाली जगह थी जिसे ''बाड़ा'' कहते और यहाँ भूसा, चारा और जलाऊ लकड़ी इत्यादि का भंडारण किया जाता। अमरुद और बेर के पेड़ भी यहीं थे।

घरों के बाहर ''चौंतरे'' निजी होते हुए भी सबके लिए सुलभ थे, उपलब्ध थे। सुबह सुबह इन्हें धोकर गोबर से लीप दिया जाता लोगों का बैठना, आवागमन शुरू हो जाता। शाम होते ही आसपास के घरों की महिलायें एक दूसरे के चबूतरों पर बैठकर सप्रेम वातार्लाप करतीं, कहीं-कहीं भजन और सत्संग हुआ करते। बच्चे एक चबूतरे से दूसरे पर उछलते कूदते खेला करते, न तो जाति का भेद होता और न ही लड़का लड़की का। छुट्टियों या फुर्सत के दिनों में इन्हीं चबूतरों पर ''शतरंज'' और ''चौपड़'' की लंबी लंबी बाजियाँ खेलीं जातीं जिनमें खेलने वालों से अधिक उत्साह दर्शकों में दिखाई देता। इन्हीं चबूतरों पर इतवार को ''नाऊ कक्का'' आकर उकड़ूं बैठकर हमारे बाल काटते और पिता की तीखी निगाहें देख रहीं होतीं कि बाल कहीं लंबे तो नहीं रखे जा रहे।

आतेजाते लोग, विशेषकर महिलायें क्षणभर के लिए रुककर चबूतरों पर बैठी महिलाओं से कुशलक्षेम इस तरह पूछतीं-''काय जिज्जी, क्यांय खों चलीं? या फिर ''काय काकी, अब तुमाई तबियत कैसी है या कक्का अब कैसे हैं? बच्चे खेलते कूदते बेधड़क किसी के भी घर में घुस जाया करते, खा पी लिया करते। किसी के घर अतिथि का आगमन होता तो टेशन से प्रेमनगर की तरफतांगे का रुख होते ही कम से कम चार मोहल्लों के लोगों को खबर हो जाती कि फ्लाने के मामाजी आ गए या फलाने के लाला (दामाद) मौड़ी (बिटिया) की विदाई कराने आ गए। ये सब चबूतरों पर बैठे या पुरुष या महिलाओं के कारण ही संभव हो पाता। सारी महिलायें उन घरों में पहुँचकर दामाद से अनुरोध करने लग जातीं कि बिटिया को अभी महीना खांड़ और मायके में रहने दें, ऐसी क्या जल्दी है कि डेढ़ महीने में ही विदा कराने आ गए। नहीं मानने की दशा में दामादजी को ही दस पंद्रह दिन अतिरिक्त रोकने का प्रयास किया जाता। जब बेटी ससुराल जाने लगती तो सारे चबूतरों पर डबडबाई आँखें लिए खड़ी महिलायें गले मिलकर उसे विदा करतीं। वहीं बेटी या अन्य के घर आने पर हर दरवाजे पर प्रसन्नचित्त महिलाएं ''काय बिन्नू, आ गयीं'' और ''ई बार तौ दो चार महीना रुकौ'' कहकर स्वागत करतीं।

किसी के भी घर में शादी विवाह, फलदान, टीका जैसे अवसरों के कार्यक्रम के लिए चबूतरों की कतारें सर्वसुलभ होतीं, गली के एक कौने से दूसरे कौने तक चबूतरों पर पंगतें सज जातीं, परस्पर सहयोग करने की होड़ सी लगी रहती। चबूतरों की रौनक देखते ही बनती थी। कई सप्ताह यहाँ उत्सव का माहौल बना रहता।

ये चबूतरों के ही कारण संभव था कि परिवार घरों की चारदीवारी में संकुचित न होकर गली और मुहल्लों में फैले हुए थे। कालांतर में घरों में सदस्य संख्या बढ़ने से जगह सिकुड़ती गयी, कुटुम्बों में पहले भाइयों में बँटवारे हुए फिर पिता पुत्र में, लोगों ने चबूतरों को खत्म करके कमरे बना लिए, सड़कों और गलियों तक पर गाड़ियाँ चढ़ाने के रैंप करके उन्हें भी छोटा कर

दिया, नालियों पर चढ़ गए हैं लोग, लगा जैसे चबूतरे नहीं सामाजिकता ही समाप्त हो गयी, जगह नहीं सिकुड़ी, लोगों के दिल सिकुड़ गए। अब किसी की बहिन बेटी मायके आती है तो स्वागत करती आँखें और विदा होतीं हैं तो अश्रु बहाती आँखें कहाँ से होंगीं जब वे घर के किसी कौने में बंद टीवी पर सास बहू के झगड़ों या घरफोडू नाटकीय अंदाजों का बनावटी मजा ले रहीं होंगीं। बच्चे अब आपस में खेला कूदा नहीं करते, लोग कहते हैं ज़माना एडवांस हो गया है, मैं कहता हूँ बैकवर्ड हो गया है, हमारे समय लड़का लड़की जिस स्वच्छंदता से साथ खेलते, आज संभव ही नहीं। हमारे दोस्तों में जितने लड़के होते उससे कहीं अधिक लड़कियाँ रहतीं, साथ साथ बचपन से किशोर और युवा होते, किसी तरह की कोई मलिन भावना नहीं होती। हर घर के मातापिता सभी बच्चों पर पैनी नज़र इसीलिये रख पाते कि चबूतरे थे।

लगता है चबूतरे समाप्त नहीं हुए, समाज के अंदर से पारदर्शिता ही चली गयी, सब लोग अपने मुर्गी के दड़बे जैसे बंद घरों में दुबककर बैठ गए हैं। जगह सिकुड़ी, दिल सिकुड़ गये, सामाजिक भावनाएं मृतप्राय हो गयी हैं।

– डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
मोबा.–9425452128 卐

बुन्देली कहानी –

राजा कौ निपटारौ

–ओम प्रकाश तिवारी ''कक्का''

पुराने जमाने को बतकारो हैं, एक रियासत के राजा अपनी फौज–फाटा खों लैकें, हाथी पै बैठ कें हाथन में कमल को फूल लेंकें, अपनी पिरजा कौ हाल–चाल जानवे निकरे। ओई गैल सें एक बैन भइया खों लेंकें आ रई ती, सो फौज–फाटा देख कें डरा गई सो बैन अपने भइया खों लेंके एक रूख पै चढ़ गई। राजा की सवारी औई रूख के नैंचें हो कैं कड़ी, सो राजा के हाथन में कमल कौ फूला देख कें ऊ बैन कौ हल्को भइया कमल कौ फूला मांगन लगो, जा बात राज नें सुन लई, सो राजा ने अपने सिपाइयन खों हुकुम दओ कै देखौ ई रूख पै को चढ़ो। सिपाइयन नै जब रूख पै चढ़ै बैन–भइया खों देखौ सो उनै नैंचे उतारो, बे दोई बैन–भइया भौतई डरा रये ते, राजा उनें अपने संगै महलन में लुआ ले आय और ऊ बिटिया सें राजा ने ब्याव करकें ऊये अपनी रानी बना लवो।

अब तौ बैन–भइया बड़े चैन सें महलन में रन लगे। कछू दिनन में ऊरानी के एक कुंवर सोऊ हो गवो। खूब खुसियाँ मनाई गईं। राजा कें एक और रानी हती सो ऊ बड़ी रानी खों ई कौ वड़ौ बुरओ लगौ। बे ऊ हल्की रानी खों सौत जान कें ऊसें जरन–वरन लगीं। ऊपर सें दिखावटी प्रेम दिखावें। एक दिना बड़ी रानी नें हल्की रानी सें कई कै तुमनें भौत दिनन सें नौनी चुटिया नईं करी, वताओं हम तुमाई नौंनीं चुटिया कर देवें। सो हलकी रानी ने अपनों मूड़ उगार दवौ, और बड़ी रानी हलकी रानी की चुटिया करन लगी। चुटिया करतई में बड़ी रानी ने हलकी रानी के मूड़ में एक कील ठोक दई, कील के ठोकतनई हलकी रानी चिरइया बन गई, और फुर्र सें उड़ गई, और ताल के करके के एक रूख पै रन लगी।

इतै हलकी रानी कौ कुँवर मताई के दूध खों रोवैं, सो हलकी रानी कौ बौ हलको भइया ऊ हलके से कुँवर खों लैं कें, ताल कें करकै जाके कवै ''आरी आरी मोरी ताल की चिरइया, तोरे रोवें राजकुमार'' सो वा रानी सें बनी चिरइया आकैं अपनें कुंवर खों दूध पिया जावै, और फिर उड़ जावै। ऐसई ऐसई भौत दिना कड़ गये। इतै राजा हलकी रानी खों ना पाकैं, भौतई दुखी रन लगे, उननें सिपाइयन खों हुकुम दऔ कै रानी कौ पतो लगावो। सिपाइयन ने दुक–दुक कैं सब पतौ लगा लवो, और राजा खों सबरी बातें बता दईं।

एक दिना राजा ने दुक कैं सब देखवे के लाने अपनौं भेष–बदल कैं, उ रानी के हलके भइया के पाछें–पाछें जाकें सब देख लवो। औई बखत जब रानी के भइया ने कुंवर खों लै जाकै ताल के करकै जाकें कई कै–''आरी आरी मोरी ताल की चिरइया'', तोरे रोवैं राजकुमार सो उतै सें ऊ रानी सें बनी चिरइया ने रोऊत भय कई– ''आरे, आरे मोरे प्यारे भइया, तैनें मांगो कमल कौ फूल'' और उड़ कैं आ गई।

जैसईं रानी राजकुमार खों दूध पियाउन लगी सो तुरतई राजा ने अपनौ सुआपा खोल कें रानी के ऊपर डाल दओ, वे तो दुक दुक कैं सब देख रयते, सो राजा नें जो इतनी फुरती सें करौ कैं वा चिरइया जानईं नईं पाई, और सुआपा में फंस गई। राजा नें सुआपा में फंसी चिरइयां खों पकर लओ, और सुआपा में फंसे सें बा कील रानी की मूड में ठुकी हती सो वा खिंच गई, कील के खिंचतई बा चिरइया, जईं की तईं हलकी रानी बन गई, राजा ने हलकी रानी खों देखतनईं अपने गरे से लगा लवो, और दोऊ जनें रोउन लगे।

राजा नें रानीं से सबरी बातें पूँछी, सो हलकी रानी ने सबई बातें साँची साँची बतादई। हलकी रानी नें राजा सें जा बात सोऊ मनवा लई कै ईके लानें बड़ी रानी सें कछू ना कई जाय। राजा हलकी रानी खों लेंकें अपनें महलन में लौट आये।

बड़ी रानी खों जब सबरी बातन कौ पतौं चलौ तो बे राजा के चरनन में लोट गई, और राजा और हलकी रानी सें माफी माँगन लगीं। राजा ने हलकी रानी के कय सें बड़ी रानी खों माफ कर दवो। दोऊ रानी सगी बैनन जैसी एक संगै, खुशी–खुशी राजा के संगै रन लगी।

हती कानियां सो पूरी भई।

''बादई ने बनाई टिकटी, हमाई कांनियां निपटी''

–ग्रा.पो.–ज्यौरा.मौरा, वि.खंड–पृथ्वीपुर, जिला–निवाड़ी (म.प्र.)
हाल निवास–विनोद कुंज कालौनी चकरा रोड, टीकमगढ (म.प्र.)
मो0–9179256999 卐

बुंदेला महारानी चंद्र कुंवरि कृत 'चंद्र प्रकाश'

–'विनोद मिश्र सुरमणि'

भारतीय राजघरानों या राजवंशों में महारानियों का भक्त होना एक परंपरा सी है ऐसे उदाहरण अधिकांश राम भक्ति और कृष्ण भक्ति की उपासना के ही मिलते हैं राजस्थान में भक्त शिरोमणि मीरा की अनन्य भक्ति और श्री कृष्ण के प्रति उनका समर्पण युग युगांतर तक जाना जाएगा वही बुंदेलखंड की परम भक्त महारानी कुंवरि गणेश भगवान श्री राम की परम भक्त हुई है जिनके वंश में होकर श्री रामलला जी ओरछा प्रतिष्ठित हुए जिसकी चर्चा कण-कण में व्याप्त है –

राजा मधुकर शाह की, रानी कुंवरि गणेश ।
अवधपुरी से ओरछा, लाईं अवध नरेश ।।

भक्ति की पराकाष्ठा गणेश कुंवरि महारानी के व्यक्तित्व से मिलती है वर्तमान ग्वालियर से लगभग 65 किलोमीटर दूर करईया ग्राम के परमार श्री अनिरुद्ध सिंह जी की सुपुत्री महारानी गणेश कुंवरि थी यह कथन प्रचलित है कि गणेश कुंवरि को बुंदेलखंड की मीरा कहा जाता है मेरा मानना है कि इस प्रकार के प्रतीकात्मक कथन साहित्यिक विद्वता तो बता सकते हैं परंतु किसी के व्यक्तित्व को तुलनात्मक रूप से सामने नहीं रख पाते । मीरा भगवान कृष्ण की अनन्य भक्त थीं जो श्री कृष्ण को ही अपने जीवन का आधार मानती थी

मेरे तो गिरधर गोपाल,दूसरो ना कोई
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई

भक्त जब अपने प्रेम की अभिलाषा या पराकाष्ठा एक रिश्ते से जोड़ता है तब सामाजिक और पारिवारिक संबंधों से जूझता भी है यहां मीरा अपने स्वामी के रूप में श्रीकृष्ण को प्रस्तुत करती हैं जिसके फलस्वरूप या प्रतिक्रि या में राणा की प्रताड़ना, उनकी उपेक्षा तथा दंड प्राप्ति भी मीरा को स्वीकारना पड़ी है। महारानी गणेश कुंवरि का चरित्र या व्यक्तित्व इसके परे हैं वह भक्ति के वश अपने प्रभु श्री राम को रामलला के रूप में ओरछा लाती हैं और मातृभाव का मान देकर अपनी गोदी में श्री राम को पुख्य नक्षत्र के दृढ़ संकल्प के साथ यात्रा कर लाती हैं इस बीच हुई अनेक घटनाएं जो कि सभी सकारात्मक रूप में सामने आई महारानी गणेश कुंवरि के संकल्प को बाधित नहीं कर पाईं, बल्कि महाराज मधुकर शाह के भक्त व्यक्तित्व का पूर्ण सहयोग उनके साथ रहा ।

कहने का तात्पर्य मीरा और गणेश कुंवरि भक्ति की पराकाष्ठा तो है परंतु समानता की स्थिति में नहीं। देखा जाए तो मां कौशल्या को जो गति प्रभु श्रीराम ने प्रदान की थी वही गति महारानी गणेश कुंवरि को प्राप्त हुई है अर्थात माता कौशल्या से कुंवरि गणेश की तुलना या समानता करना न्याय संगत सार्थक और तर्कपूर्ण। बुंदेलखंड के इतिहास में जब हम भक्त रानियों की चर्चा करते हैं तब एक प्रश्न मेरे सामने खड़ा हो जाता है कि बह क्या कारण है कि बुंदेला शासकों की महारानियां ही भक्त, वाणीकार धार्मिक प्रतिष्ठापक एवं स्थापक हुई जबकि यह परंपरा उनकी संतान पक्ष से अथवा पुत्रियों से नहीं रही यदा-कदा उदाहरण मिल सकते हैं या होंगे परंतु अधिकांशतः परमार या धंधेरे परिवारों की कन्यायें जो बुंदेला शासकों के यहां व्याहीं गई वह भक्त हुई उनकी भक्ति और भक्ति के फलस्वरुप लिखा गया साहित्य जन-जन में व्याप्त है ऐसा भी कह सकते हैं कि राजवंशों में धार्मिक भावना की धारा भक्ति का संवर्धन महारानियों की वजह से ही बना रहा है गणेश कुँवरि(मधुकर शाह) महारानी बखतकुंवरि(शत्रु जीत) बृजभान कुमारी(नरेश प्रताप सिंह) कमल कुँवरि(विश्वनाथ सिंह) रतन कुंवरि(सामंत सिंह जूदेव) कंचन कुमारी(सामंत सिंह द्वितीय) नारायण कुंवरि प्रेमलता(विश्वनाथ देव छतरपुर) प्रेमसखी, प्रेम कुंवरि, कमल कुंवरि सोनकुंवरि, आदि आदि महारानियां भक्त रचनाकार हुई है इनमें से अधिकांश रानियों ने ब्रज एवं अवध में निर्माण कार्य कराए ।

दतिया महाराज गोविंद सिंह जी की बड़ी रानी जिन्हें बड़ी सरकार के नाम से जाना जाता है भक्त वाणीकार हुई है महाराज गोविंद सिंह दतिया के वे शासक रहे हैं जिन्होंने काले पानी की सजा में हप्पू चिड़िया(जनश्रुति के आधार का नाम)को मारा था पहलवानी साहित्य संगीत के संरक्षण के लिए उन्होंने कार्य किया था महारानी चंद्रकुंवरि की एकमात्र कृति 'चंद्र प्रकाश' प्रकाशित कृति है जिसे उनके पुत्र दतिया नरेश श्री राजा बहादुर बलभद्रसिंह जूदेव की धर्मपत्नी श्री रानी गिरिराज कुंवरि जूदेव बलरामपुर बाली ने संवत 1998 तदनुसार वर्ष 1941 में प्रकाशित कराया था।

इसका प्रकाशन लखनऊ के नवल किशोर प्रेस से हुआ मूल्य एक रुपए 50 पैसे रखा गया था सुंदर और मजबूत जिल्द में यह कृति 80 पृष्ठों में प्रकाशित की गई है चंद्रप्रकाश कृति में 150 छंद है जो निम्न प्रकार से वर्गीकृत किए जा सकते हैं पद ,सवैया कविता, दोहा, बधाई, झूला, बनरा, दादरा, गारी, होली, रसिया, जंगला, देवता, जिला, जिला पर्ज गजल आदि रखे गए हैं इन पदों का लेखन कार्य के उपरांत गायन भी किया गया होगा पद या उक्त छंदों के साथ राग का भी नाम उल्लेखित है जिनमें यमन, भैरव, परज, भैरवी, आशावरी, सारंग, काफी, देश, हमीर, झिंझोटी, बसंत, गौरी, खमाज, पीलू, श्री, मालकोश गॉड मल्हार बिहाग, मल्हार घुटिया, तथा ललित को दर्शाया गया है इससे स्पष्ट है की पदों को संगीत बंद्ध कर उन्हें गाया भी गया हैं । यहां यह भी विमर्श किया जा सकता है कि महारानी चंद्रकुंवरि संगीत कला में निपुण थी और वह स्वयं अपने लिखे पदों को संगीतबंद्ध करती होंगी राग के साथ ताल भी कहीं-कहीं लिखे गए हैं। कृति में एकताल एवं दादरा का उल्लेख

किया गया है चंद्रप्रकाश कृति में दिए गए पदों में श्री राम श्री जानकी, श्री कृष्णा, श्री राधा जी की जन्म बधाई एवं रितु काल के पद लिखे गए हैं यहां पर यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं की चंद्र कुमारी किसी एक भक्ति भाव की रचनाकार नहीं हैं वह श्री राम के पदों का लेखन करती हैं तो वही श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन उनकी काव्य सृजनता में मिलता है वह मीराबाई की तरह एक पद में लिखती हैं-

मेरे पति कृष्ण चंद्र मोर मुकुट धारी
शंख चक्र गदा पद्म कौस्तुभ मणि न्यारी
दीनन के दीनानाथ संतन हितकारी
कर जोरे करण अर्ज सुनिए बनवारी
चंद्र कुंवरि शरण आई रखो गिरधारी (143)

एक अन्य पद मैं लिखती हैं-

कृष्ण बिना कैसे कटे रतिया
ले अक्रूर गए मथुरा को भेजी नहीं पतियां
सुनियत है एक तंत्र की दासी लगे बाकी बतियां
चंद्र कुवरि के प्रीतम प्यारे लागो प्रभु छतियां

श्रीकृष्ण के प्रति उनकी अनन्य भक्ति के उदाहरण हैं यह पद परंतु वह श्री राम के जन्म उत्सव की बधाई जानती हो कि बधाई राधा जी की जन्म बधाई भी लिखती हैं कहने का तात्पर्य चंद्र कुमारी एक वाणीकार हैं जो अपनी कल्पनाशील अभिव्यक्ति से भक्ति की रस धारा में रचना करती हैं और इस तरह का प्रभाव ब्रज और अवध के बीच एक सेतु बनाता है ।

चंद्र कुंवरि महारानी की पद शहर एवं ग्राम अंचल के कलाकार उत्सव अनुसार तथा रितु उत्सव में बड़े चाव से गाया करते हैं स्थानीय मंडलियों मंदिरों के उत्सवों में इनके पदों का गायन अधिकांश होता है चंद्रकुंवरि के प्रमुख लोकप्रिय पदों में---

यशोदा मैया चिर जीवो तेरा छौना
करि है बालचरित नाना विधि,अधिक अधिक नित होना।
शिव ब्रह्मा जा कौ ध्यान धरत हैं
एसो भायो न होना
लोक चउदह कौ जौ स्वामी,
शो बृज भयो खिलौना
चंद्र कुंवरि के मनके मनोहर अब मन भाये हौना ।।

यह पद बुंदेलखंड में मंगल उत्सव जन्माष्टमी शादी के अवसर पर गाया जाता है लोग आनंदित होकर नाचने लगते हैं। महारानी चंद्र कुंवरि जी का एक लोकप्रिय दादरा---

देखो सखी छवि या बनरे की
सिर्फ सोने कौ मौर विराजे
उर मणिमाल सुछवि गजरे की
वागौ लाल लसत पनरथ की
जेसी सुछवि बदन सेहरे की
चंद्र कुंवरि लखि चेरी भई है मति गति हेर हरति सियरे की।

उक्त पद विवाह पंचमी के अवसर पर बड़े ही उत्साह है से आज भी गाया जाता है बुंदेलखंड में विवाह अवसर पर बनरा बनरी गाने का प्रचलन है जिसमें महारानी चंद्र कुंवरि के पदों का गायन भी होता है महारानी चंद्र कुंवरि जी का निम्न पद स्थानीय कलाकारों ने आकाशवाणी व दूरदर्शन के प्रसारण में भी अनेकबार गाया है इसकी लोकप्रियता जन-जन में आज भी विद्वान है--

नंद लाल नजर मोहि मार गयो ये
भोंह कमान नैन रतनारे मोतन मृदु मुस्कुराए गयो ।
नहिं भावै पति घर पुर परिजन कछु टोना शो डार गए
चंद्र कुंवरि कछु कहत बने नहिं हियरे बीच समाई गयो।

होली पर गाये जाने वाले पद भी आज उनकी रचना धर्मिता का स्मरण कराता रहता है

रंग डालो न छैल मोरी सारी बिगरै
सारी बिगरे मोरी चूनर विगरै ।

महारानी चंद्र कुंवरि ने प्रारंभ में एक दोहे के माध्यम से लिखा है-

जहं तक मोरी पोंच में सो मैं करी बखान
चरण कमल कर राखवी बिरदावलि निज जान ।

उनकी लेखन शैली सहज सरल एवं बुंदेली के लालित्य से पूर्ण हैं अंत में उन्होंने अपना परिचय एक कवित्त के द्वारा प्रस्तुत कर वाणी का समापन किया है।

राजति सुख धाम जहां मनपुरा सुग्राम राव रणधीर सिंह देव के समान है
तिनकी है बेटी पायो चंद्र कुंवरि नाम त्यों देवी के रूप भक्ति शिल गुणगान हैं
रानी लोकेंद्र जू की महाराजा गोविंद सिंह दतिया सुहायो नग्र सुख की निधान हैं
तिननें रचौ ग्रंथ कृपा पाई कृष्ण जू की भूल चूक सुजन सुधार ले ली मान है।

महारानी एक दोहा के द्वारा बड़ी ही विनम्रता से पाठक जनों से माफी मांगती हैं-

कर पेड़ों टेडों लिखी चित्त नहीं चिर होई
भूल चूक सब माफकर जतन राखी लियो सोई ।

और चंद्र प्रकाश के अंत में वे लिखतीं हैं

जै जै जै गुरुदेव जू श्री कविंद्र मणि मौर
बनी बेगि बिगरी सुजिन तनक कृपा की कोर ।

यहां पर उन्होंने अपनी पूज्य गुरु देव का स्मरण किया है इससे यह स्पष्ट होता है कि चंद्र कुंवरि के साहित्य गुरु कोई वाणीकार कभी ही होंगे जिन्हें उन्होंने कविंद्र के रूप में स्मरण किया है।

मैंने चंद्र कुमारी के पदों को पूज्य पिता श्री पंडित महेश मिश्रा मधुकर के मुखारविंद से अनेक बार सुना है दतिया राजघराने के परिवार से जुड़ाव होने के हित यह प्रकाशित कृति पूज्य दादा पंडित नारायण दास शर्मा जो कि एक चित्रकार तथा महाराज दतिया लोकेंद्र बहादुर गोविंद सिंह दतिया स्टेट के निजी सचिव थे उनके निजी ग्रंथालय से यह पुस्तक पढ़ने का अवसर मिला।

-संगीत गुरुकुल, मधुकर मार्ग
पकौरिया महादेव दतिया मध्य प्रदेश
मो.- 9893437616, 9425742748 ♫

बुन्देलखण्ड के महत्वपूर्ण पक्षी और पक्षी अवलोकन कौ रोचक व ज्ञानवर्धक शौक

– राकेश व्यास

जा बार हमने एक ऐसे शौक और विज्ञान के बारे में बात करबे की सोची है, जाके बारे में कभऊं कोऊ बात नाईं करत है। वन्यजीवन में चिरैंया, ऐसे प्राणी हैं, जो हमाये चारों तरफ दिखाई तौ पड़त हैं, पर उनके बारे में हमाई जानकारी भौतई कम है। आज कोऊ मोड़ा-मौड़ी सैं दस चिरैयन के नाम पूछ लो, तो न बता पै है। जे बात अगर शहरन तक सीमित होती, तो एक बात हती, पर गांवन में भी स्थिति ऐसई है। चिरैयां न केवल देखवे में सुंदर और आकर्षक हैं, पर उनके बारे में जानकारी हो जावै तौ उनकौ देखवे कौ मजा दुगुनौ हो जावै, और उनकी उपयोगिता हमें उनके संरक्षण के प्रति भी प्रेरित कर देवे। आप लोगन कौं जान कै आश्चर्य हुईऐ कै बुन्देलखंड में पक्षियन की 450 से अधिक प्रजातियां पाई जात हैं। जिनमें सैं अधिकतर तौ स्थानीय चिरैयां हैं, लेकिन विदेसन से आउंन बारे पक्षियन की भी कमी नईयां।

पक्षी साहित्यकारन के प्रेरणा स्रोत तौ रहेई हैं, काय से कैं महर्षि वाल्मिक के मुख सैं पहलौ काव्य कौंच पक्षी की करुणा देख कैं उपजो हतो। वैसे भी हम जानत हैं कै वाल्मिक और कालीदास के साहित्य में पक्षियन और प्रकृति कौ कैसौ विशद विवरण मिलत है। तुलसीदास जी भी खंजन पक्षी के आवे की बेरा सैं शरद ऋतु कौ आउन बतात हैं। लोक कवि और गायक के लानै तौ पक्षी हर प्रकार की मानवीय संवेदना की अभिव्यक्ति के साधन हैंई हैं। सुआ, परेवा, कौवा, कुरजां, चातक, सारस, चकवा-चकवी के माध्यम सैं लोकगायक, नायिका की विरह वेदना को खूबई व्यक्त करत हैं। भारतीय शकुन शास्त्र में भी पक्षियन कौ बड़ो महत्व है, जौ हमें वराहमिहिर की बृहतसंहिता में सविस्तार देखवे कौं मिलत है।

आज कौ आदमी भावनाओं सैं अधिक वैज्ञानिक तथ्यन पै ज्यादा भरोसौ करत है, सो अब कछू बात पक्षियन के मानव जीवन और अर्थ तंत्र पर पड़वे बारे प्रभाव की कर लें, जासैं कै बुन्देली बसंत के आधुनिक युवा पाठक भी पक्षी विज्ञान में रुचि लैवे लगैं, और उनके संरक्षण के प्रति जागरूक हो जावैं। पक्षी विज्ञान में प्रवेश की शुरूवात के लिये पक्षी अवलोकन का शौक एक अच्छा उपाय है। पक्षी अवलोकन जासैं भी आसान है कै, वे हमाये आसपास विद्यमान हैं। बाघ, बघेरा, हिरण जैसे वन्यजीव देखवे के लानै तौ अभयारण्य या अन्य संरक्षित क्षेत्रन में जावे की आवश्यकता है, पर रुचिपूर्ण पक्षी अवलोकन नगर की सीमा में, तालाबों-नदियों के तट पर, खेतों में, और यहां तक की सड़क पर चलत-चलत भी कर सकत हैं, आवश्यकता है तो मात्र अपने पयाज्वरण के प्रति संवेदनशीलता और रुचि जागृत करवे की। काय से कै धरती मानव की जागीर नइयां, हमाई तरह सबई प्राणियन कौ जा पै बराबर कौ हक़ है। शहरन के रहवे बारे कित्ते लोग जानत हैं कै धनेश या हार्नबिल जैसा बड़े आकार का पक्षी, तीन प्रकार के सुआ, कोयल, कौकल, कपोत, पपीहा, भुजंगा, नीलकंठ, चातक, हरियल, तीन तरह की मैना, और शकरखोरा जैसे आकर्षक और महत्वपूर्ण पक्षी शहर की भीड़भाड़ के बीच भी देखे जात सकत हैं।

पहले कछू बात पक्षियन की उपयोगिता की कर लैं, जासैं कै आप लोग बुन्देलखंड की लुप्तप्राय और आकर्षक व उपयोगी पक्षी प्रजातियन के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाऔ। अनेक प्रकार के पक्षी हमाई खेती-बाड़ी और फल उत्पादन के लानै बहुत आवश्यक हैं। उनमें सैं कछू तौ खेती के लानै हानिकारक कीड़ा-मकोड़ा, घोंघा आदि खात हैं, कछू खलिहान के दुश्मन चूहन की आबादी पै नियंत्रण रखत हैं। उदाहरण के तौर पै मैना, बुलबुल, भुजंगा, हुदहुद, नीलकंठ, बगुला, पीलक, बी-ईटर या पत्रिंगा, फ्लाईकैचर या तुर्रा, मछरिया, दूधराज, सारस, जांघिल, घोंघिल, अबाबील, खंजन, सतभाई, लटोरा, कपासी, फाल्कन, हैरियर, खलिहान का उल्लू, और चूहामार चील इत्यादि पक्षी खेती के लाने हानिकारक कीड़न व अन्य जीव-जन्तुअन कों खाउत हैं।



खलिहान का उल्लू



घुग्घू या ग्रेट हौर्न्ड आउल

ऐसेई बिलात पक्षी हैं, जो पौधन के परागण में सहायक हैं – जैसे कि शकरखोरा, फूलसूंघनी, वार्बलर, पीलक, बुलबुल, दर्जिन चिड़िया, प्रिनिया या फुदकी इत्यादि। परागण के साथ-साथ कित्तेई अमरूद, सीताफल, जामुन, अचार जैसे फल, बेर, और गूलर आदि खावे बारे पक्षी हैं, जिनके कारण सै फलदार पेड़न के बीजन कौ दूर-दूर तक प्रसार सम्भव होत है।



बैंगनी शकरखोरा

अन्त में हमाये लाने सबसे महत्वपूर्ण वे पक्षी हैं, जो प्रकृति और मानवीय बस्तियों के सफाई कर्मचारी हैं। इनके अभाव सैं शहरन और गांवन में मरे पशु सड़त रात हैं, जासैं कै बीमारियन कौ खतरा बढ़ जात है, और दुर्गंध सैं वातावरण भी प्रदूषित हो जात है। इन पक्षियन में प्रमुख हैं, हमाये-तुमाये पूज्य जटायु और सम्पाती के वंशज-गिद्ध। इनके बारे में विस्तार सैं चर्चा आगे कर हैं, पर अबै तौ इत्तौ बतावौ काफी है कै इनके अलावा, कौवा, चील, और सफेद गिद्ध भी शहर की गंदगी साफ करवे में बड़े सहायक होत हैं।



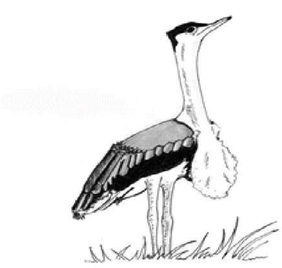
कौवा



चील

पक्षियन कौ हमाये सांस्कृतिक, सामाजिक जीवन, और आर्थिक व नगरीय व्यवस्था में बहुत बड़ो महत्व है। परन्तु बड़े दु:ख की बात है कि कितनई पक्षी प्रजातियन पै लुप्त होवे कौ खतरा मंडरा रऔ है। बुन्देलखंड में पाई जाउन बारी लुप्तप्राय पक्षियन की प्रमुख प्रजातियन की बात कर लेवौ उचित है, जासैं कै हम लोग उनखौं बचावे कौ प्रयास कर सकें।

सोनचिरैया - इनमें सबसैं पहलौ नाम तौ सोनचिरैया कौ आउत है। बुन्देलखंड में सोनचिरैया के नाम सैं प्रचलित पक्षी खौं भारत में गोडावण के नाम सैं जानत हैं। जौ विश्व की सर्वाधिक संकटापन्न पक्षी प्रजातियन में सैं एक है। कछू साल पहले तक इनकी आबादी दतिया के पास करैरा में, पन्ना के पास अमानगंज में, और दमोह के पास देखी जात हती। करैरा में तौ इनके नाम कौ अभयारण्य हतौ, पर मानवीय संवेदनहीनता और इनके प्राकृतवास के ह्रास के कारण, ऐसी संभावना है कै अब जे बुन्देलखंड सैं लुप्त हो गये हैं। फिर भी जा लेख के माध्यम सैं पाठकन सैं अनुरोध है कै, पन्ना और दमोह के पास इनपै नज़र राखैं। सोनचिरैया की विश्व में कुल आबादी 300 से भी कम है।



नर सोनचिरैया



नर और मादा का प्रणय प्रदर्शन

गिद्ध - सोनचिरैया के बाद सर्वाधिक संकट में भारत में पाये जावे बारे गिद्धन की प्रजातियां हैं। बुन्देलखंड में गिद्धन की 6 प्रजातियां देखी जात हैं, जिनमें सैं चार स्थानीय और दो प्रवासी हैं। स्थानीय चार प्रजातियों में सैं तीन अति संकटापन्न, एक संकटापन्न, और प्रवासियन में सैं एक सिनेरियस गिद्ध भी संकट के समीप है। हम लोगन के लानै सुखद आश्चर्य की बात है कै लम्बी चौंच गिद्ध, और राजगिद्ध पन्ना के राष्ट्रीय उद्यान, ओरछा तथा अन्य सघन वनक्षेत्र व नदी की घाटियों में देखे जा रहे हैं। सर्वाधिक बुरी स्थिति सफेद-पीठ गिद्ध की है, जो तमाम प्रयासन के बाद भी दुर्लभ हैं। इनमें से सबसे छोटे आकार के, और सर्वाधिक पाये जावे बारे सफेद गिद्ध की स्थिति भी चिंताजनक है। इनके संरक्षण के लानै जरूरी है कै गांव बारे और पंचायतें मरे मवेशियन खौं एक निश्चित स्थान पर बाड़े बना कै फैकैं, और उतैं सैं कुत्तन कों भगा देवें। दूसरी जरूरी बात है कै पशुपालक अपने पालतू जानवरन में बुखार और सूजन उतारवे के इंजेक्शन 'डायक्लोफिनेक' कौ उपयोग न करैं।



सफेद गिद्ध



गिद्ध

बुन्देलखंड के अन्य संकटग्रस्त पक्षी -भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम और संरक्षण की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था द्वारा घोषित मापदंडन के हिसाब सैं जो अन्य पक्षी प्रजातियां संकटग्रस्त हैं, उनमें प्रमुख हैं - सारस, जांघिल, चमचाबाज, लोह सारंग, और धूसर हवासील्। लेकिन पक्षी प्रेमियन के लानै ध्यान रखवे की बात जे है कै भारतीय वन्यजीव अधिनियम में लगभग सबई पक्षी शिड्यूल एक व चार में सम्मिलित करे गये हैं, अत: संरक्षित हैं।



सारस



चम्मचबाज़



जांघिल

सारस हमाये देश के जलाशयन कौ प्रतिनिधि पक्षी है। जीवनसाथी के प्रति निष्ठा के कारण जनमानस में इनकौ विशेष स्थान है। आमतौर पै न तौ कोऊ इन्हें छेड़त है, और न इनकों हानि पंहुचाउत है, लेकिन इनके अनुकूल आवास और प्रजनन स्थल की कमी के कारण जे पक्षी बुन्देलखंड में दुर्लभ हो गये हैं। करैरा, केन नदी के दोऊ किनारन पै, और महोबा के

तालाबन पै इन्हें देखो जात है, पर संख्या भौतई कम है। लोह सारंग और धूसर हवासील तौ कितऊं भी दिखत नईयां, पर जांघिल और चम्मजबाज़ यदाकदा दिख जात हैं। मुश्किल की बात जा है कै इन स्थानीय पक्षियन कौ प्रजनन बुन्देलखंड में देखन में नईं आऔ है।

पक्षी अवलोकन की शुरूवात करवे वालन के लानै अब हम उन पक्षियन की बात करवे बारे हैं, जो हमाये आसपास रहत हैं, या, खेतन, और जंगलन में देखे जा सकत हैं।

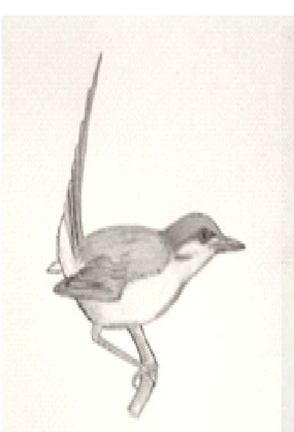
हमाये आसपास के पक्षी – जैसौ आप सबई जानत हौ कै गौरैया हमाये साथ रहबे बारौ सबसें सामान्य पक्षी है, पर जाकी संख्या में भई भारी कमी के कारण अब राष्ट्रीय स्तर पै 'गौरैया दिवस' मनाऔ जात है। अच्छी बात जा है कै बुन्देलखड में इनकी स्थिति उत्ती बुरी नईयां। जभऊं आप घर सैं बाहर निकरौ तौ देखिओ कै कित्ते प्रकार की मैना और सुआ शहरन में रहत हैं। सामान्य मैना, गंगा मैना, जंगली मैना, कंठीदार सुआ, और टुंईयां तोता तौ अवश्य ही आपखौं दिख जैहैं। जरा सौ ध्यान देवे पै कोयल, दर्जिन चिड़िया, शकरखोरा, फुद्की, कौकल, चुगद उल्लू, कौवा, कपोत, गौरैया, बया, चरचरा इत्यादि पक्षी आप देख सकत हौ। थोड़ो ध्यान देवो तौ धनेश, पीलक, हरियल, भुजंगा, हरौ पत्रिंगा, हुदहुद, शिकरा, और कम से कम तीन प्रकार के पंडुक या फाख्ता भी हमाये आसपासई मिल जाउत हैं।



भुजंगा



हुदहुद

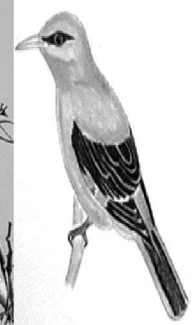


दर्जिन चिड़िया



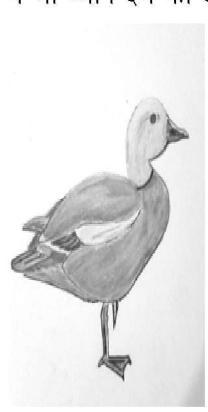
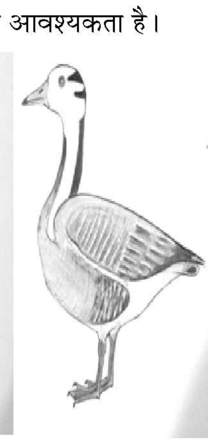
पंडुक या फाख्ता





कोयल धनेश पीलक

जलाशयन के पक्षी – सरदी के मौसम में अधिकतर जलाशयन पै पक्षियन कौ कलरव खूबई बढ़ जात है। जाकौ सबसे बड़ौ कारण है, विदेशी प्रवासी बतखन और जलपक्षियन कौ आ जावौ। आश्चर्य की बात है कै बुन्देलखंड में इत्ते बड़े-बड़े जलाशय और मझोले बाँध होउन के बावजूद जलपक्षियन की संख्या बहुतई कम दिखात है। 15-20 साल पहले तौ छतरपुर के पास के बांधन पै कछू अत्यन्त महत्वपूर्ण जलपक्षी दिखात ते, पर वर्तमान में स्थिति ठीक नईयां। पैलें तौ चकवा, दो तरह के कलहंस, गुलाबी और धूसर हवासील के अतिरिक्त पनडुब्बी, नकटा, गुगराल, गगरार, सिलकही जैसी स्थानीय, और टिडारी, सींखपर, कर्रा, और पटारी जैसी प्रवासी बतखें दिख जात हतीं। अब आवश्यकता है कै पक्षी अवलोकन सें बुन्देलखंड के अधिक सैं अधिक युवा जुड़ जावैं, जासैं कै हमें इनकी वर्तमान स्थिति कौ सही-सही पतौ लग सकै। बतखन के अलावा तालाबन पै चार प्रकार के बगुला, अंजन और लाल अंजन या वक, जांघिल, घोंघिल, लगलग, कालाबाज़, तीन तरा की कुररी, जलपीपी, पीहा, कूट, किलकिला, और तीन तरा के पनकौवा इत्यादि बड़े आकार के पक्षी आकर्षण के केन्द्र रहात हैं। इनके अलावा टिटहरी की जाति के अनेक प्रवासी कीट-भक्षक पक्षियन (स्टिंट, सैंडपाइपर, स्नाइप या चहा आदि) पै भी ध्यान देउनौ चहिये। तालाबन के किनारन पै खंजन, नदी टिटहरी, गजपांव, चातक, और सफेदसिरा हैरियर इत्यादि पक्षियन पै भी ध्यान देवे की आवश्यकता है।


चकवा या सुर्खाब कलहंस या गीज़ सिलकही

एक खास बात बुन्देलखंड के जलाशयन के बारे में कहबो जरूरी है, कि जलपक्षियन की जित्ती कम संख्या इतै देखी जात है, उत्ती दुर्दशा और राज्यन या क्षेत्रन में नईं है। अन्य क्षेत्रन के छोटे-छोटे पोखरन, तालाबन में जलपक्षियन की पचासन प्रजातियां देखी जा सकत हैं। लेकिन जब बुन्देलखंड के लगभग सभई जिलन कौ सर्वेक्षण मैंने करौ, तौ वामें जौ विस्मयकारक बात सामने आई कै दतिया जिले के गांवन के तालाबन के बाद, छतरपुर के कछू बांधन, और महोबा के तालाबन पै जलपक्षी पाये गये। बीच में पड़बे वारे बरुआसागर, मऊ और रानीपुर के आसपास के बाँध और तालाब, निवाड़ी के आसपास, और अलीपुरा, मऊ-सहानिया के विशाल तालाब लगभग पक्षी विहीन हते। जाकी पूरी जिम्मेदारी मत्स्यपालन कौं नईं दई जा सकत है, काय सें के मैंने मत्स्यपालन और सिंघाड़े की खेती बारे तालाबन पै भी बड़ी संख्या में पक्षी देखे हैं। जा कमी के जो कारण हो सकत हैं, उनमें पानी की गुणवत्ता, और शिकार की अधिकता बड़े कारण हो सकत है। शिकारियन के लानै एक बड़ी चेतावनी है कै, जलपक्षियन सें 'बर्ड फ्लू' फैलत है। खास कर के बतख और प्रवासी पक्षी, जा वायरस अपने साथ ल्यात हैं। सो शिकारी काये अपनी जान को जोखिम उठात हैं। और बड़ी बात कै शिकार गैर कानूनी है, और ऐसे जघन्य कार्य में कोऊ फायदो नईयां।

खेतन और वनन के सामान्य पक्षी- जब आप सफर कर रये होओ, और खिड़की के बाहर मौं करकें देखौ तौ तीन तरह के लटोरा, कपासी, सफेद-गाल और पहाड़ी बुलबुल, नीलकंठ, सतभाई, दो या तीन प्रकार के कठफोड़वा, शिकरा, हुदहुद, चुगद उल्लू, पत्रिंगा, पिद्दा दिख जैहैं। जे भी एक प्रकार की द्रुत पक्षी अवलोकन शैली है, जाकौ विकसित कर लेवो फ़ायदेमन्द है। खेतन में गाय बगुला, अंधा बगुला, भुजंगा, नीलकंठ, सफेद खंजन दिख जैहैं, तौ पथरीले घास के मैदानन में तीतर, तीन-चार तरह की बटेर, लवा, भटतीतर दिखवे की सम्भावना अधिक रहत है। सघन वन और संरक्षित क्षेत्रन में जावे पै आपखों शाह तोता, घुग्घू जैसे बड़े आकार के उल्लू, खलिहान का उल्लू, दूधराज, पपीहा, पीलक, अबाबील, शुभांगी, और सहेली जैसे सुंदर पक्षी, और राजगिद्ध, सांपमार चील, चूहामार चील, मधुकर चील, उकाब जैसे शिकारी पक्षी भी दिख सकत हैं।



कठफोड़वा



भटतीतर



लटोरा



नीलकंठ



चातक



खंजन



दूधराज

पक्षी विज्ञान तौ बहुत बृहत विषय है, पर इत्ती सी बात आप लोगन कौं पक्षियन के प्रति आकर्षित करबे की तरफएक प्रयास है। पक्षियन के आचार-व्यवहार के बारे में इत्ती रोचक जानकारी उपलब्ध है, कै कई किताबें भर जावैं, सो एई विचार के साथ कै जा लेख सें प्रेरित होकें कछू लोग पक्षियन के प्रति ज्यादा सहृदय होकें, उनकौ अवलोकन कर हैं। उम्मीद है कै जासें बुन्देलखंड के पक्षियन के बारे में हमारौ ज्ञान बढ़ है, और हम उनकी सुरक्षा और संरक्षण के प्रति सजग होकें उपाय कर सक हैं। इनकौ संरक्षण करवे सें पर्यटन कौं भी बढ़ावा मिल सकत है, जासें युवाओं के लानै व्यवसाय के नये आयाम भी खुल सकत हैं।

-व्यास भवन, नरसिंगढ़पुरवा, छतरपुर 471001 卐

बुंदेली गजल

-साकेत सुमन चतुर्वेदी

सन्नाटौ सौ खिंचो खूब है
उन्ना अब तौ फिचो खूब है
तान पिछौरा वौ तौ सो रओ
औरन खों भुकभुकौ खूब है
जुल्मन के कोड़ा मारततो
वौ कुटबे खों डरो खूब है
पैड़ भरैं परकम्मा दै रये
थाने में कछु मचो खूब है
लट्ठ सरीखौ हतो अकड़ में
लरम डार सौ झुको खूब है
दौरा दौरा वौ मरततो
गदबद दैकें भगो खूब है
परमेसुर सें पालों पर ग ओ
सो रिरआ रओ, नपोखूब है

-36/15 प्रेमगंज, सीपरी बाजार झांसी 284003 卐

संत श्यामाचरन दास

- दिव्य यादव

संत श्यामा चरन दास वृन्दावन धाम में रत हते।

उनकों रहन सहन तो साधारण हतौ पर हते अच्छे संत।

उनके करीबी लोग बताउत हते के ना जाने काय वृन्दावन धाम में रैबे के लाने बचपनइ सें उनकी बड़ी लालसा हती। वह सोचत रत ते के धाम में बड़े भाग्गी लोग रत हुयें, हम जैसिन के भाग में काँ बदो? जइ सोचत सोचत उनकी जवानी आगइ, बियाव-बर हो गव, बाल बच्चे होन लगे लेकिन एक दिना भगवान की मर्जी,,,समय को फेर, ऐसी परिस्थिति बनी ,के बे अपनो घर वार छोड़कें इतै आ गए। जा ऐसी वैसी जगा तो है नइयाँ, जौ धाम है जो हिन्दुअन के आराध्य भगवान श्री कृष्ण की क्रीड़ा स्थली ।जिनने जीवन खों सार्थक बनाबे खों जगत के लाने गीता जैसो पवित्र उपदेश दव। इनइ ने बारी उमर में गोपियन के संगै रास रचाके प्रेम खो परभासित करौ है। प्रेम कौ मतलब समझाव है। आज उन्हें भँय हजारन साल बीत गए लेकिन इतै के बारे में लोग तौ इतै तक कत हैं के उनके प्रभाव सें आजउ इतै के कण कण में प्रेम और भक्ति भरी है बस उयै महसूस करबे के लाने श्रद्धा चावने। साँसी तो जाहै के राधा रानी और भगवान श्री कृष्ण साक्षात आजउ बिराजमान हैं बे समय समय पे अपनी लीला दिखादेत हैं। किबदन्ती है कि आदि शंकराचार्य जो जनम भर व्रह्म सत्यम जगत मिथ्यम कत रय। बे एक बेर इतै आये। सिद्ध पुरुष, बिनके संगै तमाम शिष्य रत हते। दैब योग एक दिना ऐसो अंजा परगव के बिनके संगे जउवा नइँ और बिने दस्त लगन लगे। दस्त का कोलरा बन गव, वे उठबे बैठबे में हाजत होगय। एक दम निरीह होगय। बड़ी चिंता में बैठे ते। घबड़ा रये ते। सोच रये ते अब का करें, ''का हुये'', कोउ संगै नइयाँ, अब नँइ बच रय,,,तरइयाँ भर आईं ।तबइ एक मोड़ी आयी और उनसे पूछन लगी 'बाबा तोय का हुयगव ? मौड़ी की आबाज सुनकें बे चौंके,मन में में सोचन लगे जा को है? इतै कैसे आई,,, डूबत खों तिनका कौ सहारौ, अकेले हते मोड़ी के आयसे कछू धीरज बँधौ। बाय बताउन लगे-

'बेटी संग्रणी (दस्त) हो गइ है ।'

'बएस, जइसै चिन्ता में बैठे हौ। मोड़ी ने टिटकरी करी। लै ! जौ दही भात खायलै, तेरी संग्रहणी दूर हुयजायगी। मोड़ी कछू दूरी पै ठाढ़ी हती, उतै से ठाड़े ठाढ़े हाथ में लय दही भात बाले पात्र खौ बाबा ताइ बढ़ादव।

'बेटी इतनी शक्ति नहीं है कि हम उतै तक आ जाये। 'अपनी जगह पे बैठे शंकराचार्य गिगयाने।

'बाबा भौत दिनन में तोय शक्ति की याद आयी।'

मोड़ी कौ अप्रत्यासित उत्तर सुनके शंकराचार्य जी के करेन्ट सो लगो। थोड़ी देर के लाने नाहोस से हो गय। समझ गये जा मोड़ी कोनउ साधारण मोड़ी नइयाँ जे तो आदि शक्ति माँ जगदम्बा हैं। जा सब इनइ की लीला है। अपनौ प्रभाव बतान आई हैं, जा संग्रहणी नइयाँ। वे उनके चरनन में गिरके क्षमा मांगन लगे। माँ हमने आपकी महिमा नहीं समझ पाई क्षमा करदो,,, तभइ से वे मानन लगे,ते ब्रह्म सत्यम् जगत सत्यम।

इतै रै के जब श्यामा चरन दास ने इतै की ऐसियैऐसी तमाम कथायें सुनी तो उनकौ मन इतै रैबै के लाने और दृढ़ हो गव। बिहारी जी की कृपा, उनको एक छोटौ सो आश्रम बन गव।

श्यामा चरन दास कौ सुभाव अलगइ हतौ। सबसे मिलबौ जुरबौ, बोलबौ बताबौ, हसबौ गुलगुलाबौ बड़ो अच्छौ हतो। जीसै एक दार मिललें बाय जा लगतती इनसे हमाव भौत पुरानौ बेहार है। बिनके अन्दर जौ भेद नँइ हतौ के जो बड़ौ आदमी है जा सै अच्छी तरा मिलौ जो गरीब है जासे ऐसइ । गरीब होय चाँय अमीर सबइ सें एकसे मिलतते। कोउ जौ पतौ नँइ पार पाउततौ के सन्त जी कीखौ जादा चाउत। सबखौ जौ भ्रम रत तौ के बे सबसें जादा हमें चाउत। उनके जा आकर्षक स्वभाव से उनकी ख्याति जल्दी फैलन लगी। आश्रम पै तीरथ जत्री पौचन लगे। सन्तन की जइ खेती है,जितै जादा जत्री पौचन लगे बइकी बाबा गीरी चमकन लगत। कोउ जा सोच के दान देन लगौ कै रुकबे कौ ठिया बनरव, कोउ सन्त अच्छे है सोच के दान दैन लगौ, कुल मिलाके मदद के लाने कई हाथ आगे आन लगे।

आश्रम चमकन लगौ।

आदमी को जैसो स्वभाव होत है बैसोइ रत है बो तीरथव में नँइ बदलत। कछू जा सोचत हैं के कम से कम खर्चा में तीरथ हो जाय। वह सन्त जी के आश्रम में ठहरें, दोउ टेम पुर्रेट के खाय और चलती बेरा दस रुपइया चढ़ा दय। कछू ऐसे होत है वह सोचत सात घर की भीख काय खाय। हम तीरथ करन आये है, पुन्न कमावन आये हैं हम जादा न दे तो कम से कम जितनो खाव उतनो तो देइ दें। कछू ऐसे स्वभाव के होत जो जा सोचत है के सन्त जी भौत खर्च करत है। हम अपनो खर्चा दे और चार जनन कौ और देदै,और इनके काँसे आउत, इनके का खेती धरी। इन सब के बिपरीत संत जी का सोचबौ बिलकुल अलग हतौ। वह कभउँ काउकी रोटीं नँइ गिनतते, काउकी चढ़ौती नँइ देखत ते, उनको मोटौ हिसाब हतौ, बे सोचतते हम लैके कछू आय नँइ हते, जो है बौ सब बिहारी जी कौ है। जब सब बिहारियै जी कौ है तो उनके भकतन की सेवा में हम काय कसर छोड़े। बेइ सबकी पूरती करत हैं, भोजनँइ अकेलो नँइ बे जरुरत मन्द को पैसा से काम चला देत ते, काउकी जेब कट गई, काउको किराव बड़ागव, कोउ बीमार पर गव सबकी मदद करबै। हाल कौ काम चला देत ते।

सन्त जी के अधिकतर भक्त गाँव से हते ,खेती से जुड़े। खेती बालिन के हाथ में चेत कातिकै पइसा आउत है सो श्रद्धालु उन्हें दान दक्षना देबै के लाने बड़ी श्रद्धा से चेत में गाँव में बुलाउतते। बैसे सन्त खों देख कें आदमी कनाव काट जात, को रट्टे में परे लेकिन जब जे गाँव में आ जातते तो इनसे मिलबे के लाने आदमी जरूरी काम छोड़ कें टेम निकारते, के दो मिनट मिललें उनके गाँव में पहुचत ही भक्तन की उनकी सेवा करबे की होड़ लग जात ती। सबलोग चाबै के सन्त जी हमाव नेवतो स्वीकार करले। कोई भोजन कराबैं, कोउ दूद, दही लियाबे कोऊ खोबा शक्कर खबाबै। संगे संगै जीमै जैसी सामर्थ्य होबै

बैसौ दान–अन्न दान, पइसा दान करें। मुहाबरो है के रूप देखकें भीख मिलत। पर जा मुहाबरे खो झूठो करके साबित कर दव तो के भीख रूप देखके नइँ प्रेम देख कै मिलत।

बैसे आजकाल लोग बइखों बड़ो संत मानत हैं जीपे बड़ो आश्रम होय, घोड़ा गाड़ी हो, चेला चेलियाँ हों। बड़े ताम झाम सें चलत हो। लेकिन संत जी के पास आश्रम छोटौ हतो पर दिल भौत बड़ौ हतौ। बड़े आश्रमन के बड़े नियम, साबुन से नहीं नहाना, जोर से हँसना नहीं, समय से लौटना। वहां पर ठहरने बाले जत्रियों को ऐसे लगत जैसे बे आश्रम में नहीं थाने में ठहरे हों। संत जी के आश्रम में ऐसी कोनँउ पाबनदी नइँ हती। इतै सब घर घाँइ रत ते। जई कारण से जत्री बड़े आश्रमन की बड़ी जगह छोड़कें इतै सकरौदा में रैबो पसंद करत ते।

तीर्थ जत्रियन खों का चहिये ठहरबे खो जगा और अगर ठहरबे खो मन की जगा मिल जाय ऐ, ह फिर का पूछने, सोने में सुहागा। इतै एक बेर जो हो जाबे बासै रिश्तेदार, बेहारी श्री वृन्दावन धाम में रुकबे की जगा पूछे तो बो सीदो संत श्री श्यामा चरन दास को पता बताते।

श्री वृन्दावन धाम में बैसें तो साल भर जत्री आउत जात रत लेकिन यहाँ कौ मुख्य पर्ब है श्री कृष्ण जन्माष्टमी। रक्षाबंधन से तीर्थ जत्रियन कौ आबौ शुरू हो जात और जन्माष्टमी आउत आउत मेला चरम पै पौच जात।

जन्माष्टमी के एक दिन पहले एक सप्तमी हती। भादौ की कारी रात, ऊपर से छाये कारे बादरन से और कारी लग रइती। अबै रात इत्ती नइ भइती जित्ती लग रइती। अबै ब्याउ की बेरा नँइ भइती। संत जी के आश्रम में बिजली के लट्टू जगमगा रय ते। जिनकी रोशनी से स्पष्ट दिखारव तौ के आश्रम के हिसाब से आश्रम में भीड़ बहुत जादा है। कोउ सुत्ता रव है, कोउ बताया रव है, कोउ भ्रमण करके आव है, कोउ रास देखन जाबे की तैयारी कर रव है, आश्रम में धूम्र पान निषेध है सो कछू लोग अँधेरे में ठाड़े बीड़ी के सुट्टा लगा रय। आश्रम के भीतर चूले सब भरे है इसलिए कछू लोग आश्रम के अग्गा में चूले बनाके रोटी बनारय है। उनमें से एक बोलौ– हमाइ आबे की का तैयारी हती, हमतौ डाँग में गइयाँ काड़न आयते गली में दद्दू मिल गय बोले काय बिन्दाबन नँइ चल रय, हमनें कइ पैलै कते तौ हमउ तैयारी कर लेते गली चलत में का हो रव, बे बोले चलौ इत्ते जने हैं सब हो जै,लेव हमने उन्ना पैरे और चले आये।

दूसरा– अरे, सबखौ तीरथ नँइ बदे होत, तीरथ में बेइ आ पाउत जिनकी बे डोर खेचत हैं। जीकी डोर नँइ खेचत है बाकौ बनो बनाव कलेऊ धरौरत।

साँसी केरय भइया, हमतौ सपने में नई सोचौ तौ के हमावउ तीरथ हो जै है।

दोउ जत्री रोटी बनाबे में बता रय ते। तबइ कोनँउ बाहन को धक्काटौ उनकी आँखन सें टकरानो। उनकी आँखें चौधया गइँ। दोउ आँखन के आगे हाथ करके उतै तरफ़ घूरन लगे जा जानबे खों के का बाहन है और को आव है? बाहन थोड़ी देर उतै ठाड़ौ रव और बन्द हो गव। शायद इतै आरय ते खाना बनत देखके उतै ठाड़ौ कर दव। कार हती। बाकी खिड़की खुलबे और बन्द हो बे की धुनि दूर तक फैल गई। दो आदमी उतरे और मोबाल उजार के गेट तरफ आये। जो बाहर टैल रय ते और जितने खाना बना रय ते सबकौ ध्यान बिनइ तरफ हतौ। पास आकै बे पूछनलगे– 'काय भइया! संत श्यामा चरन दास कौ आश्रम जोइ है?'

'हओ।'

'बिनसें तनक मिलवा दो '।

'हओ भइया।' बतयाबे बालो आदमी आश्रम के अन्दर खों चलदव।

आबे बाले दोउ जत्री ठाढ़े ठाढ़े सलाह करन लगे–आश्रम छोटौ दिखारव भीड़ बड़ी दिखारइ। शायदै ठौर हो! एक की आशंका पे दूसरे नै हामी भरी, साँसी केरय।

संत जी के आबे में देर होती देख यह दोनों बतयाते कार की ओर बढ़ गय। मालिक कार में बैठो हतौ। बासे आपनी अपनी आशंका जताई। दोउ जनन की आशंका पे बउ नै मुहर लगा दई, देर करबौ बेकार है, कोनउ होटल में कमरा लेलो। जामै जगा नइयाँ तो ठीक है।

सब जनै कार में बैठ गए और कार बैक होन लगी।

खबर पाकै संत जी तुरंत आश्रम के बाहर आये ठाढ़े लोगन सें पूछन लगे, हमें को तलाश रव तौ? बिनने बताई बे तौ लौट गए,। बा का कार बैक हो रइ, बेई हते।

जाके रोकौ उन्हें। संत जी नै आदेश दव।

तीन चार लोग दौड़े और कार रुकबा दइ।

कार रोकी का रोक के बन्द कर दइ। तब तक संत जी कार के पास पहुँच गय। हाँत जोर कें बोले– भगवन! काय लौट चले। आपइ कौ आश्रम है आपइ के लाने है चलौ उतरौ।

संत जी खौं आव देखकें मालिक तुरंत गाड़ी से उतरौ और संत जी के पाँव परे। बताउन लगे हमाय रिश्ते दारन ने इतै ठहरबे के लाने आपको पतौ दव तौ सो आयते लेकिन इतै की भीड़ भाड़ देख के हम लौट चले ते के कायखो आप खों मजबूर करैं। इतै जगा दिखा नँइ रइ।

'ऐसौ नँइ होत है भगवन, हमाय पास आयते तौ हमाय मौ की लैकै लौटते, रइ बात जगा की तौ जगा आश्रम में नँइ दिल में होत है। गाड़ी गेट के पास लै चलौ।'

संत जी कौ उत्तर सुनके सभी लोग गदगद हो गय। मनइमन भूर भूर प्रशंसा करन लगे जैसे सुने ते संत जी बैसेइ हैं।

गाड़ी आके गेट पे रुक गई। प्रसन्न मन सें बे सब गाड़ी सें सामान उतारन लगे। तबइ संत जी उतै आगय। नीचे रखे एक बैग खौं उठाकै आश्रम में जान लगे, बोले चलौ हमाय संगै। संत जी को बैग टागे देखकें दौड़ कें मालिक जा कत आव, अरे संत जी! संत जी! जो का कर रय,,हम तौ तीरथ में पुन्न कमावन आये, आप सें सेवा कराके पाप कमा हैं? और बैग उनके हाथ सें अपने हाथ में लै लव। हाँत जोर कें बोले– जौ काय कर रय ते महाराज?

ऊसै उत्तर में संत जी नै बड़ी विनम्रता से,सजल नेत्रन सें कई ' अतिथि देव भव '

संत जी कौ उत्तर सुनके उतै जितने लोग ठाढ़े हते सबकी आँखें डब डबा आईं।

–एट जालौन यूपी–285201
मोबाइल – 9450295164 卐

बुन्देली व्यंग्य -

मारसाब बेचारौ काम कौ मारो

-राजीव नामदेव 'राना लिधौरी'

मास्साब इ दुनिया में सबसें अजीबोगरीब इंसान है वो भौतइ बेबस, लाचार, दयनीय सोउ होत है। वो कक्षा में बच्चन के द्वारा करे गए प्रश्नन की बौछार खात, घरै बीबी सें ताने उर फटकार खात। दुकानदार सें उधारी में सामान न पावे की घुड़की खात है जे बात अलग कै वो उये प्यार से पुटिया लेत उर अपनौ उल्लू सीधौ कर लेत। स्कूल के लंच में मध्याह्न भोजन में सेंत मेंत में पतरी दाल में कंकड़ खात, जो उये दार होवे कौ भ्रम रत है उर डिठौना लगौ भयी रोटी खात, ताकि खावे वारे कों काउ की नजर न लगे या हम कै सकत अय कै चाँद-सी रोटी खात अय जी में कैउ दाग होत अय, जो कउँ -कउँ पै गीले (कच्चा) होत जो कै हमें चाँद पे पानी (जीवन) हौवे कौ अहसास करात।

लेकिन इन सबकें बदले में मास्साब इस्कूल में चपरासी सें लैकें बाबू उर हैड मास्टर तक के सभइ पदन पै एकइ वेतन में काम करत रात, जा बात उर कै उए बच्चन कौं इस्कूल में पढ़ावे को टैमइ नइँ मिल पाउत। इस्कूल तो इस्कूल, वो तो गाँव में जनगणना, जातिगणना, पशु गणना, मकान गणना चुनाव में वोट गणना आदि कौ कार्य सोउ बखूबी निभात। हम कै सकत हैं कै मस्साब एक बिना सींग की दूधारू गाय है, जिये शासन जब चाहे दुहत रात बदले में कभउँ- कभउँ साल में एक बेर तनक-सी वेतन बढ़ाकै, इंकीमेंट या मँहगाई भत्ता कौ हरीरौ चारौं खिलात रात। ताकि जे सभइ मस्साब जादा से जादा दूद (काम) दे सकें।

इ मास्साब रूपी प्राणी की पैचान पैला सफेद कुर्ता-पजामा या धोती, एक छाता व साइकिल से होत ती, लेकिन समय के परिवर्तन के संगे-संगे अब कुर्ता-पाजामा के इस्थान पै पेंट शर्ट औ कउं -कउं पै जींस,टी शर्ट ने लै लयी। छाता तो ओल्ड फैशन हो गवो ईसें ईकौ प्रयोग भौतइ तनक हो गवो। कायसें बरसात में कभउँ-कभउँ कजन भौत जरूरी भओ तोइ इस्कूले जाने परत सो रेनकोट पैर कें चले गये नइतर जी दिना बरसात भई उ दिना रेनी डे मना लवो। साइकिल कौ इस्थान अब फटफटिया ने ले लवो। झोला अबै भी गाँव के मास्साब के कँदा पै दिखाई दै जात।

जबकि शहर में करिया रंग के बैग कौ उपयोग होन लगो। जो कि इस्कूल की फाइलें उर मुफ्त में मिली भई सब्जी रखवे के भौत काम आत। सब्जियाँ बाहर न कड़ी दिखाय, कायसें कि ईसें उनके 'किडनेप' होवे कौ खतरा बनौ रात। ईसें बैग में एक चैन सोउ लगी रात जीमें एक तनक सौ तारौ सोउ लगौ रात है।

प्राइवेट मास्साब वो मास्साब होत है जीकी गन्ने की तरां पिराई करी जात। जीसें ऊकौ वेट कम हो जात उर जब कोनउ चीज कौ वैट कम हो जात तो उकौ रेट सोउ कम हो जात, उर जीकौ रेट 'सैट' हो जात, तो वो मुलक बरसन तक उ इस्कूल में सैट हो जात उर जब वो सैट हो जात तो ट्यूशन करवे के कारण इस्कूल आवे में लेट हो जात। इतइ सें ऊकौ मटियामेट हो जात उर फिर एक दिना वो इस्कूल के गेट की भैंट हो जात है फिर वो दूसरे इस्कूल कौ गेट खटखटात है उर उतै पे पैला सें भी कम रेट पै 'सेट' हो जात है। बैसे तो मस्साब के दो मुख्य प्रकार होत। पैलो शासकीय मास्साब उर दूजौ प्राइवेट मास्साब। प्राचीनकाल में मास्साब एकइ प्रकार के होत हते। जिनें हम गुरु कतते। अब इनकी दो नयी नस्लें 'गुरुजी' व 'शिक्षाकर्मी' सोउ अस्तित्व में आ चुकी हैं। इनकी सोउ प्रजातियाँ हैं। प्राइवेट इस्कूल में डांस सिखावे बारे मास्साब, खेल बारे मास्साब, उर कम्प्यूटर मास्साब सोउ होन लगे जो मास्साब कम बाबू कौ काम जादा करत।

कछु जने भाषन के आधार पै सोउ इनके बन्न-बन्न नाँव धर देत, जैसे संस्कृत में आचार्य,अंग्रेजी में प्रोफेसर, डॉ., आदि नाँवन सें सोउ महिमा मंडित करो जात। जीतेक बड़े पद पै मास्साब हुइए ऊकौ उतैकइ जादां वेतन हुइए, लेकिन काम ईको उल्टों उतनइ कम होत जात। जो एक कटु सत्य है कै कालेज में कछू प्रोफेसर, डॉ. पढ़ावे कम टैम पास करवे औ गप्पें हाँकवे जादा जात। जबकि गाँवन के इस्कूलन में मस्साब पढ़ावे कम सब्जी लेने जादा जात अय। वो भी विशेष दिना हफ्ते में एक दिना जी दिना उतै कौ बाज़ार लगत। प्राचीनकाल में आचार्य 'गुरु' जंगल में आश्रम बनाकें मुफ्त में पढ़ात हते। किन्तु आधुनिक मास्साब 'ट्यूशन' को मजबूर करकें उनसे पैइसा जबरन बसूल करत। अपने घरै बुलात उर जो 'टयूशन' नइँ पढ़त आय उये कम नम्बर देने औ फेल करवे की धमकी सोउ देत रात।

वो तो धन्य है हमाइ सरकार जीने ने कक्षा-8वीं लो तक कौनउ भी मोड़ा मोड़ियन कों फेल नइँ करवे कौ आदेश निकार रखौ। ई सें बच्चन की कक्षा-8वीं तक तो नैया पार होइ जात। कक्षा-9वीं में एक साल कोउ भी तरां ट्यूशन पढ़ लेगें उर फिर कक्षा 10वीं की तो बोर्ड परीक्षा होत है ऊमें मास्साब हमावो कछु नइं बिगार सकत। फेल तो वे कर सकत नइयां, प्रेक्टीकल में पास तो उनें करनेइ पड़ेगौ, उर परीक्षा में हम कौनउ तरां जुगाड़ करकें अगल-बगल में तांक झांक करकें, नकल करके पास तो होइ जैहें।

खैर! धन्य हैं वे आधुनिक मास्साब जो आज अपनौ मूल कार्य शिक्षा धर्म भूलकें अन्य कार्यो में लिप्त रात तथा 'ओडी' लगवाकैं या आफिस कौ कौनउ काम बताकें प्रायः इस्कूल सें गोल रात औ बच्चन के भविष्य सें खिलवाड़ करत रात। वे तो चालीस हजार रू.वेतन पात उर काम 420 कौ करत।

अब शासन ने नयी भर्ती के तहत मास्साब के इस्थान पै 'शिक्षाकर्मी' धर लये, वे सोउ इतैक वेतन में जो कि पुराने चपरासी तक के वेतन से इतैक तनक रात कै उनें कोउ कों

बतावे तक में सरम आत। उन सिक्षाकर्मियन कौ एक नारौ है 'जितैक वेतन उतैकइ काम' उनकौ सीदो सो गणित है कै जितैक 40000रू.पावे वारे मास्साब काम करत ऊसें दस प्रतिशत कम काम हम करें ,कायसें वेतन सोउ हमें उनकौ दस प्रतिसतइ मिलत। अब आप खुदइ अंदाज लगा सकत हैं कै भारत में एक सरकारी 'पुरानौ मास्साब' इस्कूल में बच्चन कौ कितैक पढ़ाई करात उर कितैक दिना ईमानदारी सें इस्कूल पढ़ावे जात। कछू शिक्षाकर्मियों ने तो बाकायदा अपने इस्थान पै उ गाँव के मोडा कौं किराये (किराये कौ मास्साब) पै धर लओ है उनें अपने वेतन में से आदो या कउं- कउं पै एक या दो हजार रू मासिक देकैं अपनौ सबरौ वेतन घरे बैठे पात रात हैं। आज मास्साब अपनी गरिमा, मान सम्मान खो बैठौ । पैला सबई लोग एवं सबरो गाँव सम्मान की दृष्टि से देखततो,उर उनके पाँव परत हतो। लेकिन आज तो मास्साब को पाँव पड़वौ तो भौत दूर की बात अय कोउ नमस्ते तक नइ करत,उलटे वक्त परबै पै ऊके हात-पाँव सोउ तोरवे से नइँ चूकत। इसें मास्साब के पाँव अब इस्कूल में नइँ परत अय।

- शिवनगर कालौनी,टीकमगढ़ (म.प्र.) पिन : 472001

मोबाइल-9893520965 卐

हरि की चौकड़ियाँ

- डॉ. हरिकृष्ण ''हरि''

बसबो वृन्दावन कौ नीकौ, लगै कभऊँ न फीकौ।
जाँ सुखधाम नें रास रचायौ, जिया लगै ताँ हीकौ।
मंगल आरति भजन कीर्तन, दिया जलै वाँ घीकौ।
हरिकृष्ण ''हरि'' स्वर्ग धाम हैं, सुन्दर यमुना ढीकौ।

टेरै जसोमत कौ नंदलाला, जुर आवैं सब ग्वाला।
मोरपंख कौ मुकुट सुसोभित, गल बैजन्ती माला।
औठन बंसी कटि पीताम्बर, कांनन मुरकी बाला।
हरिकृष्ण ''हरि'' कृष्ण कन्हैया, बृज में करै उजाला।

मुरली धुन सुन सब हरषाने, बृज मथुरा बरषाने।
राग छत्तीस उचारै मुरलिया, सुन कें नईं अघाने।
ललिता राधा खोज करत हैं, देखत फिरी ठिकानें।
हरिकृष्ण ''हरि'' स्याम मिले ना, उनखौ देती तानें।

राधे खबर लेत हर पल की, मोहन के हलचल की।
सखियन खौ संगै लै लैकें, जोर जनाउत बल की।
प्रेम मगन ऐसै हो जातइ, खवर ना राखत कल की।
''हरि'' भरी छवि सँग राधे की, नटवर नंद नवल की।

मीठौ यमुना जी कौ पानी, बोलत मीठी बानी।
भोर भये उन बृज रूखन पै, बोलत मोर सुहानी।
अधरन धरै मुरलिया मोहन, रोकत राधा रानी।
हरिकृष्ण ''हरि'' श्याम न माने, भोरइ सैं दै तानी।

जग में जी की जैसी करनी, बैसी पार उतरनी।
बूंद बूंद सें घट भर जातइं, डूब जात जौ तरनी।
मानस गल्ती करत रात दिन, लाज राखती धरनी।
हरिकृष्ण ''हरि'' कृपा माई की, फेरौ रोज सुमरनी।

लज्या दुकी फिरत घर भीतर, जैसें बन में तीतर।
भ्रष्टाचार टैल रवौ द्वारैं, हाबी भवौ रजनीचर।
सोना तौ अब दिखत मुलंमा, हँसी हँसत है पीतर।
हरिकृष्ण ''हरि'' परे खाट पै, पन्नी औढ़ें भीतर।

सेवा मात पिता की करना, जीवन विरथां बरना।
जी माता नें जन्म दवौ है, दुख उनई के हरना।
इन पुरखन सें बड़ौ कछू ना, जीवन जाय अखरना।
हरिकृष्ण ''हरि'' इन देवन के, चरनन में सिर धरना।

का हम करत सासरें जाकें, पति विड़िनियाँ राखें।
उत बोलत इत बोलत नइयाँ, पर रत उत वे खाकें।
पुरा परौसी चौलें करतइ, देख अकेली पाकें।
हरिकृष्ण ''हरि'' तुम समझा दो, कै रए तुम्हैं सुनाकें।

हमखौ लगत बुन्देली नीकी, नई नबेली जी की।
जैसी मीठी लगन मिठाई, बनी बनाई घी की।
जइसें घर बाहर हम सबसें, करै बात हम ईकी।
हरिकृष्ण ''हरि'' लिखत बुन्देली, और लगत सब फीकी।

कैसौ मचौ बवेला भाई, आय हमें ना राई।
चैं चैं पैं पैं मची देश में, खोद रहे सब खाई।
भ्रष्टाचारी और गरीबी, चारऊ तरफै छाई।
हरिकृष्ण ''हरि'' भरे कूप में, जैसें फैली काई।

-हरि सदन, एकता नगर, उनाव मार्ग,
दतिया (म.प्र.) 475661
मोबा0-6264075891 卐

गढ़ी मऊरानीपुर के प्रशासनिक व आर्थिक संदर्भ

–डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला

भूमिका– राज्य की राजधानी का मुख्य दुर्ग शासक की शक्ति का प्रतीक और राज्य का रक्षक होता था। गढ़िया दुर्ग का छोटा रूप होती थीं। वे सामंतवाद की जनक व उसके विस्तार का स्वरूप होती थीं। इनके निर्माण के पीछे राज्य के आर्थिक सरोकार भी शामिल होते थे। यहाँ चर्चा झाँसी जिले के सुखनई नदी के किनारे स्थित मऊरानीपुर परगने के इतिहास काल की उठाई जा रही है। झाँसी–खजुराहो मार्ग की धसान नदी इस कस्बे से लगभग १५ कि0मी0 दूर है। नवमीं सदी से लेकर यह स्थान चंदेलों, बुन्देलों, मराठों व अंग्रेजी सत्ता के अधीन रहा था। यहाँ छोटी सी गढ़ी रही थी, जिसके अवशेष मात्र दिखाई देते हैं। मऊरानीपुर का महत्व वाणिज्य–व्यापार, चारागाह क्षेत्र, व्यापारिक व सैनिक मार्ग के रूप में प्रत्येक काल में बना रहा। गढ़ी राज्य के या जागीरदार के इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति का नेतृत्व करती थी। १

विद्वान के0पी0 त्रिपाठी ने अपने ग्रन्थ ''बुन्देलखण्ड के दुर्ग'' में बुन्देलखण्ड की उन गढ़ियों का उल्लेख नहीं किया है, जो वहाँ पहले रहीं थीं और अब वे ध्वस्त, जर्जर अवस्था में हैं। ऐसी गढ़ियों में मऊरानीपुर की भी एक गढ़ी थी। वैसे भी लेखकों ने गढ़ियों या दुर्गों के वर्णन में सदैव सैनिक उद्देश्य व उसकी स्थापत्य कला को ही प्रधानता दी है। गढ़ी निर्माण की पीछे के वाणिज्जीय–व्यापारिक, आर्थिक उद्देश्यों की चर्चा न के बराबर की है। शोध उद्देश्य की दृष्टि से वर्तमान में गढ़ी निर्माण के पीछे के आर्थिक लक्ष्यों की तलाश करना आवश्यक प्रतीत होता है। २

मऊरानीपुर की गढ़ी – ओरछा के शासक वीरसिंह बुन्देला (१६०५–२७) के काल के अध्ययन से यह समझ में आता है कि मऊरानीपुर ओरछा राज्य के अधीन एक कस्बा था और वहाँ एक गढ़ी थी। यह स्थान मुगलकालीन व्यवस्था में आगरा सूबे की एरच सरकार के जतारा (जिला टीकमगढ़) महाल में रहा था। चूंकि मऊरानीपुर क्षेत्र में मुगलों के आधीन आने वाली कोई खालसा भूमि क्षेत्र नहीं था, इस कारण यह स्थान राजस्व एवं प्रशासन के लिये पूरी तरह ओरछा के आधीन ही रहा था। सन् १७४२ ई0 में ओरछा के पृथ्वीसिंह बुन्देला से हुई मराठों की संधि के फलस्वरूप मऊरानीपुर परगना झाँसी के मराठा राज्य के आधीन हो गया था। सन् १८५४ के बाद झांसी अंग्रेजी शासन के अन्तर्गत आ गया था। ३

मैदानी गढ़ियाँ जो प्राय: चौरस मैदान में या बहुत कम ऊंचाई पर बनाई जाती थीं, वे प्राय: व्यापारिक आवागमन के मार्ग के करीब नदियों के समीप बनाई जातीं थीं। इनके बनाने का उद्देश्य व्यापारिक काफिलों को संरक्षण देना, व्यापार व्यवसाय को बढ़ावा देना, साहूकारों को सुरक्षा प्रदान करना, चारागाह के मैदानों को बढ़ावा देना, बाजार की रक्षा करना, घोड़ों के व्यापारियों को आकर्षित करना आदि होता था। इन साधनों से राज्य की आय बहुत बढ़ जाती थी। ओरछा के वीरसिंहदेव बुन्देला ने अपने काल में व्यापार–व्यापारिक काफिलों को बहुत बढ़ावा दिया था। तभी तो वीरसिंह अत्यधिक व्यय स्थापत्य के क्षेत्र में कर सके थे। ऐसे क्षेत्रों में सैनिक टुकड़ियाँ और सैनिक काफिले भी अधिक रुका करते थे, जहाँ घास के मैदान पर्याप्त मात्रा में होते थे। नदी आवेष्ठित मऊरानीपुर के भाग चारागाह के लिये उपयुक्त थे और यह स्थान बुन्देलखण्ड के भाग का प्रसिद्ध चौराहा था। मऊरानीपुर से चारों दिशाओं की ओर व्यापारिक मार्ग गये थे। मऊरानीपुर की गढ़ी चौरस मैदान में थी और व्यापारियों को आकर्षित करने के इसमें सभी गुण थे। इस गढ़ी का अस्तित्व १०वीं सदी चंदेल काल से रहा था। ४

गढ़ी सामन्तबाद की जनक प्रशासनिक इकाई – बुन्देलखणड के राज्य नये उत्तराधिकारी के गद्दी पर बैठते ही कई भागों में बँटकर नई जागीरों को जन्म देते थे। नई जागीरों में गढ़ियाँ बनती थीं, नये कस्बे का विकास होने लगता था, नया प्रशासनिक तन्त्र खड़ा होता था, मुख्य राज्य से कैसे सम्बन्ध बनें या बने रहते थे, इस प्रकार का राजनैतिक–कूटनीतिक खेल ताकत के बल पर चलता रहता था। विशेष स्थिति में बाहरी हस्तक्षेप भी होता था। इसी क्रम में नये गाँवों को बसाने और बंजर या पड़ती जमीन को जोतक्षेत्र में बदलने के लिये गाँव के गाँव ब्राह्मणों को पादारघ में और ठाकुर रिश्तेदारों को अनुदान में दिये जाते थे। पर हर स्थिति में यह जरूरी नहीं होता था कि पादारघ या अनुदान के रूप में बंजर क्षेत्र ही दिये जावें। नये गाँवों एवं नई गढ़ी के जन्म के साथ एक नये सामंत का उदय होता था, नया प्रशासन तन्त्र जन्म लेता था और जागीर क्षेत्र में नये बाजार के साथ अनेक हाटक्षेत्रों का जन्म होता था, नये रास्ते व्यवसाय के खुलते थे। कृषिक्षेत्र के विकास के साथ गाँवों में कृषि कार्य में व जीवन के अन्य क्षेत्रों में सहयोगी रहने वाली हुनरबन्द जातियाँ भी उन गाँवों में बसने लगती थीं। एक गढ़ी और गढ़ीदार के जन्म के साथ अनेक इतिहास के लक्षण प्रकट होते थे। इनका भी अध्ययन किये जाने की जरूरत है। ५

मऊरानीपुर एवं उसका परिक्षेत्र – इस शीर्षक के अन्तर्गत, पहले कस्बा मऊरानीपुर एवं मऊ–देहात की चर्चा करेंगे। मऊरानीपुर में १०वीं सदी की मूर्तियों के अवशेष मिलते हैं। इससे प्रकट होता है कि चंदेलकाल में गाँव–कस्बे के रूप में इस स्थान का अस्तित्व था और समकाल की व्यवस्था अनुसार यहां ग्रामरक्षक या ग्रामप्रधान रहता था। ग्रामरक्षक के निवास के लिये यहां कोई गढ़ी अवश्य ही होगी। मऊरानीपुर में सुखनई नदी है, नदी घाटों की रक्षा के लिये और व्यापार–व्यापारियों की निगरानी के लिये भी चंदेलकाल में छोटी गढियाँ बनाई गई थीं। मऊरानीपुर से खजुराहो मार्ग पर मऊरानीपुर धसान नदी से १८ कि0मी0 के करीब है और यहाँ कोटराघाट का वह स्थान है जहाँ से नदी पार कर व्यापारी, सेना, आदि के आवागमन का मार्ग था। कोटराघाट से प्राचीनकालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त होते हैं। मऊरानीपुर से इतनी ही दूरी पर देवरीघाट और

लहचूराघाट है। इन तीनों स्थानों पर गढ़ियाँ रही थीं। इन गढ़ियों के गढ़ीदार, किलेदार, फौजदार, ग्रामरक्षक, जो भी रहें हों, इनका मुख्यकार्य इन घाटों के यात्रियों-व्यापारियों की रक्षा करना और इनसे महसूल वसूल करना रहा था। मऊरानीपुर से लगे हुये भाग महोबा के बहुत करीब थे, महोबा (उ0प्र0 का एक जिला) में चंदेलों का दुर्ग था और वह कुछ समय चंदेलों की राजधानी के रूप में प्रतिष्ठित भी रहा था। इन संदर्भो के आलोक में यह मानने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिये कि गढ़ियों के अस्तित्व का बढ़ा कारण व्यापारियों की, और आवागमन करने वालों की सुरक्षा व्यवस्था की निगरानी करना रहा था।

मऊरानीपुर से ८ कि0मी0 दूर झांसी-खजुराहो मार्ग पर भदरवारा ग्राम है। इस स्थान पर ९वीं सदी के अवशेष मिलते हैं और यहाँ एक गढ़ी भी है। अंग्रेजीकाल में जब मऊरानीपुर में भयंकर प्लेग का प्रकोप पड़ा था तब मऊरानीपुर से भागकर लोगों ने इसी ग्राम में आश्रय लिया था। मऊरानीपुर से आगे नौगांव-छतरपुर, खजुराहो, पन्ना, सतना, रीवा (बघेलखन्ड), इलाहाबाद (प्रयाग) की ओर जाने वाला व्यापारिक और सैनिक मार्ग प्राचीन समय से ही प्रचलित था। व्यापारिक रास्तों के समीप प्रायः गढ़ियाँ बनाई गई थीं। रास्तें में पड़ने वाली गढ़ियों के गढ़ीदार, किलेदार आदि राहीगीरों की, व्यापारियों की रक्षा कर उनसे महसूल लेते थे। यह उनका राजकीय व नैतिक कर्तव्य था। इन व्यापारिक मार्गो पर सरायें भी बनाई गई थीं। ऐसे मार्गो पर लुटेरे भी सक्रिय रहते थे, कई गढ़ीदार स्वयं व्यापारिक काफिलों को लालच में लूट लेते थे। केन्द्रीय या प्रान्तीय या प्रमुख आचंलिक राज्य की सत्ता कमजोर होने पर गढ़ीदार स्वयं लुटेरे बन जाते थे। ६

मऊरानीपुर से ६ कि0मी0 दूर रौनी गाँव में ९वीं सदी की जैन तीर्थंकर की प्रतिमा एवं जिन प्रतिमायें मिली हैं। यहाँ १४वीं सदी तक के पुरातात्विक अवशेष और बाउरी तथा ईटों के टुकड़ें मिलते हैं। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि जैन मंदिर प्रायः जैन श्रेष्ठियों और व्यापारियों ने ही बनाये हैं। मऊरानीपुर से गुरसंराय मार्ग पर १२ कि0मी0 दूर गुरसरांय मार्ग पर स्यावरी नामक गाँव है। इस गाँव में बंजारों अर्थात व्यापारियों का बनवाया एक मंदिर और एक बाउली (बेर) उपलब्ध है। उल्लेखनीय है कि बंजारों-व्यापारियों के काफिले देश भर में चला करते थे। वे युद्ध हेतु प्रयाणरत रहती हुई सेनाओं को भी खाद्य रसद उपलब्ध कराते थे। वे काफिले चलता-फिरता व्यापारिक केन्द्र हुआ करते थे, इनके साथ साहूकार भी रहते थे और कोल्हू से तेल निकालने वाले भी चलते थे। ये बंजारे लोग अधिक प्रचलित मार्गो पर अपने ठहरने के ठिकाने भी बना लेते थे। इन ठिकानों से प्रायः वे आसपास के क्षेत्र से विक्रय करने के लिये जिन्सें एकत्रित करते थे। मऊरानीपुर गुरसरांय मार्ग काफी पुराना प्रचलित व्यापारिक मार्ग था। इन सभी मार्गो पर गढ़ियाँ रही थीं। गढ़ी व्यवस्था से जुड़े हुये ये आर्थिक अर्थवोध प्राप्त होते हैं। गढ़ी व्यवस्था राज्य का सैन्यतंत्र भर नहीं थी, वह राज्य सम्बन्धी अनेक गूढ़ अर्थो से जुड़ी हुई थी। ७

मऊरानीपुर में गढ़ीदार के संरक्षण में १९वीं सदी के चौथे दशक के मराठाकाल में सूती वस्त्र उद्योग का उत्पादन और व्यवसाय बहुत तेजी के साथ बढ़ा था। ओरछा राज्य के समय से ही मऊरानीपुर एक आवागमन चौराहे के रूप में पूर्णरूप से विकसित हो चुका था। इसके उत्तर में गुरसंराय और कालपी, दक्षिण में टीकमगढ़ और सागर, पूर्व में छतरपुर और पन्ना, पश्चिम में झांसी के भाग थे। मऊरानीपुर को व्यापार का क्रेन्द्र माना जाता था। पूरे देश के परिप्रेक्ष्य में मुगलकाल में पश्चिमी बुन्देलखण्ड व्यापार के लिये प्रसिद्ध रहा था। पश्चिमी बुन्देलखण्ड के इन भागों में बड़ेगांव-कस्बों में गढ़ियां भी बहुत रहीं थी। मराठा काल में मऊरानीपुर में प्राचीर से युक्त गढ़ी थी और उसमें पर्याप्त मात्रा में सैनिक रखे जाते थे। मऊरानीपुर के बाजार को लाल बाजार कहते थे। यहां की खोरें, बुन्देलखण्डी ओढ़न बहुत प्रसिद्ध थे, सूदूर देश के भागों में इनकी मांग थी। कपड़े पर ठकाई अर्थात रंगीन छापा यहां का बहुत प्रसिद्ध था और ठिकाईदार छपाई के रंग भी पक्के होते थे। यहों की कांकरे की धोती बहुत लोकप्रिय थी। यहां बुनकर, कोरी जाति के लोग बहुत रहते थे, जो कपड़ा बनाने में, उसकी छपाई और फिनिशिंग करने में कुशल थे। मऊरानीपुर से अनाज, मोटा अनाज, मद्रास, मद्रास (चेन्नई) तक जाता था। यहां व्यापार करने वाली कौम गहोई बणिक, अग्रवाल, जैन आदि लोग अच्छी संख्या में रहते थे। व्यापारियों-यात्रियों के लिये यहां मुगलकालीन सरांय भी थी।

मऊरानीपुर से लगा कस्बा रानीपुर है, यहाँ गढ़ी भी है, इसे ओरछा के शासक सुजानसिंह बुन्देला (१६५३-७२) की रानी बृजकुँअरी ने बसाया था। मऊ सम्बोधन से जुड़े हुये और कई कस्बे बुन्देलखण्ड के इन भागों में हैं। बुन्देलखण्ड का जीवन वृक्ष महुआ माना जाता है, इसके फल-फूल, तना, सभी काम में आते हैं। महुआ इस क्षेत्र का गरीबों का भोजन माना जाता है। महुआ की लकड़ी घर की खपरैल के छावन में म्यार के रूप में, चूने की छत डालने में पाटन के रूप में, और धर के किवाड़ बनाने में काम आती थी। बुन्देलखण्ड के अधिकांश दुर्गो के बड़े फाटक महुआ की लकड़ी के बने हैं। महुआ सदियों से बुन्देलखण्ड के लोक, लोकजीवन, लोकसंगीत, लोकगीत, आदि सभी क्षेत्रों में शामिल है। अंगेजों ने रेल्वे लाइन डालने में पटरियों के बीच को नियंत्रित रखने में इसका व्यापक उपयोग किया था। इस महुआ वृक्ष का बुन्देलखण्ड के गाँव-कस्बों के नामकरण से कोई सम्बन्ध था, कह पाना कठिन है, लेकिन मऊ-महुआ आम ग्रामीण आदमी की लोकगेयता, लोकपसन्द को जरूर रेखांकित करता है। रानीपुर भी वस्त्र व्यवसाय से जुड़ा हुआ स्थान है। मऊरानीपुर से माल हाथरस, फतेगढ़, कानपुर, अलीगढ़, मिर्जापुर, अमरावती, छतरपुर, इंदौर-भोपाल, की ओर जाता था। वर्तमान में इन भागों का वस्त्र व्यवसाय कमजोर पड़ जाने के कारण इन भागों के दक्ष बुनकर-कारीगर मऊरानीपुर के क्षेत्रों से पलायन कर अहमदाबाद, गुजरात के अन्य नगरों की ओर पलायन कर गये हैं। गढ़ी होने पर एक गाव, कस्बा बनता था और वहाँ सुरक्षा, व्यवसायिक सम्मान की स्थिति बेहतर होने पर ही समृद्धि होती थी। गढ़ीदार या किलेदार या फौजदार के सजग-सर्तक रहने पर ही ये स्थितियाँ बनती थीं। ८

महाकवि केशव ने ग्रन्थ ''वीरचरित्'' में दुर्ग के सम्बन्ध में लिखा है, कि–

रम्यं प्रशस्तामाजीव्यं जांगल्यं देशमाविशेत।
तत्र दुर्गणिकुर्वीत जनकानात्मगुप्तये।।

अर्थात्, राजा को चाहिये कि वह गुप्तरूप जंगलों में, उपजाऊ जमीन में दुर्ग बनवाये और उसकी जानकारी अपने सगे सम्बन्धी और माता–पिता को भी न दे। वे आगे लिखते हैं, कि–

अस्त्र सस्त्र बहु जंत्र बिधान। अन्न पान रस पट तनत्रान।
कंद मूल दल औषध जाल। सहित दान तृन बांधी ताल।।
ठौर ठौर अधिकारी लोग। राखै नरपति जाके जोग।
सूरे सुचि अरु होय अनन्य। प्रभु की भक्ति गहौ मन मान्य।।

अर्थात्, राजा दुर्ग को नवीन अस्त्र–शस्त्रों से सुसज्जित रखे, उसमें पर्याप्त औषधियां रखे, दुर्ग के चारों ओर तालाब बनबाये और रक्षा हेतु खाई बनवाये, शूरवीर और ईमानदार अधिकारियों की नियुक्ति करे। तालाब बनबाना, उपजाऊ जमीन का होना, और औषधियों का दुर्ग के साथ होना तथा दुर्ग का छिपे स्थान पर अपने सम्बन्धियों की जानकारी में न होना सम्बन्धी विशेषतायें आर्थिक प्रश्न हैं। दुर्ग या गढ़ी के अध्ययन के साथ समकाल की इस सैद्धान्तिक प्रवृत्ति के विषय में भी तथ्य जुटाये जाने चाहिये। ९

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि गढ़ी केवल स्थापत्य का चमत्कार एवं सैनिक दुर्गमता का प्रतीक भर नहीं है। उससे सामंतवाद, कस्बावाद, आर्थिक उद्देश्य आदि अनेक राजस्वीय एवं राजकीय कारण जुड़े हुये थे। इन सबकी पूरी पड़ताल ही गढ़ी के निर्माण के अध्ययन के पूरे लक्ष्य को सामने ला सकती है।

संदर्भ-ग्रंथ –

१. झांसी गजे0, एडी0डी0एल0 ड्रोक ब्रोकमैन, सुपिन्टेनडेन्ट इलाहाबाद यू0प्रो0 १९०९, पृ0 ७३–३०६, झांसी जनपद का पुरातत्व (मऊरानीपुर) भाग–१, सम्पा0 राकेश तिवारी क्षेत्रीय पुरातत्व इकाई झांसी २००५, भूमिका, पृ0 १–२।
२. बुन्देलखण्ड के दुर्ग, के0पी0 त्रिपाठी, समय प्रका0 दिल्ली २००५, राजस्थान के प्रमुख दुर्ग, राघवेन्द्रसिंह मनहर, राजस्थान हि0ग्र0 अकादमी जयपुर १९७७, भारत के प्रमुख दुर्ग, दीनानाथ दुबे, प्रका0 विभाग भारत सरकार दिल्ली २०१४, पूर्ण ग्रन्थ।
३. आइन–ए–अकबरी, अबुल फजल कृत, अंगेजी अनु0एच0एस0 जैरिट, डी0के0पब्लि0 दिल्ली १९९४, पृ0 १९०–९९, मुगलों के अंतर्गत बुन्दे0 का सामा0आ0 ओर सांस्कृतिक इतिहास, बी0डी0 गुप्ता, हिन्दी बुक सेन्टर दिल्ली १९९७, ५०–२२३, बुन्देलखण्ड के इतिहास के सांस्कृतिक और सामाजिक प्रसंग, रामस्वरूप ढेंगुला, राधा पब्ली0 दिल्ली २०२०, पृ० १९६–२४४, मराठों के अन्तर्गत बुन्दे0, बी0आर0 अंधारे, विश्वभारती प्रका0 नागपुर २०१०, पृ० ६० –६१, झांसी राज्य का इतिहास, बी0डी0 गुप्ता, राजकीय संग्रहालय झांसी २००८, पृ0 १४६–२३३।
४. झांसी जनपद का पुरातत्व (मऊरानीपुर) भाग–१, पृ0 १९–२०।
५. भारतीय सामंतवाद, रामशरण शर्मा, राजकमल प्रका0 दिल्ली १९७३, पृ0 १६१–३०१, मुगलों के अन्तर्गत बुन्दे0 का साम0आ0 और सास्कृ0इति0, बी0डी0गुप्ता, पृ0 ५९–६२।
६. झांसी जनपद का पुरातत्व (मऊरानीपुर) भाग–१, पृ0 ६–२८, चंदेल और उनका राजत्वकाल, केशवचन्द्र मिश्र, ना0प्र0 सभा काशी सं0 २०५६, पृ0 १२४–२५, अर्ली रूलर्स आफखजुराहो, एस0के0 मित्रा, के0एल0 मुखोपाध्याय कलकत्ता १९५८ पृ0 २२–१८१।
७. झांसी जनपद का पुरातत्व (मऊरानीपुर) भाग–१, पृ0 २५–३०।
८. झांसी गजे0 पृ0 ७३, झांसी राज्य का इति0 और संस्कृति, बी0डी0 गुप्ता, पृ0 २५०, बुन्दे का इतिहास, भाग–१, प्रतिपालसिंह, प्रका0 पृथ्वीसिंह छतरपुर २००९, पृ0 ९४–९६, एवं मऊरानीपुर निवासी सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ0के0बी0 एल0 वांडे जी से चर्चा।
९. केशव–ग्रन्थावली, भाग–३, संम्पा0 विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, हिन्दुस्तानी आकदमी इलाहाबाद १९५९, पृ0 ५९४–९५।

–कुँजनपुरा, दतिया (म.प्र.)
मोबा0–9407588157 卐

भौतऊ दुक्ख झेल रई धरती

– डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय 'सरल'

भौतऊ दुक्ख झेल रई धरती, जब सें नर पापी भव भइया।
अपने पाऊँन मार कुल्हारी, नर संहारी बन गव भइया।
नेकी कौ फल देत बदी सें, खूँन से धरा सींच रव भइया।
भूल रवो एसाँन धरा के, पाप–गठरिया सजरव भइया।।

जन्मों पालौ, पोसौ जीनें, बई धरा की दुर्गत कर रवो।
जीनें सुक–साधन दये सबरे, बई की कुगत बुरई नित कररवो।
दई नद नदियाँ जीवन देवै खों, सब जग में हरियाई छाई।
बन्न बन्न फसलें उपजें जौन, गऊँऊन खों जीवन दाई।।

बेलें बिरछा फूल फल औषध, दई धरती मनहर महँकाई।
बई हरियाली मिटा रवो नर, नंगी धरती भइ दुखदाई।।
कोल कोल धरती की संपत, पोली कर सब चैन छाँन रये।
भूकम्पन खों न्योतौं दै कें, खुदऊ अपनी मौत जाँन रये।।

कचरा कूरा नदियँन–डार मैलो कर नित गंद बढ़ा रये।
सीवर कारखानन की गंद, नद नदियँन में जहर मिला रये।।
जहरीलौ पानी पी पी कैं, पशू पखेरू रोजऊँ मर रये।
ढेरन रोग पेर रय सब खों, तौऊ हम सब नई चेत रये।।

कैऊं तरा की अन्न की फसलें, देय लाड़ दुलार संग धरती।
बई में बारूदन की फसलें, उगा रहे विध्वंशी खत्ती।।
आतंकन की लगी लैन है, रोजऊँ खूँन झेल रई धरती।
पूजनीय धरती माता खों, जई पीरा हर पल रई खलती।।

अबऊँ चेतलें सबरे भइया, बिगरी बात तौऊ बन जाए।
हिंसा बैर भेद खों छोड़, नेह, प्रेम–रंग सब रँग जाए।।
जी धरती नें दए सुख साधन, समरसता की गंग बहायें।
रहें प्रेम हिल मिलकर सब, धरती माँ कौ कर्ज चुकायें।।

– ९७/१७–ए, सिविल लाइन, झाँसी
मोबा0–9452921298 卐

पं. बनारसीदास चतुर्वेदी का साहित्यिक श्राद्ध

(हरिविष्णु अवस्थी द्वारा संपादित-मधुकर की समीक्षा)

-स्व. गुणसागर सत्यार्थी

'मधुकर' न केवल बुन्देलखण्ड के सन्दर्भ में अपितु हिन्दी-पत्रकारिता के इतिहास में मील का वह पत्थर है जो भारतीय पत्रकारिता के शोधार्थियों, बुधजनों को आगे से भी और आगे जाने हेतु मार्ग प्रशस्त करता है। यह कोई 'माया'-'मनोहर कहानियां' जैसी लोक मनोरंजन करने वाली पत्रिका नहीं है। यह बीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध का एक प्रकार से 'कालपात्र' है जो आज स्मृतियों में गहरे, बहुत गहरे गड़ा हुआ है। आने वाले समय में युगों-युगों तक गहरे पैठ कर शोध करने वालों के लिए मानों 'मधुकर' अनेक मार्गो के चौराहे पर खड़ा वह स्तम्भ है जिसकी पट्टिकाओं से पथिक दिशा निर्देश प्राप्त करते हैं।

हिन्दी पत्रकारिता के स्वर्णिम इतिहास के स्वर्णिम पाक्षिक पत्र का नाम है-'मधुकर' जो हिन्दी में जनपदीय पत्रकारिता को जन्म दे सका था। इसके यशस्वी सम्पादक थे-पं. बनारसीदास चतुर्वेदी। यह नाम भी आज यह जनपदीय पत्रकारिता में जाज्वल्य मान ब्रहस्पति नक्षत्र के समान यथावत चमक रहा है। यह जनपदीय पत्रकारिता की गंगोत्री किसी महानगर रूपी हिमालय से नहीं बुन्देलखण्ड के एक छोटे से ग्राम कुण्डेश्वर जो वर्तमान मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ जनपद में स्थित है, से प्रस्फुटित हुई। सन् १९४० से १९४६ तक मात्र छैः वर्ष में ही मधुकर ने भारत के कितने ही जनपदों में जनजागृति का बहुआयामी आलोक बिखराया है। एक उदाहरण देखें-भारत १९४७ में स्वतंत्र हुआ पचासवें दशक में वह स्थिति आई कि भारत के अंग्रेज जब गए तो भारत को खोखला करके गए। उस समय भारत को दुनियाँ के अन्य उन्नत देशों के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ना था। इस हेतु चहुमुखी विकास के लिए जो क्रान्ति लाई गई उसमें पंचवर्षीय योजना की प्रमुख भूमिका है जिसके अन्तर्गत हरित क्रान्ति आई। तब लोगों ने देखा कि एक चमत्कारी फसल 'सोयबीन' की उगाई गई जिसने मानो सोना उगाकर भारत को आर्थिक मजबूती प्रदान कर दी। बहुत कम लोग इस रहस्य को जानते हैं कि सोयाबीन की क्रान्ति आजाद भारत से एक दशक पहले ही अपने मधुकर के अंकों में जाग्रत की थी। अर्थात् मधुकर कितनी दूरद्रष्टि के साथ जनपदीय पत्रकारिता के माध्यम से देशहित कर रहा था। उसके बाद कितने ही आलेख सोयाबीन की उन्नत खेती के बारे में छापने वाली भारत में पहले स्थान पर यही 'मधुकर' था। ऐसा बहुआयामी विकास का बिगुल बजा देने वाली जनपदीय पत्रकारिता आज स्वयं में शोध सन्दर्भ का महाग्रन्थ अवश्य है।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने १९२५ में ही जागृति का बिगुल 'भारत भारती' के माध्यम से बजाते हुए लिख था -

"हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी?
आओ विचारे आज मिलकर ये समस्याएं सभी"

और उन सभी समस्याओं पर मिलकर विचार कर लेने से तो कोई बात बनने वाली नहीं थी। इसलिए राष्ट्रकवि के इस कथन के भी आगे बढ़कर ऐसी ठोस पत्रकारिता की आवश्यकता पं. बनारसीदास चतुर्वेदी ने जनपदीय पत्रकारिता को कुण्डेश्वर जैसे गाँव मं बैठकर जनपदीय पाक्षिक-पत्र मधुकर के माध्यम से उन सभी समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त करते हुए पत्रकारिता का नया मार्ग प्रदान किया था। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जिस मधुकर ने डंका बजाया था वह केवल कुण्डेश्वर या बुन्देलखण्ड में ही नहीं सम्पूर्ण भारत की हिन्दी जगत में गूंज रहा था। मधुकर ने छः वर्ष तक जो करिश्मा किया वह भारत की बहुआयामी विकास यात्रा में मील का पत्थर सिद्ध हुआ। आज इतना अन्तराल बीत चुका है उस युग में जो कुछ प्रकाशित मधुकर में किया गया उसका अक्षर-अक्षर बहुमूल्य है। घूमफिर कर आज हम उस एक बिन्दु पर आ जाते हैं कि वह मूल्यवान सामग्री हमारे लिए दुर्लभ है। आए दिन शोधार्थी भटकते हुए आते हैं और उन्हें निराश लौटाना पड़ता है। मधुकर की पुरानी फाइलें भी उपलब्ध नहीं हैं। हमारे राष्ट्रकवि कह गए कि इन समस्याओं पर मिलकर विचार करो। इस प्रकार हमारे समक्ष इन समस्याओं की भी विकट समस्या आकर खड़ी थी। ऐसी ही समस्याओं से जूझने वाली पत्रकारिता को पं. चतुर्वेदी जी ने पोषित किया था। मुझे लगता है श्री अवस्थी जी को पं. बनारसीदास चतुर्वेदी जी की स्वर्गीय आत्मा ने ही जगाकर यह प्रेरणा दी कि गुजरे हुए जमाने के जखीरे में गहरे पैठ कर उन अमूल्य रत्नों को न केवल खोजना है बल्कि संकलित करके पुस्तकाकार परोसना भी है और फिर अवस्थी जी ने श्रमसाध्य यह कार्य किया जिसका सुफल है यह दुर्लभ पुस्तक-"मधुकर-युग निर्माता पाक्षिक-पत्र की विवरणी।"

श्री अवस्थी जी ने अपने संपादकीय शीर्षक आलेख में श्री चतुर्वेदी जी को कलकत्ता जैसे महानगर से यह भी उस युग की हिन्दी में छपने वाली श्रेष्ठ पत्रिका विशाल भारत का प्रतिष्ठापूर्ण सम्पादक का पद छोड़कर अक्टूबर १९३७ में कुण्डेश्वर आने का वही बहुप्रचारित करान दर्शाया है जो उस समय की नाजुक परिस्थिति मे जानबूझकर प्रचारित किया गया था जबकि यथार्थ में उस कारण की पृष्ठभूमि की व्यथा कथा इन पंक्तियों के लेखक ने स्वयं दादाजी (पं. बनारसीदास चतुर्वेदी) के ही श्रीमुख से सुनी है। उन्होंने इसकी जड़ में एक घटना का उल्लेख किया था कि-"एक दिन विशाल भारत के कार्यालय में संध्या समय एक व्यक्ति हथकड़ी-बेड़िया पहने में आया था। स्वतंत्रता सेनानी के रूप में वह अंग्रेजों की जेल में था जो किसी प्रकार

जेल से फरार होकर आया था। मैंने उसकी व्यथा कथा जान लेने के बाद राष्ट्रीय भावना से उसकी मदद करने का निर्णय ले लिया और प्रेस के फोर मैन से छैनी हथोड़े द्वारा उसकी बेड़ियाँ वगैरह कटवा कर कुंए में डलवा दी। यह बहुत बड़ी रिस्क मैंने उस दिन ले ली थी। उस कैदी को मुक्त करवा कर भगाया था। ब्रिटिश पुलिस तीसरे दिन खुफिया जानकारी के आधार पर हमारे यहाँ सूंघती हुई आई और तलाशी ली गई, मुझे भी धमकाया गया.......। तब मैनें ओरछेश को फोन करके पूरी घटना बताई थी। ओरछेश ने ऐसी नाजुक परिस्थिति में मुझे तत्काल टीकमगढ़ आ जाने को कहा। इस प्रकार मैं रातों रात टीकमगढ़ पहुँचकर उनकी रियासत में सुरक्षित हो गया था......।''

१९६४-६५ में जब पं. चतुर्वेदी जी दोबारा कुछ दिन के लिए कुण्डेश्वर प्रवास में आए थे, तब नित्य प्रति प्रात:कालीन भ्रमण में उनके साथ खैराई के जंगल में घूमने और ऐसी ही रहस्यपूर्ण बातों की चर्चाएं सुनने को मिलती थीं। उस समय श्री रूसिया जी और कभी-कभी टीकमगढ़ से श्री भैयालाल शर्मा और पंडित श्री कृष्ण किशोर द्विवेदी भी आकर उस भ्रमण में हमारे साथ हुआ करते थे। तब दादाजी, अपने कुण्डेश्वर आगमन के सन्दर्भ में प्राय: इस दोहे को अवश्य सुनाते थे कि -

''चित्रकूट में रम रहे, रहिमन अवध नरेश,
जा पै विपदा परत है, सो आवत इहि देश।''

और फिर कहते मैं भी विपदा का मारा यहाँ बुन्देलखण्ड में आया। उस समय मैं कुछ ऐसे ही संकट में था। ओरछेश का इसीलिए ऐहसानमन्द हूँ जो उन्हों ने संकट के समय मुझे यहाँ पर शरण दे रखी थी......वगैरह। इसके बाद कभी तो उन्होंने यह भी लिखा था कि ''यदि मैं यहाँ न आया होता तो जेल काट रहा होता।'' विचारणीय हैकि ऐसा उन्होंने कौन सा जघण्य अपराध किया था जो जेल तक की नोबत आ गई। तब यह रहस्यपूर्ण घटना उन्होंने उस दिन प्रात:कालीन भ्रमण में सुनाई थी।

इस प्रकार श्री अवस्थी जी ने उस समय के प्रमाणिक दस्तावेज जुटाकर उनका जो संकलन इस पुस्तक में संजोकर सर्व सुलभ कराया है जिसमें न केवल उन ऐतिहासिक पत्र मधुकर और लोकवार्ता की सम्पूर्ण विवरणी है अपितु कुछ प्रामाणिक महत्वपूर्ण लेख भी तत्कालीन सुनाम धन्य लेखकों के हैं। जैसे स्वयं पं. बनारसीदास चतुर्वेदी के अलावा श्री यशपाल जैन, श्री कृष्णानन्द गुप्त, श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी के लेख ऐतिहासिक हैं। इस पुस्तक की भूमिका सप्रेसंग्रहालय भोपाल के संस्थापक संयोजक श्री विजयदत्त श्रीधर ने लिखकर उसका महत्व निरूपित किया है। इस अनूठे श्रमसाध्य संकलन के लिए बड़े भाई श्री हरिविष्णु अवस्थी के प्रति शोधार्थीगण के साथ हिन्दी जगत आभारी है। तदर्थ उन्हें बहुत बहुत साधुवाद इस अनूठी सफलता हेतु।

(आदरणीय गुणसागर सत्यार्थी का देहावसान हो गया है, बुंदेली बसंत परिवार श्रद्धांजलि व्यक्त करता है)卐

नागफनी बड़ रई धरती पै

-रतिभानु तिवारी 'कंज'

कलुआ की काकी पनघट पै, कर रइती बतकारौ।
गली गली में जमें बमूरा, जर सैं इनै उखारौ।।
बेला जुही चमेली चम्पा, जानै कितै हिरानी।
नागफनी बड़ रइ धरती पै, अमर बेल गर्रानी।।
घूरे पै हँसतई धतूरौ, गैंदा लेत उसांसें।
जरिया और मकौर बाग में, जानै आ गयीं कासें।।
आँधी सन्नानी बगिया में, रन बन कौ कर डारो।
कलुआ की काकी पनघट पै, कर रइती बतकारौ।।
दगा करै बिस्वास इतै अब, कछू तनक तौ सोसौ।
अपनौं खून परावो लगतइ, कीकौ करैं भरोसौ।।
सबइ तरा सैं नठ गयी अब तौ, बिना धार कै बैरये।
निगरय अंजानी गैलन में, काँटे ककरा सैरये।।
अँदयारै सें डरै जुनइया, दुकत फिरै उजयारौ।
कलुआ की काकी पनघट पै, कर रइती बतकारौ।।
प्रश्न आज उत्तर खौं तरसै, कौउ न उत्तर दैबे।
बैठो नाग बमीठै भीतर, फन काढ़ैं डस लैबे।।
मठाधीस मठ के महंत, बन बैठे आज मदारी।
ऐसौ आव समइया भइया, खात खेत खौं बारी।।
गाँव भवो ऊजर ममता कौ, गतकौ लगो करारौ।
कलुआ की काकी पनघट पै, कर रइती बतकारौ।।
दुर्योधन हो गय घर घर में, सकुनी पाँव पसारै।
छल अनरीत कपट सें जयद्रथ, अभिमन्यू खौं मारैं।।
अर्जुन खैंच रय द्रौपदि की, बीच गैल में सारी।
बिना दोष के बरै आग मैं, अबतौ सिया बिचारी।।
धरम कौल ईमान बिला गव, हो गव बंटाढारौ।
कलुआ की काकी पनघट पै, कर रइती बतकारौ।।

-बुन्देली धाम-नैगुवां, जिला निवाड़ी (म.प्र.) 卐

समीक्षा –

डॉ.एम.एल. प्रभाकर रचित लोकदेवता कारसदेव :एक दृष्टि

–हरिविष्णु अवस्थी

बुन्देलखण्ड की पावन धरा पर जन्में उसकी माटी की सौंध एवं अन्न–जल से परिपुष्ट हुए डा.एम.एल. प्रभाकर जी की साहित्य साधना पर एक दृष्टि डालने पर ऐसा अनुभव होता है कि साहित्य जगत में उनका प्रवेश अपनी मातृभूमि बुंदेलखण्ड के ऋण परितोष की उदात्त भावना से प्रेरित होकर ही हुआ है।

डॉ. प्रभाकर द्वारा रचित अधिकांश साहित्य बुन्देली लोक जीवन में समाहित संदर्भों से ही उत्प्रेरित है। जहाँ एक ओर उन्होंने 'अछरू माता' एवं शिवधाम कुण्डेश्वर पर शोध प्रबंधों की रचना की। वहीं दूसरी ओर लोककवि ईसुरी, जिनकी रचनाएँ लोककण्ठ में स्थाई स्थान बना चुकी हैं, लोकदेवता हरदौल जिन्होंने अपनी माता तुल्य भावज की चरित्र रक्षार्थ अपना प्राणोत्सर्ग किया था और बुन्देलखण्ड में ही नहीं देश के अन्य क्षेत्रों में लोक देवता के रूप में स्थापित हैं, रतनगढ़ की माता मांडूला भी महाकाव्यों की रचना की है।

इसी क्रम में 'लोक–देवता कारसदेव' आपका सद्यश: प्रकाशित महाकाव्य है। जिसकी रचना विभिन्न साहित्यक एवं सांस्कृतिक उपवनों सें संचित, सुकोमल एवं सुवासित शब्द सुमनों की काव्यमाला के रूप मे चतुराई के साथ गूँथ कर किया गया है। बुन्देलखण्ड की पशु–पालक जातियों में कारसदेव का लोकदेवता के रूप में महत्वपूर्ण स्थान है। कारसदेव सम्बन्धी सामान्य जानकारी विभिन्न अवसरों पर उनके चबूतरों पर गाये जाने वाले गीत 'गोटें' से प्राप्त होती है। इस अपूर्ण जानकारी को पूर्णता प्रदान करने की दृष्टि से डॉ. प्रभाकर ने कारसदेव से संबंधित स्थानों पर जाकर वहाँ के वयोवृद्धों से सम्पर्क कर जानकारी संकलन का श्लाघनीय कार्य किया है।

'लोकदेवता करास देव' महाकाव्य ग्यारह सर्गों में विभक्त है। प्रथम वन्दना सर्ग में चिर स्थापित देव आराधन वन्दना का अनुसरण करते हुए गणाधिपति गणेश माँ शारदा, माँ विन्ध्यवासिनी के साथ ही साथ लोक–देवता कारसदेव की दोहा छंद वन्दना की गई है। इसके पश्चात दोहा छंद में ही कारसदेव एवं विभिन्न गुर्जर लोकदेवों का वन्दन किया गया है।

द्वित्तीय सर्ग में कारसदेव के पूर्वजों की ऐतिहासिकता पर प्रकाश डाला गया है। जिसमें कारसदेव के पूर्वजों का स्थान गढ़राजौर बताया गया है। उनके पूंर्वज वहाँ के शासक थे अथवा जागीरदार, सामंत यह स्पष्ट नहीं है। इस सर्ग में नगला जहाज नामक स्थान के पहुँच मार्ग का भी वर्णन किया गया है, जो कारसदेव का स्थान है।

तृतीय सर्ग में कारसदेव की पारिवारिक पृष्ठभूमि का वर्णन है। इसमें अपने मूल स्थान से पलायन कर 'नगला जहाज' में आकर बसने का विवरण दिया गया है। इस सर्ग में मुख्यत: कारसदेव के माता–पिता,चाचा–चाची के नामोलेख के साथ ही साथ अहलादी के जन्म आदि का वर्णन दिया गया है।

संकटकाल नामक चौथे सर्ग में विशेष रूप से अहलादी शक्ति सामर्थ का सुन्दर चित्रण किया गया है। लीला सर्ग नामक पाँचवे सर्ग में अहलादी की भगवान भोले शंकर की साधना का मनोहारी चित्रण किया गया है। नगला–जहाज के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन बहुत अच्छा बन पड़ा है। इसमें कारस देव के वाल्यकाल के क्रियाकलापों का भी विवरण दिया गया।

शौर्य नामक छटवें सर्ग में कारसदेव के राज्यारोहण के वर्णन के पश्चात् कारस देव द्वारा लड़े गए दस युद्धों में उनके द्वारा युद्ध में प्रदर्शित शौर्य का चित्रण किया गया है। गोलोक नामक सातवें सर्ग में दुष्ट दलन पश्चात् कारसदेव का महाप्रयाण दर्शाया गया है। महाप्रयाण के पूर्व परिजनों को नीति शिक्षा दी है।

माया नामक आठवें सर्ग में अहलादी को काकेर जाने, राजू–गोरे–सोढ़ा–सरनी के महाप्रयाण, अहलादी का अपनी भान्जी के विवाह का भात लेकर जाना तथा महाराज का भात लेकर पहुँचना आदि का विवरण दिया गया है।

अदभुत नामक नौवें सर्ग में कारसदेव की भात की कथा के वर्णन पश्चात् भक्ति नामक दसवें सर्ग में कारसदेव का झाँज अर्थात् नगला जहाज से पलायन कर म.प्र. के दतिया जिला के ग्राम परसौदा गुर्जर में आगमन का वर्णन किया गया है। सांसारिक नामक अंतिम ग्यारहवें सर्ग में, सांसारिकता का चित्रण करते हुए कारसदेव के पश्चात् उनके भानजे नैना की संतति के विधमान होने का वर्णन किया गया है।

विशेषत: महाकाव्य की रचना किसी ऐतिहासिक व्यक्तित्व पर आधारित ही होती है। रचनाकार के लोक–देवता कारसदेव को ऐतिहासिक पुरूष सिद्ध करने में पूर्णत: सफलता प्राप्त हुई। महाकाव्य की परम्परा, उसकी विशेषताओं का निर्वहन कृतिकार ने सफलतापूर्वक किया है। कारस–देव के चरित्र गायन की परम्परा का माध्यम बुन्देली लोकगीत 'गोटे' है। कारस देव के चरित्र को गायन के माध्यम से प्रस्तुत करने की इस परम्परा का पालन करते हुए कृतिकार डॉ.एम.एल. प्रभाकर ने महाकाव्य की रचना देश में और विशेष रूप से बुन्देलखण्ड में प्रचलित राधेश्याम रामायण नाम से प्रसिद्ध गायन शैली में की है।

कृति–लोक–देवता कारसदेव बुन्देली जनमानस को प्रभावित करने में पूर्णत: सफल सिद्ध होगी, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास। एक श्रेष्ठकृति की रचना हेतु रचनाकार बधाई के पात्र हैं। माँ वीणापाणी डॉ. प्रभाकर के कंठ में सदा बिराजमान रहकर उनसे कुछ न कुछ लिखवाती रहें कि अशेष मंगल कामनाओं के साथ।

– किले का मैदान, अवस्थी चौराहा, टीकमगढ़
मोबा0–9407873003 卐

रानी कमलकुँवरि और उनकी गणित प्रकाशिका

-डॉ. जयेश

बुन्देली बसन्त के विगत वर्षों के अंक में रानी कमलकुँवरि का ऐतिहासिक परिचय विस्तार पूर्वक दिया गया है। यहाँ पर उनका संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है। रानी कमलकुँवरि का जन्म दतिया राज्य से तेरह मील की दूरी पर स्थित उदगवाँ नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता श्री बहादुर सिंह परमार कुल के थे। माता-पिता ने इन्हें पुत्र की पाला किन्तु देवयोग से बाल्यकाल में ही परलोक गमन कर गये। किशोरावस्था प्राप्त होने पर इनका विवाह सरीला रियासत के दीवान सूर्य वंशीय अनुरूद्र सिंह जी के पौत्र के साथ सम्पन्न हुआ। विवाह तो सम्पन्न हो गया किन्तु **''तेर मन कछु और है, कर्ता के मन और''**- यह उक्ति इनके जीवन में पूर्णतः चरितार्थ हुई। कालान्तर में इनके सास-ससुर परलोकगामी हो गये और इन्हें भक्ति के रंग में रंगी हुई देखकर पति ने भी इन्हें त्याग दिया। तरूणावस्था में ही पति के द्वारा की गई उपेक्षा इन्हें प्रभु-वरदान सिद्ध हुई और इन्होने श्रीहितात्मज गो. गोपीनाथजी के वशंज गो. श्रीहित गिरधरलालजी महाराज से राधावल्लभ सम्प्रदाय की मंत्र-दीक्षा ले ली।

रस भारती संस्थान, वृन्दावन में इन्हीं के हस्तलेख में सुरक्षित ग्रन्थों की अन्तिम पुष्पिकाओं से ज्ञात होता है कि वि.सं. १९४६ के कुछ वर्षों पूर्व ही ये राजमहल त्यागकर सरीले शहर में स्थित श्रीराधाबल्लभमलालजी के मन्दिर में एकान्तिक जीवन व्यतीत करने लगी थी। इनका एकान्त निवास भी इनके परिवारजनो को सहन नहीं हुआ और वे इन्हें तरह-तरह की यातनायें देने लगे। इन संकटापन्न स्थितियों में भी ये प्रभु की कृपा का उद्गान करती रही और प्रभु सदैव इनकी रक्षा करते रहे। इन्होने अपनी रचनाओं में इन घटनाओं का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है-

विष सें जल सें अनल सें, खत बोरन सें लाल।
सब ठाँ राखी करि कृपा, काटे दुख के जाल।।

कुछ कालोपरान्त ये सरीले को छोड़कर वृन्दावन आ गई और यहीं पर अखण्ड निवास करने लगी। रानी कमलकुँवरि का अखण्ड वृन्दावन निवास किस समय से प्रारम्भ हुआ और ये वृन्दावन में कब तक विराजमानी रही, यह सभी अनुमानीय है। अभी तक इनकी जितनी रचनायें प्राप्त हो सकी हैं उनके नाम निम्नाकिंत है-

१.अनल मोचक अष्टक (दयानन भोजन अष्टक) २. अवतार चौबीसी ३. कमल प्रकाशिका, ४. करूणा चौतोंसी ५. कवित संग्रह ६. श्रीकृष्ण के जन्म की कथा ७. गणित प्रकाश या गणित प्रकाशिका ८. ग्रीष्म रितु के घोप और कविन ९. जगदीश बिहार (द्वादश माह की तेरह यात्रा) १०. जमुनाष्टक ११. द्वादश यज्ञ की फलास्तुति १४. पद्मवली (फुटकर पद, झूलन के पद, गो. हित हरिश्चन्द्रजू की जनम बधाई, लाल जू की जनम बधाई, प्रियाजू की जनम बधाई, गुरूवर्य गोस्वामी गिरिधरलालजू की जनम बधाई, श्रीकृष्ण वंशावली, श्रीकृष्ण जन्म कुन्डली, मोहन की नकल आदि) १५. बसंत विहार लीला १६. बारहमासी १७. विनय शतक (वन्दना वृन्दावनवासीन की व वन-यात्रा) १८. विनय माल दोहावली १९. विष मोचन अष्टक, २०. वृषमानुलली की जन्म कुन्डली २१. भागवत पुराण की टीका (अप्राप्त) २२. राधिका जन्म कथा २३. सावन बिहार लीला २४. सूक्ष्म कर्म विद्याय २५. श्रीजी के बिहार किया लीला २६. हित चौरासी की टीका आदि।

रस भारती संस्थान, वृन्दावन में क्रमांक सं. १४६५ से रानी कमलकुँवरिजी कृत 'गणित प्रकाशिका' नामी एक नवीन रचना उपलब्ध हुई है, जिसकी प्रति भी स्वयं रानी कमलकुँवरिज द्वारा वि.सं. १६४५ पौष सु.१५ गुरुवार को शरीले में स्थित श्रीराधावल्लभ मन्दिर में बैठकर की गई है। अन्तिम पुष्पिका निम्नांकित है-

''इति श्रीमनित प्रकाश शुभ संपूरन मिती पौष सुदि १५ गुरुवार सम्वत् १९४५ मुकाम श्रीराधाबल्लभजी कौ मन्दिर।।''

रानी कमलकुँवरिजी कृत 'गणित प्रकाश' किया 'गणित प्रकाशिका' अपने हम की एक अभिनय रचना है। १०३ दोहों में विरचित इस रचना में एक से लेकर सौ तक के अंको की गणना की माध्यम से श्रीराधा-श्यामसुन्दर के लीलामय रूप और रूपमयी लीलाओं का सुचारू चित्रण किया गया है-

एक वैस सुकुमार दोउ, एक संग दिन-रैन।
वृन्दावन विहरत सदा, रसिकनि के सुखदैंन।।३।।
दोऊ गलबाँहीं फिरत, वृन्दावन सुकुमार।
'कमलकुँवरि' के उर बसौ, जुगल प्रान-आधार।।४।।
(देखें दोहा सं.)

दोहा-

राखत आये राखियो, राधावर सुख-रासि।
तुमही पूरौ कीजियो, भाषा गनित प्रकाश।।१।।
सिद्धा सर्व त्रयोदशी, भौमवार शुभ सोय।
गनित प्रकाश जु कहत हों, मनसा पूरी होय।।२।।
एक वैस सुकुमार दोउ, एक संग दिन-रेन।
वृन्दावन बिहरत सदा, रसिकन के सुखदैंन।।३।।
दोऊ गलबाँहिं फिरत, वृन्दावन सुकुमार।
'कमलकुँवरि' के उर बसौ, जुगल प्रान-आधार।।४।।
तीनों ताप-निवारनी, कालिन्दी के तीर।
'कमलकुँवरि' बिहरत सदा, अति सुख होत शरीर।।५।।
चन्द्रवदन मृगलोचनी, शोभा चारुसुदेश।
'कमलकुँवरि' के दिवस-निशि, काटत कठिन कलेश।।६।।
पंचानन सेवत सदा, गोपेश्वर जग जान।
'कमलकुँवरि' वृन्दाविपिन, छवि शोभा की खान।।७।।
षट रस चार प्रकार के, बिंजन रहत तयार।
वृन्दावन में जुगलवर, पावत हैं सुख-सार।।८।।

राधे पहिरैं सतलरी, मोतिन की छवि देत।
'कमलकुँवरि' श्रीलाल कौ, बरबस चित हरि लेत।।९।।
अष्ट सखी सिरदार हैं, छवि शोभा गुन-खान।
'कमलकुँवरि' सेवा करत, राधावर की जान।।१०।।
नव-सत अंग सम्हारतीं, सखी जुगल निशि-भोर।
'कमलकुँवरि' हाजिर रहैं, दंपति कौं कर जोर।।११।।
दस दिशि तें मघवा उठे, ब्रज ऊपर घहरान।
गोवर्द्धन नख धरि लियौ, 'कमलकुँवरि' हरि जान।।१२।।
फागुन सुदि एकादशी, फूलडोल ब्रज होय।
झूलत राधा-साँवरौ, 'कमलकुँवरि' लखि सोय।।१३।।
द्वादस आभूषन सजैं, फूलनि के सिंगार।
'कमलकुँवरि' जोरी अचल, लीला नित्य बिहार।।१४।।
ते राजी हैं दिवस-निशि, वृन्दावन में वास।
'कमलकुँवरि' की साँवरे पूरी करिहैं आश।।१५।।
शोभा चौदह भुवन की, जो इकठी करि कोय।
'कमलकुँवरि' ब्रज-रैंनु की, उपमा तऊ न होय।।१६।।
पन्द्रा तिथि वृन्दाविपिन, बसत रहौं सब काल।
'कमलकुँवरि' विनती करत, मानौ प्यारी-लाल।।१७।।
सोरा सहस जु नायिका, मिले श्याम इक बार।
'कमलकुँवरि' निशि शरद की, क्रीड़ा रहसि बिहार।।१८।।
सत्रन कौ छय करत हैं, दासनि लेत उबार।
'कमलकुँवरि' इहि कारनैं, प्रगट कृष्ण-अवतार।।१९।।
अष्टादस कौ सार हैं, श्रीभागवत पुरान।
राधा-कृष्ण सरूप हैं, 'कमलकुँवरि' धरि ध्यान।।२०।।
उन समान को जगत में, जिनकैं भजन अधार।
'कमलकुँवरि' नित ध्यान करि, पानि रसिक-पद वार।।२१।।
राई सैं बीसौंहि सा, ताहू सैं कम जोय।
'कमलकुँवरि' प्रिय लाल बिनु, तनक न दरसत मोय।।२२।।
ये किसकी आशा करौं, तेरी मनसबदार।
'कमलकुँवरि' प्रिय-अनुचरी, सुनियौं वेगि पुकार।।२३।।
वायस कहा जु साँवरे, बहकावत हर सात।
'कमलकुँवरि' तेरे सरन, दरसन देउ गुपाल।।२४।।
ते यश-रस में मगन हों, श्रीवृन्दावन-वास।
जे यश-रस कौं निदहीं, परिहैं जम की फाँस।।२५।।
चौबिस निष्ठा जानियौं, भक्त एक निरधार।
'कमलकुँवरि' राधा-रमन, सबकी करत सम्हार।।२६।।
पंच-बीस जुर हरत हैं, बाधा सकल बिडार।
'कमलकुँवरि' राधा-रमन, देत पदारथ चार।।२७।।
छवि सुखदाई जुगल की, जब बसिहै उर माँहि।
'कमलकुँवरि' फिरि जगत में, काहू कौ डर नाहिं।२८।।
सत्ताई सुर जगत में, सब घट शक्ती जान।
'कमलकुँवरि' बिनु कृष्ण के, शक्ति कछु न जहान ।२९।।
अट्ठायस को दाव है, हार-जीत जग भूल।
'कमलकुँवरि' नित भजन करि, रहैं कृष्ण अनुकूल।।३०।।
उन्नतीस दिन प्रभु देत हैं, शीश प्रसादी धार।
'कमलकुँवरि'श्रीकृष्ण रटि, सिरजो सब सिनसार।।३१।।
तीस मान को जगत में, जो रट राधा-श्याम।
वाके पद की पाँवरी, 'कमलकुँवरि' कौ चैम।।३२।।

इकतिस ऊपर बात सुनि, सबही की सुधि लेत।
लाल कुसेरे कीट कों, किस विधि चारौ देत।।३३।।
बात सदा यह ध्यान धरि, गर्भ कियो प्रतिपाल।
'कमलकुँवरि' सोई दैंहिगें, दीननि के प्रतिपाल।।३४।।
तैंतिस पर समझत नहीं, आजहु लौं मन मोर।
'कमलकुँवरि' सब त्यागिकैं,भजि लै जुगल किशोर।।३५।।
चौतिस अक्षर में सिरें, बान सुखद प्रिय मोय।
'कमलकुँवरि' श्रीराधिका, कृष्ण रटौ सुख होय।।३६।।
पैंतिस कौं जो ना रटैं, चौरासी की त्रास।
'कमलकुँवरि' नित रटत रहु, पूरन हूहे आस।।३७।।
इकछति सब ठों राज हैं, राधा कृष्णमुरारि।
'कमलकुँवरि' तिंहु लोक में, वाही कौ विस्तार।।३८।।
सैंतिस एक सु धर्म कौं, करि अधर्म कौं खीस।
'कमलकुँवरि' यामें भलौ, करिहैं श्रीजगदीश।।३९।।
अरतिस केरौ कह करै, काल मृत्यु टरि जाय।
'कमलकुँवरि' नित भजन करि, राधा-कृष्ण सहाय।।४०।।
उन्नत लसत जु कंचुकी, ऊपर मोतिन-हार।
'कमलकुँवरि' हरि की प्रिया, शोभा कौ भंडार।।४१।।
चाल सखिन की लखि परत, जनु आवत गजराज।
'कमलकुँवरि' नँदलाल कौं, मिलत छाड़ि सब लाज।।४२।।
एकता लगत सुहावनौं, रूठनि में मुरझात।
'कमलकुँवरि' भृकुटी लसत, मोंहन हा-हा खात।।४३।।
ब्याली ससर बैंनी गुही, निजु कर लाल सुदेश।
'कमलकुँवरि' श्रीराधिका, सुखद सम्हारें केश।।४४।।
तैंता लसत जु नागरी, प्रीतम तजत न पास।
छाया सम नित सँग रहत, 'कमलकुँवरि' सुखरासि।।४५।।
चारु जु ऊपर चारु छवि, राधे-नन्दकुमार।
'कमलकुँवरि' शोभा-भवन, दिन प्रति करत बिहार।।४६।।
पैंती लगत जराव की, अँगुस्थान छवि-खान।
'कमलकुँवरि' ब्रज-भामिनी, मनभावन के प्रान।।४७।।
बिछिया लसत जराव कें, पाँय पोश झनकार।
घुँघुरू-अनवट अमित छवि, 'कमलकुँवरि' बलिहार।।४८।।
श्रीराधे के सात लस, सुभग सखी सुकुमार।
'कमलकुँवरि' सब सोंज लिय, अतर-पान वर वार।।४९।।
अरता लसत जु हितसखी, पीकदान कर मांहिं।
'कमलकुँवरि' प्रिय-लाल सँग, इकदम अन्तर नाहिं।।५०।।
पवन कोट उन्चास हैं, ब्रज की झारूदार।
'कमलकुँवरि' जहँ राधिका-मोहन नित्य बिहार।।५१।।
बातैं कहै पचास कोउ, डारै माया जार।
'कमलकुँवरि' बसि कुंज वन, छोड़ि कुटुम-परिवार।।५२।।
बान-राधिका श्याम की, सबके सिर पै एक।
'कमलकुँवरि' नित नाम रटि, सोई राखैं टेक।।५३।।
बावन हुय बलि कौं छल्यौ, अब लौं चौकी देत।
'कमलकुँवरि' प्रथमहिं कसत, फिरि अपनौं करि लेत।।५४।।
तेरे पन दुय वृथा गये, खेलत हँसत अयान।
'कमलकुँवरि' अब चेति ले, भजि ले कृपा-निधान।।५५।।
बचौ यनहिं के नाम सौं, काल मृत्यु टरि जाय।
'कमलकुँवरि' दिन-रैंन भजि, राधा-कृष्ण सहाय।।५६।।

पच पन तीनौं जात हैं, बिना भजन दुख माँहिं।
'कमलकुँवरि' ब्रजराज बिनु, संगी कोऊ नाहिं।।५७।।
छिप न सकत अप कैसहूँ, कीजे जतन अपार।
'कमलकुँवरि' हरि-नाम रटि, छूटत पाप-पहार।।५८।।
सन्ता उनके सुखद हैं, उभय लोक सुख देत।
'कमलकुँवरि' राधा-रमन, आठ पहर सुधि लेत।।५९।।
अनठोवन भ्रम जाल है, वृन्दावन शुभ ठाम।
'कमलकुँवरि' श्रीवन बसौं, छोड़ि सबै गृह-काम।।६०।।
संग न करि उन सठनि कौ, हिदै न उपजत ग्यान।
'कमलकुँवरि' त्यागैं बनैं, हरि के द्रोही जान।।६१।।
सठ सुधरत सतसंग तें, लोहा पारस भाँति।
'कमलकुँवरि' बिनु भजन के, कछू न आवत हाथ।।६२।।
इक सठ होय तो रोकियें, सठ मन सबही केर।
'कमलकुँवरि' श्रीकृष्ण रटि, सो प्रभु लैहैं घेर।।६३।।
वा सठ सैं जिन भूल हू, संग करौ जिनि कोय।
'कमलकुँवरि' जिहिं द्रोह किय,हरि-दासनि को होय।।६४।।
ते सठ जे भूले रहत, धन-कुटुम्ब-गृह-वाम।
'कमलकुँवरि' अंतिम समय, कोउ न आवत काम।।६५।।
चहुँ सठ निश्चै जानि लैं, लोभ-मोह-मद-काम।
'कमलकुँवरि' विनवत सदा, राखौ पति घनश्याम।।६६।।
पैं सठ तेरौं का करें, जो सहाय प्रिय-लाल।
'कमलकुँवरि' उर ध्यान धरि, जयों मनि राखत व्याल।।६७।।
छय सठ केरी कृष्णजू, करिहैं असुर-संहार।
'कमलकुँवरि' प्रतिपालिहैं, राधावर उर धारि।।६८।।
मज्जन करि ब्रज मान सर, सठ सुधरें तत्काल।
'कमलकुँवरि' पति राखिहैं, श्रीराधाबल्लभलाल।।६९।।
अरि-सठ-कपटी-दुष्ट-खल, हनत कृष्ण ब्रजराज।
दासनि की रक्षा करत, सारत हैं सब काज।।७०।।
उनह तरव सम तेज है, चक्रसुदरसन-धार।
'कमलकुँवरि' जे करत हैं, हरि-दासनि तें रार।।७१।।
सत्र न राखत अवनि पर, निज दासनि कौं श्याम।
'कमलकुँवरि' राधारमन, हैं सहाय सब ठाम।।७२।।
इकतर हो हरि-नाम रटि, और न कछू उपाइ।
'कमलकुँवरि' बिनु भजन के, कर मीजत पछिताइ।।७३।।
बहतर जो नित भजन करि, श्रीराधाबल्लभ ध्याइ।
नातरु जीवन है वृथा, जिमि उपज्यौ तिमि जाइ।।७४।।
तिहि तर हैं राधारमन, जो रटिहैं नित नाम।
'कमलकुँवरि' बिनु भजन के, ज्यौं चलनी कौ चाम।।७५।।
चौह तरफौं दावा अनल, घाई ती झहराइ।
'कमलकुँवरि' ब्रजराज नें, गोपी-ग्वाल बचाइ।।७६।।
सुपच तरौं सु भगति दईं, शंख बज्यौ सब जान।
नृपति दुदिसृल जग्य में, ल्याये कृपानिधान।।७७।।
छहतर बैरी जगत में, 'कमलकुँवरि' सच जान।
काम-क्रोध-मद-लोभ रत, अहंकार दुखदान।।७८।।
मुनि ऊपर मुनि अमित भये, नारदादि रिषि व्यास।
श्रीराधाबल्लभ की कृपा, आँनद तेज प्रकाश।।७९।।
मुनि ऊपर सिध असृ हू, दाया करत हमेश।
'कमलकुँवरि' श्रीकृष्ण रटि, दुख न रहै लव लेश।।८०।।
उन सी त्रिय को जगत में, जो हरि संग बिहार।
'कमलकुँवरि' सुर-वधू लजि, अपनौं सर्वसु वार।।८१।।
अैसी भई न आज लौं, राधा-मोंहनदास।
'कमलकुँवरि' तुव दास कौं, रहै जगत में साल।।८२।।
एक आस तेरी सदा, और न कोउ सहाय।
'कमलकुँवरि' जन दीन लखि, राखौ कर की छाँय।।८३।।
वे आसी तेरे नहीं, वीधे माया-जार।
'कमलकुँवरि' तेरैं बिकी, छोड़ि कुटुम-परिवार।।८४।।
ते रासी हैं सुक्ख के, सिद्धि-रिद्धि सुख पास।
'कमलकुँवरि' जिहिं उर बसै, राधा-कृष्ण विलास।।८५।।
चौरासी भ्रम छुटहिगौ, (करि) चौरासी पढ़ि गाय।
श्रीहरिवंश-प्रताप तें, 'कमलकुँवरि' सुख पाय।।८६।।
पचआसी पचि जात हैं, पाँच देव कौं ध्याय।
'कमलकुँवरि' सिधि एक में, काहू कौ ह्वै जाय।।८७।।
क्षासी वेद-पुरान हैं, गीता कृष्ण बखान।
'कमलकुँवरि' सब में मही, अरजुन साँची मान।।८८।।
सत्त आस श्रीकृष्ण की, सुलभ पदारथ चार।
'कमलकुँवरि' रटि रैंन-दिन, करिहैं बेड़ा पार।।८९।।
आठ-आठ दासी रहत, अष्ट सखिन के पास।
'कमलकुँवरि' सेवा करैं, ब्रज-देवी सुख-रासि।।९०।।
सखीन वासी दूसरी, हरिवंशी इक रूप।
'कमलकुँवरि' जो नाम रटि, सो न परै भव-कूप।।९१।।
न वे बसत बैकुण्ठ में, नहिं जोगिन के पास।
'कमलकुँवरि' इक प्रेम-बस, गीता-श्रीमुख-भाष।।९२।।
एक आन वे मानहीं, सन्तनि की सब ठौर।
'कमलकुँवरि' भक्तनि सरस, हरि कौ हितू न और।।९३।।
बावन बेई ह्वै गये, सुरपति हित अवतार।
चार मास चौकी दई, छल करि बलि रखवार।।९४।।
जानौं ....हु तेरानवै, जिनकैं भजन अधार।
'कमलकुँवरि' कल देखिकें, दुरत सन्त सुख-सार।।९५।।
जानौं दधि-चोरान वे, चित-चोरा रखवार।
'कमलकुँवरि'-मन-कामना, देत जु पूरी पार।।९६।।
अबहूँ लौं पहिचान वे, राधे नवल किशोर।
'कमलकुँवरि' बिन जुगलवर, संगी भव को तोर।।९७।।
सत्रन की छय आन वे, करत धरत अवतार।
सुर-सन्तनि प्रतिपालहीं, 'कमलकुँवरि' उर धार।९८।।
करि सहाय सत आन वे, दासनि की ब्रजराज।
'कमलकुँवरि' गज राखि लिय, जल बूड़त प्रभु लाज।।९९।।
वास करत अनठों न वे, कपटी-धूत लवार।
'कमलकुँवरि' सब त्यागिकैं, भजि श्रीकृष्ण मुरार।।१००।।
नौंनौ लागत साँवरौ, नौंनी सब ब्रजवाल।
'कमलकुँवरि' कौं करत नित, पिय-प्यारी प्रतिपाल।।१०१।।
सुवरन तन सुवरन वसन, सुवरन के सिंगार।
'कमलकुँवरि' सेवत सखी, दरसत नित्यबिहार।।१०२।।
एक सहस नौ सै बरस, चालिस ऊपर बान।
पौष कृष्ण षष्ठी सुखद, गनित प्रकाश वखान।।१०३।।

– मुकाम श्रीराधाबल्लभजी कौ मन्दिर, वृंदावन, जिला मथुरा उ.प्र.
मोबा. 9759215317

दतिया अंचल की प्रमुख बाबड़ियाँ

–डॉ. कामिनी

दतिया की पुरातात्विक महानता आदिमानव के विकास काल तक जाती है। पुरातत्व मनुष्य के अतीत की कहानी है। दतिया अंचल अपनी पुरातात्विक संपदा से सम्पन्न है। दतिया अंचल में अनेक बाबड़ियाँ हैं, जिनका अपना ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व है। ये बाबड़ियाँ मनोरम, चित्ताकर्षक, एवं अपनी विशेषताओं के कारण दर्शनीय है।

दतिया अंचल की प्रमुख बाबड़ियों में 'सिरौल की बाबड़ी' तथा 'चंदेवा की बाबड़ी' का निर्माण वीरसिंह देव प्रथम ने वि.सं. १६७५ में कराया था और 'रानी की बाबड़ी'– दतिया के बुंदेला शासक पारीछत ने वि.सं. १८६७ में बनवाई थी। यह 'बाउरियाँ' पेयजल उपलब्धि हेतु बनवाई जाती थीं। इनका निर्माण बुंदेली कला का अद्भुत नमूना है। सिरौल और चंदेवा की बांउरीं मिलती–जुलती हैं। चंदेवा की बाबड़ी आकार में कुछ बड़ी है। सिरौल में राजमहल के अवशेष भी हैं। चंदेवा की बाउरी दतिया भांडेर मार्ग पर १२ कि.मी. की दूरी पर है। यहाँ मुगल काल के सैकड़ों सिक्के मिले थे।



सेवढ़ा – दतिया जिले की एक तहसील है। सेवढ़ा को अलग रियासत का दर्जा प्राप्त था। दलपतराव के पुत्र पृथ्वीसिंह सेवढ़ा के शासक रहे और उन्होंने सेवढ़ा पर ५१ वर्ष तक शासन किया। वे 'रसनिधि' के नाम से कविता लिखते थे। 'रतनहजारा' उनकी प्रसिद्ध कृति है। सेवढ़ा के किले का निर्माण पृथ्वीसिंह ने कराया था। १७वीं शताब्दी में राजा पृथ्वीसिंह के समकालीन संत कवि महात्मा अक्षर अनन्य हुए हैं। ये ओरछा से सेवढ़ा आ गये थे। सनकुआ के तट पर इन्होंने साधना की थी सिन्ध नदी के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन इस प्रकार किया है–

'सिन्धु नदी वन दंडक सौ, सनकादि सौ क्षेत्र सदा जल गाजै।
कासी सौ बास घनें मठ संभु के साधु समाज जय सदा जै।
कोट अटूट बनौ गिरि पै पृथु सौ प्रिथीचंद नरेस विराजै।
उद्धित मंदिर तीर नदी, तिहि आसन अस्थिर अच्छिर, छाजै।।'

साढ़े तीन परकोटे वाले किले के अंदर नंदनंदन जू का मंदिर है। फूलबाग के मध्य जो राउर बनी हुई है, उसमें एक आयताकार बाबड़ी बनी है। आचार्य गंगाराम शास्त्री ने इसे 'गृहदीर्घिका' नाम दिया है। इस बाबड़ी में कभी रनिवास की स्त्रियाँ जल क्रीड़ा करती थीं। अब यहाँ सन्नाटा है। जीव–जन्तुओं का निवास बन गया है यहाँ। इसमें पानी भरा रहता था, जो अब सूख गया है। यह बाबड़ी प्राकृतिक सौंदर्य और पुरातन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसका निर्माण महाराज पृथ्वीसिंह ने करवाया था।

इन्दरगढ़ के पास पचोखरा में हरदौल की बहिन कुंजावती या कुंजाबाई का स्थान है। खड़ौआ गाँव में कुंजा की एक बाबड़ी भी है। इसे कुंजावती ने बनवाया था, इसलिए इसे कुंजावती की बाबड़ी कहते हैं। खड़ौआ गाँव में कुंजावती की ससुराल थी किंतु कुछ विद्वान बेरछा गाँव को कुंजावती की ससुराल मानते हैं। कुंजावती बेरछा के परमार ठाकुर को ब्याहीं थीं। पचोखरा ओर खड़ौआ गाँव इन्हें दहेज में दिये गए थे।



यह बाबड़ी आयताकार बनाई गई है। नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। पानी खींचने के लिए घाट भी है। अब इसमें पानी नहीं है।

सेंवढ़ा के समीप भगुआपुरा–आलमपुर मार्ग पर परसोंदा बामन गाँव है। यहाँ बामन याने ब्राह्मण अधिक हैं, इसलिए इस गाँव का नाम जाति सूचक स्थान परसोंदा बामन पड़ा। इस गाँव में एक बाबड़ी है। यह आयताकार बनी है और विस्तार में कम है। इस बाबड़ी में ऊपरी रस्सी से पानी खींचने के लिए घाट बना हुआ है। नीचे उतरने के लिए तीस सीढ़ियाँ बनी है। इसकी लंबाई तीस फुट और चौड़ाई पैंतीस फुट के लगभग है। अब जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है।



सेवढ़ा से ५ कि.मी. की दूरी पर आलमपुर मार्ग पर सिरसा गाँव है। शिरीष आम बोली में सिर्स की अधिकता वाले क्षेत्र सिरसा बनस्पति बोधक स्थान–नाम है। यहाँ एक बाबड़ी है, जो विस्तृत घेरे में बनी हुई है। यह १२वीं १३वीं शताब्दी के मध्य बन्जारों के द्वारा बनवाई गई थी। कहा जाता है लाखा

बनजारे ने इसका निर्माण कराया था। पहले बाबड़ी में अनेक मूर्तियाँ थीं। देख-रेख के अभाव में चोरी हो गईं। वृत्ताकार गोलाई में बनाई गई यह बाबड़ी प्राचीन होने के साथ-साथ पुरातत्व की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। बनजारे, सार्थवाह के रूप में व्यापार करते हुए घूमते रहते थे और शिव मंदिरों चबूतरों अथवा कुआँ, बाबड़ियों का निर्माण कराते थे।



सिरसा की यह बाबड़ी तीन भागों में विभक्त है। इसकी ऊँचाई तीन फुट है। गोलाई, लगभग दो सौ मीटर है। नीचे उतरने के लिए १९ सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। दो-दो फुट लम्बे पत्थरों से सीढ़ियाँ बनाई गई हैं। सीढ़ियों के बाद कुछ चौड़ा स्थान है। दूसरे खंड में जिसे 'ककसा' कहा जाता है, २३ सीढ़ियाँ है। तीसरे खंड में ९ सीढ़ियाँ हैं। इसमें गहराई तक पानी भरा हुआ था, अब पानी नहीं है। बाबड़ी औल गई है।

बाबड़ी के बीच में चार दालानें हैं। जिनमें साधु-संत निवास करते रहे होंगे। साधना करते होंगे। दालानों में देवी-देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित हैं। चारों ओर खुला मैदान है। आसपास खेत है। एकाध कच्ची मड़ैया किसी ने बना ली है। दालानों के भित्तिचित्र दर्शनीय हैं। कोई शिलालेख नहीं लगा है। बाबड़ी में नीचे उतरने पर गोलाई कम होती जाती है। शासन से जीर्णोद्वार हेतु माँग, कुछ समाजसेवी कर रहे हैं। यदि यह बाबड़ी संवर-सुधर जाती है तो निश्चित तौर पर इस क्षेत्र के लिए यह अनुपम धरोहर होगी। झाड़-झंखड़ों से मुक्ति मिल जायेगी।



सेवढ़ा से १५ कि.मी. की दूरी पर दबोह के पास रहकोला माता का मंदिर है। इस मंदिर के समीप एक विशाल बाबड़ी है। आल्हा-ऊदल के समय १२वीं शताब्दी में मलखान के द्वारा इसे बनवाया गया था। इसमें सीढ़ियाँ हैं। बाबड़ी के चारों तरफ दालानें हैं। पानी भरा रहता है। यह बाबड़ी आयताकार बनी हुई है। यहां कई प्रकार की जड़ी-बूटियाँ उगती हैं। यह तपस्थली भी है। प्राकृतिक सौंदर्य अनूठा हैं। पुरातत्व की दृष्टि से अमूल्य निधि है।

रहकोला मैया के सिंहासन को फूलों से सजाया जाता है। अमाहा गाँव मैया के पास है। पहूज नदी का किनारा, आम के वृक्ष सुंदरता को द्विगुणित करते हैं। आल्हा-ऊदल की शौर्य-गाथायें और मलखान का सिरसा जन मानस की यादों में है। यह बाबड़ी मलखान ने बनवाई थी। 'भुरभुरी माटी में अनुराग के अंकुर' पुस्तक में डॉ. सीताकिशोर खरे के अनुसार- 'सिरसा पृथ्वीराज चौहान की चढ़ाइयों में स्वाहा हो गया। रहकोला से लेकर सिरसा की ओर किनारे-किनारे महादेवों की एक कतार है। लोकमानस में इनकी संख्या ९०९ है। अब १०-२० बचे हैं। शंकर के साथ-साथ पुरातत्व के महत्व की और भी मूर्तियाँ हैं। १०वीं और ११वीं सदी की टूटी-फूटी सप्त मातृकायें। शाल भंजिकायें, नृत्यरत् अप्सरायें, कुछ भग्न दरबार, शैलाचारी शिव और न जाने क्या-क्या?



यहाँ गजमोंतिन के सती होने का स्थान है। दुर्ग की दीवारें लम्बी-चौड़ी ईंटें और बीहड़ है। दालानें टूट-फूट गई हैं।

गजमोंतिन भी रेंहकोला के मंदिर में दिया उजेरती हैं। फूलों से सजी हुई माता के मंदिर को 'सिंहासन बैरबो' कहते हैं। दिवाली-दशहरे को सिरसा से मलखान की सवारी पूजा करने आती है। कबूतरी घोड़ा का सजा-धजा रूप लोगों ने देखा है। घोड़ों की टापें और हिनहिनायटें सुनाई देती हैं। सिरसा से सवारी चलती है और रहकोला पर आकर रुकती है। रोकने-टोकने की आवश्यकता नहीं। ऐसा है यहाँ का चमत्कार। ऐतिहासिक महत्व और लोक आस्था। यहाँ की यह बाबड़ी अद्भुत है। इस स्थान की शोभा रहकोला मैया से है। प्राकृतिक दृश्य मनोरम है।



दतिया अंचल की ये बाबड़िया पुरातत्व की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनके संरक्षण की बहुत आवश्यकता है।

- नाजिर की बगिया, सेंवढ़ा जिला दतिया (म.प्र.)
मोबा.-9893878713

बुंदेली लोककथा 'गऊ का सत्' में लोकजीवन

-प्रो. यशवंत सिंह

भारतीय गणराज्य के मध्यप्रदेश व उत्तर प्रदेश राज्यों में विस्तृत, नर्मदा नदी के उत्तर तथा यमुना नदी के दक्षिण में विंध्य पर्वतमालाओं से समाकीर्ण, बेतवा, सिंध, धसान, केन, चम्बल व टोंस आदि नदियों के कछारों में फैला हुआ भू-भाग बुंदेलखण्ड कहलाता है। यहाँ के निवासियों की मातृभाषा व सम्पर्क भाषा को बुंदेलखण्डी अथवा मुख-सुख के कारण बुंदेली नाम दिया गया है, जो पश्चिमी हिंदी के अन्तर्गत एक बोली के रूप में समाहित है। हिंदी साहित्य के इतिहास में बुंदेली को साहित्यिक भाषा का भी दर्जा प्राप्त हुआ। आदिकालीन रासोकवि जगनिक का परमालरासो अथवा 'आल्हाखण्ड' इसका प्रमाण है, जो बुंदेली की उपबोली 'बनाफरी' में मूल रूप से लिखा गया। लेकिन मौखिक परम्परा में प्रचलित रहने के कारण इसका स्वरूप निरन्तर परिवर्तित होता रहा। बुंदेली भाषा के मध्यकालीन कवि विष्णुदास की 'रामायण कथा' को हिंदी की प्रथम रामकथा होने का गौरव प्राप्त है। विष्णुदास जी ने तुलसीदास जी से पहले ही महाकवि वाल्मिकि की 'रामायण' का आधार लेकर बुंदेली भाषा में रामकथा प्रस्तुत की।

संस्कृत तथा परिष्कृत प्रभाव से मुक्त अपनी सहज अवस्था में जीवन-यापन करने वाला व्यक्ति 'लोक' कहलाता है। वह स्वभाव से तर्कशील होने की बजाय आस्थाशील होता है, मनुष्यमात्र क्या संसार की प्रत्येक वस्तु के प्रति अभेद दृष्टि रखता है तथा प्रकृति के सम में अपने क्रियाकलाप सम्पन्न करता है। ऐसे लोक के मध्य परम्परा से प्रचलित वार्तापरक कथानकों अथवा कथा या कहानी रूपों को 'लोककथा' कहते हैं। देशकाल की सीमा से परे ये कथा-रूप व्यक्ति -विशेष की रचना नहीं होते तथा बहुधा मौखिक एवं परम्परागत रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राप्त होते हैं। बुंदेलखण्ड में लोककथा को किस्सा या कहानी कहा जाता है, जिनको कहने-सुनने की परम्परा यहाँ पर आदिकाल से ही विद्यमान मिलती है। सुप्रसिद्ध बुंदेली लोकवार्ताविद् श्री कृष्णानंद गुप्त जी के अनुसार-'इनका जन्म उस आदिम युग में हुआ होगा, जब मनुष्य ने घर-द्वार बनाकर स्थायी रूप से रहना नहीं सीखा होगा। वह दिन भर जंगल में शिकार करता तथा रात्रि में किसी गुफा के पास एकत्रित होता। उस समय जंगली जानवरों व शीत से रक्षा हेतु वह आग जलाकर, उसके आसपास बैठता, एक-दूसरे को दिन-भर के अनुभव सुनाता। यहीं से किस्सा-कहानियों के कहने-सुनने की शुरु आत हुई होगी।' वर्तमान समय में भी गाँवों में जाड़ों की रात्रि में अलाव के पास बैठकर किस्सा-कहानी को कहने-सुनने की परम्परा विद्यमान मिलती है। इसके साथ परिवार में बुजुर्ग लोग शाम के समय घर के बच्चों को अपने पास बैठाकर मनोरंजक-शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाते हैं, जिन्हें बच्चों के साथ वयस्क महिला-पुरुष भी बड़े चाव से सुनते हैं। अतः लोककथाओं को कहने-सुनने की परम्परा में जन-मन के अनुरंजन का भाव निहित होता है।

'गऊका सत्' नामक बुंदेली लोककथा का संग्रह दिनांक-३१ दिसम्बर, १९९४ ई. को ग्राम-मकराँव, जिला हमीरपुर (उ.प्र.) में टेपरिकार्डर के माध्यम से किया गया। उस समय जाड़े की रात्रि थी, घर के अंदर आग के चारों ओर घेरकर बैठना तथा कथक्कड़ देवीदीन के मुख से कथाओं को सुनना अपने-आप में सुखद अनुभव था। कथक्कड़ देवीदीन की अवस्था उस समय ६२ वर्ष थी, वे हमीरपुर जनपद के ग्राम-कपसा के निवासी थे, वे चमार (हरिजन) जाति के निरक्षर व्यक्ति थे। युवावस्था में वे कृषि-कार्य करते थे लेकिन बाद में उन्होंने पशुपालन का व्यवसाय अपना लिया था। वे बहुत ही विनोदी स्वभाव के व्यक्ति थे तथा अपनी जाति के शादी समारोहों में गा-गाकर कथाओं को सुनाकर लोगों को मनोंरजन करते थे। उपलब्ध होने पर वे मदिरा का सेवन भी कर लेते थे; उसके बाद कथा कहने के दौरान उनके शरीर की भंगिमा नृत्य-मुद्रा का बहुत सुंदर प्रदर्शन होती थी। उन्होंने लोककथाओं को गुरू-शिष्य परम्परा में सुना व सीखा था। उन्होंने अपने कथा-गुरू का नाम स्वर्गीय रामसहाय बताया, जो हमीरपुर जनपद के ही ग्योड़ी ग्राम के निवासी थे। 'गऊ का सत्' हमीरपुर जनपद में मौखिक परम्परा में प्रचलित लोककथा है, जिसको वहाँ पर 'सुरहन गाय की कथा' के नाम से भी जाना जाता है। हमीरपुर उत्तरप्रदेश राज्य के अन्तर्गत बुंदेलखण्ड का एक जनपद है। इसका जनपद मुख्यालय हमीरपुर शहर कानपुर-सागर मार्ग पर स्थित है, जो कानपुर महानगर से ७० कि.मी. दक्षिण ओर यमुना-बेतवा नदियों के मध्य बसा है। इस शहर को तेईसवें चंदेल नरेश हम्मीर वर्मन (१२८९-१३०९ ई.) ने बसाया; उन्होंने उत्तर से आने वाले आक्रमणकारियों को रोकने हेतु प्रतिरक्षा की दृष्टि से यमुना के तट पर एक दुर्ग का निर्माण करवाया, जो भीषण बाढ़ों से क्षतिग्रस्त होकर वर्तमान में एक हाथी दरवाजे के रूप में शेष रह गया है। नये जनपद के रूप में अस्तित्व में आने से पूर्व आल्हा-ऊदल का प्रसद्धि ऐतिहासिक शहर महोबा इस जनपद के अन्तर्गत ही था। लोककथा का संग्रह स्थल ग्राम-मकराँव हमीरपुर-महोबा सड़क मार्ग पर स्थित है, जबकि कथक्कड़ का निवास स्थान ग्राम कपसा महोबा-बाँदा सड़क मार्ग पर स्थित है। ये दोनों ही स्थान बुदेलखण्ड की उत्तरी सीमा में अवस्थित हैं।

'गऊ का सत्' बुंदेली लोककथा के वर्णन के अनुसार-''पुराने जमाने की बात है, राजा करण के राज में एक गरीब

ब्राह्मण-ब्राह्मणी रहते थे। ब्राह्मण रोज भिक्षा माँगकर लाता लेकिन उससे दोनों का पेट नहीं भरता। एक दिन ब्राह्मणी ने ब्राह्मण से दूर जाकर भिक्षा माँगने को कहा, संजोग से जिस दिन ब्राह्मण दूर के स्थानों पर भिक्षा माँगने गया, उसी दिन राजा करण ने हर एक ब्राह्मण को बुलाकर एक-एक गऊ व सोने की मुहर का दान दिया। दान लेकर ब्राह्मणों को लौटते देख-देख कर ब्राह्मणी मन-ही-मन पछताने लगी कि आज कहाँ से मैंने उनको दूर जाकर भिक्षा माँगने को कहा। अगर वो आज यहाँ होते तो एक गऊ व एक सोने की मुहर हमें भी मिल जाती, जिससे कुछ दिनों के लिए हमारी गरीबी दूर हो जाती।

उधर ब्राह्मण को दूर स्थानों पर अन्य दिनों की तुलना में अधिक अन्न व द्रव्य भिक्षा में मिला, जिससे वह दिन रहते जल्दी ही घर लौट आया। घर आने पर ब्राह्मणी ने उसको राजा करण के दान करने की बात बताई, जिससे तुरन्त ही ब्राह्मण राजा करण के दरबार को चल दिया। दरबार पहुँचकर ब्राह्मण ने राजा करण से दान-देने का आग्रह किया। राजा करण ने कहा, दान तो मैं दिन में देता हूँ, अब तो शाम होने को है। इस पर ब्राह्मण ने सूरज के डूबने के पहले तक दान-देने की बात कही। तब राजा करण ने उसे अपनी गऊशाला के भीतर जाकर गऊ ढूँढ़ ले आने को कहा। दिन-भर के दान के कारण गऊशाला की सभी गऊएँ समाप्त हो गयी थीं; लेकिन बहुत ढूढ़ने पर ब्राह्मण को हाल की ब्यायी हुई गऊ की एक बछिया मिल गयी। जिसे लेकर वह राजा करण के सामने गया, राजा करण ने उसे भी एक सोने की मुहर की दक्षिणा के साथ गऊ की बछिया का दान कर दिया।

गऊ की बछिया लेकर ब्राह्मण अपने घर आया, ब्राह्मणी को बहुत खुशी हुई, ब्राह्मण ने उससे कहा, सुनो, यदि मैं आधा सेर अन्न भिक्षा में लाऊँ तो एक पाव अन्न से हम दोनों गुजर-बसर करेंगे तथा एक पाव अन्न इस बछिया को खिलायेंगे। समय गुजरते बछिया बड़ी होने लगी तथा तीन-चार साल बाद वह गाभिन हो गई तथा समय पूरा होने पर उसने एक बछड़े को जन्म दिया। ब्राह्मणी ने मन-ही-मन सोचा कि अब हमारे दिन बहुरे है तथा गऊ व बछड़े के साथ दोनों सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने लगे। रोज सुबह होते ही ब्राह्मण व ब्राह्मणी गऊ के बछड़े को दूध पिलाकर तथा शेष दूध दूहकर गऊ को चरने के लिए ढील देते। उसके साथ बरेदी या कोई अन्य देखभाल करने वाला नहीं जाता क्योंकि गऊ किसी के खेतों का नुकसान नहीं करती तथा गंगा नदी के किनारे-किनारे की हरी घास चरकर दिन रहते वापस आ जाती। लेकिन गऊ की यह सज्जनता अन्य गउओं के लिए ईर्ष्या का कारण बन गयी, क्योंकि वे इस तरह स्वच्छन्द विचरण नहीं कर पाती थीं तथा जब वे लोगों के खेतों में घुसती तो बरेदी उनको डण्डों से मारते थे। उन्होंने मिलकर सलाह कि जब गऊ चरने के लिए बाहर निकले तो हम सब उसको बीच में कर लेगीं तथा धक्के दे-देकर उसको कजरी-वन ले चलेगीं, जहाँ सिंह उसको टोरकर खा जायेगा।

अगले दिन सुबह बछड़े को दूध पिलाने के बाद जब ब्राह्मण ने गऊ को चरने के लिए छोड़ा तो सभी गऊओं ने उस सज्जन गऊ को घेरकर अपने बीच में कर लिया तथा धक्के दे-देकर उसको कजरी-वन की ओर ले जाने लगीं। गऊ ने रो-रोकर उनसे छोड़ देने की विनती की तथा दूर स्थान में कुछ अनहोनी हो जाने पर अपने बछड़े के अकेले रह जाने की दुहाई दी। लेकिन उन दुष्ट गऊओं पर इसका कोई असर नहीं पड़ा तथा उन्होंने गऊ को कजरी वन में ले जाकर ही छोड़ा। कजरी-वन में सभी गउएँ घास चरने लगीं, वह गऊ भी उनसे कुछ दूर जाकर घास चरने लगी। मौका पाकर सभी गऊँए उसको छोड़कर वापस चली आयीं। उस गऊ ने अकेले वापस आने में ही अपनी भलाई समझी, क्योंकि साथ में आने पर फिर उसकी वही दुर्दशा होती। इसलिए वह रुकी रहकर घास चरती रही; लेकिन इसी समय एक सिंह उधर से गुजरा तथा गऊ को अकेले घास चरते देखकर बहुत प्रसन्न हुआ कि आज मुझे घर बैठे अच्छा भोजन मिल गया।

सिंह ने गऊ पर झपटने से पहले उससे कहा कि तू भाग सके तो भाग, तोरे शरीर में ताकत हो तो भाग, नहीं तो मैं तुझे टोरकर खा रहा हूँ। सिंह को सामने देखकर गऊ ने विवश होकर सोचा कि मेरे भागने से क्या होगा, यह तो एक झपट्टे में ही मुझे धर दबोचेगा; विवश-लाचार गऊ की आँखों में आँसू आने लगे, जिसे देखकर सिंह ने कहा कि अब लोचन ढारने से क्या होगा? मैं बहुत दिनों से भूखों मर रहा था, अब मैं तेरे शरीर को भादो की हरछठ की तरह पूजूँगा। जिसे सुनकर गऊ ने कहा कि देख मेरे शरीर को एक-दिना की मोहलत दे दे, मोही घर होई आवे दे, मुही अपने बछवा का खीर खवा आवे दे, मोर बछवा भूखो हुई, देखले मैं सुबह आ जाइहो। इस पर सिंह ने कहा, मैं तुही जाने नहीं दूँगा, अगर तोरे शरीर में ताकत होय तो भाग जा। गऊ ने कहा देखले मैं न भागिहो, मैं अपने बछवा का खीर खवा कै भून्सारे ही आ जाइहौं। सिंह ने जबाब दिया, मैं तेरी बात नहीं मानूँगा, आज तू इस वन में आई है, कल दूसरे वन में चली जायेगी तो मैं किससे कहता फिरूंगा। चार सिंहा मिलकर मेरी हँसी उड़ायेंगे। गऊ माता ने कहा कि नहीं मैं कल आ जाऊँगी, अगर मैं कल सुबह वापस न आऊ तो इन लोगों से अपनी फरियाद कह देना। सिंह ने कहा यहाँ तो मुझे कोई भी दिखलाई नहीं दे रहा है, बताओ मैं किससे कहूँगा। गऊ ने कहा कि फिरती बेरा मैं अपने सुत की भी कही नहीं मानूँगी, होत भोर तेरे सामने हाजिर हो जाऊँगी, काहस तो मैं गंगा जी हैल जाऊ, जल उठा लूँ। तू मुझे रात भर की मुहलत दे दे, मैं जाव, मोर बछवा भूखो मर रहा हुइहै। अगर मैं वापस नहीं आऊ तो इन लोगों से फरियाद कह देना। सिंह ने कहा कि अच्छा मुही बइकल बनाये हो, मुही तो यहाँ कोई नहीं दिखाई दे रहा है। गऊमाता ने कहा, तुही कोई नहीं दिखलाई पड़ रहा है, तो मैं उनको बताती हूँ, जिनसे तू अपनी फरियाद डाल डाल देना। गऊ ने कहा- चंदा-सूरज साक्षी हैं, पृथ्वी है,

बनस्पति है, देख मैं सुबह वापस न आउ तो तू इनसे अपनी फरियाद डाल देना। सिंह ने कहा, अच्छा जा-जा, जा चली जा, अगर तू वापस नहीं आयेगी तो ये हैं मेरे खातिर साक्षी-गवाही, मैं इनसे अपनी फरियाद कह दूँगा।

गऊ को सिंह से मोहलत मिलते ही वह रंभाती हुई घर की तरफ भागी, उधर ब्राह्मण-ब्राह्मणी गऊ के देर तक न आने के कारण चिन्तित हो रहे थे। गऊ के आते ही ब्राह्मण ने घर के किमारा खोलकर उसको घर के अंदर कर लिया तथा खूँटा में बाँधकर बछवा को छोड़ दिया। बछवा ने ज्यों ही गऊ के थनों में मुँह डाला, उसे गऊमाता के फड़कते अंगों का आभास हुआ, क्योंकि वह सुबह के लिए सिंह से बाचा हार आयी थी। इससे बछवा थन छोड़कर एक तरफ खड़ा हो गया। गऊ ने कहा कि बेटा खीर खा ले; बछवा ने कहा कि माता किसने तुमको बातें कहीं हैं, किसने तुमको सताया, उसको तुम बताओ। मेरे सींग तो नहीं है लेकिन मैं उसको खुरों से फार डालूँगा। गऊ ने कहा कि बेटा, मैं सिंह से वचन हार आयी हूँ, रातभर की मोहलत है, बेटा तुझे खीर खवाने आयी हूँ। इस पर बछवा ने कहा, माता अब मैं खीर नहीं खाऊँगा, तेरा शरीर दूसरे की अमानत हो गया है। उधर बछवा को दूध पीते न देखकर ब्राह्मण गुस्सा होकर बछवा को गऊ के थन में लगाता है, लेकिन बछवा हर बार अपना मुँह थन से हटा लेता है। गऊ व बछवा की बातें सुनकर ब्राह्मण ने ब्राह्मणी से कहा और रस्सी तो लै आव, या सुबह जाय का कहत ही, अगर चली गई तो पता नहीं अब आवै ने आवै। ब्राह्मण-ब्राह्मणी ने अपने घर की सारी रस्सियौं लाकर गऊ को बांध दिया जिससे वह भाग न जायै और देर रात ब्राह्मण-ब्राह्मणी गाय को दुहने के लिए खड़े रहे लेकिन वे दूध दुह नहीं पाये।

सुबह होते ही, जिस समय सूरज नारायण की थोड़ी-किरणें दिखलाई पड़ी, गऊ ने चटाक से अपने सारे बंधन तोड़ डाले तथा घर से निकल भागी। गऊ के पीछे-पीछे बछवा भी निकल भागा, ब्राह्मण-ब्राह्मणी देखते के देखते रह गये। उधर सिंह गऊ की प्रतीक्षा में बैठा सोच रहा था कि अबै गऊ न आई, पता नहीं आई कि न आई। इस तरह गऊ व बछवा दोनों कजरी वन की तरफभाग चले, वहाँ पहुँचकर बछवा आगे जाकर सिंह से बोला, मामा राम-राम। जिसको सुनकर सिंहा चिन्ता में पड़ गया, वह सोचने लगा कि इसने मुझे मामा कहा है तो यह मेरा भनेज हुआ और इसकी माता गऊ मेरी बहन। अतः वह मुँह फेरकर बैठ गया। इसी समय गऊ सिंह के सामने पहुँचकर बोली, लो मैं आ गयी अब ले तू मुझे खा जा, अब किसी से न कहना कि मैं वापस नहीं आयी। इस पर सिंह तुरन्त माझा जंगल की तरफभाग चला, उसके पीछे-पीछे गऊ व बछवा लतियाते-लतियाते फिरने लगे। सिंह अपने को लुकाये छुपाये फिर रहा था और गऊ व बछवा उसका पीछा कर रहे थे। इस समय तीन लोक चौदह भुवन में पृथ्वी थर्राने लगी, भगवान का आसन डोलने लगा। भगवान ने नारद मुनि को इसका पता लगाने के लिए भेजा। नारद मुनि ने पृथ्वीलोक में आकर देखा कि बात का है? सिंह को तो गऊ-बछवा को तुरन्त टोरकर खा जाना चाहिए; लेकिन वह छिपकर भागा-भागा फिर रहा है। नारद मुनि ने भगवान के पास जाकर यह घटना बताई तथा इसका कारण पूँछा। भगवान ने हंसकर कहा, नारद मुनि इसमें बहुत बड़ा कारण है। या गऊमाता काल जबान खा गयी थी, सिंह इसकी बात न मान रहा था तो गऊमाता ने सूरज-चन्द्रमा की दुहाई दी थी, जिससे बड़ी मुश्किल से सिंह ने गऊ को जाने दिया था। आज बछवा ने आते ही सिंहा को मामा कह दिया है तो वह तो सिंह का भनेज हो गया और गऊ बहिनी। आज या सिंह अगर गऊ का भोजन कर लेता है तो आगे कलिकाल ना कोउ भाई का मानी न बहिनी का। तो आज या सिंह जो मान गया है तो या बहिनी-भाई का नाता न जाने कितने समय तक चलेगा।

अब भगवान ने नारद मुनि से कहा कि जाकर सिंहा को बुला ल्याव तथा साथ में गऊमाता व बछवा को भी बुला लाना, जिससे मैं उनका निपटारा कर दूँ। नारद ने कजरी वन में जाकर सिंह से भगवान के यहाँ चलने को कहा तो उसने कहा कि मैं वगैर कजरी वन के नहीं जाऊँगा। गऊ से पूछने पर उसे ब्राह्मण-ब्राह्मणी को साथ लेकर चलने को कहा। नारद वापस भगवान की अजोध्यापुरी पहुँचे तथा सारा वृतान्त कह सुनाया। भगवान ने कहा कि सिंहा से कहना कि वह कजरी वन को साथ लेता आये तथा गऊ अपने साथ ब्राह्मण-ब्राह्मणी को लेती आये। नारद मुनि दोबारा कजरी वन पहुँचे तथा सभी को चलने को कहा तो ब्राह्मण-ब्राह्मणी द्वारा काशी जी को साथ लेकर चलने का आग्रह करने लगे। नारद मुनि फिर भगवान के पास वापस लौट आये तथा ब्राह्मण-ब्राह्मणी द्वारा काशी को साथ लेकर चलने की बात बताई। यह सुनकर भगवान ने कहा कि नारद जी रूकिये, आप थक गये होंगे। इस बार मैं स्वयं उनके पास जाता हूँ। इतना कहकर भगवान अपने रथ में बैठकर कजरी-वन में पहुँचे तथा सभी को साथ लेकर वापस अजोध्यापुरी आ गये। अजोध्यापुरी में भगवान ने सभी को बैठाकर सिंह से कहा कि जैसी बात आज तू मान गया है, वैसी अब कभी न मानना। क्योंकि आगे कलिकाल आ रहा है, पता नहीं कोई वचन को निभायै या न निभायै और देख गऊमाता, जैसी तू आज आ गई है, वैसी आगे कभी न आना, नहीं तो कोई छोड़ेगा नहीं, टोरकर खा जायेगा। आज तो सिंह ने यह लकीर डाल दी है, तो या मामा-भनेज-बहिनी का नाता न जाने कितने युगों तक चलता रहेगा। जा रे सिंह तै कजरी वन मा चुन खा और गऊमाता तू भी जा, आनन्द से रह। और जा रे सिंह तू संसार में एक सिंहिनी व एक सिंह रहियो, जासे सिंहिनी के बच्चा पेट फारकर निकलता है और वही अकेला रह जाता है और ब्राह्मण-ब्राह्मणी जाओ काशी जी में जाकर आनन्द करो, सो बामन दाई व पण्डित जी दोनों जाकर काशी जी में रहने लगे। और कहत है, भगवान ने जइसै उनकी बनाई तैसी सबकी बनै, और किस्सा मैं इत्ती जानै रहो तो पूर हुसगै महाराज।''

भारतीय सामाजिक जीवन का चरम लक्ष्य सत्य की

खोज एवं सत् की रक्षा रहा है; जिसके वैविध्यपूर्ण स्वरूपों के बारे में सर्वाधिक प्रभावशाली बात यहाँ के लोकजीवन में दैनन्दिन क्रिया-कलापों का धर्म एवं अध्यात्म से जुड़ाव है; जिसकी सहज अभिव्यक्ति लोक या जनसामान्य के बीच मौखिक परम्परा में प्रचलित लोककथाओं में मिलती है। भारतीय समाज में वैदिक काल से ही गाय को उसकी उपयोगिता के कारण पूजनीय स्थान प्राप्त है। गाय किसान जीवन का महत्वपूर्ण अंग है, जहाँ उसे माता के समान स्थान दिया गया है। उसके दूध से बच्चे पलते हैं, बछड़े खेती के काम आते हैं, गोबर कीटाणुनाशक होने के कारण घरों में लेपित किया जाता है। घर के सदस्यों के लिए रोटियाँ बनाते समय स्त्रियाँ सबसे पहले 'गऊ माता' के लिए रोटी बनाती हैं। पुत्रवती स्त्रियाँ अपने पुत्र की मंगल कामना के लिए भादों मास की कृष्णपक्ष चतुर्थी को 'बहुरा चौथ' का व्रत रखती है। इस अवसर पर कही जाने वाली कथा में 'गाय' प्रमुख पात्र है जिसकी वचनबद्धता का हिंसक पशु सिंह पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उसका हृदय परिवर्तन होता है, वह हिंसा का परित्याग करता है। इस तरह सबल के सम्मुख निर्बल की रक्षा, प्रेम तथा बंधुत्व का विकास तथा सम्बन्धों का निर्वहन करना इस कथा का मूल उद्देश्य है।

'गऊ का सत्' नामक इस बुंदेली लोककथा में लोकजीवन का वृहद परिवेश अभिव्यक्त हुआ है। इसमें महाभारत व रामायण काल का एक साथ वर्णन करते हुए काल के अनन्त व अविभाजित प्रवाह को दर्शाया गया है। कथा की शुरूआत में महाभारतकालीन राजा कर्ण की दानशीलता का वृतान्त है, जो गरीब ब्राह्मण-ब्राह्मणी को गऊ दान करते हैं; वही अन्त में अयोध्या के भगवान का उल्लेख है, जो नारद जी के साथ इस लोक में रमण करते दिखलाई पड़ते हैं। बीच में गऊ व सिंह के संवाद की कथा है, जिसमें सिंह के चंगुल में फंसी गऊ गंगा मैया के साथ सूरज चन्द्रमा, पृथ्वी वनस्पति की दुहाई देकर रात-भर के लिए मोहलत माँगती है तथा सुबह वापस लौट आने के लिए बचनबद्ध होती है। अगले दिन सुबह बछड़े के साथ गऊ अपने बचन के अनुसार वापस आती है, बछड़ा आगे बढ़कर सिंह को मामा कहकर सम्बोधित करता है; जिससे सिंह धर्मसंकट में फँसकर वहाँ से भाग खड़ा होता है। क्योंकि वह भानजे तथा बहिन गऊ का भक्षण करके पाप का भागी नहीं बनना चाहता। लेकिन गऊ भी अपने सत् पर अडिग है, वह अपने द्वारा दिये गये बचन के अनुसार सिंह के पीछे-पीछे दौड़ती है, साथ में, बछड़ा भी दौड़ता है। तीन लोक चौदह भुवन में पृथ्वी की इस उल्टी घटना को देखकर आश्चर्य फैल जाता है। भगवान नारद जी द्वारा जिज्ञासा प्रकट करने पर इसका निपटारा करते हैं तथा आगे कलिकाल में ऐसी त्रिवाता हारने के लिए गऊ को मना करते हैं क्योंकि आगे पता नहीं कोई इस सत् की रक्षा करे न करें। साथ ही मामा-भानजा-बहिन का पवित्र सम्बन्ध युगों-युगों तक चलते रहने का आर्शीर्वाद देकर सबको यथोचित स्थानों के लिए विदा करते हैं। सिंह को कजरी-वन तथा ब्राह्मण-ब्राह्मणी को काशी-वास मिलता है, जो लोकजीवन की भावना के सर्वथा अनुकूल है। गाय भी अपने बछड़े के साथ स्वच्छन्द विचरण करती है। इस तरह 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया:' की लोक कल्याणकारी भावना के साथ कथा का समापन हो जाता है। इसमें हिंसक पशु सिंह तथा निर्बल प्राणी गाय के मध्य अटूट मानवीय सम्बन्ध स्थापित होता है जो आत्मीय व प्रेमपरक होने के साथ ही जनसामान्य के लिए उपदेशपरक भी है तथा यही बुंदेली लोकजीवन की प्रमुख विशेषता है।

सहायक-ग्रंथ -सूची

१. बुन्देलखण्ड का बृहद इतिहास, डॉ. काशी प्रसाद त्रिपाठी, भारत भवन, पुरानी टेहरी, टीकमगढ़ (म.प्र.), प्रथम संस्करण-१९९१ ई.।

२. लोकसाहित्य की भूमिका, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन प्रा.लि. इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-१९५७ ई.।

३. चन्देलकालीन महोबा और हमीरपुर जनपद के पुरावशेष, वासुदेव चौरसिया, प्रेम बुक डिपो, ऊदलचौक, महोबा (उत्तर प्रदेश), प्रथम संस्करण-१९९३ ई.।

४. बुंदेलखंड संस्कृति और साहित्य, डॉ. रामेश्वर प्रसाद पांडेय, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-२०१५ ई.।

५. गऊ का सत् (स्वयं संग्रहीत लोककथा), कथक्कड़ देवीदीन, अवस्था ६२ वर्ष, जाति-चमार (हरिजन), शिक्षा-निरक्षर, पेशा-कृषि व पशुपालन, पता-ग्राम व पोस्ट-कपसा (भभई), जिला-हमीरपुर (उ.प्र.), संग्रह दिनांक-३१-१२-१९९४ ईसवी

- प्रोफेसर, हिंदी विभाग, मणिपुर विश्वद्यियालय, इम्फाल

मोबा0-09612169840 卐

चौकड़ियाँ

-पं. हरगोविन्द तिवारी

अगर बार बनैया होवै हल्कौ, नव-सीका लरका नाऊ कौ।
तौ ऊ आड़ौ-ठाड़ौ धरै उस्तरा, अर करै मूँड़नौं काऊ कौ।
चय कटै खोपड़ी अब काऊ की, चय कटै कान फिर काऊकौ।
''कविहृदय'' खुद समझ नें पाये, फिर का धरनें दोष काऊ कौ।

लपकी गैया दौर लगावै, अर दौर-दौर मोवा लौ जावै।
जब मौवा टपकैं चाय गुलेंदे, बा तुरतऊँ उनैं लपक कैं खावै।
तऊपै भूँक मिटै नैं ऊ की, सो बा मनकौ चरवन ढूँड़त रावै।
''कविहृदय'' नौं रोटीं खाकैं, तेरा की भूँक सबई खौं रावै।

लुककैं खाव कछु चूले की ओटैं, सो निकरै कभऊँ ऊ सबके मजोटैं।
नई लुकैं काऊ की कपट कीं चालें, अर सब दुष्करमन की खौटैं।
बकत खुदई-खुद साँची-साँची, जब कुदरत की घलतीं करीं सौंटैं।
''कविहृदय'' अब करम सुदारौ, अर त्यागौ दुष्करमन की खोटैं।

बार पटायें हरव होय नैं मुर्दा, अर पान दसैरी सबल करै नैं गुर्दा।
करकैं खौटै काम मनचले, खूब खात रये सड़े-गले जीव-जन्तु पशु मुर्दा।
सो हो गव गलना रोग भीतरी, अर भीतर-भीतर गल गव गुर्दा।
''कविहृदय'' खुद बला बुलाई, अब घूम-घूमकैं फैंकत रव होरी में उर्दा।

-कविहृदय वार्ड नं. 6, इंदिरा, प्रियदर्शिनी वार्ड,
तिवारी मुहल्ला, शाहगढ़ जिला सागर (म.प्र.) पिन-470339
मोबा.-9993370274, 9981966788 卐

कहानी-

शबरी

– **डॉ. निधि अग्रवाल**

कोरोना के पदार्पण से राकेश की तौ मानो आफत ही हो गई है। एक तौ सरकारी आदेश रोज ही बदल जाते हैं, उस पर डॉक्टर साहब जो नियम सुबह उसे समझाते और बरतने को बोलते, कुछ ही देर में, मरीज की शक्ल देख खुद ही भूल जाते हैं। सबसे बड़ी समस्या है खैनी-गुटका की। अब यह घोड़े के जैसे मुँह पर कपड़ा बाँधे दिनभर रहना पड़ता है तो सबसे पहले खैनी ही इस कोरोनासुर की भेंट चढ़ी। रोज सबेरे क्लिनिक आकर फिस-फिस मशीन से सब जगह साफ करके, हाथ मुँह धोकर अपनी कुर्सी पर बैठो ही कि उघड़े मुँह, धूरा से भरे पाँव लिए मरीज मेला लगा लेते हैं।

सबको समझाओ कि कक्का, बब्बा हाथ-मुँह धो लो तनक नल पर, तो बोलेंगे हम तो भुंसारे ही सपर आए।

''हओ बब्बा'' पर आजकल कोरोना का सूतक लगा है। एक देहरी से दूसरी देहरी लाँघते ही फिर सपरने पड़त।

''ऐ बिंतो, जौं मास्क बाँध लो मौ पै'', बड़बोला बिंतो कौन किसी कोरोना से कम है। मास्क एक कान पर लटकाए फोन पै बतियाता चला आया है।

''अब जनानियों की तरह मुँह छुपाते घूमे का राकेस भैया'', ही ही हँसते हुए बिंतो ने पिच्च से वहीं थूक दिया।

''बेड़ागरक हो तुमाओ। सब दिन फोन लिए घुमत हो। कछु सीखत हो के नईं। थूकबें पर जुर्माना है'',राकेश ने उसे हड़काया।

थर्मल स्कैनिंग भी जरूरी है पर बिंतो की हँसी बेलगाम है।

''देखियो राकेस कहीं गोली न दाग दियो!'', बिंतो ने दोनों हाथ ऊपर उठा डरने का अभिनय किया।

''ऐ अम्मा किते भगत जा रई। हाथों पर दवा डलवाओ'', राकेश के पास बिंतो से उलझने का समय नहीं है।

''काहे की दवाई है बेटा।''

''कीटाणु मरत जा से। रगडों हाथन को।''

''तनिक और डाल दो बेटा।''

''हाथ साफ करने अम्मा..पीने नईं है। कहीं सोचो मन्दिर का चरणामृत है'', बिंतो की बत्तीसी फिर बाहर।

साथ बैठे चार मरीज और ही ही ही ही। यहाँ कोरोना गर्दन दबोचे है पर इन लोगन की हँसी ठठ्ठा पर तनिक असर नहीं।

''गमछा काहे हटा लिए मुँह से बब्बा? बिना मुँह बांधे यहाँ नहीं बैठ सकते। देखो कितेक बड़ो बड़ो लिखो है सामने।''

''गर्मी कितनी है! ए.सी. काहे नहीं चलाये हो?'', बब्बा गमछे से रगड़.रगड़ कर पसीना पोंछते बोले।

जैसे अपने घर में ए.सी. में ही मुंह दिए बैठे रहते हों। यहाँ दवाई लेने आते कि ठंडी हवा-पानी।

''हूँह'', राकेश ने मास्क के अंदर से ही मुँह बनाया। इतने में बब्बा वही गमछा मुँह पर बांधने लगे।

''ओ राम! बब्बा तुम जाहिल के जाहिल रहना। उतारो गमछा, यह मास्क बांधो। सब गंदगी लिपटा कर मुँह में घुसा लई। ऐसे होगी का कोरोना से लड़ाई'', मास्क देते हुए बोला।

''बब्बा कोरोना को कच्चा चबा जै'', बिंतो चुप तो बैठ ही नहीं सकता।

मास्क से छन कर बिंतो की दबी-दबी हँसी बाहर आ रही है पर उसके हिलते शरीर को देख लाली मुँह पर हाथ रखे जोर जोर से हँस रही है।

राकेश बोल पाता कि मुँह पर हाथ नहीं लगाना है इससे पहले ही डॉक्टर साहब आ गए।

मास्क लगाए हैं। ग्लव्स पहने हैं। राकेश ने सब चेक किया। भाभीजी और अम्माजी दोनों ने कड़ी हिदायत जो दी है, डॉक्टर साहब पर नजर रखने की।

हर मरीज ''हमाये डॉक्टर साहब'' कहते, कतई उनके सिर पर चढ़ा जाता है।

वह अंदर जाकर बैठे और राकेश ने हेड शील्ड निकाल कर दी। हाथ सैनिटाइज कराए।

''बीस मरीज बस, भीड़ नहीं होनी चाहिए बिल्कुल'',

उन्होंने याद दिलाया।

राकेश ने ''हाँ'' में सिर हिलाया।

दस दिन बन्द रह कर, चार दिन से ही क्लिनिक वापस खुली है। चालीस फोन सुबह से आ चुके मरीजों के। राकेश ने बाहर आकर मरीज गिने पूरे सोलह। तीन मरीजों को फोन पर नम्बर दे चुका। बस अब एक ही और नंबर बचा है।

''शांताबाई! भीतर जाओ'', उसने आवाज लगाई।

शांताबाई के साथ आये उसका बेटा और भाई भी उठ खड़े हुए।

''न न सब भीतर नहीं जा सकते। केवल मरीज'' वह अडिग चट्टान.सा रास्ता रोके खड़ा है।

''हम कौन लिखना पढ़ना जानत। मुन्ना तुम तो चलो संगे'', वह अपने बेटे से बोली।

''तुमाय सरीर में कौन दिक्कत... ये तुम जानत हो कि मुन्ना?'',राकेश ने दाँत पीसे।

अम्मा उलझन में दिखी पर बड़बड़ाती हुई अंदर चली गई।

''डॉक्टर साहब बरुआ सागर से गुजरते तो हमारे घर जरूर ठहरत। तुम फालतू चौधरी बनत'', मुन्ना ने तल्खी से कहा।'' वह कुछ कड़वा जवाब सोच पाता उससे पहले ही डॉक्टर साहब ने पुकार लिया। वह अंदर दौड़ा।

''राकेश,अम्मा को मल्टीविटामिन की शीशी निकाल कर दे दो।''

''बढ़िया हो जाओगी अम्मा। चिंता न करो। अभी बहु से बहुत साल सेवा कराओगी'' डॉक्टर साहब अम्मा की ओर देख

हँसते हुए बोले।

''आजकल की बहु. बिटियाँ अपनो ही कर लें। हम तो अभी भी अपना बनाकर खाउत डाक्टर साब'',

अम्मा के पास भरे.पूरे परिवार की दर्जनों चुगलियाँ हैं। अम्मा को शीशी देते हुए बाहर जाने का इशारा किया। अगला मरीज अंदर भेजा। मल्टीविटामिन की यह शीशी वह पार्वती के लिए ले जाने वाला था। तीसरा महीना चल रहा है। कमजोरी रहती है। अम्मा को जाने बुढ़ापे में कितनी ताकत चाहिए। उसका मन अब कसैला हो उठा था। एक तो तम्बाकू की तलब, उस पर जून की उमस और मुँह पर मास्क। उफ्फ!

''लो लुट गई लंका। आ गई ''शबरी''। इसी की कमी थी'', राकेश ने सीढ़ी चढ़ती बिजली को वहीं रुकने का इशारा किया।

''आज के सब नम्बर लग चुके'',उसने झूठ बोला।

''हम हमेसा ही बिन नम्बर दिखात'' वह ठसक से बोली।

गहरे हरे रंग का लहंगा-चोली। पुछल्ले लटकी लाल ओढ़नी उस पर लंबी-लंबी नकली बालों की चोटी और जाने कितनी बिंदी गोदे यह कबूतरी राकेश को कभी फूटी आँख न भाई।

न फीस देती न नम्बर लगाती। उस पर धौंस देखो।

पचास रुपये की सुगर की जांच अलग करो फिर सैम्पल की दवाइयाँ तलाश कर दो। तिस पर इसके जाते ही डॉक्टर साहब कहेंगे। डायबिटीज से बेचारी के गुर्दे बैठ रहे हैं...कम उम्र में ही। पन्नी(कच्ची शराब) पीती होगी दिनभर, वह क्या जानता नहीं इन लोगों को।

''कोरोना काल में बिन नम्बर नहीं देख सकते'',

राकेश ने निर्णय सुनाते विजयी भाव से देखा।

''...और तुम्हारी तो साँस भी फूल रही है। तुम्हें तो सरकारी फ्लू ओ.पी.डी. जाना पड़ेगा'', अब वह जीत के लिए आश्वस्त था।

''क्या? बिजली ने आँखे फैलाईं। साँस तो उस कुत्ते कंडक्टर के कारण। हमें चढ़ता देख बस दौड़ा दी। कोस भर बस के पीछे दौड़ कर चढ़े। हमें का कोरोना हुआ है? न बुखार है न खांसी-खंखार।

''वो सब हम नहीं जानत। सरकारी अस्पताल ही जाना पड़ेगा।''

''बिजली ने बेचारगी के भाव से बाकी मरीजों की ओर देखा।

''बैठ जाओ... बैठ जाओ..अपने डॉक्टर साब भले हैं। देख लेंगे'', बिंतो चिल्लाया।

''तुम का कलक्टर लगे हो। जेल हो जै कोरोना मरीज देखन पर'', राकेश कैसे हार जाता।

शोर सुन मरीज के साथ डॉक्टर साहब भी बाहर निकल आये। सबके मन में डर जो ठहरा।

''क्या हुआ?'', उन्होंने पूछा।

अब तो बिजली शेरनी थी।

''जै खुद को भगवान समझत सर जी। हमें अंदर नईं आन दे रओ'',वह रोने को थी।

''आने दो। बहुत दूर से आती है'', डॉक्टर साहब ने ज्यों राकेश से निवेदन किया।

वह कहता ''बैठ जाओ'' उससे पहले ही बिजली डॉक्टर साहब के पीछे-पीछे केबिन के अंदर।

''अरे, नम्बर तो आने दो'',वह चिल्लाता पीछे भागा।

पर वह पसर चुकी थी। चुप ही रह उसे मास्क दिया। हाथ सेनिटाइज कराए। भूल जो गया था बाहर। डॉक्टर साहब ने शुगर जांची। दवाई लिखी। बोले-

इन्सुलिन बढ़ाई है। दवाई के पैसे हैं न?

बिजली ने ''हाँ'' में सिर हिलाया और अपने जादुई लबादे में से निकालकर एक थैली मेज पर रख दी। इठलाती हुई उठ खड़ी हुई।

चीते की फुर्ती से राकेश ने वह थैली उठा उसके हाथों में वापस थमा दी।

''ये लेती जाओ।''

''काहे?'', वह हतप्रभ थी।

वह कहना चाहता था कि डेढ़ सौ रुपए की फीस के बदले गाँव की झाड़ से तोड़ कर लाये ये गन्देले बेर दे, ज्यादा होशियारी न दिखाए करो। पर प्रकट मे बोला-''कोरोना है बाहर का खाना मना है।''

''बाहर का कैसे है? खेत से लाते हैं। सब्जी-भाजी खरीद रये तुम कि अपने मूड पर उगा ले रये कोरोना में?'', वह तिलमिला कर बोली।

बुरा बोलने में बिजली की कोई सानी ही नहीं। डॉक्टर साहब भी डर गए। तभी तो बोले-''अरे अरे बिजली... शांत...शांत! रख दो। हमें तो बहुत पसंद हैं खट्टे.मीठे बेर।''

वह उसे गुस्से से घूरती अपना पर्चा उठा बाहर चली गई।

''खूब पैसा है इसके पास पर फीस नहीं देती'',वह क्रोध से बोला।

''कोई नहीं'', भाव से डॉक्टर साहब ने हाथ हिलाया। अगले मरीज को भेजने के लिए इशारा किया।

लेकिन वह अपमान से काँप रहा था। बोला-''न दे फीस लेकिन यह क्या जंगली बेर देकर सोचती है कि बड़ी जागीर दे गई है। कोई खाता भी नहीं। भाभी अलग गुस्सा होती कि महक करते हैं घर में।''

''वो जागीर समझ कर देती है मैं जागीर समझ कर रख लेता हूँ। उसका मान बचा रहता है। जीवन उसका नहीं बचा पाऊँगा पर इतना तो कर ही सकता हूँ'', डॉक्टर साब गहरी साँस छोड़ते हुए बोले।

अचानक गीली हुई आँखों से वह निरुत्तर खड़ा रहा। बिजली के दुधमुँहे बच्चे याद आ गए। फिर अगले मरीज को भेजने के लिए मुड़ा।

''राकेश, कार में पार्वती के लिए कैल्शियम और प्रोटीन पाउडर रखा है। याद से लेते जाना'', डॉक्टर साहब ने कहा।

एक जिद्दी बूँद उसकी कोरो पर आने को मचली पर जल्द ही काबू पा अगला नाम पुकारा. बिंतो!

- गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) में जन्म,
वर्तमान में चिकित्सक के रूप में झांसी (उत्तर प्रदेश) कार्यरत
-संपर्क -6386202712
ई.मेल- nidhiagarwal510@gmail.com

बुन्देली के लोक कवियों का सत्तावनी राष्ट्रीय स्वर

–डॉ. लखन लाल खरे

बुन्देलखंड का पानी पानीदार है। बुन्देलखंड के कवियों के पूर्वज जगनिक ने वीर रस की जिस परम्परा का सूत्रपात किया था, उनके कविकुल-वंशजों ने उसे संभाला और उसका संवर्धन किया। बुन्देली का लोककवि वीरता, बलिदान और स्वाभिमान का पर्याय रहा है। जगनिक अपने वंशजों को सीख दे गये थे–

आगे बढ़कें हम आये हैं सो क्यों धरुँ पिछारुँ पाँय।
धरम क्षत्रियन को जो नाहीं, चाहे प्रान रहें कै जाँय।।
मर्द बनाये मर जेबे खों खटिया परकैं मरै बलाय।
होय पराक्रम जो तुमरे में तौ तुम हमहि देउ दिखलाय।।

दिखाने के लिए शत्रुओं में तो यह पराक्रम नहीं था, पर बुंदेलखंडियों में अवश्य था, जो छत्रसाल के रूप में दिखा, लक्ष्मीबाई के रूप में दिखा, तात्या के रूप में दिखा और शंकरशाह रघुनाथशाह के रूप में दिखा। इन पराक्रमियों की गाथा गाकर यहाँ के लोककवियों की जिह्वा धन्य हो गयी और श्रवण करने वालों के श्रवण-रन्ध्र धन्य हो गये।

अँग्रेजों की दासता के विरुद्ध विद्रोह के आरोपों पर मंगल पाण्डे को फाँसी दे दी गयी। फाँसी तात्या टोपे को भी दी गयी। परन्तु संभवत: इतिहास में दूसरा उदाहरण नहीं मिलता कि केवल एक कविता को आधार बनाकर अँग्रेजों ने तोप के मुँह से बाँधकर उड़ा दिया हो। यह अद्भुत कारनामा बुन्देलखण्ड में हुआ। कविताएँ बरामद की गयीं और मुकदमे का नाटक करते हुए अँग्रेजों ने शंकरशाह और रघुनाथशाह-दोनों बाप-बेटों को तोप के मुँह से बाँधकर उड़ा दिया। इनमें से एक कविता-हम हैं इसके मालिक हिंदुस्तान हमारा-थी। यह कविता उर्दू अखबार-पयामे आजादी में छपी थी। दूसरी कविता शंकरशाह द्वारा रचित थी–

मूँद मुख डंडिन को चुगलों को चबाइ खाइ
खूँद डार दुष्टन को शत्रु संहारिका
मार अँगरेज रेज कर देइ सात चण्डी
बचे नही वैरी बाल बच्चे संहारिका
शंकर की रक्षा कर दास प्रतिपाल कर
दीन की पुकार सुन जाय माता हालिका
खाय ले मलेच्छन को देर नहीं करो मात
भच्छन कर तच्छन वेग शत्रुन को कालिका

स्वतंत्रता की प्रथम क्रांति से लेकर इसके-दूसरे चरण तक की घटनाओं को बुन्देलखण्ड के कवियों ने और लोककवियों ने देखा, परखा और अनुभव किया। इन कवियों ने अपनी अनुभूतियों को काव्यात्मक स्वर दिये। ये स्वर दो प्रकार के थे-प्रथम, लिखित और दूसरे वाचिक परम्परा के। वाचिक परम्परा के लोकगीतों के सृजनकर्ता कौन थे-कोई नहीं जानता। बस चले आ रहे हैं वे शब्द कंठ से कंठ।

जन जन के कंठ पर तो सुभद्राजी की कालजयी रचना, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी-भी है। परन्तु बहुत कम लोग इस तथ्य से परिचित हैं कि मूल रूप से यह वाचिक परम्परा का बुन्देली लोकगीत है। गीत इस प्रकार है–

खूब लड़ी मरदानी अरे वे झाँसी वारी रानी
बुरजन बुरजन तोपें लगा दइं गोला चलाए आसमानी
सबरे सिपइयन पेरा जलेबी अपन ने खाई गुरधानी
छोड़ मोरचा लसकर खों दौरी गोरे करें हैरानी
छपक छपक तलवार चला रई गोरे मांग गय पानी
दूर फिरंगिन खों करबे की रानी ने लइ ठानी
टूट परी गोरन पे ऐसें जैसें काली भुमानी

अनपढ़ परंतु अनुभूतियों से समृद्ध लोक कवि का काव्य कौशल यहाँ दृष्टव्य है और रानी का उदात्त चरित्र चित्रण भी। वे अपने सैनिकों का कितना ध्यान रखती थीं कि स्वयं गुड़धानी अर्थात जो भी मिलता था, खाती थीं परंतु सैनिकों को पेड़ा-जलेबी अर्थात अच्छा भोजन कराती थीं। लोककवि का एक और चातुर्य यह कि पहले सिपाहियों का और बाद में महारानी के खाने का उसने वर्णन कर यह दर्शाना चाहा है कि रानी अपने सैनिकों के भोजन करने के पश्चात् ही स्वयं भोजन करती थीं।

सुभद्राजी ने इस मूल गीत की भावभूमि पर अपना गीत तैयार किया और इसे संस्कारित कर प्रबंधात्मक रूप प्रदान किया। "बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी" कहकर सुभद्रा जी इस तथ्य को स्वीकार करती हैं कि बुन्देलखण्ड के हरबोलों से महारानी लक्ष्मीबाई की कहानी सुनी थी।

आज की पीढ़ी इस कविता को अपने स्कूली जीवन में पढ़ती तो है पर जानने की जिज्ञासा प्रदर्शित नहीं करती कि ये बुन्देले हरबोले क्या हैं? घर-घर जाकर क्र ांति की अलख जगाने में इन हरबोलों या बसदेवाओं का बहुत बड़ा अवदान है। पर यह एक पृथक और स्वतंत्र विषय है जो यहाँ अभिप्रेत नहीं है।

बुन्देलखण्ड के भोले-भाले मानुस ने फिरंगियों की घातें-प्रतिघातें, छल-छद्म और अत्याचारों को अति निकट से देखा और उसका भावुक ह्रदय चीत्कार कर उठा। यह चीत्कार आदिकवि वाल्मीकि के सहज अन्तर से निकले क्रन्दनयुक्त शब्दों से कम न था–

1. चूना मूंड़न पै बुझवा दय/ हाँत पाँव में कीला ठोके,
   पाछे से संदवा दय
2. घर-घर बिड़न लगे अँगरेजा लूटत हैं रजधानी
   काटत हाँत पाँव रजपूतन सुनत न कोऊ बानी
   बडएँ बिटियाँ पकर लेत हैं करत रात मनमानी

बुन्देलखण्ड की गायकी में लेद गायन महत्वपूर्ण विधा रही है। लोककवि लेद की धुन में अँगरेजों को चेतावनी देता हुआ कहता है कि वह इस भ्रम में न रहे कि झाँसी को हथिया लेगा। यहाँ यमराज के सरदार अर्थात् मौत से न डरने वाले सैनिक उपलब्ध हैं:

लोहागढ़ कठिन मवास फिरंगी झाँसी भरोसैं न रइयो
जहँ तोपें चलैं गोला चलैं भालन की हूहै मार
जहँ सीस हथेली लै चलैं, जमराजा के सिरदार
फिरंगी झाँसी भरोसैं न रइयों। लोहागढ़

बुन्देलखण्ड की अनेक रियासतें ऐसी रहीं जिन्होंने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारियों का साथ दिया। चरखारी, जैतपुर, बाँदा आदि रियासतों की गणना अँग्रेज विरोधियों की श्रेणी में होती थीं। इनकी प्रजा को भी अपने अपने राजाओं का यह रूप पसंद आया। इनकी प्रशंसा के गीत लोककवि स्वत: ही गा उठा–

चरखारी फूली केतकी बांदा में फूलो गुलाब।
बीच बेला में फूली कुमोदिनी संभू तो खाँ देउं चढ़ाय।।

अब इस तथ्य को भी प्रकाशित किया जाना चाहिए कि महारानी लक्ष्मीबाई के अतिरिक्त बुन्देलखण्ड की अन्य रानियों और समाज की साधारण महिलाओं ने भी अँग्रेजों का विरोध किया था। लोककवि ने इनकी यश गाथा गाकर अपनी वाणी को धन्य किया। वह गा उठा –

बांदा लुटो रात कें गुँइयाँ
सीला देवी लरीं दौर के संग में सौक मिहरियाँ।

जिगनी की रानी की शौर्य गाथा भी लोक कवि के मुख से प्रस्फुटित हो उठी–

नन्नी रानी ऊधम करतीं जिगनी में दम भरतीं
संग जवान सात सौ लेकें फौज फिरंगिन लरतीं
लूट खजानो धरो पहारन मंदिर डेरा करतीं
पूजा करती राम सुमरती तात्या से मिल चलतीं।

जिगनी की इन महारानी और अन्य वीरांगनाओं पर अब भी शोध कार्य होना शेष है जो होना चाहिए।

बुन्देलखण्ड के लोककवि ने शाहगढ़ नरेश बखतबली शाह, बानपुर नरेश मर्दनसिंह और जैतपुर नरेश पारीछत की शौर्य गाथाओं को भी सम्मान दिया। राजा पारीछत ने तो 1857 की क्रांति के पूर्व ही सन् 1842 में अँग्रेजों के अत्याचारों के विरुद्ध क्रांति अभियान प्रारंभ कर दिया था। लोक कवि कह उठा– **मुरगा बोले पतारन में, हाथिन मारे हजारन में**
पारीछत गरजे हजारन में ढड़के फिरंगी पहारन में
और–
नौ नौ खुरपी हजार हँसिया, नदी-नदी भागे नवाब रसिया
भागे फिरंगी महोबा खों जाँय, राजा परीछत खदेरत जाँय।

बुन्देलखण्ड में शादी-विवाह के अवसरों पर गारियाँ गाने की परंपरा रही है। परन्तु यहाँ की महिलाओं ने परम्परागत विषयों में निबद्ध गारियों को छोड़कर उन गारियों को गाना प्रारंभ किया, जिनमें बुंदेल-बांकुरों का बलिदानी वैभव निहित था। अब ये सब लुप्त हैं। वाचिक परम्परा में चली आ रही एक विखंडित गारी, जिसमें महाराज मर्दनसिंह को याद किया गया है:

लड़तन लड़तन सबई हार गय राखी बान दुआरे की
का कइए बानपुर बारे की।।

यहाँ यह तथ्य उल्लेखनीय है कि ये लोक कवि पढ़े लिखे नहीं थे। परन्तु इनका तीव्र अनुभूतिजन्य अनुभव और नैसर्गिक काव्य प्रतिभा अद्भुत थी। इनके अवदान को नकारा नहीं जा सकता। कितनी ही गारियाँ, फागें, बन्ना और बुन्देली के छन्दों में इन कवियों ने शौर्य गाथाएँ रचीं और लोकप्रिय हुईं। पर आज सब लुप्त हैं।

जहाँ बुन्देलखण्ड के लोककवियों ने आजादी की आग को प्रज्जवलित रखने में स्वैच्छिक और सोत्साह सहयोग किया, वहीं अनेक कवियों ने वीर और वीरांगनाओं के व्यक्तित्व और कृतित्व पर काव्य-सृजन किया। इनमें से अनेक ग्रंथ तो काल के गाल में समा गये, अनेक दीमकों के भोजन बने, जो कुछ शेष बचे होंगे वे कहीं पोथियों में बँधे होंगे। इनके शोध से अनेक नये नये तथ्य प्रकाश में आएँगे।

इन्हीं ग्रंथों में दो ग्रंथ महत्वपूर्ण हैं, जिनका उल्लेख करना यहाँ समीचीन है। एक कल्याणसिंह कुड़रा कृत 'रायसौ बाई झाँसी को।' इस ग्रंथ का सम्पादन सेंवढ़ा के वयोवृद्ध साहित्यकार डॉ. श्यामबिहारी श्रीवास्तव ने किया। दूसरा है पारीछत को कटक, जिसका सम्पादन स्व. प्रो. नर्मदा प्रसाद गुप्त ने किया था। इन दोनों ग्रंथों के एक एक उदाहरण। प्रथम उदाहरण 'रायसौ बाई झाँसी कौ, से, डॉ. श्याम बिहारी श्रीवास्तव के प्रति आभार सहित:

जे रानी के सूर सात। भरपूर लड़ाई करत जात
आगे विलायती गोरास खान। ता संग तीन सौं है पठान
पीछे चुन्नी अरु झड्डू साथ। दाहिनी दिसा लरै कासीनाथ
बाएँ जवाहर मंसव मुदार। इहि भाँति होत चकचूर रार
बूड़ा तक लौ कड़ जात रई। बहु भांतन भांतन रार भई।
ठौर ठौर जित न्याय परै। इतते वितते जुर सार मरे
इहि भांति गई चल के उनाउ। तज के चली हिरदे भर उछाउ।
पोंच चुकी भांडेर तें कोंच गई मझिआई
काली पोंची कालपी नृप मिल करत सलाई।

इस रायसौ ग्रंथ की एक विशेषता है। जहाँ लोग बड़े बड़े क्रांतिकारियों को याद रखते हैं वहीं कवि ने कटीली (दतिया), उद्‌वाँ (करैरा) के जागीरदार जवाहरसिंह, रघुनाथ सिंह नोनेर, मनपुरा के मधुकरशाह, चुन्नी यादव, झडू यादव, अम्बारी चन्दावरा के गनपत कोरी तथा छोटे छोटे स्थानों के अल्पज्ञात व अज्ञात शहीदों को आदर सहित याद किया है।

बुन्देली माटी के लाड़ले सपूत स्व. प्रोफेसर नर्मदा प्रसाद गुप्त ने 'पारीछत कौ कटक' का संकलन एवं सम्पादन किया। आभार सहित इस ग्रंथ का एक अंश:

दोहा – **सब राजा राजी लये, पर पारीछत भूप।**
जात हती हिंदुवान की, राखौ सबको रूप।।

सैर – **प्रथम जो नसाओ काम कामदार ने।**
सुभ सोध चला राजा जप पूँछ बामने।।
टारे सैं नहीं टरहै जो लिखी राम नें।
अंगरेज मुलक मालिक के लरौ सामनें।।
सुभ हुइहै नृपत कौ कर खरग लेत मैं।
जब चड़ आयो अंगरेजई पै ज्वाब देत मैं।।
मिलने न कछू हमकौं निसचर के हेत में।
जब सात सै जबान चड़ रहे खेत में।।
इक बेर फुकी छावनी सब जुर मिल तापो।
लरबे जी सान मन में न कदरौई चापौ।।

रघुबीर हैं सहाइ नाम हर कौ जापौ।
दूसरें सिमरिया में डारौ छापौ।।
छोरे न हथयार नृपत दिना सात लौं।
तक तक कैं डारै छापे चूकैं न घात लौं।।
सब कछू पास अपनै जो रही बात लौं।
राजा नैं जंग मारी खबर है बिलात लौं।।
दोहा – बसत सरसुती कंठ में जस अपजस कबि गाइ।
छत्रसाल के छत्र की पारीछत पर छाइ।।

यह सम्पूर्ण कटक दोहा और सैर छन्द में निबद्ध है। कटक की विशेष बात यह है कि कवि ने इतिहास पक्ष को विकृत नहीं होने दिया। प्रथम दोहे के तीसरे और चौथे चरण का दूसरे दोहे के तीसरे और चौथे चरण से अद्भुत ऐतिहासिक साम्य है। महाराज छत्रसाल ने जिस प्रकार मुगलों के अत्याचारों से हिंदुओं और बुंदेलखण्ड की रक्षा की थी, उसी राजवंश के प्रताप की छाया राजा पारीछत पर है। वे भी अंग्रेजों के अत्याचारों से हिंदुओं को, हिंदुस्तान को और बुन्देलखण्ड को मुक्त करेंगे और किया है।

भूषण ने भी शिवाजी के प्रति ऐसा ही स्तवन किया था जिन्होंने हिन्दू और हिंदुस्तान की मर्यादा को अक्षुण्ण रखा था। इस दृष्टि से कटककार ने राजा पारीछत को शिवाजी और छत्रसाल के समतुल्य रखा है–

बेद राखे विदित पुरान परसिद्ध राखे,
राम नाम राख्यो अति रसना सुधर में।
हिंदुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की,
कांधे में जनेऊ राख्यो माला राखी गर में।
मीड़ि राखे मुगल मरोड़ि राखे पातसाह,
बैरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर में।
राजन की हद्द राखी तेग बल सिवराज,
देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में।

वरिष्ठ साहित्यकार श्री वीरेन्द्र शर्मा 'कौशिक' का मत यहाँ उल्लेख करना प्रासंगिक है कि– ''अब हमें यह तो मानना ही होगा कि भारतीय स्वाधीनता संग्राम में देश की अन्यान्य छोटी–बड़ी रियासतों के राजाओं, जागीरदारों की भाँति ही बुन्देलखण्ड की वीर प्रसू भूमि के अधिकांशजनों ने अपना पूर्ण और अमूल्य योगदान दिया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, जेतपुर के राजा पारीछित और बानपुर के राजा मर्दनसिंह के विद्रोह की शौर्यगाथाएँ तो लोकगीतों का विषय बन चुकी थीं। शिवपुरी का महान वीर तात्याटोपे भी अब तक लोककवियों के स्वर की अनुगूँज बन चुका था।'' (बुंदेली इतिहास और संस्कृति: संपा. कपिल तिवारी; पृ0 86)

सत्तावनी क्रांति के अनेक वीर और वीरांगनाओं की जीवनगाथा तो बुन्देली लोकगीतों का विषय बनी। परन्तु यह आश्चर्य है कि शाहगढ़ नरेश बखतबली शाह और तात्याटोपे के संबंध में अनेकविध प्रयासों के उपरान्त भी कोई लोकगीत प्राप्त नहीं हुआ। क्यों?

शोध का यह भी एक विषय है!!

– पूर्व प्राचार्य, शास. महाविद्यालय करैरा
गली नं. 3, मुदगल कॉलोनी मनियर, शिवपुरी
संपर्क–9425137859, 6261057327 卐

बुंदेली गजल

– संतोष सोनकिया 'नवरस'

और की आँख सें गैल जो देखतइ
वे कितउँ ना कितउँ परैं मान लेउ
जो अपउँ बात कौं और के मौं कऐं
देउ कौ बोझ विरयाँ घरैं मान लेउ

दिन उए सें अथैं लौं बकें झूट जो
मूड़, गंगाजली कों उठायें फिरें
वे हरीचंद के पूत बनकें अपएँ
बाप कौ नाउ काऐं करें मान लेउ

ईख्खा की कटारी चलै रात दिन
बात करतन लगै फूल से झर रए
वे चतुर चातुरी चाल चलकैं कबउँ
खुद अँधउआ कुआ में गिरें मान लेउ

ना कछू सब कछू बन रए आजकल
सब कछू कौ कछू ना कछू कै रए
ना कछू जो कऊँ सब कछू बन गये
सब कछू तौ विचारे मेरें मान लेउ

और कौ दु:ख जिनकों लगै राइ सौ
पर अपएँ पीर पै ऐ परैं ढेर भर
वे जनाउट विना सींग उर पूँछ के
आदमी खोल परैं फिरें मान लेउ

बैन, भैया मताई न जानें कछू
बाप के नाँव सें ताप जिनकों चढ़ै
वे बने कलजुगी पूत सरमन जनम
भूम पै भार भारी करें मान लेउ

खूब औंड़ल कें मिल रऔ है जिनें
तौउ संतोष नेंकउ नईं आ रऔ
हाऊ हाऊ मची हाय–हाय करें
ई तरां जिन्दगी वे हरें मान लेउ

– गणेश जी, जालौन (उ.प्र.),
प्रवास–छतरपुर (म.प्र.)
मोबा.–9026747741 卐

राजा परमर्दिदेव

– डॉ. सुधा चौहान ''एञ''

परमर्दिदेव– 1165 से 1202 तक–– आपकी जानकारी के लिए बता दें कि परमर्दिदेव को कुछ इतिहासकारों ने राजा परमाल के नाम से भी संबोधित किया है। महाराज मदन वर्मन के पुत्र और परमर्दिदेव के पिता यशोवर्मन की किसी बीमारी के कारण तीस साल की उम्र में ही मृत्यु हो गई थी उस समय परमर्दिदेव की उम्र केवल सात साल की थी और उनके छोटे भाई प्रद्युमन की पांच साल। दादा मदन वर्मन ने ही पोते का लालन पालन किया और एक योग्य युवराज बनाया।

अपने दादा मदनवर्मन की मृत्यु के उपरांत परमर्दिदेव ने महोबा का राज्य सम्हाला। परमर्दिदेव अपने दादा के भक्त और आज्ञाकारी पोता थे। उन्हें ग्यारह साल की उमर में ही युवराज का ताज पहना दिया था। वह युवराज का ताज पहनने के बाद से ही सारे राज्य की व्यवस्था देखते थे। वह युद्ध कला में बहुत निपुण थे उनके आगे अच्छे अच्छे बीर नहीं टिक पाते थे। कहा जाता है कि इन पर मां चँडिका जी की बहुत कृपा थी।

इस समय बारहवीं सदी में परिस्थियां बदल रहीं थी। अब भारत में तीन महा शक्तियां प्रभावी थीं। उनका ही वर्चस्व था। दिल्ली में तोमर वंशी राजा अनंगपाल, जो पृथ्वीराज के नाना थे बाद में उन्होने अपना उत्तराधिकारी पृथ्वीराज को ही बनाया था। कन्नौज में राजा जयचंद जो राजा अनंगपाल के बड़े दामाद थे और तीसरे महोबा में राजा परमर्दिदेव। हर ओर इन्ही तीन महाशक्तियों की चर्चा थी।

ऐसे ही समय में परमार्दिदेव ने अपनी शक्ति के बल से संपूर्ण भारत को विजय कर लिया था। इस विजय की सबसे बड़ी खास बात यह थी कि राजा परमार्दिदेव ने सभी राजाओं को हराकर उनसे मित्रता का संबध बनाया था किसी का राज्य या कुछ भी नजराना किसी भी राजा से नहीं लिया था।

इस समय मुगलों के आगमन से राजनैतिक उथल–पुथल बढ़ गई थी। मुगल हिन्दु राजाओं को बड़े राज्य का स्वप्न दिखा कर उनकी सहायता करते और अपना उल्लू सीधा करते थे। इस कारण अब युद्ध अधिक होने लगे थे।

राजा परमर्दिदेव वीरों का आदर करने वाले राजा थे। उन्होने कई वीरों को अपने दरबार में उच्च पद पर आसीन कर रखा था। उनके मंत्री चूड़ामणि भी इसी तरह बीरता के बल पर दरबार में स्थान पाये थे।

इसी तरह बनाफर वंशी दच्छराज और बच्छराज नामक दो भाइयों की बीरता से प्रभावित होकर राजा ने उनको अपना धर्म भाई बनाकर अपने राज्य में बराबर का सम्मान व अधिकार दिया हुआ था। इन्ही बच्छराज ने 1167 में बछराउनी बसाया था जिसका नाम बाद में अजयगढ़ हो गया।

परमर्दिदेव के शासन काल में बनाफर वंशीय आल्हा उदल मलखान आदि बीरों का खास स्थान है। इसलिए इनके बारे में जानकारी होना जरूरी है, अन्यथा इतिहास का ज्ञान अधूरा ही रह जायेगा।

इनकी कीर्ति और वीरता के चर्चे संपूर्ण भारत में फैले थे। चूंकि वह वीरगाथा काल का समय था तो राजा और राजकुमारियां वीरता का आदर करते थे। हर राजकुमारी की यही इच्छा थी कि वह महोबा के राजकुमार आल्हा उदल से विवाह करें। उस काल में स्वयंवर प्रथा का चलन था, तो पास की व दूर देशों की राजकुमारियां इनकी बीरता और सुन्दरता से प्रभावित होकर इनको मन ही मन वरण करके इनके पास विवाह का प्रस्ताव भेजा करती थीं, साथ में इनकी वीरता को परखने के लिए कुछ शर्तें भी रखती थीं और ना आने पर कई तरह की कसमें भी रखती थीं। उस काल में गंगा, तुलसी व मां की कसम बहुत बड़ी बात होती थी। कोई भी जनेउ धारी सनातन धर्मी इसे तोड़ने की हिम्मत नहीं कर सकता था।

एक राजोचित मर्यादा के अनुसार कोई भी राजा या राजकुमार किसी भी राजकुमारी के प्रणय निवेदन को अस्वीकार नहीं कर सकता था इस कारण राजधर्म निभाते हुए वीर राजाओं को उन राजकुमारियों के प्रणय निवेदन को मानना पड़ता था और ये उनके बुलावे पर उनका वरण करने के लिए उनके पिता से अनुमति मांगते थे और फिर कुछ लड़की वाले इसे अपना अपमान समझकर युद्ध के लिए तैयार हो जाते थे, तो कुछ राजाओं को इनकी वीरता व बल बुद्धि पर बड़ा भरोसा था इसीलिए उस बलबुद्धि को परखने के लिए इनके सामने विवाह के लिए कठिन कठिन व अजीब अजीब सी शर्तें रखते थे। परन्तु तलवार के धनी आल्हा उदल और मलखान उन सभी असंभव सी दिखने वाली शर्तों को भी पूरा करके, युद्ध होने के बाद ये विजयी होकर उस राजकुमारी से विवाह करते थे।

आल्हा ऊदल के नेपाल के मिथिला नगरी में आने के उल्लेख है और वहां की राजकुमारी मछला से विवाह के प्रमाण मिलते हैं। इसके अलावा अरब साहित्य और अफगानी साहित्य में भी इनके युद्धों का उल्लेख मिलता है।–

इन्हीं आल्हा ऊदल के कारण महोबा का नाम इतिहास में अमर है। इन्होंने अपनी वीरता, समझदारी, राजनैतिक सोच व न्याय व्यवस्था के कारण एक सुदृढ़ शासन व्यवस्था की नींव डाली थी। आल्हा उदल ने कभी अपनी सीमा विस्तार के लिए युद्ध नहीं किया बल्कि उनके युद्ध अधिकांशतया किसी ना किसी समस्या के हल को लेकर ही किये गए हैं। उन्होनें अपने मित्र राजाओं और रिस्तेदारों की सदैव सहायता की है। उनका आचरण धर्म संगत था। आल्हा देव की धर्म में पूरी आस्था थी। वह आदिशक्ति मां चंडिका जी के परम भक्त थे। इसके अलावा वह मैहर वाली शारदा माता के भक्त थे। कहा जाता है कि महोबा के गोरखगिरी पहाड़ की सुरंग से मैहर तक जाने का रास्ता आल्हा उदल केवल कुछ घंटे में तय कर लेते थे। आज भी गोखार पहाड़ में अंधेरी उजेली सुरंग हैं, जो बहुत गहरी,

यानि कि कई किलोमीटर लंबी हैं। कोई भी उनमें बहुत आगे तक जाने की हिम्मत नहीं करता।

उस काल में प्रयाग में होने वाली धर्म सभाओं में आल्हा के जाने के व उस काल की परिस्थिति पर चिंता करने के भी प्रमाण मिलते हैं। आल्हा एक दूरदर्शी सोच वाला व्यक्ति था उसने मुगलों के आक्रमणों को लेकर और गौरी को बार बार छोड़ने को लेकर पृथ्वीराज से कई बार चिंता व्यक्त की थी क्योंकि उनका सिद्धांत था कि.....

पहली गल्ती पर ना बोलूं ना दूजी पर देउं जवाब।
तीजी गल्ती पर ना छोड़ुं छाती भोंक देउं तलवार।।

आल्हा का मानना था कि अगर हम भाई भाई के आपस में मतभेद हैं तो हम आपस में ही उनका समाधान निकालेंगे, परन्तु किसी भी विदेशियों को अपनी पावन जन्म भूमि पर पैर नहीं जमाने देंगे। उन्होंने स्वयं आगे आकर दिल्ली नरेश से मुहम्मद गौरी के विरुद्ध युद्ध में सहायता करने को भी कहा था पर पृथ्वीराज का स्वाभिमान या यूं कहें कि उनके अभिमान को यह गँवारा नहीं था इसीलिए उन्हांने कहा यह हमारी समस्या है इसे हम अपनी तरह से निपटेंगे, अभी हम दिल्ली की रक्षा करने में समर्थ हैं। अगर उस समय पृथ्वीराज ने आल्हा की बात मान ली होती तो आज भारत का इतिहास ही कुछ और होता। आल्हा उदल – बड़े होकर ये चारों भाई आल्हा उदल मलखान सुलखान और राजा परमर्दिदेव का पुत्र ब्रह्मदेव के कारण महोबा का नाम स्वर्णक्षरों में लिखा गया। इनकी बीरता के आगे सारा भारत नगण्य था। इन चारों भाइयों को मां चडिका देवी का वरदान प्राप्त था कि आप कभी पराजित नहीं होंगे। आल्हा को मां मैहर की शारदा माता से अमरता का वरदान मिला हुआ था ऐसा कहा जाता है।

परमर्दिदेव के नेतृत्व में मांड़ोगढ़ का युद्ध – मालवा राज्य की राजधानी 12वीं सदी में माड़ोंगढ़ थी। मांड़ोगढ़ उस समय मध्य भारत का एक सशक्त राज्य था। जहां 12 वीं शताब्दी में परमार वंशीय जयवर्मन का राज्य था यह राजा धार के राजामुंज और भोज के वंशज थे। जयवर्मन ने 1142 से 1160 ई. तक राज्य किया है। जिसे आल्हा गायकों ने जंबेराय कहा है उसका पुत्र कीरतवर्मन् था, बहुत सांवला रंग होने के कारण उसे आल्हा में करिया या करिंगाराय कहा है। मांड़ो का फौलादी किला उस समय अजेय माना जाता था। बनाफर वंशीय दस्सराज और बच्छराज को मारने के बाद करिंगा को सोते जगते बनाफरों से डर लगता रहता था। इसलिए उसने अपनी सुरक्षा के लिये लोहानी गुफा का निर्माण कराया था और दुर्ग के चारों ओर लौहानी दीवार बनवाई थी। राजकुमार कीरतवर्मन क्रोधी और लड़ाका था।

ये बालक आल्हा उदल जब बारह साल के थे और इन्हें पता चला कि इनके पिता का सिर काटकर मालवा का कीरत वर्मन ले गया और उन सिरों को अपने अपने किले के बाहरी दरवाजे पर इस शर्त के साथ टांगा है कि जिसमें दम हो ले जाये तो फिर बारह साल की उम्र में अपने पिता की मौत का बदला मांडोगढ़ पर चढ़ाई करके लिया था। इनके माड़ोगढ़ पर आक्रमण का वर्णन उज्जैनी से प्राप्त ताम्रलेख से मिलता है।

पृथ्वीराज चौहान से चंदेलों के नेतृत्व में आल्हा उदल का पहला युद्ध–सिरसा के किले को वापस लेने पर' मलखान के पिता ने दिल्ली की सीमा से लगा हुआ महोबा से मिला सिरसा का सूबा एक विस्तृत नगर के रूप में बसाया था। उस नगर का वैभव, बनावट व सुरक्षा देखकर पृथ्वीराज जलता था। फिर मांडू के राजा के हाथों धोखे से दच्छराज बच्छराज के मारे जाने पर पृथ्वीराज ने मौका देखकर वह सिरसा का किला अपने कब्जे में करके अपने पुत्र को वहां का राजा बना दिया था। जिसे आल्हा उदल और मलखान ने माड़ो गढ़ से अपने पिता का बदला लेने के बाद परमर्दिदेव के नेतृत्व में युद्ध करके वापस ले लिया था।

पृथ्वीराज के साथ दूसरा युद्ध–पृथ्वीराज चौहान की पुत्री बेला का विवाह परमार्दिदेव के पुत्र ब्रह्मा से हुआ था। माहिल के भड़काने पर पृथ्वीराज ने अपनी बेटी की विदाई नहीं की थी। इसके बाद माहिल के कान भरने पर पृथ्वीराज ने ब्रह्मा की बहन चंद्रावली का डोला मांगा था। यही सबसे बड़ी दुश्मनी का कारण था। सन् 1187 ई. में कजली महोत्सव के समय वह उसका डोला लूटने के लिए अपनी सेना को लेकर आ गया और महोबा को चारों ओर से घेर लिया था। करीब एक माह तक पृथ्वीराज महोबा पर घेरा डाले रहा था। उसकी सेना सूपा, कुलपहाड़, खरेला, पुन्नियां, बेलाताल, राठ आदि को कब्जा करके पड़ी रहीं थी।

तब आल्हा उदल को खबर मिलते ही वह साधु के वेश में आये और पृथ्वीराज से युद्ध करके कजली का विसर्जन सम्पन्न कराया था। दोनों ओर से घमासान युद्ध हुआ था और पृथ्वीराज की हार हुई थी, वह घायल होकर चला गया था। इस युद्ध में पृथ्वीराज का एक पुत्र भी मारा गया था।

पृथ्वीराज से आल्हा उदल व परमार्दिदेव का तीसरा युद्ध–चंद्रावली का डोला मांगने पर पृथ्वीराज से बुराई हो जाने के बाद राजा परमार्दिदेव ने पृथ्वीराज को संदेश भेजा कि वह अपनी पुत्री और मेरी पुत्र वधु बेला का गौना कर दे।

पत्र पाकर पृथ्वी ने उनको हां तो कह दी पर अपनी ओर से पूरी सेना को लगा कर युद्ध की रणनीति बना ली और जब आल्हा उदल ब्रह्मा को दूल्हा बना कर गौना लेने गए तो फिर दोनों के बीच घमासान युद्ध हुआ। यह युद्ध बहुत भयानक था। दोनों ओर के सभी शूर वीरों का मरण हो गया था। परमर्दिदेव का पुत्र ब्रह्मा पृथ्वी के पुत्र ताहर के हाथों धोखा से मारा गया। और फिर अपने पति ब्रह्मा का बदला लेने के लिए बेला रानी ने अपने ही भाई ताहर को भी मौत के घाट उतार दिया। रानी बेला वहीं बीच रण भूमि में सती हो गई। अब तक चंदेलों व चौहानों की शक्ति क्षीण हो गई थी। इस युद्ध में बीर उदल का भी मरण हो गया, तो दूसरी ओर कनवज के राजवंश का इकलौता चिराग लाखन राना भी मारा गया। जब आल्हा क्रोध में आकर पृथ्वीराज को मारने लगे तभी गुरूगोरखनाथ ने आकर कहा कि

अभी पृथ्वीराज की नियति कुछ और है। तुम इसे छोड़ दो और मेरे साथ चलो।

इन सब बातों से क्षुब्ध होकर आल्हादेव अपने पुत्र इंदल के साथ गुरू के साथ कदली वन की ओर चले गए।

इसके बाद पृथ्वीराज चौहान के भी संयमराय, चौड़िया राय, जागाराय, भोजाराय आदि सारे बीर मारे जा चुके थे और उसकी सैन्य शक्ति काफी कमजोर हो गई थी। इसी बात का फायदा उठाकर गौरी ने 1192 में दिल्ली पर आक्रमण कर दिया और तराइन के युद्ध में पृथ्वीराज की हार हुई।

इनकी प्रमाणिकता शिलालेखों, दस्तावेजों और समय समय पर लिखे गए साहित्य से भी होती है।

सन् 1191 ई. में सबसे अंतिम युद्ध पृथ्वीराज का आल्हा उदल से महोबा के मैदान में हुआ था। उसमें पृथ्वीराज और महोबा की सारी सेना का अंत हो गया था और युद्ध गुरू गोरखनाथ के बीच बचाव पर समाप्त हो गया था। जिसका वर्णन चंदेलकालीन बुंदेल खंड के इतिहास में मिलता है और परमाल रासो में भी।

''कवि जयदेव'' ने ''गीत गोविन्द'' की रचना 1200 वीं सदी में की और ''आल्हा रायसो'' और प्रसन्नाराव राघव'' भी 1201 में लिखा।-

प्रसिद्ध ''इतिहासकार कीथ'' ने आल्हा-उदल की बीरता की बहुत प्रसंशा की थी। गंगाधर कृत ''गंगादत्त-प्रताप विलास'' आदि नाटकों की रचना की थी। जिसमें बीच बीच में आल्हा-उदल की बीरता का भरपूर उल्लेख किया गया है।-1

इसके अलावा ''बीसलदेव रासो'' ''हम्मीर रासो'' ''हम्मीर काव्य'' सहित अनेक काव्य ग्रंथों की रचना उस काल में अनवरत होती रही है। विजयनगर के महान ''राजा कृष्णदेव राय'' स्वयं एक महान कवि था उसने ''अमुक्तमलयद'' नामक ग्रंथ की रचना की थी, जिसमे उस काल के महानायक आल्हा, उदल, पृथ्वीराज, जयचंद, विजयराज और ब्रहमजित का वर्णन आता है। उनके दरबार के प्रसिद्ध ''कवि अलस्सनी पैदना'' ने ''स्वरोचिसा-मनुचरित्र'' की रचना की थी,

जिसमें उस काल की लड़ाई के नायक आल्हा-उदल, मलखान, जयचंद, पृथ्वीराज, रतिभान, चामुण्डाराय, संयमराय और धांधूजित आदि के नामों का उल्लेख मिलता है। इन बातों से सिद्ध होता है कि कर्नाटक और सूरत की लड़ाइयों का हवाला सही है। उनका युद्ध दक्षिण में कलचुरी वंश के गांगेयदेव और गुजरात में चालुक्यवंश के मूलराज प्रथम के वंशजों के साथ हुआ था।-

इसके अलावा मदनपुर जैन मंदिर शिलालेख 1182 ई. का है जिसमें पृथ्वीराज चौहान का मलखान से युद्ध में मलखान का मरना और सिरसा को अपने अधीन करना उल्लेखित है।

सैमरा शिलालेख-1166ई., महोबा मूर्ति लेख 1167 ई., इच्छावर लेख 1171 ई., महोबा शिलालेख 1173 ई., चरखारी ताम्रलेख 1178ई., मदनपुर जैन मंदिर शिलालेख 1182 ई. के द्वारा आल्हा उदल और चंदेल काल का प्रमाणित इतिहास मिलता है।-

''इंडियन एन्टिकवेरी'' एवं ''लिंगविस्टिक सर्वे आफ इंडिया'' में प्रकाशित कराकर सन् 1920 में इसे इंगलैंड भेजा था। कहा जाता है कि प्रथम विश्व युद्ध के समय अंग्रेजों ने इसका भरपूर लाभ लिया।-

1722 में ''कविवर हरिकेश'' द्वारा एक प्रबंध काव्य ''जगतराज की दिग्विजय'' लिखा गया था जिसमें महोबा के चंदेल राजाओं की वीरता का बखान था उनके शासन के विषय में बहुत सी जानकारी थी और सबसे बड़ी बात उसमें परमार्दिदेव की वंशावली का भी वर्णन था।-

राजा परमार्दिदेव ने अपनी आंखों के सामने बहुत बड़ा विध्वंश देखा था, उनके सामने ही उनके पुत्र ब्रह्मजित सहित सारा परिवार युद्ध की भेंट चढ़ गया था। जिससे उनका मन इस संसार से क्षुब्ध हो गया था। इसलिए युद्ध के तत्काल बाद ही उन्होने राज्यगद्दी पर अपने छोटे पुत्र त्रिलोकवर्मन को सन् 1202 में राजगद्दी पर बिठाकर राजकाज से सन्यास ले लिया था। त्रिलोक वर्मन ने कुशलता पूर्वक राज्य किया और उसके बाद उसकी कई पीढ़ियों ने 1545 तक राज्य किया।

-आर -44, महालक्ष्मी नगर, इंदौर
मोबाइल. 9826030993

कोरोना

-निहालचन्द्र शिवहरे

मौं बाय कितै जा रये
कोरोना में भी गर्रा रये
का तुमाये मताई बाप
कछु नहीं समझा रये
घर में नईंया खाबें कौं
फिर भी दारू पीं कैं
बाप की कमाई उड़ा रये
भूखे प्यासे तुमाये मौड़ी मोड़ा
इतै उतै रोटी के लाने
लाइन में धक्का खा रहे

घर में रओ मोदी जी समझा रये
योगी जी घर बैठे रुपईया भिजवा रये
तुमाये जैसे लम्पट जुआ में उड़ा रये
विना बात मटक रये इते उतै
जाईसें पुलिस के डंडा खा रये
डंडा खाकें अब काय
हल्दी चूना लगवा रये
लाकडाउन में मड़इयाँ में रयो
हम तुमै बार बार समझा रये ।

-झाँसी (उ.प्र.)

बुन्देली के महाकवि ईसुरी को कैसे पढ़ें ?

-डॉ. के. बी. एल. पाण्डेय

बुंदेली के महाकवि ईसुरी को किस तरह पढ़ा जाए? उन्हें ही क्यों, उस समय के विभिन्न अंचलों के अपनी भाषा में लिखने वाले अनेक विशिष्ट कवियों के प्रति भी यह प्रश्न किया जा सकता है । उन्हें अपनी भाषा या बोली में अपने परिवेश की जीवनानुभूतियों को लोक कविता कहकर सीमित कर दिया जाए या जीवन के एक बड़े भूखंड के स्पंदनों, संवेदनों और अनुभवों के संप्रेषण की व्यापक कविता का कवि कहा जाए ? हम प्राय: ईसुरी को लोक कवि की दृष्टि से देख कर उनके प्रति अन्याय ही करते हैं। हम प्राय: 'ईसुरी की फागें' कहकर उनकी रचनाएँ एक लोक विधा तक सीमित कर देते हैं।भले ही उनकी उत्कृष्ट रचनाशीलता की प्रशंसा करते हैं । फागें तो वे हैं ही और उन्हें फागें कहना गलत नहीं है परंतु जब हम उनका विमर्श साहित्यालोचन के मानकों पर करते हैं तो उन्हें कविता कहना अधिक प्रासंगिक हो सकता है। हम 'ईसुरी का काव्य' कहकर जब उनका समालोचन करें तो हम उन्हें व्यापकता से जोड़ने के विचार से प्रेरित होंगे। क्या फागें कविता नहीं होतीं और क्या फागों को सीमित उपलक्ष्य और सीमित समाज के स्तर से उठाकर उन्हें श्रेष्ठ काव्य के रूप में विवेचित नहीं किया जा सकता? ईसुरी तो इसके अनन्य उदाहरण हैं।

बुंदेली के महाकवि ईसुरी अपनी अनुभूति और भाषिक सर्जना में कितने मौलिक और विशद हैं कि भाषा की क्षेत्रीयता के बावजूद उनकी कविता के आस्वाद का धरातल व्यापक है। उपलक्ष्यपरकता और परिवेश की घटनाओं का वर्णन ईसुरी में भी है पर उनकी अधिकतर रचना व्यापकता का प्रभाव रचती स्वतंत्र कविता है ।ईसुरी सहज अनुभूति और अकृत्रिम अभिव्यक्ति के कवि हैं। उनमें शास्त्र के नाम पर रूढ़ होती सभ्यता की दिखावट और बनावट नहीं है। उनके राग विराग में औपचारिकता, गोपन या दमन नहीं है ।उनमें कोई ग्रंथि नहीं।

इसे समझने के लिए हमें उस समाज की मानसिकता को देखना होगा ईसुरी जिसके नागरिक हैं। श्रृंगार या काम के संदर्भ में वहां नैतिक सामाजिक वर्जनाए हैं पर उनमें दुहरापन नहीं है। वहां अगर भाभी से देवर का मजाक का रिश्ता है तो उसे सामाजिक मान्यता प्राप्त है। विवाह में समूह के रूप में अगर स्त्रियां यौनांगों का नाम लेती हुई वर पक्ष से परिहास करती हैं तो वह उनका सामूहिक उल्लास है। वहां कपड़े उतार कर नग्नता को बुरा कहने का व्यावसायिक रिवाज नहीं है। ईसुरी की अकृत्रिमता के संबंध में रामविलास शर्मा ने लिखा है - 'वास्तव में ईसुरी की रचनाएं इस दोहरी नैतिकता के प्रति एक विद्रोह है। उन्हें जीवन से, जीवन के आनंद से, यौवन, उल्लास, इंद्रिय बोध के संसार से इतना प्रेम है कि वे बार-बार सामाजिक निषेध की दीवार से टकराते हैं।'

हम ईसुरी को अपने समय के प्रतिनिधि काव्य में घटित के आलोक में देखें -उस समय की प्रतिनिधि कविता का स्वभाव कैसा है? उस संवेदना से ईसुरी की कविता का कहीं कोई जुड़ाव हो रहा है या नहीं। अगर नहीं हो रहा है तो उसका कारण क्या है? यदि हम प्रतिनिधि कविता के साथ इस तरह के क्षेत्रों में लिखी जाती कविता को भी नहीं देखेंगे तो हम कविता या साहित्य को दो स्तरों पर पढ़ते रहेंगे । प्रतिनिधि या परिनिष्ठित काव्य और लोक काव्य साहित्य जैसा कि आजकल हो रहा है। यह भी तो देखा जाना चाहिए कि अगर अभिव्यक्ति की भाषा से परे उसके कथ्य पर ध्यान दें तो वह कहां तक अपने समय से जुड़ा है भले ही वह कुछ पीछे है,उसमें किसी भी रूप में कोई बदलाव है।

ईसुरी का समय सन् 1841 से 1909 तक है । हिंदी साहित्य की दृष्टि से यह संक्रमण काल है। आचार्य शुक्ल ने रीतिकाल का अंत 1850 ईसवी में माना है। इस समय तक रीति काल का उत्तरार्द्ध ही नहीं अन्त चल रहा था। कुछ कवि रीति परंपरा में अभी भी लिख रहे थे पर प्रमुख रीति कवियों के लेखन की लगभग इति हो गई थी। पर एक विचित्र स्थिति देखी जा रही थी कि एक ओर कविता का नया स्वरूप उभर रहा था, दूसरी तरफउसी समय सैकड़ों कवि परंपरा से जुड़े थे। वह रीतिकाल को विषय के आधार पर ही नहीं छंद और भाषा के आधार पर भी जीवित रखे थे। यह प्रवृत्ति चौथे-पांचवें दशक तक भी मिलती है। यह विचित्र बात है कि नयी प्रवृत्ति और भाषा की दृष्टि से भारतेंदु और महावीर प्रसाद द्विवेदी का समय उल्लेखनीय है पर भारतेंदु ने भी कवित्त लिखे हैं। भाषा में भी नए पन की सत्ता उभर रही है पर ब्रज का चलन अब भी मिलता है।

भारतेंदु युग के पहले ही सामाजिक बदलाव की भूमिका लिखी जाने लगी थी, जिसे पुनर्जागरण प्रबोधन या नवजागरण का समय कहा गया। तर्क और मानवता के इस समय में सामाजिक कुरीतियों और रूढ़ियों का प्रतिरोध विभिन्न आंदोलनों के द्वारा होने लगा था । बाल विवाह, सती प्रथा,विधवा, बेमेल विवाह के विरोध में प्रबोधन या नवजागरण चल रहा था। शिक्षा,अस्पृश्यज्ता, जातिवाद, स्त्री शिक्षा और स्त्री जागरण के पक्ष में नया सोच का क्षेत्र गढ़ा जा रहा था। यही परिवर्तन कामी सोच 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेर नगरी' लिखने का साहस जगा रहा था। एक लंबी सुप्तावस्था के बाद जागकर चीजों को पहचानने में समय लगता है। साहित्य में भी यह प्रभाव धीरे-धीरे आ रहा था। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रति भी विरोध की सांसे निकलने लगी थी लेकिन फिर वही बात कि अभी संक्रमण प्रारंभ ही हुआ था। परिनिष्ठित साहित्य के अलावा आंचलिक लेखन की खोज और उसका संकलन चलने लगा था। इससे बोलियों के आंचलिक साहित्य का विपुल भंडार साहित्य के रूप में पढ़े जाने का विषय बनने लगा,हालांकि अंग्रेजी के FOLK फोक के अनुवाद के रूप में इसे ग्रामीण चेतना के साहित्य के रूप में देखा गया।

साहित्य दो स्तरों पर पढ़ा जाने लगा- परिनिष्ठित और लोक। कभी-कभी लोक की शैली और विधा को परिनिष्ठित साहित्य अपनी रुचि परिवर्तन के लिए प्रयुक्त कर लेता था पर इस रखता से एक बड़ा संवाद होने से रह गया। दोनों स्तरों के साहित्यकार अपनी तरह रचना कर रहे थे। अगर यह कहा जाए

कि स्थानगत परिवेश अपने सभी रचनाकारों को समान रूप से प्रभावित करता है तो यह आश्चर्य की बात होगी कि जब एक ही परिसर में बैठे मैथिलीशरण गुप्त हरिगीतिका छंद में भारत भारती लिख रहे थे और 'रंग में भंग' की रचना कर रहे थे तब झांसी में नाथूराम माहौर और जिले के अन्य भागों के बुंदेलखंड के मऊरानीपुर छतरपुर आदि के प्रतिभाशाली कवि फाग, ख्याल, सैर और पारंपरिक विषयों पर कवित्त शैली में लगे थे। हालांकि रीतिकाल का प्रभाव ऐसा था कि स्वयं गुप्तजी ने भी शुरू में रसिकेश नाम से कविता शैली में कविता लिखी है।साकेत और यशोधरा में कुछ कवित्त हैं भी।

मेरा मन्तव्य यह नहीं है कि बोलियों में और अधिकतर पारंपरिक काव्य विषयों पर लिखने वाले कवियों को प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी, अज्ञेय आदि के साथ रखकर पढ़ा जाए क्योंकि उनकी काव्य चेतना वह नहीं है लेकिन उन्हें अपनी रचनाधर्मिता की गुणवत्ता के आधार पर आलोचना के व्यापक मानकों पर परखा जाए। उन्हें केवल गांव का कवि न समझा जाए। यदि बात वैचारिकता की है तो उसमें भी भक्ति, नीति, जीवन को संचालित करने वाली प्रेरणाओं का वर्णन है। उनके भी अपने जीवन निष्कर्ष हैं। ईसुरी के लिखे को भी कविता कहिए, केवल फागें नहीं। मेरा आशय यह नहीं है कि बोलियों में बिना किसी सार्थकता के केवल पुराने विषयों पर तुकें जोड़ने वाले लोगों को भी कवि या लोक कवि का दर्जा दिया जाये। आजकल हो यही रहा है। लोक संस्कृति, लोक साहित्य के नाम पर वैसे ही लिखा जा रहा है जैसे किसी संग्रहालय में रखी वस्तुओं को जो भी वस्तुओँ को देखने आता है वह अपनी तरह एक सा वर्णन करता रहता है। क्या प्रेमचंद के हल्कू, घीसा, माधव, अलगू चौधरी, जुम्मन शेख, होरी, धनिया आदि पात्र इसी लोक के हैं। बोली के में रचनाकारों में भी इस तरह का जीवन है। जीवन के संघर्ष, अभाव उनमें भी हैं, फसलों के नष्ट हो जाने के कारण जीवन गुजारना कठिन ईसुरी में भी है और वह केवल तटस्थ कविता वर्णन नहीं है। उस में दर्द है। मजबूरी है। यह उनकी दृष्टि का विस्तार है। नीति भारतीय समाज का एक नियामक तत्व रहा है। आध्यात्मिकता और आस्तिकता तो आंतरिक रूप से समाविष्ट है ही ।

अपने समाज का परिचय देती हुई धारणाओं का वणज़न ईसुरी की कविता करती है। कोर्ट कचहरी, अहलकार, रेलगाड़ी, पिस्तौल, महुआ जैसा पेट भरने वाला वृक्ष, सामाजिक आर्थिक व्यवस्था के संकेत-ये सब भी ईसुरी की कविता में आ रहे हैं तो यह तो प्रमाणित है कि ईसुरी की कविता का लोक भी परिवर्तनों को पहचान रहा था।

अत: ईसुरी के काव्य को एक ओर हम लोकरंजन की दृष्टि से पढ़ें तो दूसरी ओर कविता की आलोचना अर्थात उसमें रचनाशीलता की विलक्षणता भी देखें और उन्हें कविता समय से जोड़ें जो चले आते की समाप्ति का है पर उसका प्रभाव अभी तक बना है।

- 70 हाथीखाना, दतिया मप्र
दतिया 475661

दो बुंदेली गजलें

-डॉ देवदत्त द्विवेदी 'सरस'

(१)

फाग लावनी के दंगल की का केंनें।
बुंदेली के गीत गजल की का केंनें।।
राई, कहरवा, गोटें, गारीं, लमटेरा।
नचै काँडरा स्वाँग सकल की का केंनें।।
कारीटोरन, द्रोनागिर जैसे परबत।
जेठे बब्बा विंध्याचल की का केंनें।।
लंकलाट औ फलालेंन के बे कपड़ा।
ऊ सपेत देसी मलमल की का केंनें।।
कुन्डेसुर की बिहीं किसुनगढ़ के ओंरा।
हीरापुर के छीताफल की का केंनें।।
पंचन में परमेसुर आबें सुनों जितै।
ऊ अथाई के सत्त मजल की का केंनें।।
छत्रसाल से वीरबली रानी झांसी।
आला ऊदल औ परमल की का केंनें।।
कैंन, धसान, जामनी, काठन सी बेंनें।
'सरस' बेतवा के आँचल की का केंनें।।

(२)

घुंगटा के भीतर मुसक्या रइं ऐसारे दै दैकें।
बरोंटन में रोज बुला रइं ऐसारे दै दैकें।।
बजें पायलन के जब ककरा छन्न-छन्न जी होबै।
हाँतन कीं चुरियाँ खनका रइं ऐसारे दै दैकें।।
जी की लगी ओई जानत है और कोउ का जानें।
तुम गलियँन खोरन इठला रइं ऐसारे दै दैकें।।
तुमें देखबे ताल कुआ पै पारन ठांडे रइये।
हारन खेतन खूब नचा रइं ऐसारे दै दैकें।।
हेरन हँसन तुमाई मुनइयाँ आँखन में झूलत है।
नैनन सें गोलीं बरसा रइं ऐसारे दै दैकें।।
जी भरकें तौ कभऊँ दिखा दो प्यारी गोलू मुइयाँ।
दरसन खों कब सें तरसा रइं ऐसारे दै दैकें।।
यैसी मोहनियाँ डारी है बिसरौ नईं बिसारीं।
तुम तौ चुटकन रोज चला रइं ऐसारे दै दैकें।।
छाती सें चिपका कें ओजू पथरा सें ना मारौ।
सरस हँसी मोरी करवा रइं ऐसारे दै दैकें।।

- हायर सेकेडंरी स्कूल के सामने,
भगवा रोड, बड़ामलहरा जिला छतरपुर 卐

पचनदे कौ मेला.....

–डा. रामशंकर भारती

काय कक्को ! परौं कतकी पूनौ है, जा सालें पचनदे कौ मेला जानै है कै नंई ....?

हमाय बखरवारे सुक्खू भैय्या बऊ सैं जब जौ प्रसिन पूँच रयते तब हम बऊ के ढिंगा बैठे उनकौ कन्नौज वाली तमाकू के डिब्बा कौ पल्ला खोलवे की जुगत कर रयते। कायसें डिब्बा का पल्ला मसक-मसक कैं चपटौ हो गऔ तो जासैं वौ भौतंई मुश्किल सें खुलत हतौ ... ।

सुक्खू भैय्या की बात सुनकै बऊ तुरतंई बोल परीं, काय रे सुखुआ! तोय पंचनदे की मेला की अबै सुध आ रयी। तैं चार दिनासैं तौ अंजा कर रयो....तोय का पतौ डोकर नै बैलन की झूलें , मुड़ासे कालंई तौ फ्रताल सें निकार कैं संवार दंई हैं। गड़ला के चक्कन में औगुन लगा दऔ है। तैं तौ सलीता कौ फ्टकार कैं गर्दा निकार दै। रतना सैं भी कै दइये बाय भी संगै लिवा चलनै। दोहरी बदिया कौं बोई समार पाउत है। बौ तेरे बसकी नंइयाँ। ...

परौं आदी रातइ सैं चलिये, काय सैं रामपुरा के अगाऊँ कच्चौ सैर है ...गीधन के सड़क पर बड़े - बड़े गड़लीका हैं। पाछे साल अपनौ गड़ला कौ चका बईमै तौ फस गऔ तौ... तोय कछू होस रआत कित्ते हैरान भये ते बा दिना....

तब तक तमाकू का डब्बा खोल कर हमने बऊ तरफ सरका दयौ... बऊ नै चील झपट्टा मारकर डब्बा सें बकोटा भरकैं तमाकू निकार लई फिर तुरतंई पीतल की छोटी सरौतिया से कटर - कटर सुपाई कतरन लगीं...चुनैटी में छुँगल्ल घुसेरकैं चूना निकारौ और तमाकू में सानकै झटंई सैं फक्की मार ... लइ... ।

पौर भर में कन्नौज वाली तंबाकू की सुगंध फैल गयी। सुक्खू को पास में खड़ा देखकर बऊ गुर्राते हुए बोलीं, काये सुखुआ! तैं थूमा सौ अब काय ढाड़ौ ...? जात काय नंइया। जकैं सलीता देखलै... ।

सुक्खू भैय्या ने आज्ञाकारी बालक की तरह सर हिलाते हुए हओ कहकर हामी भर दी।

सुक्खू भैया के साथ मैं भी कुठरिया से सलीता, बैलगाड़ी के साजोसामान , बैलों के गले में बाँधने वाले जंगा..घुँघरू आदि को खोजकर उन्हें देने लगा। खौंड़िया के मों पै धरे पथरा पै सें जाजम और बिछाउत की पल्ली मिल गई थी। मुझे बैलगाड़ी हाँकने का मौका सुक्खू भैय्या की ही मरजी से मिलता था सो मैं उनकी खूब मदद करता था। जब भी सुक्खू भैय्या को बीड़ी पीने की तलब लगती, मैं अम्मा से चुपचाप बंडल माँगकर उन्हें दे देता और वे चौपयारी बखरी के औसारे में सुस्ताते हुए बीड़ी पीते रहते ।

सुक्खू भैय्या बड़े से बड़ा काम करने से डरते नहीं थे। बस, वे हर काम को धीरे-धीरे बड़े आराम से करते थे। ईमानदारी उनमें कूट-कूट कर भरी थी....

ठुमस कदकाठी के सुक्खू भैय्या की खुराक दो लोगों के बराबर थी। बित्ते भर ऊँचाई की रोटियों की गड्डी, दो कटोरा दाल भात खाने में उन्हें कोई दिक्कत नहीं होती थी। आज के जमाने में ऐसे वफादार काम करनेवाले चाकर अब तो मिलने से रहे। हालाँकि चाकर जैसा भाव या वर्ताव सुक्खू भैय्या के लिए हमारे परिवार के किसीके भी व्यवहार में कतई नहीं रहा। हमारी बऊ-दादी बोलचाल में जितनी पटना जैसी मिर्चं-सी कड़वी और कड़क थीं..... व्यवहार में वे उतनी ही मुलायम थीं ..... ।

आकास में आधी रात कौ तरा नैंकंई नीचैं उतरौ हतो कै भिनसारे की अगवानी के लानै पिछवारे की बखरी सैं स्यामा बरार कौ लाल कलगीदार भूरौ मुर्गा बोल उठौ ...

कु... कू...कूँ.... कु....कू....कूँ...... कु...कू....कूँ.....

बखरी-पौर और टोला भर में खटर-पटर होन लगी। अम्मा चूलौ जलाकर जमुना मैया की पूजा के लानैं अठवाँइ सेंकन लगीं। मिझौना वाली भौजाई रस्ता के कलेउ के लानैं आटे के गुड़ डारे खुरमा, बेसन के गुटगुटउआ बनान लगीं। सुक्खू भैय्या नै बैलन कौ रातव मिला कै सानी खबा दई। दद्दा नै गढ़ला में ओढ़न के लानै मौटी सुपतिया, बिछान कौ डोरिया, जाजम और रस्सी बाल्टी धर लई। अपुननै साँटे लगी पनैठी और कुलइया लिआकैं गढ़ला में आगंऊ धर दई और पैलेंई जाकैं बैठ गए। जैसेंई बऊ , अम्मा , मिझौना वाली भौजी, रतन कक्का और दद्दा गड़ला के ऐंगर आए तैसेंई सुक्खू भैय्या नै गड़ला कौ जुआँ बैलन के कंधन पै धर दयौ.....और कै......कै....... कै .....की टिटकारी मारत भये गाड़ी आगै बढ़ा दई ...... ।

चैं... चैं ...चैं....चूँ ...चूँ...चूँ करत भयौ हमाऔ सग्गड़ गड़ला पचनदा कौ मेला तरां चल दयौ.....और सूरज के पचनदे के मेला में पौंचने कै भौतंइ पैलेंई ठिकानों पै पौंच गयौ ..... ।

जालौन के रामपुरा ब्लाक में लगने वाले पचनदे के मेला में लाखों की भीड़ है। जहाँ तक नज़र जाती है बैलगाड़ियों की कतारें ही दिख रहीं हैं। जमुना नदी के दैत्याकार भरखा और टीले देखकर रोमांच हो रहा है। नदी के घाट पर डुबकी लगाने वालों का जमघट है। रेतीली रेव भरी माटी शरीर पर चाँदी के दानों की तरह चमक रही है। जालौन और इटावा की सीमा पर बसे कंजौसा गाँव के साठिया कुआँ पर पीने के पानी की मारामारी मची है। शाम होते-होते कुआँ का पानी खत्म हो चुका है। मगर मेले में तेल की जलेबी, मुरमरा और खाजा की

माँग बढ़ती ही जा रही है। मूसलाकार मूरा और दो सेर तक के कदुआ जैसे फटा ...बैगन दो आने सेर धड़ल्ले से बिक रहे हैं। बाबा साहब महाराज याने मुकुंदवन महाराज की समाधि पर दर्शनार्थियों के रेले के रेले ध्वजा-पताका, नारियल, बतासा, प्रसाद और फूल मालाएँ लिए आ रहे हैं - जा रहे हैं.....

मंदिर की धूनी के नीचे फक्कड़ बाबा मलंगदास के भजनों पर संगी साधुओं की खंजड़ी ताल दे रही है। उनके कबीराना ठाठ देखते ही बनता है......वहीं ठाकुर गजेंद्र सिंह माधौगढ़ वालों की घर का वैद्य नामक चौपटिया पुस्तिका बेची जा रही है, तो कहीं बिंदु महाराज की मोहन-मोहिनी और कहीं गारी और रसिया की छोटी-छोटी कितबियाँ बेची जा रहीं हैं। गले में गलजंदा से हरमोनियम टाँगकर गारी और भजन गाने वाले गा - गाकर कितबियाँ बैंच रये हैं......

ढुलकिया पर कहरवा बज रऔ है ....

झींका ...काँसियन कीं झनकारें हो रईं...

कैंकड़िया पै गुनधारी मास्टर जमुना मैय्या के जस की मीठी धुनैं बजा रये....

तुलंईं कक्का अपँए रंगेपुते रमतूला पै तु तू तू...तु तू तू की मंगलौटी फूँक रये हैं .....

हरगंगे वाले हुलक भर कैं गा रये हैं .....

..सखी बाबन कौ झुंड नच रये हैं .....

भाट बब्बा बिरदावली बाँच रये

कोऊ-कोऊ रैंचकउआ पै झूल रये ....तौ कोउ हातन पै गुदना गुदवाउत फिर रये। हमायी मिझौना वाली भौजाई अपँए दाँयने हाथ पै अपऔं नाव के संग्गै भैय्या कौ नाव गुदवाकर सी - सी कर रँईं...

हमायी तरैं टकटकी लगाकैं देखत भँईं मजाकिया लैजे में हमसैं कैन लगीं, लला! तुमंऊ अपने हात में काऊ कौ नाव गुदवा लेओ....

भाभीजी की रसभरी बातें सुन मेरा मन बल्लियों उछलने लगता है..... भाभी तो माँ के समान होती है, सो उन्हें कैसे बताऊँ ......?

अपने उसका नाम ......? मर्यादा का तकाजा जो है....।

कितना अनुपम - अनूठा और अद्भुत दृश्य है हमारी लोकाभिराम लोकसंस्कृति का।

धन्य है पाँच नदियों का संगम पवित्र पचनदा धाम ......

और धन्य है हमारी लोककल्याणी बुंदेली संस्कृति......

धन्य हैं हमारी अमृतदायिनी लोक परंपराएँ.......

धन्य है मधुगंधी लोकविश्वासों की अक्षय थाती .....

जो अनेक अभावों में भी आनंद के मौके ढूँढ़ ही लेती है। जहाँ चारों ओर लोकमंगलताएँ अपनी बाँहें फैलाए हमारे स्वागत के लिए तत्पर रहतीं हैं, सामाजिकताएँ संस्कारित करतीं रहतीं हैं।

पचनदा या पचनदे के विषय में विभिन्न जानकार और इतिहास की किताबें मुलक बातें बताउतीं हैं कि पचनदा जालौन जनपद में एक ऐसा स्थान है जो दुनिया भर में अनूठा स्थान है। यहाँ स्थित 'पचनदा' पर पाँच नदियों चंबल, सिंध, क्वारी और पहूज नदियों का यमुना से संगम होता है । यह भौगोलिक के साथ-साथ धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी बेहद महत्वपूर्ण स्थान है। जालौन जिले के उरई मुख्यालय से 65 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में तथा इटावा से 55 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व एवं औरैया से 45 किलोमीटर पश्चिम-दक्षिण में स्थित प्राकृतिक सौन्दर्यता से परिपूर्ण अद्भुत स्थल है पचनदा। जो अपनी प्राकृतिकता, ऐतिहासिकता और पौराणिकता के लिए प्रसिद्ध रमणीक स्थल है । विभिन्न ग्रन्थों व पुराणों में पंचनद स्थल का वर्णन है लेकिन दुर्गम वनों के बीच स्थित होने के कारण सुगमता के अभाव में यह स्थान वह प्रसिद्धि नहीं पा पाया जो इसे मिलनी चाहिए थी। यहाँ यमुना नदी में चंबल, सिंध, कुवांरी और पहूज नदियाँ अपना अस्तित्व विलीन कर यमुनामयी हो जाती हैं। यमुना हो जाने के सौभाग्य जिन पाँच नदियों को मिला है वे नदियाँ अत्यंत सौभाग्यशालिनी हैं।

पचनदा स्थान तीन जनपद जालौन, इटावा और औरैया की भगौलिक सीमा भी बनाता है। वहीं मध्य प्रदेश के भिंड जिले का थोड़ा सा भूभाग भी इस संगम का हिस्सेदार है पंचनद संगम के आग्नेय दिशा तट पर बना प्राचीन मठ वर्तमान में सिद्ध संत श्री मुकुंदवन (बाबा साहब महाराज) की तपोस्थली के रूप में विख्यात है। विभिन्न प्रमाणों के आधार पर श्री मुकुंदवन वन संप्रदाय के नागा साधु थे, वह अपनी पीढ़ी के 19 वें महंत थे और वह पंचनद मठ पर तपस्या करते थे। उनकी कीर्ति सुनकर रामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास विक्रमी संवत 1660 अर्थात सन् 1603 में पंचनद पर पधारे और दोनों संतो का मिलन हुआ। इसके बाद दोनों संत गुसाई जी के आग्रह पर जगम्मनपुर के राजा उदोतशाह के यहाँ जगम्मनपुर पहुँचे और वहाँ बनने जा रहे किले की आधारशिला रखी। इसके बाद दोनों संतों ने राजा को भगवान शालिग्राम, दाहिनावर्ती शंख, एकमुखी रुद्राक्ष भेंट किया जो आज भी जगम्मनपुर राजमहल में सुरक्षित एवं पूजित है । इसके अतिरिक्त अनेकानेक जनश्रुतियों और किवदंतियों के जानकार भी अपनी-अपनी जानकारियाँ इस ऐतिहासिक स्थान के विषय में देते रहते हैं.....।

पचनद का महत्व सिर्फ इतना ही नहीं श्रीमद् देवी भागवत पुराण के पंचम स्कंध के अध्याय दो में श्लोक क्रमांक 18 से 22 तक पंचनद का आख्यान आया है जिसमें महिषासुर के पिता रम्भ तथा चाचा करम्भ ने पुत्र प्राप्ति के लिए पंचनद पर आकर तपस्या की । करम्भ ने पंचनद के पवित्र जल में बैठकर अनेक वर्ष तक तप किया तो रम्भ ने दूध वाले वृक्ष के नीचे पंचाग्नि का सेवन किया। इंद्र ने ग्राह्य (मगरमच्छ) का रूप धारण कर तपस्यारत करम्भ का वध कर दिया। द्वापर युग में महाभारत युद्ध के दौरान पंचनद के निवासियों ने दुर्योधन की सेना का पक्ष लिया था महाभारत पुराण में पंचनद का उल्लेख है।

महाभारत युद्ध समाप्ति के बाद पांडू पुत्र नकुल ने पंचनद

क्षेत्र पर आक्रमण कर यहां के निवासियों पर विजय प्राप्त की थी। महाभारत वन पर्व में पंचनद को तीर्थ क्षेत्र होने की मान्यता सिद्ध होती है। विष्णु पुराण में भी पंचनद का विवरण मिलता है जिसमें भगवान श्री कृष्ण के स्वर्गारोहण व द्वारका के समुद्र में डूब जाने के उपरान्त अर्जुन द्वारा द्वारका वासियों को पंचनद क्षेत्र में बसाए जाने का उल्लेख है। अन्य पुराणों एवं धर्म ग्रंथों से प्रमाणित होता है कि पंचनद पर स्थित सिद्ध आश्रम एक दो हजार वर्ष पुराना नहीं अपितु वैदिक काल का तपोस्थल है। अथर्ववेद के रचयिता महर्षि अथर्ववन ने पंचनद के तट पर अथवज़्वेद की रचना की । महर्षि अथर्ववन वंश की पुत्री वाटिका के साथ भगवान श्रीकृष्ण द्वैपायन (व्यास जी) का विवाह हुआ माना जाता है जिनसे भगवान शुकदेव जी की उत्पत्ति हुई। कुरु राजा धृष्टराष्ट्र व गंगापुत्र भीष्म की सहायता से श्री कृष्ण द्वैपायन व्यास जी ने पंचनद पर एक विराट यज्ञ एवं धमज़् सभा का आयोजन किया था । महर्षि अथर्ववन के काल से ही पंचनद स्थित आश्रम पर आज भी वन संप्रदाय के ऋषि निवास करते हैं।

पंचनद संगम तट पर इटावा की सीमा में स्थित विराट मंदिर में प्राचीन शिव विग्रह है। शिव महापुराण के अनुसार भारत के 108 शिव विग्रहों में पंचनद पर गिरीश्वर महादेव पूजित हैं। द्वापर में भगवान श्री कृष्ण द्वारा कालिया नाग को समुद्र जाने की आज्ञा देने पर गोकुल से समुद्र जाने के रास्ते में कालिया नाग द्वारा दीर्घकाल तक पंचनद धाम पर रुककर भगवान शिव जी पूजा अर्चना की थी। इसी स्थान को गिरीश्वर महादेव फिर कालीश्वर और कालांतर में कालेश्वर के नाम से जाना जाने लगा। पंचनद के कालेश्वर महादेव के मंदिर के आसपास आज भी साँप का जहर उतारने वाली वनस्पति बहुतायत मात्रा में उपलब्ध है, जिसे नाथ संप्रदाय के सपेरे व साधु पहचान कर उखाड़ ले जाते हैं। पंचनद या पचनदे के संबंध में अनेक जनश्श्रुतियाँ व किवदंतियाँ भी हैं। इन प्रचलित घटनाओं में कहीं-कहीं ऐतिहासिकता है तो कहीं-कहीं कल्पना का भी सहारा लिया गया है। जो भी हो भौगोलिक दृष्टि से समृद्ध पचनदा क्षेत्र अत्यंत उपयोगी है। डाल्फिन मछलियों के संवर्द्धन की यहाँ असीम संभावनाएँ विद्यमान हैं....।

......अब लौं पचनदा मेला की धरती पै पाउँव धरत की जगा नईं रयी है...

.......उतंई संगम के ठियाँ जमुना जी के घाट पै भौतंई मनहारी नजारौ है....कतकयारी जनीं जल अर्पित करते हुए नहा ...गा... रयीं हैं....

.... ''जमुना मैया तोहे मोतिनदार चुनर चढ़ैहों..। ''

बऊ और अम्मा , मिझौना वाली भौजाई कौ हुदआ रयीं हैं...तैंऊ गालै.....

मगर भौजी छींटदार सारी के घूँघट में चुपकइंया सादैं हैं। तभँई बऊ के हाथ फरकन लगे वे तालियाँ बजाकर कतकयारी जनियन के संगै गान लगीं...

जमुना मैया तोहे मोतिनदार चूनर चढ़ैहों...।

अम्मा भी मटकन लगीं ....।

इन अनूठे दृश्यों को देखने वाली आँखों बहुत बड़भागिनी हैं। मेला की चिल्ल-पौं और रेलों की धकाचकेल में मन ऐसा बिंधा की दोहरी बधिया औ बड़े बैला को पानी पिलाने की याद भी भूल गई।

अधबूढ़े बिना बिहाये सुक्खू भैय्या हाथन पै गुदना गुदवाउत रये...दद्दा भजन मण्डली में चिलम चढ़ाउत कै बम भोले बोलत रये , रतन कक्का तौ गोड़िन में बाँधवे के लानै घुँघरू खरीदन में लगे रये...

झुली परैं बैलन कौं आराम सें पानीसानी खबा - पिवा कैं वहीं भण्डारे में सबई जननै छिककैं लुचंई खाईं। रात में मंदिर के मैदान में भौजी के ढिंगा बैठ कैं कृष्णाबाई कानपुर वाली की नौटंकी 'सत्य हरीचंद ' देखते - देखते कब भोर हो गई पतइ नंई चलौ...

शहर में बैठे - बैठे आज अचानक पचास साल पहले के पचनदे मेला की याद आ गयी... जिन्होंने तबके पचनदे की यात्राएँ की होंगी , तो उन्हें याद होगा.... कैसी धूल भरी ऊँची - नीची बेढंगी सड़कें थीं तब अनेक अभावों के ऊँचे-ऊँचे पहाड़ थे....मगर आनंद के हिमालय के आगे सब बौने थे। आज सड़कें हैं , पुल हैं , कारें हैं...और भी तमाम साधन हैं..... मगर कहीं लेशमात्र भी आनंद नहीं है।

पचनदा की पावनता को प्रणाम करते हुए कहना है...कि सुक्खू भैय्या बैलगाड़ी मेले से वापस लाकर चौखाटे में खड़ी करके जाने कहाँ चले गए हैं....?

उनके साथ ही हिराकर रह गयीं हैं बऊ, अम्मा, दादा, रतन कक्का और मिझौना वाली भौजी की अल्हड़ यादें .... पचनदा मेला की जड़कारे वाली रेतीली ठंड .... सांस्कृतिक मेलमिलाप को बढ़ावा देनेवाले तीज त्योहारों कीं सुगंधित यादें.........

महान आध्यात्मिक संत मुकंदवन महाराज की तपोभूमि।

पचनदे की पवित्र पाँच नदियों की पावन पंच धाराएँ...

जमुना मैय्या पर संगम का अप्रतिम अद्भुत दृश्य......

औंचक - बैंचक रास्तों के गर्दोगुबार का अहसास........

कंजौसा का साठिया कुआँ .....और.....और ....तुम .....।

-सुरीलों का गाँव क्योलारी (जालौन)

दूरवाणी-9696520940 卐

बुन्देली जीवन की दस्तावेज हैं महेश कटारे 'सुगम' की गजलें

–दिनेश अहिरवार

दुनिया के प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ के समाज और उस समाज में रहने वाले मनुष्यों द्वारा निर्मित एक बहुमूल्य भाषिक अभिव्यक्ति है। इस अभिव्यक्ति में एक छोटी सी वस्तु से लेकर सारा संसार समाहित हो सकता है । साहित्य सृजन एक मानवीय कर्म है, इस मानवीय कर्म को ईमानदारी से वही कर सकता है जिसे अपने देश, समाज व साहित्य से प्रेम और हृदय में सम्मान की भावना हो। कोई भी रचनाकार जितना अधिक अपने लोक और समाज से जुड़ा होता है उसकी रचनाशीलता उतनी ही अधिक प्रभावशाली होने की सम्भावना होती है। हिन्दी ग़ज़ल की एक लम्बी परम्परा रही है जो समय के साथ-साथ प्रवाहमान बनी हुई है। आधुनिक हिंदी ग़ज़ल का सूत्रपात दुष्यंत कुमार ने किया है, उनके बाद के रचनाकारों में कुँवर बेचैन, अदम गोंडवी, रामदरश मिश्र आदि प्रमुख हैं। हिंदी ग़ज़ल की इसी परंपरा का निर्वाह लोक भाषा बुन्देली के कवि-गज़लकार महेश कटारे 'सुगम' की ग़ज़लों में बखूबी देखा जा सकता है । महेश कटारे अपनी ग़ज़लों में बुंदेलखंड के लोकजीवन, लोक कलाओं और बुन्देली संस्कृति को नजदीक से पहचानने की कोशिश करते हैं। साथ ही अपनी ग़ज़लों में बुन्देली भाषा संस्कृति और बुंदेलखंड में विद्यमान समस्याओं को अपनी लोक भाषा के मार्फ़त बेहद संजीदगी के साथ अभिव्यक्त करते हैं।

प्रस्तुत लेख में हिन्दी के चर्चित गज़लकार महेश कटारे सुगम की ग़ज़लों में निहित बुन्देली लोक जीवन और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है। भारतीय समाज की क्षरित होती लोक संस्कृति को महेश कटारे अपनी ग़ज़लों के मार्फ़त उन्हें पुनः जीवंतता प्रदान करते हैं। महेश कटारे बुन्देली में लिखने वाले ऐसे गजलकार हैं जिनकी ग़ज़लों में बिम्ब और प्रतीक अपने ही लोक से विन्यस्त हुए हैं। वे लोक जीवन और संस्कृति से जुड़े नवीन बिम्ब, प्रतीकों का प्रयोग करते हैं जो हिंदी कविता और ग़ज़ल की परपरा से एकदम भिन्न हैं । इन्हीं दुर्लभ और लोक परम्पराओं व लोक जीवन से जुड़े बिम्ब, प्रतीकों के प्रयोग के कारण अन्य ग़ज़लकारों की परंपरा से अपना अलग व विशिष्ट महत्त्व रखते हैं।

भारतीय समाज की क्षरित होती लोक संस्कृति को महेश कटारे अपनी ग़ज़लों के मार्फत उन्हें पुनः जीवंतता प्रदान करते हैं। आज जहाँ लोग चकाचौंध भरे शहरों की ओर लगातार पलायन कर रहे हैं और पुरानी चीजों को दरकिनार कर आधुनिक तकनीकों से विकसित, सुख सुविधाओं से लैस संसाधनों को तवज्जो दे रहे हैं। वहीं महेश कटारे अपनी मिट्टी, अपने गाँव की मरती हुई लोक परम्पराओं और संस्कृतियों को जीवंत करने की जद्दोजहद करते हुए नज़र आ रहे हैं। अपनी रचनात्मकता के बल पर नष्ट होती बुन्देली लोक संस्कृति और भाषा को जीवन्तता प्रदान करना महेश कटारे का प्रमुख ध्येय है।

बुन्देलखंड में प्राचीन काल से ही पानी भरने के लिए मिट्टी के बर्तनों का उपयोग किया जाता रहा है जिससे एक तो यह कि कुम्हार समुदाय के लोगों की रोजी-रोटी चलती थी दूसरे यह कि लोगों को अपनी सुविधानुसार कुम्हार अपनी बैल गाड़ियों में भरकर घर-घर बर्तन पहुँचाया करते थे। चूँकि मिट्टी के बर्तन जैसे-गागर, घैला, मटका, कनारी, नांद, कुढ़िया आदि बनाने में लागत भी कम लगती थी और पर्यावरण को भी कोई नुकसान नहीं पहुँचता था लेकिन आज देखा जाये तो न वो मिट्टी के बर्तन दिखते हैं और न उन्हें बनाने वाले कुम्हार रहे। आज की बाजारवादी संस्कृति ने सब कुछ हज़म कर लिया है । महेश कटारे की ग़ज़लों में लोक शब्दावली का प्रयोग होने के कारण जीवंतता के साथ अधिक प्रभावशाली प्रतीत होती हैं। कुछ लोक शब्दावलियों के प्रयोग जैसे-कऊँ, तौं, मोहरन, कनारी आदि को आप निम्न ग़ज़ल के माध्यम से देख सकते हैं –

''ऐसों कऊँ हो जाये अगर तौं आय मजा
मोहरन से भरी इक कनारी मिल जावै ।''[1]

बुंदेलखंड के देशी खानपान की बात सच में कुछ अलग ही है। बुंदेलखंड मेरी जन्मभूमि है चूँकि मैंने कई बार खाया है और आज भी मेरे घर पारंपरिक रूप से भोजन बनाया जाता है। बुंदेलखंड में प्राचीन काल से ही गाय, भैसों को पालने का काफी शौक रहा है । यहाँ के लोग गाय की पूजा करते हैं और उससे मिलने वाले दूध, दही, घी आदि से तमाम तरह के व्यंजन बनाते हैं और बड़े चाव से खाते हैं । हरेक लोक या कहें कि प्रत्येक क्षेत्र का खान-पान, रहन-सहन की एक विशिष्टता होती है । ऐसे ही बुंदेलखंड में खाने की तमाम देशी वैरायटियाँ विद्यमान रहीं है जिनमें प्रमुख रूप से-दूध से दही, मक्खन और घी बनाना। दूध के दही से मठा बनाना, मठा से महेरी बनाना, महुआ को पानी में उबालकर उसके मीठे रस से डुबरी बनाना, चना के बेसन से लपटा बनाना, गेंहूँ या चावल के साथ दाल मिलाकर खिचड़ी बनाना, खुरमा-बतियाँ, गुझिया, माल पुआ, गेंहूँ का दलिया बनाना, ज्वांर, मक्का की रोटी चना की भाजी आदि । लेकिन आज देखा जाये तो न उस तरह की दूध देने वालीं गायें रहीं, न उस तरह शौक से पालने वाले लोग रहे और न उस तरह से देशी खाना पसंद करने वाले रहे ।

किसान जीवन से जुड़ी ऐसी बहुत सी वस्तुएँ हैं जिनका उपयोग न होने के कारण हम नाम भी भूल गए हैं जिसका मुख्य कारण औद्योगीकरण और बाजारवादी संस्कृति का लगातार हो रहा विस्तार है। इस विस्तार की जड़ें इतनी दूर तक फ़ैल गई हैं कि उसकी जकड़न से मुक्त रह पाना बहुत मुश्किल हो गया है। आज हम अपने पारंपरिक संसाधनों का प्रयोग करने से बचते हैं। खेती-बाड़ी में काम आने वाली वस्तुओं को लगातार भूलते जा रहे हैं । बैलगाड़ी और अन्य लकड़ी के संसाधनों से

सम्बंधित प्रयोग होने वाली वस्तुओं के नाम उल्लेखनीय है – जुआँ, जोत, सैल, पंचारी, घुडिया, बांगडा, पटली, खड़ेरुआ, धमनी, गड्डी, हर, बक्खर, तिपन, चरखा, परैना, धुरा, दातुआ पाँस, डांडी, कोल्हू आदि नाम अब महज शब्द रह गए हैं जिनका प्रयोग बहुत कम देखने को मिलता है। यह हमारे समाज की सबसे बड़ी बिडंवना है कि हम लगातार अपनी लोक संस्कृति और परम्पराओं से धीरे-धीरे कटते जा रहे हैं । लेकिन महेश कटारे अपनी ग़ज़लों में, अपने लोक में, अपने लोक की भाषा में बुंदेलखंड को अब भी जीवंत बनाये हुए हैं –

''अलग बात है कच्चे घर की
गैयाँ, भैंसें, ढिग, गोबर की,
दूद, दई, नेंनू के लोंदा
मठा, महेरी, घी, मईयर की
डुबरी, लपटा, खिचरी दरिया,
अंगा, मकरियां, पनटिक्कर की,
जुआँ, जोत, बैलन की जोड़ी,
धमनी, गड्डी, हर, बक्खर की ।''

महेश कटारे अपनी ग़ज़लों में बुन्देली संस्कृति से नष्ट होती हुई ऐसी चीजों को हम पाठक वर्ग के समक्ष प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं जिन्हें हम भूलते जा रहे हैं या फिर जानते ही नहीं, हमारे कुछ पुरखे अभी बचे हुए हैं जिन्हें अपनी बुन्देली संस्कृति का ज्ञान है लेकिन आज बाजारवादी संस्कृति के वर्चस्व ने सबकुछ तहस-नहस करके रख दिया है ।

आजादी के सत्तर वर्षों बाद भी हम स्वतंत्र रूप से न कुछ कर सकते हैं और न कुछ बोल सकते हैं। यदि कोई सत्ता के खिलाफ बोलने की हिम्मत भी करता है तो उसे देश द्रोही करार दे दिया जाता है और उसे सलाखों की हवा भी खानी पड़ सकती है। सत्तर वर्षों पहले जो आज़ादी का स्वप्न हम भारतवासियों ने देखा था, वो आज भी स्वप्न ही बना हुआ है और हम लोग इस उम्मीद में हैं कि कभी तो वह दिन आएगा जब हम निभीज़्कता से जी सकेंगे। अपने अधिकारों के लिए निर्भीकतापूर्ण लड़ सकेंगे। महेश कटारे अपनी ग़ज़लों में सच को सच की तरह अभिव्यक्त करते हैं भले ही उनका सच कहना किसी को बुरा लग जाये, वे सच और यथार्थ के रचनाकार हैं, उनकी गज़लें इसका सटीक उदाहरण हैं । महेश कटारे लिखते हैं कि –

''आँखें पितरा गईं आसा में
ऐसेइ सत्तर साल चले गए''[3]

**

''लगै बुरई खूबई लग जावै
हम तौं कत हैं सांसी सांसी ।''[4]

भारतीय किसान जीवन की समस्याएँ महेश कटारे की ग़ज़लों में बेहद संजीदगी के साथ देखी जा सकती हैं । हमारे समाज में आए दिन किसानों की आत्म हत्याओं की खबरें आ रही हैंजिसका मुख्य कारण लागत से कम फसल का होना। फसल की अधिक पैदावार बढ़ाने के चलते रासायनिक दवाओं के प्रयोग से मिट्टी की उर्वर क्षमता नष्ट हो गई है जिसके करण मिट्टी उपजाऊ नहीं रही । सरकारी मंडियों का निजीकरण से फसल का पूरा दाम किसानों तक नहीं पहुँच पाता है बिचौलिए बिना मेहनत के मालामाल बने हुए बैठे हैं। महंगाई और बेरोजगारी के चलते गरीब, मजदूर किसान जो वर्षों से क़र्ज में डूबे हैं वो आए दिन आत्म हत्या करने के लिए मजबूर हो रहे हैं । किसानों की इस गंभीर समस्या को महेश कटारे अपनी ग़ज़लों के माध्यम से संज्ञान में लेते हैं। वे लिखते हैं कि –

''खेती जोंन करत हैं मेंनत
भूकन बेई लगा रये फांसी ।''

महेश कटारे की इन ग़ज़लों के सन्दर्भ में हिन्दी के प्रसिद्ध गज़लकार हरेराम समीप लिखते हैं कि ''सुगम की ये गज़लें प्रेरित करती हैं कि हम अपने भीतर साहस लाएँ, विरोध जताएं, सुझाव में प्रश्न पूछें। सुगम यर्थाथ के गज़लकार हैं। उनकी गज़लें खुली आँख से इस विसंगत यथार्थ को देख पाई हैं कि मेहनतकश आज भूखा है, आज किसान को हर हक़ से बेदखल कर दिया गया है, घर की भावना को बड़े-बड़े मकानों ने निगल लिया है। झूठ अब इत्मिनान में बदल रहा है। अब मुसीबत में कोई अपनी जान नहीं डालना चाहता है । राजनीति की दीमक ने देश को चाट लिया है । हर तरफ फरेब की मुहिम चल रही है ।''

जो लोग यह कहते हैं कि हमने बहुत विकास कर लिया है, मैं उनको यह बताना चाहता हूँ कि हमारे देश के बुंदेलखंड के गाँवों के हालात आज भी वैसे ही हैं जो पहले थे । गरीब और गरीब हुआ है मजदूर की बेगारी नहीं छूटी, सड़कें आज भी खस्ताहाल पड़ीं हैं, ऐसे कई गाँव हैं जहाँ आज भी बिजली नहीं पहुँची और पानी के लिए लोग जद्दोजहद कर रहे हैं। जिसकी तहकीकात महेश कटारे अपनी ग़ज़लों करते हुए देखे जा सकते हैं –

''गाँव अबै तक जां के ताँ हैं
सड़कें बिजली पानी कां हैं ।''[7]

**

''बेगारी करकें मर रये हैं
अपनी खाज खुजात अलग सें ।''[8]

महेश कटारे अपने समय और समाज के यथार्थ को व्यक्त करने वाले प्रबुद्ध रचनाकार हैं। वे अपनी ग़ज़लों में ग्रामीण परिवेश की बेरोजगारी के चलते भूख और जहालत भरी ज़िंदगी को बयान करते हैं। मनुष्य जीवन के लिए बुनियादी जरूरतें जैसे पानी, शिक्षा, अस्पताल आदि की समस्या गाँवों में आज भी विद्यमान है, आज भी मीलों दूर से पानी ढोने से लोग काफी परेशान हैं। गाँव के सरकारी स्कूलों के भवनों की हालत जानवरों के घरों जैसी बदतर हो गई है, मानों कोई खंडहर हों, वहाँ न शिक्षा के उचित साधन हैं और न गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षक हैं। आज देखा जाए तो सरकारी स्कूलों में कोई भी अपने बच्चों को पढ़ाना नहीं चाहता लेकिन आर्थिक स्थिति कमज़ोर होने के कारण गरीब वर्ग के बच्चे उन्हीं खस्ताहाल स्कूलों में पढ़ने के लिए मज़बूर हैं। प्राइवेट स्कूलों ने सरकारी स्कूलों को ध्वस्त करके रख दिया है, ध्वस्त करने से मेरा आशय यह कि जो बच्चे सरकारी स्कूलों में जाते थे, वे आज गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए प्राइवेट स्कूलों की ओर

रुख कर रहे हैं । बच्चों की कमी होने के कारण ऐसी कई सरकारी स्कूलें हैं जो आज बंद होने की कगार पर आ खड़ी हैं। यदि सरकार देश की शिक्षा में सुधार लाना चाहती है तो सर्वप्रथम ग्रामीण शिक्षा व्यवस्था को सुधारने का महत्त्वपूर्ण कार्य करना होगा, तभी देश की शिक्षा व्यवस्था दुरुस्त हो सकेगी । गाँवों के सभी सरकारी स्कूलों में बेहतर शिक्षक और आधुनिक शिक्षा की वे तमाम व्यवस्थाएं उपलब्ध करानी होंगी, जो आज की शिक्षा के लिए बेहद जरुरी हैं तभी हम एक शैक्षिक स्तर पर स्वस्थ्य समाज का निमाज़्ण करने में सफ्ल हो सकेंगे । महेश कटारे अपनी एक ग़ज़ल में कहते हैं कि –

''रोटी है तिरकारी नईंयाँ
रूखी–सूकी खाकें देखौ,
एक मील सें हैण्डपम्प सें
पानी तनकल्या कें देखौ,
रात–रात भर तक फ्सलन में
पानी तनक बरा कें देखौ,
मौड़ा–मौड़ी खौं गाँवन में
भैया तनक पढ़ा कें देखौ,
अस्पताल है आठ कोस पै
रोगी खौं लै जाकें देखौ ।''[9]

यह सच है कि जो रचनाकार व्यक्तिगत जीवन में अपने लोक और संस्कृति से जितने करीब और गहरे अर्थों में जुड़ा होता है उसकी रचनाएँ भी उतने ही अर्थपूर्ण ढंग से जीवन के मूल्यवोध और सच्चाईयों को उद्घाटित करती हैं । जो हमारे समय की सच्चाईयों का सटीक मूल्यांकन करने में मददगार साबित होती हैं । यही एक रचनाकार की सार्थकता होती है कि उसकी रचना अपने समय और सच को सच की तरह अभिव्यक्त करता है। 'हिन्दी ग़ज़ल का बदलता मिजाज़' पुस्तक की भूमिका में ज्ञान प्रकाश विवेक लिखते हैं कि ''दरहकीकत, एक सशक्त ग़ज़ल के अश्आर अपने समय की न सिर्फव्याकुल आवाजें होते हैं, बल्कि वो मन की भावनाओं का व्यापक और मानीखेज संसार भी ।''[10] महेश कटारे ने अपनी ग़ज़लों के मार्फत हमारे समाज में मौजूद सामाजिक विद्रूपताओं और बढ़ती हुई मनुष्य की दूरियों की पहचान कर संजीदगी के साथ उजागर किया है ।

महेश कटारे बुन्देली में लिखने वाले ऐसे गजलकार हैं जिनकी ग़ज़लों में बिम्ब और प्रतीक अपने ही लोक से विन्यस्त हुए हैं। वे ऐसे नवीन बिम्ब, प्रतीकों का प्रयोग करते हैं जो हिंदी कविता और ग़ज़ल की परपरा से एकदम भिन्न हैं। यही दुर्लभ और लोक परम्पराओं व लोक जीवन से जुड़े बिम्ब, प्रतीकों के प्रयोग के कारण अन्य ग़ज़लकारों की परंपरा से अपना अलग व विशिष्ट महत्व रखते हैं। इस सन्दर्भ में सेवाराम त्रिपाठी 'राग भोपाली' पत्रिका में लिखते हैं कि ''सुगम के यहाँ जीवन के ऐसे–ऐसे बिम्ब प्रतीक और मिथक हैं जो जिंदगी के संघर्षों, समस्याओं, द्वंदों और हकीकतों से जन्में हैं। उनकी विशेषता यह है कि उसमें अकृत्रिमता और भाव सबलता है जिसे हम दूसरे शब्दों में बलाधिक्य भी कह सकते हैं । जो बातें उन्होंने अपनी ग़ज़लों में कहीं हैं वे आसमान से नहीं उतरीं । वे देखा देखी भी नहीं हैं । वे धरती, जीवन और संघषोर्ं को अभिव्यक्ति देती हैं । उनके यहाँ विदेशों से कोई चीज़ आयातित नहीं है । सब देशी और ज़िन्दगी के कारखाने से उपजा है। इन ग़ज़लों का ठौर, ठिया और ठिकाना यही धरती है । उसकी ऋतुएँ, मौसम और आबोहवा एकदम निवाट बुन्देली जीवन या यों कहें समूचे भारतीय जन–जीवन के संघर्षों, तापों, कठिनाइयों और यथार्थ से उपजी हैं ।''[11]

बुन्देली को एक बोली की श्रेणी में रखा गया है जबकि ऐसा नहीं है कि यह भाषा नहीं बन सकती है । कोई भी लोक भाषा उस लोक का प्रमुख आधार होती है, इतिहास और संस्कृति का साक्ष्य भी । क्योंकि वह लोक भाषा ही है जिसके बल पर सारा आदान–प्रदान संभव हो पाता है । सवज़्प्रथम विलियम कैरे ने अपने भाषा सर्वेक्षण की 33 भारतीय भाषाओं में बुन्देलखंडी को भी शामिल करने का विचार किया था जिसके सन्दर्भ में 'बुन्देली का लोक साहित्य, परंपरा और इतिहास' पुस्तक में प्रो. नर्मदा प्रसाद गुप्तलिखते हैं कि''लोक–संस्कृति गतिशील होती है, इसलिए उसमें कुछ–न–कुछ परिवर्तन स्वाभाविकहै, किन्तु लोकभाषा जनपद के इतिहास और संस्कृति के स्वरूप की सतत् साक्षी होती है, इसीलिए जनपद की सीमाएँ लोकभाषा–क्षेत्र से निर्धारित हुआ करती हैं। सर्वप्रथम विलियम कैरे, ने जो 1793 ई. में भारत आए थे, अपने भाषा–सर्वेक्षण के प्रतिवेदन में 33 भारतीय भाषाओं की सूची में बुन्देलखंडीपर भी विचार किया था और उसका नमूना भी दिया था।''[12]

अत: हम कह सकते हैं कि भूमंडलीकरण के इस दौर में बाजारवादी संस्कृति हमारे समाज पर जिस तरह से लगातार हावी हो रही है उससे भारतीय संस्कृति से जुड़ी बहुत–सी लोक परम्पराएँ और संस्कृतियाँ छिन्न–भिन्न हो गई हैं । बुन्देली संस्कृति भी इससे अछूती नहीं रही है जिसकी चिंता महेश कटारे की ग़ज़लों में बखूबी देखी जा सकती है । महेश कटारे की ग़ज़लों का मुख्य प्रतिपाद्य बुन्देलखंड का लोक जीवन है, इसका मतलब यह भी नहीं कि उनकी ग़ज़लों में महज़ बुंदेलखंड की समस्याएँ मौजूद हैं बल्कि उनकी ग़ज़लों में भारतीय लोक–जीवन और भारतीय समाज की विभिन्न समस्याओं को बेहद संजीदगी के साथ देखा जा सकता है । महेश कटारे ने अपनी लोक संस्कृति और परम्पराओं को जीवंत बनाये रखने के लिए बुन्देली ग़ज़लों के मार्फत एक प्रतिबद्ध रचनाकार के रूप में अपनी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज की है ।

महेश कटारे अपनी ग़ज़लों के मार्फत ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जो हमारे आज के इस बाजारवादी युग में कहीं विलुप्ति के कगार पर पड़े हुए हैं। महेश कटारे उन विलुप्त होते हुए शब्द भंडार से अपनी ग़ज़लों का सृजन करते हैं । एक ऐसी भाषा जो बुन्देली जानने वालों के लिए ही नहीं बल्कि हरेक साहित्य प्रेमी को सामान्य रूप से समझ आ जाती है। महेश कटारे की ग़ज़लों की भाषा में जो लोक–संस्कृति, लोक–जीवन और लोक–भाषा के प्रति जो अनुराग है, वह उस भाषा को अधिक प्रभावशाली और सम्प्रेषणीय बनाता है ।

सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची :–

1. महेश कटारे 'सुगम', सुन रये हौ, काव्या पब्लिकेशन, अवधपुरी, भोपाल,

2019, पृष्ठ - 62
2. वही, महेश कटारे 'सुगम', सुन रये हौ, पृष्ठ -30
3. वही, महेश कटारे 'सुगम', सुन रये हौ, पृष्ठ -37
4. वही, महेश कटारे 'सुगम', सुन रये हौ, पृष्ठ - 44
5. वही, महेश कटारे 'सुगम', सुन रये हौ, पृष्ठ - 44
6. शैलेन्द्र कुमार शैली (संपादक), राग भोपाली (पत्रिका) अंक-1, अप्रैलङ्क 2018, पृष्ठ-13
7. महेश कटारे 'सुगम', बात कैत दो टूक कका जू, बोधि प्रकाशन, जयपुर, 2018, पृष्ठ -31
8. महेश कटारे 'सुगम', सुन रये हौ, काव्या पब्लिकेशन, अवधपुरी, भोपाल, 2019, पृष्ठ - 28
9. httpÑ//kavitakosh.org/kk/
10. अनिरुद्ध सिन्हा (संपादक), हिंदी ग़ज़ल का बदलता मिजाज़, किताबगंज़ प्रकाशन, गंगापुर सिटी, राजस्थान, 2019, पृष्ठ - 08
11. शैलेन्द्र कुमार शैली (संपादक), राग भोपाली (पत्रिका) अंक-1, अप्रैलङ्क 2018, पृष्ठ- 5
12. प्रो. नमऱ्दा प्रसाद गुप्त, बुन्देली का लोक साहित्य परंपरा और इतिहास, मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद, भोपाल, 2001, पृष्ठ - 12

- सहायक प्राध्यापक, शास. महाविद्यालय, बेगमगंज 卐

पुस्तक समीक्षा -

बुन्देलखण्ड के उपन्यासकार - डॉ. रामनारायण शर्मा

- डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया

डॉ. शर्मा की नई कृति बुन्देलखण्ड के उपन्यास पाकर स्तब्ध हूँ। इसमें उन्होंने बुन्देलखण्ड के 131 उपन्यासकारों और उपन्यासों की सूची दी है। वर्षों से मैं भी बुन्देलखण्ड के उपन्यास साहित्य का अध्ययन कर रहा हूँ। लेकिन इतने उपन्यास लेखकों की कल्पना नहीं थी। यही नहीं बुन्देलखण्ड के साहित्य के जानकारों के मध्य में भी जब कभी उनकी चर्चा चली तो गिनती के 10-15 नामों के सिवाय इतने नाम कभी सामने नहीं आये। बुन्देलखण्ड और उसके बाहर के विद्वानों का ढोल पीटने वाले कई धुरन्धरों की शिकायत रही है कि बुन्देलखण्ड में उल्लेखनीय कुछ नहीं है। यह उनका अज्ञानी अहंकार है। लखनऊ के विद्वान प्राध्यापक ने बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय झाँसी में आयोजित सेमीनार में यही शिकायत की। तब उनको पर्याप्त उत्तर मिला था। असल में आँख बन्द कर प्रकाश हीनता की शिकायत करने वाले विद्वान उसी प्रदेश के होते हैं जिन्होंने कभी व्यवस्थित अध्ययन नहीं किया। ऐसे अहंकारी विद्वानों की आँख खोलने वाला है यह शोध पूर्ण ग्रंथ। इसे पढ़कर ही यहां की सर्जना-सम्पदा का अनुमान लगाया जा सकता है।

डॉ. शर्मा गहन अध्ययनशील परिश्रमी और खोजी लेखक हैं। उनके द्वारा रचित लगभग 30 ग्रंथ इसके प्रमाण हैं। बुन्देली भाषा साहित्य का इतिहास, बुन्देली के रचनाकार ग्रंथ, बुन्देली भाषा-कोश (तीन भाग) आदि ऐसे शोध ग्रंथ है जो बुन्देलखण्ड की साहित्यक सम्पदा को उजागर करते हैं। इसके अलावा कहानी, कविता, उपन्यास आदि कृतियाँ उनकी सृजन प्रतिभा की परिचायक हैं।

बुन्देलखण्ड के उपन्यासकार ग्रंथ में बुन्देलखण्ड के 137 उपन्यासकारों की जानकारी जुटाने में वर्षों अनथक प्रयास किया होगा। बिखरी और अज्ञात सामग्री को खोजना, उनको पढ़कर जानना समझना और पुनः उपन्यास के रूप में व्यवस्थित कर सामने लाना सरल काम नहीं है। डॉ. शर्मा ने उपन्यासकारों की जन्म तिथि, जन्म स्थान, कर्म भूमि, स्थायिता आदि के साथ उनके उपन्यासों की ही नहीं उनकी अन्य कृतियों की जानकारी दी है। कई लोगों के पारिवारिक विवरण से भी अवगत कराया है। विशेष रूप से उल्लेखनीय यह है कि डॉ. शर्मा ने उपन्यासकारों का नामोल्लेख ही नहीं किया है अपितु बहुत सारे उपन्यासों की कथावस्तु, मूल उद्देश्य तथा संवादों आदि के अंश देकर भाषा श्रेणी का भी परिचय दिया है। इतने सारे ग्रंथों का अध्ययन करने, उनके बारे में लिखने डॉ. शर्मा ने कितना परिश्रम किया होगा, कितने धैर्य से काम लिया होगा। ग्रंथ को पढ़कर इसका अनुमान लगाया जा सकता है। डॉ. शर्मा धुन-कर्मी है। एक बार जो संकल्प कर लिया, उसे पूरा करके ही मानते है। नब्बे वर्ष की परिपक्व आयु में उनका सृजन के प्रति समर्पण स्तुत्य है।

डॉ. शर्मा ने ग्रंथ के प्रारम्भ में हिन्दी उपन्यासों के उद्‌भव, विकास का अति संक्षिप्त परिचय दिया है तथा बुन्देलखण्ड के साहित्यक गद्य के विकास पर भी विहंगम दृष्टि डाली है। इससे उनके व्यापक अध्ययन और गहन चिन्तन का पता चलता है। वे अविराम लिखने वाले है।

डॉ. शर्मा प्रति वर्ष नई कृति सामने लाते हैं। इस कृति की सूची में प्रारम्भ में ही उन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि उन्होंने विभिन्न स्त्रोतों से जो सामग्री जुटाई है उसका ही उपयोग इसमें किया गया है। उन्होंने जन्म-तिथि को ही क्रम बनाया है। इनमें कुछ के नाम जो शामिल हैं उनके जन्म तो बुन्देलखण्ड में हुये हैं किन्तु शेष जीवन बुन्देलखण्ड के बाहर बीता। उसी प्रकार कुछ वे उपन्यासकार हैं जिनका जन्म बुन्देलखण्ड के बाहर हुआ किन्तु उनका बुन्देलखण्ड कर्म क्षेत्र रहा जिन्होंने बुन्देलखण्ड विषयक साहित्य की रचना की है। यद्यपि इनकी संख्या सीमित है। फिर भी डॉ. शर्मा ने इसे स्पष्ट कर दिया है। यशपाल जैन, गौरापंत शिवानी, हरप्रसाद शर्मा, शरद सोनकर, निरुपमा, मोहन जी मृणाल पाण्डेय उपन्यासकार इसी प्रकार के हैं। डॉ. शर्मा ने 21 ऐसे उपन्यासकारों की सूची दी है जिनकी जानकारी उन्हें पूरी नहीं है। यद्यपि उन्होंने उनके नाम स्थान व उपन्यास डॉ. शर्मा ने उनके नाम के साथ दिये हैं। उनके नाम वासुदेव आठले और रमाकांत भी है।

इस महत्वपूर्ण ग्रंथ के लिये डॉ. शर्मा बधाई के पात्र हैं। यह शोधपूर्ण ग्रंथ प्रत्येक पाठक, शिक्षक, विद्यार्थी एवं शोधार्थी के लिये उपयोगी हैं। सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्व विद्यालय, शोध संस्थानों में इसे होना चाहिए।

- एच.आई.जी. 124, भरउत नगर, सतना -485001
मोबा. - 9425376213 卐

बेआवाज लाठी

–डॉ0 दया दीक्षित

नायं दिन डूब रओतो, मांय सुकल जू कौ जी डूबो जा रओतो! कच्ची गिरस्ती, छोटे- छोटे बाल बच्चे दो बैनें तर ऊपर कीं, ब्याऔ के लानें हांत जोरें बैठीं! अम्मा तौ भौत पैलां सरग नसैनी चढ़ी चली गईंतीं, बाबूजी जा बरस कुरौना में चल बसे! दुसमन रोग नें घर की चूलें हिला कें रख दईं! मुनीमत की कमाई सें कैसऊं जौ घर बनवाओतो बाबूजी नें, सो जई घर गानें धर कें इलाज कराओ, प्राइवेट नर्सिंगहोम बारों नें पच्चीस हजार रोज तौ लइयइ हते, संगै तरां तरां की जांच के नाम पै जितनों मूस पाए, उतनों मूस लओ। मगर अंत में धन औ जन दोऊ निकर गए! कर्जा की मियाद तौ कब की निकर गईती, मगर घर गानें धरने वाले गया प्रसाद सिलौरिया सज्जन आदमी थे, सो कुल्ल मोहलत मिल गईती सुकल जू खों! पै आज दुपरै जो कछू भओ, बौ तौ सपने में लों न सोचीती सुकल जू नें! वैसें भी सुकल जू अपने काम सें काम रखने बारों में से थे। पूरौ सहर गऊ घांई आचरन करबे बारे सुकल जू कौ मान पान करकें अपने आप खों धनभागी मानत तो! जिस कॉलेज में सुकल जू पढ़ाउत हते, उस कॉलेज के लरका बिटियां होंय औ चाय करमचारी होंय, चाय संग साथ के लैक्चर प्रोफेसर होंय, सब जनें सुकल जू की बड़वाई करत थकत न हते!

आज जैसईं बे कॉलेज सें घरै आए उसई पाछें पाछें सिलौरिया जू के दोऊ ज्वान जमान लरका धमक परे! सीधी सीधी धमकी दै गएते कै अगरमईना भरे में कर्जा न चुका पाए, तौ मकान की नीलामी करा देंगे! और हमाए बाप लौ फरयाद लै कें गए, सो प्रोफेसर साब, सबेरे कौ सूरज न देख पाहौ, जानत तौ हौ कै कितेक ऐबी हैं हम! तुमाई बैनों की बा दसा करेंगे कै मों न दिखा पायेंगी! समझ गए!''

सुकल जू का काते। गम खा कें रै गए बिचारे! मुड़ी हिलाकें हामी भरत गएते बे तौ!

धमकी दैबे बारे तौ चले गए, मगर सुकल जू जां के तां बैठे रै गए! घरबारी दो तीन बार इतईं चाय पानी दै गईती! संगै संगै खुसखबरी थी कि ग्वालियर बारन खों अपनी बिन्नू पसंद हैं! पन्द्रा लाख के ब्याव की कै रएते। सुकल जू के लानें जा बात खुसखबरी थी कै बुजआ भरी थी, जौ तौ उनईं कौ जी जानत हुइयै चिंता के भार सें नबी गर्दन तना और नब गई। जानें कितेक टैम हो गओ एसई बैठें बैठें उनें। अब तौ संजा बेरा हो कें रात कौ अंधयारौ पांव पसारन लगो, मगर सुकल जू सोच सोच कें हार गए, कै इतनी कम मियाद में लाखों रूपयों का कर्जा कैसें चुकायेंगे। ऊपर सें जे पन्द्रा लाख। का करें कहां जायें, किससे मांगें! जई सोच सोच कें तबियत हलकान हो रईती! दिल डूबो जा रओओ।

****

कॉलेज कैम्पस में गाड़ी लगाउत सुकल जू की नजर पड़ी मदन मोहन पै, दोउ जनन में राम राम भई! संगै संगै आफिस तरफ निग रएते दोऊ जनें! मदन मोहन मुस्क्या कें बोले– ''सर, पचास लाख हो गए आपके जी.पी.एफ में, अबै लौ एकऊ बेर नई निकारे आपनें! निकारनें होंय सो हमसें कइयो, छिन भरे में काम करा देंगे!

''हाँ–हाँ क्यों नहीं!!''

कहतई कहत सुकल जू के दिमाक में बिजली सी कोंद गई! इतनी बड़ी बात! ऐसी सहायता! हे ईसुरनाथ धन्न हौ तुम! इस तरपीं तौ दिमाकई न गओतो, ओ मोरे कामतानाथ जू जै होय तुमारी! भगवान के सिजदे में हांत जुर गए! एसौ ज्वार उमड़ो कै रोकत रोकत पै तैरंया भरयाईं! एक हांत में बैग लंयते। सो हांत सें आंखें पोंछी, और विभाग में दाखिल भए। बैग मेज पै धरो, कुर्सी पै बैठे, रजिस्टर अपनी तरपीं खींचो, औ हाजिरी लगाकें, ड्यूटी पक्की करी। तौलों कैऊ जूनियर सीनियरन सें राम रहीम भई! सुचेता मैडम हंस कें बोलीं– ''सुकल सर भलाऊँ सरदपूनै हो गई पै अबै इत्तौ जाड़ौ तौ नईं परो कै नाक आँख चुँऊन लगें! रो रएते का?''

सुकल जू– ''आँहां, सुचेता मैडम रो नईं रएते,तिनका चलों गओतो, सो पानी कड़- परोतो! आपकौ नांव तौ सुचेता है, सो सुंदर औ अच्छी बातें काए नईं देखतीं सुनतीं।'' सुकल जू की ई बात पै कैऊ जनन नें मुस्क्या कें हामी भरी! सुकल जू नें अपनी अल्मारी खोली किताबें निकारीं औ पढ़ाबे के लानें एम0ए0 के किलास तरपीं चले गए।

****

जी.पी.एफ सें पैसा निकारबे की तौ उननें सोची लों न थी, इस तरफध्यानई न गओतो पै भले मिले मदनमोहन उननें ध्यान करा दई। पीरियड पढ़ाने के बाद सुकल जू मदनमोहन के ऑफिस तरपीं निकर परे पूंछबे ताछबे खों। जो बातें पता परीं, उनसें सुकल जू कौ जी जुड़ा गओ, फांस जई थी, कै अपनोंई पेसा निकारबे के लानें घूंस दैनै परै! एक जमाने में जई घूंसखोरीं की कित्ती मुखालफत करीती सुकल जू नें! औ आज! आज खुद घूंस दैबे खों तैयार थे। जौई आ कहाउत समय कौ फेर! तबै हते सुकल जू छरे छटांक, औ अब तौ लो चार लरका बिटियन के बाप, दो कुंआरी बारी बैनन कै भाई थे! दुनियादार, व्योहारकुसल! हवा का रुख पहचानने वाले! तबईं तौ अपने अधिकारियन की बातन खों मान गएते! प्रिंसबल सें लैकें संगी सहायकों तक, सबनें कईती कै निदेसालय में खुलौ खेल चलत है। लाख पै दो हजार रुपया! सो मदन मोहन बाबू खों खबाउने पियावनें परहै! बे पूरौ रावला निपटा कें पैसा दिला देंगे। मदन मोहन सें कैबे भर की देरहती, बे तुरतईं फारम लै कें हाजिर हो

गए! फारम लैकें सुकल जू घरै चले आए! दिक्कत जा थी कै का कारन भरें फारम में। किस विधि सें निकरै पइसा! कौनऊ कारनघरबारी पूरी बातें सुनकें बोली– हमाए बब्बा नें तुमाए नाम जौन जांगा करीती, उसकौ नकसा तौ बेई पास करा गएते! सो मकान बनवाने के बहारे सें काड़ सकत हौ पइसा। पन्द्रा लाख दहेज की सुनकें अपनी बिन्नू तौ लाल भभूका हो परीं। उननें साफकै दई कै हम इतै ब्याऔ नईं करेंगे। ग्वालियर बारन सें तौ इन्दौर बारे भले। मांग उनकी भी है, पै इतेक बड़ौ मों नईं फाड़ो। सो ब्याऔबर के लानें भी मकान बनवाबे के बहाने सें तनक जादां रकम निकरवालो दोऊ तीनऊं काम निपट जाएं। कर्जा भी चुक जैहै, मकान बनबे कौ लग्गा भी लग जै औ बिन्नू कौ ब्याव निपट जै। जे बातें सुनकें सुकल जू ने प्लाट कौ नक्सा ढूंढो, फेटोकापी कराई, एप्लीकेशन तैयार करी और फारम भर दओ!

****

दूसरे दिना मदन मोहन बिना बुलाएं विभाग में आए बोले– ''सर, कुछ खर्चा पानी दो, तौ काम सुरु करें!'' ''ठीक है!'' थोड़ी देर बाद विभाग में आ जाना!'' सुकल जू नें कई। अपने पीरियड पढ़ा कें सुकल जू कालेज के पास के बैंक में गए, जौन अस्सी हजार की एफ0डी0 बैन के बयाऔ के लानें कराईती आज बई खों टोर कें पइसा निकारे! एक तौ भरी गिरस्ती में पैसा टका जुरई न पाउतते खींच खांच कें जित्ती जमा, जथा इखट्टी करीती, सो बीमारी की भेंट चढ़ गईती, जई एफडी. बचीती सो आज जा भी........। भरे मन सें विभाग में आ कें बैठेई हते, कै मदन मोहन आउत दिखा परे! उनें देख कें सुकल जू विभाग के बायरें कड़याए।

सुकल जू– 'हाँ बाबू साब, आदेस करौ'! खींसें काढ़ कें बोले मदनमोहन– ''मास्साब 2 हजार पर लाख के हिसाब सें बीस लाख निकरवावे के सीदे सीदे चालीस हजार रुपया भए! औ हम टैक्सी में जायेंगे निदेसालय आफिस, सो जो आप समझौ दै दो! बैसें सबजनें तो पाँच हजार देत है टैक्सी के लानें। दो दिना में काम करा दये हमनें लोगन के। ''ठीक है'' कहकर सुकल जू नें चालीस हजार के साथ टैक्सी के भी पाँच हजार रुपयामदन मोहन खों दै दये!

रुपया लेबे के बाद मदन मोहन बोले–सर, स्टीमेट सोई लगावनें परत पै चलौ कौनऊ बात नईयां, आप दो सौ रुपैया दै दो, हम स्टीमेट लगाकें भेज दैहें! दो सौ रुपैया और दै दो! मदन मोहन ने कई!

ठीक है, कह कें सुकल जू नें सौ सौ के दो नोट जेब सें निकारकें मदन मोहन के सिपुर्द कर दए! औ बोलें तौ, बाबू साहब कल्ल जा रए फिर आप निदेसालय!''

मदन मोहन– अरे,सर कल कहाँ जा पायेंगे? इतनी जल्दी रिजरवेसन नहीं मिलेगा। बिना रिजरवेसन टिकट के, कॉलेज से छुट्टी कहाँ मिलेगी! औ फिर अबै तौ प्रिंसपल साहब के ऑफिस में आपकौ आवेदन पोंचावनें परहै, उनके साइन हुइयें! कम सें कम दो चार दिना तौ लगई जैहें! आज तौ बे छुट्टी पै हैं! तनक तीन सौ रुपैया और दै दइयो, बाबू के लानें। जैसई साहब छुट्टी से आयेंगे तुरत फुरत आपके कागजों पै चिड़िया बैठरवा लैहै बौ, सो तीनेक सौ तौ उऐ दैनेंई परहैं!

सुकल जू बुरए फंस चुके थे। कौनऊ और चारौ न हतो, मजबूरी में जेब में हांत डारो, पै अलावा पाँच सौ के नोटन के एक टक्की लौ न हती! दो सौ रूपैया थे, सो पैलऊँ गहा दयते! उनके हांत में फंसे पाँच सौ के नोट खों देख कें मदन मोहन नें कई– अरे सर, अबै कितेक जांगा गापकी फाइल पोंचाउने परहै, सोचत का हौ, पाँच सौ कौ नोट दै दो आपई के काम में खरचा करेंगे!

पाँच सौ कौ नोट दै तौ दओ सुकल जू नें पैं कहना चाहते थे कै जब टैक्सी कौ पइसा लै चुके तौ रिजरवेसन कौ का मतलब? मगर इस डर सें न बोले कै कौनऊ और बहानें न मांगन लगै जौ! अब तौ इसके जाल में बुरई तरह सें फँस गए हैं, बस कैसऊँ निबिरने है अब तौ!

मन में कुछ संतोष भी था, कै चलौ मांय खर्च भलें हो रओ पै जी.पी.एफ सें रकम तौ मिलई जैहै! पइसा भलाऊँ लग रओ सो लगत राय.....।

असल में सुकल जू कोरे जी के सज्जन और दरियादिल इंसान थे! हालांकै गिरस्ती के खर्चा टंटा ऐसे थे कै बरहमेस नौ नगद औ तेरा उधार वाली हालत बनी रत, इतने पै भी पइसा कोंड़ी खों सुकल जू नें हांत के मैल सें जादा नईं समझो कभऊँ, अगर जेब में पइसा हैं, तौ फिर उनकी दरियादिली देखने जोग थी! ऐसौ मनई मांस अपने काम के लानें खरचा पानी दैबे में भी काय खों पीछें हटतो, जां दो लगनें उतै दो सें जादई लगा दए, कम तौ करई नईं सकत। पै इस आदमी नें तौ हदई पार कर दई। बात बात पै पइसा!! मगर इस मकड़जाल में तौ बे अपनी मर्जी सें फसे थे। पै जौ न जानते थे कै डग डग पै वसूली हुइयै, हे प्रभू अब होई का सकत।

सुकल जू कॉलेज से उठे एकीएका सुरत हो परी सो सीधे गनेस सुनार कें चले गये। आज करवाचैथ थी, सुकलाइन नें तौ भलाऊँ मना कर दईती, पै सुकल जू खों इस बात की भौत होंस थी कै घर की मालिकी समारबे बारी मालकिन की करयाई में बढ़ियल चांदी के कमरबंद में चाबियन कौ गुच्छा बंधो रय! सो गनेस सुनार के इतै जा कें बोले– सौनी जू बढ़ियल कमरबंद दिखाइयो तौ! ''अबै लो'' पिरोफेसर साब! कहकें तुरतईं गनेस सुनार ने अपनी लोहे की अल्मारी खोली औ कैऊ तरां की हाफमेटी निकार कें सुकल जू के आंगें धर दईं! चिड़ी–पान फूलन कीं, तितलीदार मोरपंखी डिजाइन की सुंदर बनक बारी हाफमेटियन में सें सुकल जू नें मोरपंखी बारी हाफमेटी पसंद कर लई!

घरै जा रए सुकल जू मनईमनहिसाब लगा रएते कै अगर परसों नरसों भी मदन मोहन चले गए निदेसालय तौ हांत के हांत काम करा ल्याहें, और हफ्ता भर में जी.पी.एफ कौ पइसा

मिल जैहै! पैलौ काम तौ करजा चुकाबे कौ करेंगे, फिर बैन की बात फाइनल होगी। मकान कौ लग्गा भी लगायेंगे!

****

मदनमोहन खों पइसा दयें आज चार रोज हो गएतो! उतावली में सुकल जू नें कई दफै उनसेंमोबाइल सें बात करी सो बस इतनों पतौ लग पाओ कै प्रिंसपल साब के दसकत हो गए हैं कागजन पै। इसके बाद सुकल जू नें कॉल पै कॉल करीं, पै मदन मोहन नें कौनऊँ डकार न लई! हार कें सुकल जू स्वयं मदन मोहन के ऑफिस चले गए, उनें सामनें देख कें भी मदन मोहन कुरसी सें न उठो, बैठेई बैठें बोलो- अरे साब, आपनें कायखों तकलीफकरी, हमें बुला लेते।''

सुकल जू- चलौ कोई बात नईंया, का फरक परत! तुम तौ जौ बताऔ, कबै निकर रए निदेसालय खों। मदन मोहन एसीं हंसी हंसो, जैसें कौनऊं घाघ आदमी अपने जाल में फंसे सीदे सूदरे छोटे बच्चा खों देख कें हंसै! फिर गहरी नजरों सें देख कें बोलो- साब, अपने इतै कौ काम तौ गओ, अब पैलें क्षेत्रीय आफिस जानें परहै आपकी फाइल औ पासबुक लैकें! उतै जब क्षेत्रीय अधिकारी के दसकत हो जायेंगे, तब कऊँ नंबर आ पायेगा, निदेसालय कौ!

सुकल जू- ठीक है भैया, जाऔ फिर क्षेत्रीय कार्यालय खों!

मदनमोहन- अब साब अबै तौ वेतनबिल कौ काम कर रए हैं, तनखाय भी तौ पास कराना है।

जौ सुनकें बिचारे सुकल जू मन मसोस कें रै गए। कां तौ दो तीन दिना में काम कराबे की कै रओतो, औ कां आज दुगने तिगने दिना हौन चाउत!

****

काम कराबे की जितनी जादां बेचैनी सुकल जू खों थीं, ऊसें दस गुनी बेपरवाही मदनमोहन बरत रएते। उनके इस रवैया सें सुकल जू मन मसोस के रै जाबे के अलावा और का कर सकतते! धीरज राखबे के अलावा और कौनऊँ चारौ न हतो उन लौ, गुनी मानी थे सो जा सोच कें गम खा रए थे कै जिन परिस्थितियों पै अपनों जोर न चल पाय,उनमेंधीरज धरो चाइये! कन लगत कै धीरज धरौ सियाने, उकताने काम नसाने! धीरे-धीरे करकें टैम पार हो रओतो।

होत करत बा घरी भी आ गई जब मदन मोहन नें सूचना दई कै क्षेत्रीय कायाज़्लय में दसकत हो कें फाइल आ गई है! जिस दिन मदन मोहन नें सुकल जू खों जा सूचना दई, उसीदिन तनकई देर में सुकल जू के पास एक फौन आओ-

आप जी.डी. शुक्ला बोल रहे हैं!

''जी हाँ, बोल रहा हूँ! सुकल जू नें आराम सें कई!

''मैं निदेशालय से बोल रहा हूँ, आपने भवन निर्माण के लिए जी.पी.एफ के लिये आवेदन किया था''?

अब सुकल जू सावधान भए! बोले- जी हाँ किया था!

''आपका आवेदन मेरे पास है। फार्म अधूरा है, आपने स्टीमेट तक नहीं लगाया है!''

जासुनकें सुकल जू और जादां सतर्क हो गए, जा तौ सोलाना सई थी कै उननें स्टीमेट नईं लगाओतो मगर मदना सारे नें तौ पइसा लौ मांग लए थे, स्टीमेट लगाबे के, औ तऊ भड़या नें स्टीमेट लगाएँ बिना आधे अधूरे कागज भेज दए! इसकौ जौ मतलब भी भओकै कागजों की तौ असल में इसनें रजिस्ट्री कर दई हुइयै, औ हमसें टैक्सी के नाम पै पाँच हजार ऐंठ लए!ओ तोरे कलुवा की! मनईंमन सुकल जू नें स्यामबरन मदन मोहन खों खूब गरयाओ! अबै बे सोचई रएते कै आवाज सुना परी- स्टीमेट भी नहीं है और हलफनामा भी नहीं लगा है! आपकी फाइल मैं देख रहा हूँ, मुझसे मिलिये आकर!

सुकल जू की ब्योहार बुद्धि जगी- जैसा आप कहौ, कछू खरचा पानी आपके लानें!

- ''वो अंडरस्टुड है! आज आना चाहें तो आज ही आ जायें! हलफनामा भी आपकी फाइल में नहीं लगा आपका, चलो वो तो मैं यहाँ बनवा लूँगा!

सुकल जू- साब कम सें कम चार पांच घंटा तौ रस्ता में लग जायेंगे, जौ लौ तौ आपकौ ऑफिस बंद हो जैहै!

- ''डोंट बरी, शाम सात बजे तक ऑफिस खुला रहता है! मैं आपको यहीं मिलूँगा!''और हाँ अकेले आना आप। मदन मोहन गंदा आदमी है, उसे मैं कई बार ऑफिस से भगा चुका हूँ! उसे मत बताना।

सुकुल जू-ठीक है साब, आ रए आजई!

- ''ओ.के.;;

इस मोबाइल बातचीत सें सुकल जू की धड़कन बढ़ गई। हांपन लगे! खून कौ दौरा तेज हो गओ!उनने तुरतईं मदन मोहन खों बुलाओ! उए सबरी बातें बता कें कई- निदेसालय कौ एहलकार कै रओतो कै मदन मोहन खों न बताइयो, सो ऐसी का बात हो परीतुमाए औ उनके बीचां।

मदन मोहन- कछू बात बतकाव नईं भओ, इस एहलकार कौ नांव है तौ नेकचंद, पै सई कै रए आपसें, इससे जादां लोभी लालची नईं देखो हमनें!अबै तीन चार जनों की फाइलें गईंतीं इतै सें। इसनें सब जनन खों फौन कर कर कें बुलाओ, मगर हमनें रोक दई, सो कोउ नईं गओ। आप भी न जाऔ, काम तौ बैसें भी दो तीन दिना में होई जानें!

सुकल जू- पता नईं, मगर हमाऔ मन बोलत कै जां सें काम हौनें है, उतै सें बुलौआ आओ है तौ जाना ही ठीक है।

मदनमोहन- अरे सर, काए खों उसकी बातन में परे? बौ तौ सबखों बुलाउतएसई। हम फिरकऊँ कै रए कै आपकौ काम जादा से जादां तीन रोज में हो जानें, सो काए खों जा रए!

सुकल जू- नईं मदनमोहन,मैं जाऊँगा, आज ही और अभी। तुम भी मेरे साथ चलो! तुम्हारा तो काम ही है यह! कहो तो प्रिंसिपल से तुम्हारी परमीशन ले लूँ! देर न करो, चलो! मैं बैंक में मिलूँगा, वहीं आ जाना तुम! जाओ अब! मैं भी बैंक जा रहा हूँ।

कॉलेज के बगल में हतो स्टेट बैंक! जई में आती थी कॉलेज बारों की तनख्वाह! सुकल जू बैंक गए। पैसा निकारे। औ छिन भरे में निदेसालय खों रवाना हो गए। मदन कलुआ सोई हतो संगै!

****

ठीक सवा छः बजे गाड़ी निदेसालय की पार्किंग में ठाड़ी थी! मदन की तौ ड्यूटीयई हती इतै आ कें कॉलेज के काम करवाबे की, सो बारा पन्द्रा दिनन में इतईं की देहरी पै माथौ रगड़बे आउत हते, सुकल जू आज पैली बेर आएते, पै मदन मोहन एक एक गैलगली जानततो सो कौनऊँ परेसानी उनें नईं भई। बे अकेले बाबू नेकचंद के चैम्बर के आगें जाकें ठाड़े हो गए! फौन मिलाउत ई साथ नेकचंद द्वारे पै कड़याए। खूब गरमजोसी सें हांत मिलाओ उननें सुकल जू सें। चैम्बर के भीतरै आ गए दोउ जनें!

नेकचंद नें हलफनामा निकार कें दिखाओ, हलफनामा के संगै संगै स्टीमेट कौ कागज भी दिखा दओ। सुकल जू के जी में जी आ गओ। माथे की सिलवटें तनक कम भईं। नेकचंद बोलो- ''देखिये साब, हमनें आपका काम रेडी कर दिया ये मदन मोहन बड़ा गंदा आदमी है, इसीलिए मैं इसे अपने चैम्बर में घुसने नहीं देता! पूरे तेरह साल तक इसने, मुझसे काम करवाए, पर अब पता नहीं किसने इसे बरगला दिया है। अब गुप्ता से काम करवा रहा है, पैसे गुप्ता को देता है, नाम मेरा लेता है! बताइये आप, यह बदनामी भला मैं क्यों मोल लूँ! मेरा चैलेन्ज है कि यह गुप्ता से काम करवा के दिखवा तो ले! पाँच महीने से आपके कॉलेज की दसियों फाइलें पड़ी हैं, ये किसी का काम नहीं करवा पाया, न करवा पायेगा। फाइनली तो मेरे पास ही फाइल आती है। मैंने ऐसी कमियां निकाल दी हैं कि दस सिर करवा ले, गुप्ता, फाइलों को टस से मस नहीं करवा पायेगा, काम करवाना तो बहुत दूर है!''

अबै वे जौ सब कह ही रए थे, कै मदन मोहन खीसें काड़त आ कें बोले- ''बाबू साब राम राम!'' उसकी राम राम के जवाब में नेकचंद ने बुरई तरां फटकारो! खूबगरयाओ! खरी खोटी कैबे में कसर नईं राखी। मगर हरां हरां, काय सें कै बगलबारी बिल्डिंग में निदेसक महोदय बैठे थे!

नेकचंद नें सुकल जू की तरपीं देख कें बड़ी हिकारत सें कई- मैंने कहा था न शुक्ल जी, ये बेशर्म बहुत बड़ा कलाकार है! कई बार इसे अपने चैम्बर से भगा चुका हूँ! पूछिये इससे- किसके कहने पर ये गुप्ता से काम करवा रहा है! आज तक कितना करवा पाया है! मुझे बदनाम करके मुझसे ही काम करवाना चाहता है? इसके दिमाग का भूसा निकलवाइये......''

माफ करौ साब, गलती भई, आगे सें सिकाइत का मौका नई देंगे! साब, तनक जे कागज देखहेरौ मैडम के रिटायरमेंट के बाद अन्तिम भुगतान के हैं!'' जौ कह कें मदन मोहन ने कछू कागज पत्तर मेज पै धर दये।

नेकचंद ने अपनी मेज पै धरे कागज मदन मोहन तरपीं फेंकदए बोले- रजिस्ट्री से भेजौ इनें! तुमाए बाप के नौकर नईं लगे। जाओ इतै सें! मगर मौटी चमड़ी थी मदनमेहनकी !मईं बैठे रए कुर्सी पै। बैठेई बैठें बोले- ''साब रजिस्ट्री सें भेज देंगे, गुस्सा न हो! नेकचंद बेपरवाई सें सुकल जू सें बोले- मैंने आपको बुलाया था, तो जो कमियां फाइल में थी, आपके सामने मैंने पूरी कर दी हैं। अब आपकी फाइल कम्पलीट हो गई! मुझे भी आप 'फिल' कीजिए!

जी? क्या कहा आपने? सुकल जू नें पूछी। उनें सांसऊ नेकचंद की बातें समझ में न आईंतीं।

जवाब में नेकचंद नें मोबाइल निकारकें कछू गिनती सी लिखी, और मोबाइल सुकल जू तरपीं बढ़ाकें बोले 'इसे देख लीजिए'।

मोबाइल देख कें सुकल जू अकबका कें बोले- ''जे, तौ भौत जादा हैं''

''अच्छा आप जो देंगे मैं रख लूँगा!''

अब सुकल जू का करें! बड़ी असमंजस की घड़ी थी जा। चालीस हजार की रकम लिखीती नेकचंद नें! उननें अपनी जमाजथा देखी, कुल मिला कें बीसेक हजार थे! नेकचंद सें बोले- ''सर अभी आधेक घंटा में आ रए, कौनऊ एटीएम है का आसपास?'' जा सुनकें तुरतईं नेकचंद नें पासपुरा के दो तीन एटीएम बता दए! सुकल जू बायरें कड़ गये। तनकई देर में वापिस आ कें उनने पेंतीस हजार की रकम नेकचंद के हांत में धर दई। डरात डरात से बोले, 'साब इतनईं हते अबै, सो दै दये आप खों, बाकी के फिर दै दैहें!''

नेकचंद- नहीं नहीं, इतना ठीक है। और हाँ कल या परसों आप अपनी फाइल भेज दीजिए। सब अधिकारियों के दस्तखत करवा कर भेज देना, आपका कागज मैं खुद आपको दूँगा, परसों नरसों तक कागज आपके हाथ में होगा!'

आपकी मेहरबानी साब! नईं तौ हम तौ मकान सें हाथ धो बैठेंगे!भरे गरे सें सीधे सच्चे सुकल जू नें अपनी विपदा नेकचंद के आगै खोल कें रख दई! पूरी बातें सुनकें नेकचंद नें बस इतनों कई- ''सर, आपके कागज जैसे ही मेरे सामने आयेंगे, मैं तुरंत आपका काम कर दूँगा।''

हओ साब, ठीक है! कल कागज आपके पास आ जैहें! जेई मदन मोहन लै आयेंगे!

मदनमोहन-हाँ हाँ कल कागज हम सुयम लै कें आयेंगे!

****

दिन भर के थके मांदे सुकल जू गाड़ी में बैठेई थे कै मदनमोहन नें कई- का साब, पूरौ दिना कड़ गओ, न चाय न पानी, न दाना कौरा! रात हौंनचाराई, कछू खा लओ चइये!

सुकल जू- हाँ हाँ चलौ चलिये कौनऊँ अच्छी जांगा!

मदनमोहन- अरे सर, इससे अच्छी जांगा कौर कां हुइयै, पूरे पिरदेस के बड़े बड़े मुख्यालय हैं इतै, बढ़ियल टॉप के होटल हैं

इतै, चलौ ''आम्रपाली'' में चलिये!

दोई आदमी होटल आम्रपाली में गए! सुकल जू नें तौ सादा भोजन करो,पै मुवक्किल देख कें मदनमोहन की भूंक बढ़ गई! उननें मांसाहार 'खाओ' और जमकें सोमरस पियो। नगद की जांगा डिजिटल भुगतान करकें सुकल जू बिचारन नें अपनी इज्जत बचाई! रई सई कसर पूरी भई मदनमोहन की खरीदारी सें- होटल की नुमाइस प्रदर्शनी में दो बढ़ियल साड़ी लईं! बिल भुगतान कराओ सुकल जू सें! मदन मोहन की माताजी और घरैतिन की धोतियन कौ भुगतान करत सुकल जू खों अपनी दोई बैनन के बँहन सें फटे कुरता, औ अपनी डड़ी डड़ाई लुंगी आँखन के आगै झूल गई। जितनों बिल उननें भरोतो, उतनें पइसन में तौ पूरे घर भरे के उम्दा कपड़ा उन्ना आ जाते! औ दर्जन भर लुंगी सोऊ आ जातीं! प्रोफेसर की जनीं हो कें भी सुकल जू की सुकलाइन धोतियन खों डांड़ कें पैरती रतीं, लुंगी जब कमर के नेंचें सें पतरी हो सकें घिसत घिसत फटन लगत सो, बची सें काट कें दोई किनारे जोड़ कें डांड लेतीं! सांसऊं बिल्कुल गऊ कौ सौ सुभाव हतो सुकलाइन कौ! बड़ी सुकरतनं थीं बे।

****

दूसरे दिना सुकल जू नें याद दिबाई मदन मोहन खों- भैया निकरबे में कितेक देर है!

मदन मोहन- आपकी जी.पी.एफ की पासबुक पै साइन करा लए हैं, अब क्षेत्रीय अधिकारी के ऐंगर जा रए हैं, जल्दी काम हो जै तौ ठीक, नईंतर कल्ल जरूर चले जायेंगे!

****

अगले रोज नेकचंद कौ फौन आओ, सुकल के पास- क्या सर आपने कागजों परदस्तखत नहीं कराए! बताइये, अब कैसे आपका काम करूँ?

सुकल जू- साब, हमनें एक एक बात की तस्दीक की थी। मदनमोहन सें पूंछ लो आप, जे खुद गए थे साइन कराबे के लानें! हमसें बोले थे कै एक एक कागज पै मोहर और दसकत करा लए!

नेकचंद- ये झूठ बोला है आपसे! बहुत मक्कार, झूठा और बेईमान है! आप खुद जाइये, और अपनी फाइल पर साइन करवाइये! और प्लीज आप इस पर भरोसा मत कीजिए, इसीलिए मैंने आपको अकेले बुलाया था।........

अब तौ सुकल जू कौ भौत बुरऔ हाल हतो! मदनमोहन क्यों ऐसा कर रहा है! उननें तौ काम करवाबे के लानें दये चालीस हजार रुपैया तक वापिस नईं लएते, उल्टे उसके लिए हजारों रुपया खर्च करत फिरे बे तौ! खाबो पीबो धोती कपड़ा विंजन मिठाई जो कुछ भी उसके मुख सें निकरो सुकल जू पूरौ करत रए! फिर इसनें एसौ काम करो? सौ सौ दफै कईती कै भैया जां जां जिस जिस के दसकत होंने, सो सब करा कें जइयो मगर इस सबके बदले में का मिलो? ढाक के तीन पात!

एक एक करकें दिन निकरत जा रए थे !बीच में दिबारी की छुट्टी में कैऊ दिना निकर गए! औ अब तौ लो कल सें फिर तीन दिना की छुट्टी गुरुनानक जयंती औ जानें का का...............। कोढ़ में खाज जा कै सुकलाइन कौ पथरी कौ अपरेसन बता दओतो डाक्टर ने जित्ती जल्दी हो जाय उतनई अच्छौ! अपरेसन मतलब पैसा! पच्चीस तीस हजार रूपया कां सें ल्याएँ!! सुकलाइन कौ किलपत हांतन सें अंसुआ छिपाउत मुख प्रोफेसर साब के आगे घूम गओ! मन सें एक 'हाय' निकर परी- ओ तोरे मदनमोहन की!!! चालीस हजार रूपैया कैसें पी गओ! हमाए संगै अपने कुल्ल काम लै कें गओ, औ हम समझे कै हमाए लानें आओ! कैसे पइसा खर्च कराए इसनें, खर्च भए इसका गम नईंयां गम इस बात का है कै अबै ऐसी तंग हालियत में जबकें परिवार के जीवन के जरूरी से जरूरी काम, पहला की कमी की बजां सें अटके हैं, तब इतने फालतू कामन में खर्चा करनें परो। अब का करें, इससें तौ कौनऊ उम्मीदई नईंयां अब! काम तौ खुदई दौड़ धूप करकें हुइयै कहाँ कहाँ तौ जानें परहै! पै हम तौ काऊ खों जानत लों नईंयां! हे ईसुरनाथ कामतानाथ जू महाराज। संकट सें निबेटौ भगवान! ई धूर्त कौ ऐसी जांगा ट्रांसफर हो जाय जां कौऊ पानी दिबैया लौ न हो ईखों.... जैसई हमाई आत्मा किलप रई ऊसाई जौ मदना भी किलपै।...

साम कें घर में पांव धरतई संगै एकाएक सुकल जू खों याद हो परी!

दों दो जन्मदिन हैं आज! एक तरपीं बैन दूसरी तरफ लरका! अबई आन चाउत! जेब में नईंयां फूटी कोंड़ी। एटीएम मील भर दूर !सोचई रए थे कै सुकलाइन आउत दिखा परीं। हंस कें बोलीं- ''प्रोफेसर साब, सब जनें आपकी इंतजारी में हैं! हल्की नंदबाई नें बिना अंडा कौ केक बनाओ है! एक तरपीं नन्हें कौ नांव औ दूसरी तरपीं बड़ी बिन्नू कौ नांव लिखो औ हल्की-हल्की रंग बिरंगी मोमबत्ती लगी हैं! एन बढ़यल केक है। देखियो तौ तनक! अपनी जनी की बातों से कछूराहत भई सुकल जू खों! बे भी हंस कें बोले- चलौ, जौ तौ भौत बढ़िया रओ !अपनी हल्की भौतऊँ हुसयार चतुर सुगर मोंड़ी है! कह कें मनई मन सोचन लगे सुकल जू- ''एन तौ!! घर के बालकों की कारगुजारियों में मन कैसौ सांत हो जात! बिचारे सीधे सादे बच्चों की मांग जांच भी न कछू सी है! नईंतर आजकल के बच्चा!! कैसौ तीन तूफान मचाएं रत जिद्द जोर जबरदजस्ती कौ! औ मांगें तौ उनकी ऐसीं कै घर लों नीलाम हो जाय! स्कूटी, मोबाइल, लैपटॉप........सौ सौ फरमाइसें!! एक अपने बाल बच्चा! छोटी छोटी मांगें तन-तन सी चीजें! भौत भओ तौ पिज्जा, बर्गर, पेस्ट्री, जादा सें जादा कपड़ा उन्ना!! औ हमाई जा हालत है कै जे ना कछू सी चाहना भी आज बड़ी लग रईं, चिंता के भार में भूलई गए हम तौ! अब का मों लै कें जायं सामनें! मन के भाव मुख पै दिखा परे, सकुलाइन ताड़ गईं।

तुरतई हांत आगें कर दए! दो छोटी छोटी डिबियां थीं। उनें देख के प्रोफेसर साब ने पूछी- का है इनमें! सुकलाइन- भूल गए? तुमई तौ ल्याएते मैरज एनीबरसरी पै! लो देखौ, कह कें उननें एक डिबिया खोल कें बढ़ा दई आंगे- सोने की मीनादार झुमकियन की चमक सें हथेली जगमगा गई सुकल जू की! सुकलाइन नें डिबिया बंद करकें सुकल जू की जेब में डार दई! दूसरी बड़ी वाली डब्बी में बढ़ियल-चैनदार घड़ी थी! घड़ी हांत में दै कें बोलीं- जा घड़ी तुम दइयो कन्हैया खों, औ झुमकी हो जें बड़ी बिन्नू खों! जौ तौ भौतई साजौ भओतो, कै जे दोई चीजें काऊ खों दिखाबे को टैमई नईं मिल पाओ, बई दिना तौ हमें दर्द उठ परोतो पथरी कौ! औ दूसरे दिना तौ अपने पापा ऐसेबीमार भए कै, अनहौनी हो कें रई फिर तौ!! मों लौ न देख पाएते...........।

सुकल जू- अरे आंहां रान दो इनें, कितने मन सें ल्याएते तुमाए लानें!! धरौ अपनी जे चीजें! मोंडा मोंड़ियन कौ का है, कछू और सोच लेंगे उनके लानें!!

सुकलाइन- देखौ जू, पापा के बाद पैली बर्सगांठ है बच्चों की! अगर पापा होते, तौ कछू न कछू जरूर देते! अब बे नइयां! अब तौ तुमई हौ बिन्नू औरन के बाप भैया! सो उनें जौ न लगै के आज बाप जिंदा होतो तौ..........! हमाई का, बच्चन के मों पै हंसी खुसी देख कें हमें जई लगहै, जैसे हमईनें पैरौ ओढ़ो होय! अपने आगें अपने बच्चा खुसी रॉयें, इससे जादां हमें और का चइये! चलौ अब! देर न करौ!!

कतई कत सुकलाइन की आंखें भरयाईं! गरौ भरयाओ! भरे गरे सें बोलीं- अरे जब मौज मजे के दिन न रए, तौ जे दिना भी न रैहें। कड़ई जैहें! तौ लों धीरज सें काम लैनें अपन खों!

सुकलाइन कौ मों देख कें सुकल जू कौ जी भारी ओ आओ! सोचन लगे,घर की जनीं इतनी समझदार न होतीं तौ का होतो हमाऔ! कैसें निभा पाउते घर संसार। एन इसी समय ड्राइंग रूम में लगे एलईडी टी.वी. पै आ रओ गाना सुना परो- तेरा साथ है तो, मुझे क्या कमी है, अंधेरों में भी मिल रही रोशनी है, तेरा साथ है तो..............।

****

बच्चों के जनमदिन हंसी खुसी सें मन गए! पहलौ मौका हतो, जब पापा नईं थे, मगर दोऊ आदमन नें बच्चों के मन भारी न हौन दये! बच्चा भी ऐसे बिलमें, कै पापा की याद तक नईं आ पाई उनें! सुकल जू खों जई बात कौ भारी संतोष हतो! आज कितने दिनन बाद उनें तनक अच्छी औ बेखटके की नींद आई! रात के तीसरे पहर अचानक आंख खुल परी! देखो तौ सकुलाइन लोटी लोटी फिरें! मुख में धोती कौ पल्ला!!

आ रा रा रा ऽ ऽ..... कब सें तलफ रईं तुम! बता नईंसकत तीं! काए जू? हम इतने गैर हो गए तुमाए लानें!

कतई कत सुकल जू नें अंकवार में भर लओ जनीं खों! टूटीडार की नाईं जनी उनकी अंकवार में भरभरा गई! सुकल जू नें बैन खों टेर लगाई!

भैया की आवाज पै बड़ी बैन दौरी दौरी आई! सुकल जू- "भाभी खों दर्द उठो है, कौनऊ दवाई धरी का?"
- "हओ भैया!! अबईं ल्या रए!" कहकेंदवाई लैबे दौर गई बैन!

छिन भरे में पानी कौ गिलास औ दवाईयन कौ पैकिट लै बड़ी-बिन्नू आ गईं।सुकल जू नें बैन के हांत सें दोउ चीजें लै लईं। बड़ी बिन्नू अपनी भाबी की जा दसा देख कें रुआंसी हो गई। बोली- भाबी, दवाइयन सें तुरतईं आराम हो जैहै! सबेरौ होतई साथ तुम डॉक्टर के इतै चली जइयो! जल्दी करा लओ चाइये अपरेसन!!

सुकल जू नें दवाई दै तौ दई मगर तुरतईं सुकलाइन खों भौतऊ बड़ी पल्टी भई, सबरी दवाई पल्टी में निकर गई! लस्त पस्त हो रई अपनी जनीं खों देख कें सुकल जू खों हिलोर सी उठी- अपरेसन हो जातो, तौ जा दसा न होती, ऐसी गल्ती कैसें हो गई! हे भगवान! अबदेर नईं करेंगे। भगवान आराम मिल जाए अबै कैसऊं! उननें दुबारा दवाई दई, अबकी बेर उल्टी की भी दै दई! तनकई देर में आराम मिलगओ! सुकलाइन चिमा कें सो गईं!

भोर होतई साथ सुकल जू अपने परोसी डाक्टर साहब के इतै गए। बचपन के संगी साथी थे डाक्टर साब! पूरी बातें सुन कें बोले- यार दिक्कत जा है कै भाभी के गॉल ब्लैडर और किडनियों में स्टोन हैं, ऐसे केस रेयर ही होते हैं हजारों में एक! भाभी के तीन अपरेसन करने पड़ेंगे! कम से कम हफ्तेभर तक नर्सिंग होम में ही रुकना होगा, ढाई तीन लाख तो तैयार ही रक्खो, "ठीक है भैया" कहकें सुकल जू, जैबे के लाने के उठे। डॉक्टर साब ने कई- तुम निश्चिंत रहो, हॉस्पिटल जाने से पहले तुम्हारे घर आऊँगा भाभी को देखने!

"हओ ठीक है!" सुकल जू ने कई।

****

आज कालेज में भी सुकल जू कौ मन नईं लग रओतो! रह रह कें सुकलाइन की दसा याद आ रईती! संगै डाक्टर की चेतावनी जल्दी अपरेसन की! ढाई तीन लाख रूपैया!! एकीएका कुरसी से उठे औ मदन मोहन के चैम्बर खों चल पड़े।

तनकई देर में सुकल जू के संगै मदनमोहन और फाइलें लयँ अर्दली सब जनें गाड़ी में बैठ गए! कालेज सें निकर कें क्षेत्राधिकारी के आफिस तरफीं मुड़ गई गाड़ी।

"साहब, कुलपति जी की मीटिंग में हैं! ढाई बजे तक आयेंगे" क्षेत्राधिकारी के आफिस के बड़े बाबू ने बताई। जा सुन कें सुकल जू मदनमोहन सें बोले, जौ लों साहब आ रए हैं, तौ लों आप बाबू सें कागज पत्तर चैक करवा लो।

मदन मोहन नें दीनता सें कई- बे औरें सब कागजों पर दसकत नईं करन देत! पै हम कोसस कर रए!

सुकल जू- चलो मैं भी चल रहा हूँ! देखता हूँ कैसे नईं

करते साइन................

मदन मोहन– साब, हम लोग करमचारी हैं, आपकी बात दूसरी है, पद–पदवी बारे हौ। हमोंरन की औकातई का है, हाकिम के सामनें! पूंछ लो जे हैं अपने कालेज के करमचारी, पे बिल दसकत करवाबे आएते, आधे से जादा कागजों पै दसकत हो गएते कै इनकौ फीता टूट गओ मास्क कौ, सो साहब रिसा परे! रिसया के डॉटने लगे– पहले मास्क लगा के आओ।'' औ खुद चले गए मीटिंग करबे खों!जौ बिचारौ अधबीचां रै गओ! सो हाकिम सें हमोरें पार नईं पा सकत!

सुकल जू– चलो अब, कागज बढ़ाओ जा कर!

मदनमोहन फाइल लै कैं बड़े बाबू की टेबिल पै गओ उससे कई, इन पै साहब के दसकत होना है!

बड़े बाबू– अरे भाई, आखिरी कागज पर दसकत होते हैं, सो वो तो पहले ही करा गए थे तुम! हर कागज पर साहब के दसकत नहीं होते! ऐसे हर कागज पर दसकत करेंगे तो रोज सैकड़ों प्रोफेसरों के हजारों कागजों पर दसकत ही करते रहेंगे! ले जाओ फाइल अपनी! मदनमोहन नें असहाय हो कें सुकल जू खों देखो, सुकल जू नें इसारे सें उए बायरें बुलाओ, खुदभीतरै गए!, फाइल बड़े बाबू की मेजई पै हती अबै! बे बड़े बाबू सें बोले– देखिये सर, उच्च शिक्षा निदेशक का कार्यालय कहता है– पूरी फाइल पर दस्तखत चाहिये, आप कहते हैं पूरी फाइल पर दसकत नहीं करेंगे। आप लोगों की खींचातानी में आप में से किसी का कुछ नहीं बिगड़ेगा मगर मेरे कॉलेज में कंडोलेंस जरूर हो जायेगी! ऐसी ही विषमताओं से ऊब कर आदमी अपनी जान ले लेता है।''

धमकी बजनदार थी! काम कर गई! बाबू नें लाल कलम सें राइट के निसान बना दये। ठीक ढाई बजे क्षेत्राधिकारी साहब आए! एक प्रोफेसर खों देख के चोंके! राम रहीम भई! कुर्सी पै बैठतईं साथ अर्दली खों हुकुम दओ! हुकुम की तामील में अर्दली के संगै सुकल जू अधिकारी के सामने खड़े हो गए, पीछें पीछें मदनमोहन भी!

सुकल जू ने कई– मैं उच्च शिक्षा निदेशालय गया था, जी.पी.एफ के लिये, वे पूरी फाइल पर आपके दस्तखत चाहते हैं! मेहरबानी करें। क्षेत्राधिकारी ने हामी भरी औ मिनटों में पूरी फाइल पै अपने दसकत कर दए!

बायरें आ कें सुकल जू नें खुद एक एक कागज चैक करो, एक कागज में साइन न हते, बे तुरतईं गए औ साइन करा कें लै आए!

दूसरेदिना उननें मदनमोहन खों संगै लओ औ उच्च शिक्षा निदेशालय की राह लई! उनके कैबे के बाद मदनमोहन ने टैक्सी बुला लईती! सुकल जू नें साफ कै दईती कै– भैया टैक्सी कौ किराऔ भाड़ौ सब आप दइयो! आखिरकार टैक्सी के नाम पै पाँच हजार समेत हमाए पूरे पेंतालिस हजार हैं तुमारे पास। सो मदनमोहन नें टैक्सी कर लईती।

उच्च शिक्षा निदेसक के कार्यालय में नेकचंद पैलऊं सें बैठे थे। इमोंरन खों देख कें बायरें आ गए, बोले फाइल आप मुझे दे दो! घंटे दो घंटे में आपका काम हो जायेगा! चाहें तो बैठ लें या फिर लंच कर आएं।

जौ सुनकें सुकल जू औ मदनमोहन बजार तरपीं कड़ गए! मदनमोहन ने कई – आऔ सर आपखों इतै कौ प्रसिद्ध पोहा खबाएं। भौत बढ़िया बिल्कुल घर की नाईं बनत है! सुकल जू नें हामी भरी! पोहा सादा मगर बढ़िया था। तीस रूपये की एक बड़ी पलेट भर पोहा! सुकल जू सोच कें मुस्करा परे, पिछली बार हजारों का भोजन आज सैकड़ों में नईं 'दहाई' में सिमट गओतो! जा होत अपने पइसा की पीर! वाह रे कलुआ सारे!

कार्यालय के बाहर इंतजारी में साम के पांच बज गएते! नेकचंद बोले– आज तौ अबै लों साहब नईं आए! काम तौ हो गओ, मगर उनकी चिड़िया बैठने हैं अबै! सुन कें सुकल जू नें मजबूती से कई– कौनऊ बात नईंया साहब आज आयं चाय कल! अब तौ हम काम कराकर ही यहाँ से हिलेंगे।''

जा सुन कें तुरतईं बोलो नेकचंद– आरे सर, आप गुस्सा न हों, काम आपका आज ही होगा, साहब तो परिसर में ही रहते हैं!

पल छिन बीत रए थे! सुकल जू नें ठान लईती कै भलाऊँ रुकनें आय, पै काम तौ हम कराकर ही जायेंगे! यो आखिरकार बा घड़ी भी आ गई, जब नेकचंद नें चार लिफाफा पकड़ाए सुकल जू खों, एक उनके लानें, दूसरौ प्रिंसबल के लानें, तीसरौ क्षेत्राधिकारी और चैथौ कोषागार के लानें! फिर बोले– ''सर टाइपिस्ट खों पाँच सौ रूपैया दै दो!'' सुकल जू नें मदनमोहन की तरपीं देखो, मगर मदन आनमान पुतरा की नाईं खड़े थे। सुकल जू नें जेब सें पाँच सौ को नोट निकारो औ टाइपिस्ट की तरपीं बढ़ा दओ!

काम हो गओतो! सुकल जू प्रसन्न थे। टैक्सी बारे खों आवाज दई! सब जनन नें घर की राह पकड़ी!

****

आज अपने विभाग में बैठे सुकल जू चैन की सांस लै रए थे। आज से पैलें पल, छिन, दिन, हफ्ता, पन्द्रइया की पूरी मोहलत कैसी विकल बेचैनी में कड़ी थी! अब तौ लो उनें इस बात की इंतजारी थी कै कबै मदनमोहन आयं, औ कबै बे क्षेत्रीय कार्यालय खों निग परें! पीरियड तौ कभऊं के पढ़ा चुके थे। आखिरकार जब भौत देर हो गई, तब बे खुदईं मदनमोहन खों देखबे के लानें कड़ गए!

मदनमोहन अपने ऑफिस में बुरई तरां से घिरे बैठे थे। इतनों भर नईं अच्छी खासी तू–तू मैं मैं मची थी उतै, सुकल जू खों देखतईं साथ मदनमोहन फुरती सें उठ कें उनके ऐंगर आ कें बोलो– साब, बचालो हमें, जे औरें प्रान खाएं लेत हमाए, इन सबकी फाइलें फंसी हैं निदेसालय में। औ उतै कौ हाल तौ

आप देखई आए हौ! कछु और कैबे-सुनबे कौ मौका नईं दओं लोगन नें। उनमें सें एक बोलो- "हम लोग अपना काम खुद करा लेंगे, तुम तौ हमाए पैसा बापिस करौ! एक नईं दो दो तीन तीन बार तुमनें हजारों लाखों का चूना लगाया है। हमाए पैसा हमारी नजर करौ, नईंतर जेल जैबे खों तैयार रऔ।"

दूसरे नें कई- "जेल तौ तब जैहौ, जब हम तुमें जिंदा छोड़ेंगे! सारे आजकल आज कल करत मईनन निकार दए तैनें! अब या तौ रकम लौटा कें दो, या फिर जे लो गत के" कहतई कहत उसनें मदनमोहन की खोपड़ी पै ऐसौ घूंसा दओ कै मदनमोहन थिर न रै पाओ, समरत समरत आखिरकार भुईं पै गिर परो! अबै एकाद हांत और घलतो, कै सुकल जू ने उनोंरन खों हांत सें बरज कें मदन मोहन खों सहारौ दै कें उठाओ! उठतईं साथ इतनी फुरती सें मदनमोहन बायरें कड़ कें गायब भए, ज्यों गदा के सिर से सींग। भौत ढूढ़ खोज के बाद मिले मगर क्षेत्रीय अधिकारी के यहाँ जाने के लानें तैयार न भए, दीनता सें बोले- साब, उतै न लुवा जाऔ! अब हैई का, आपखों केवल चिट्ठी दैनें, सो दै दइयों, उए देख कें ऑडर हो जैहै टोकन मनी कौ, आडर टाइप करने बारे खों आप पाँच सौ के दो पत्ता पकरा दियो, तुरतईं आपकौ आडर तैयार करा कें, उस पै साहब के साइन करवा कें आप खों दै देगा।

हम चलते जरूर, पै आप तौ देखई रए कै हमाई जान के कितने गाहक लगे हैं! लो अब तौ हम छुट्टी पै चले जायेंगे! मदनमोहन और कछू न कै पाए! प्राचार्य कक्ष कौ अर्दली आ कें बोलो, मदनमोहन तुमें प्रेंसबल साब बुला रए! साब आप खों भी बुलौआ है! सुकल जू सें बोलो अर्दली!

छिन भरे में दोऊ जनें प्रिंसपल के पास पोंच गए! नमस्कार के बाद सुकल जू नें उच्च शिक्षा निदेशक बारी प्रिंसपल की चिट्ठी उनके सामनें कर दई।

प्रिंसपल- अरे! वाह! चमत्कार हो गया, ये तो! चलो भाई बधाई आपको, आपका लोन पास हो गया! लोगों के दो-दो तीन तीन महीने के, किसी किसी के तो दो-दो साल के जी.पी.एफ लोन पड़े हुए हैं मगर आज तक उनका काम ये नहीं करा पाया! क्यों मदन मोहन?

उत्तर में मदन मोहन का काते! कैसें औ किस मुख सें काते कै कितनों की रकम खुद खा कें बैठ गए! धेला भर काम न करा पाए!

प्राचार्य कक्ष सें निकर कें सुकल जू क्षेत्रीय कार्यालय गए! घंटाक में उतै कौ काम हो गओ, भलाऊँ एक हजार खर्च भए, पै टोकन हांत में आ गओ! घड़ी में टैम देखो चार बज रए थे। अबै तौ ट्रेजरी खुली हुइयै! मईं के मईं ट्रेजरी आफिस निकर गए!

ट्रेजरी ऑफिस के बाबू नें टोकन लओ, फोन मिला कें बोलो- सर, मदन मोहन से बात कर लो!

सुकल जू नें उसके हांत से मोबाइल लै लओ बोले- हाँ मदन मोहन, क्या बात है!

मदन मोहन- साब, बाबू खों पाँच हजार रूपैया दै दो, अगर टैम सें पैसा निकरवाउने होंय तौ!

सुकल जू- "ठीक है! रक्खौं फौन"

मारे गुस्सा के सुकल जू कौ मुख लाल भभूका हो गओ! उननें हिसाब लगाओ पूरे सत्तर हजार खर्च हो गएते, अबै लों, औ हांत में सत्तर पैसा तक न आएते! उनकौ धीरज जवाब दै गओ, मदनमोहन खों फौन मिला कें बोले- ये बताओ, इसे किस बात की रिश्वत दूँ? हजार दो हजार नहीं, पूरे पांच हजार! कहाँ से लाऊँ? तुमनें कहीं पर भी एक पैसा नहीं लगाया, हर जगह मुझे आगे कर दिया! अब मुझसे नहीं होगा! पैसा निकलें या न निकलें!!

मदन मोहन- हम आ रए साब, आप परेसान न हो!

सुकल जू- हाँ ठीक है, आओ तुम!

ट्रेजरी आफिस कौ बाबू ठाड़ौ ठाड़ौ सब सुन रओतो!

बोलो- अरे साब, आप भीतर चल कें बैठौ, आपकौ काम कोऊ नई रोक सकत! ल्याऔ आप टोकन दै दो!

ऑफिस के भीतर आ कें सुकल जू नें जा सोच कें कै हर जांगा तौ घूंस खबाइयई है, आखिरी बेर और सई! टोकन के संगै उननें पाँच हजार रुपया औ उच्च शिक्षा निदेशक की उनकी आदेश बारी चिट्ठी भी बाबू खों दै दई, बाबू नें तुरतईं रूपया जेब में डार लए। गौर सें टोकन औ चिट्ठी पढ़न लगो, फिर एकदम सें बोलो- आपकी आदेस बारी चिट्ठी गलत है। पैसा नहीं निकलेगा। आप अपने रुपैया रख लो! कह कें उसनें सुकल जू के दए रूपैया वापिस कर दए!

सुकल जू खों ऐसौ लगो जैसें बरत अंगरा पर गए होंय कान में! खून कौ दौरा तेज हो गओ! धड़कन बढ़ गई, हांत छाती तरपीं चले गए!

माथे पै पसीना की बूंदें निकर परीं! बोले- हे राम! तौ का अब तक की दौड़ धूप बेकार हो गई! अब का करें, हमाए तौ लाख रूपैया खर्चा हो गए! औ बदले में जौ नतीजा!!

उनकीं बिगड़ती हालत देख कें बाबू नें उनें कुर्सी पै बैठारो, अर्दली सें पानी मंगवाओ! बोलो-आप पैलें पानी पी लो, फिर कागज देखौ! सुकल जू नें पानी पिया! तौ लों बाबू नें आदेस कौ कागज दिखा कें कई- देखौ आप, आपके जी.पी.एफ में पचास लाख सें जादा हैं, जो लोन आपने लओ है, उसकी राशि घटाए बगैर उननें बकाया में उतनी ही मूल राशि लिखी, देख लो आप! सुकल जू नें देखी कै वास्तव में आदेश में रकम घटा कें नईं लिखी थी! उननें तुरतईं नेकचंद खों फौन करो, सब बातें सुन कें उसनें कई कै बाबू सें हमाई बात करादो, सुकल जू ने बाबू से बात कराई! दोऊ जनों में खूब गरमागरमी भई!

मगर बातचीत के बाद बाबू नें अपने अर्दली सें आदेश बारी चिट्ठी में रकम घटवा कें लिखवा दई! फिर सुकल जू सें कई- आपकी हालत देख कें, आपकौ काम कर दओ! अर्दली खों बे पइसा दै दो!

सुकल जू ने चुपचाप बे पैसा जौन बाबू नें वापिस कर दएते, अर्दली खों दै दए! उनके कानों में बाबू की आवाज सुना परी।"आज या कल सबेरे आपके एकाउंट में रकम आ जायेगी।"

जा सुनकें सुकल जू के जी में जी आओ! चलौ मेहनत सकारथ भई! उननें सोची और निश्चिंत हो कें घर की रस्ता लई!

तनकई देर में मोबाइल में बैंक सें मैसिज आ गओ! जी.पी.एफ की रकम आ गईती! राहत की भौत गहरी सांस लई सुकल जू नें!

संजा बेरा नेकचंद कौ फौन आओ- शुक्ल जी, आपका पैसा आ गया है एकाउंट में!

सुकल जू- हाँ हाँ, आ गया है!

नेकचंद- उस समय मैं कुछ नहीं बोला था बाबू से, अरे आप ही सोचिये, जब तक रकम ट्रांसफर नहीं हुई थी, तब तक हम क्योंकर घटा सकते थे? घटाना तो कोषागार वालों को होता है, क्योंकि वही लोग पैसा ट्रांसफर करते हैं...... और हाँ आपके बाबू की शिकायत ऊपर तक हो गई है! इतना भर नहीं आपके क्षेत्रीय अधिकारी के सहायक की भी शिकायत पहुँची है यहाँ!

दोनों का तबादला इतनी दूर जंगली एरिया में हुआ है कि जीवन भर रोयेंगे अब! खुद मैंने आदेश ईमेल कराया है यहाँ से!

नेकचंद की बातें सुन कें सुकल जू नें मनईमन में सोची-सारे हरौ, तुमोंरन नें जैसें हमें खून के अंसुआ रुबाओ, ऊसई तुमौरें भी रो अब जीवन भर! ऊपर बारे के इतै देर तौ है, पै अंधेर नईयां! ऊपर बारे की लाठी में आवाज भलाऊँ न होयं, पै घलत भौत जोर सें है!

-128/369 वाई-वन ब्लॉक, किदवई नगर, कानपुर, उ0प्र0
मोबाइल-9415537644 卐

लरका कौ बाप

-शिवकुमार गुप्त

कितऊँ ढूढ़नें नईंयाँ, जाँ ताँ मिलजै अपने आप।
सबसें जादा कोऊ दुखी है, तौ लरका कौ बाप।।
एक जनन कें दो बिन्नूं तीं, लरका खों फिर रय ते।
एक चोंतरा बाकी नईं रव, पूजन जितै न गय ते।।
हमनें कइ कै काय फलानें, बिटियाँ दो ठौ घर में।
दो कुल में उजयारौ कर हैं, काय फिरत चक्कर में।।
बे बोले कै हमखों चाने, वंस चलावे बारौ।
पुरखन की बखरी में चाने, दिया जलावे बारौ।।
अच्छौ कटै बुढ़ापौ, लरका दे है हमें सहारौ।
जियत देयगो, और मरे पै पानीं देवे बारौ।।
एक दिना दौरे में मिल गय, करतन हमें विलाप।
सबसें जादा कोऊ दुखी है, तो लरका कौ बाप।।......
जानें कां सें पुन्न उदय भय, इक बिटुआ जू हो गये।
खूबई लाड़ लड़ेंते, रज्जू-ब्याव लाक अब हो गये।।
सौ लरकन पै नब्बे बिटियाँ, दस तौ रडुआ रानें।
जोंन गाँव में नजर डार लेव, म्यांद कड़े मिल जानें।।
जब पढ़वे की बेरा आई, खूबई मस्ती मारी।
आगे खों नईं चेतौ, ईकी मती गई ती मारी।।
अपनी, घर की, कुल की, रज्जू तनकई सोची होती।
तौ तोरी किस्मत न भैया, इत्ती-पोची होती।।
दद्दा-नातेदारन सें कत, ईकौ ब्याव करा दो।
घर बस जावै ई लरका कौ, कऊँ भाँवर परवा दो।।
ब्याव उनईं के हो रय, जिनके लरका नौकर हो गये।
या फिर जिनके घरै गुदगुदी, उनके साके हो रये।।
हे परमेसुर लगन करा दो, घर भर कर रव जाप।
सबसें जादा कोऊ दुखी है, तौ लरका कौ बाप।।......
अकल कड़ी जिनके लरकन में, उनके भर गये गल्ला।
बंडा भरे नोट गिनवा लय, चौतरफा है-हल्ला।
मिली बड़े घर की बहु, बाखों एकउ काम न करनें।
हीट-पीट हो जहयो बाखों, सींक कितऊँ नई धरनें।।
बउ कौ हाल तको सासो नें, तनकई तौ कठयानी।
बिटिया हती बड़े घर की, सो करिया सी सन्नानी।।
देखौ अम्मा अब कइ सो कइ, आगें कछू न कइयो।
हमखों काम बाई न समझौ, अपनी हद में रइयो।
लकवा लगो जीभ खों, सासो रै गईं मुड़ी पकड़ कें।
कब लों गुस्सा दबतो उनकौ, इक दिन भईं निखर कें।।
दोई पाटन के बींचा पिसर जौ बेचारौ-बाप।
कितऊँ ढूंढनें नईंया, जां तों मिलजें अपने आप।।......
जैसेंइ अँखिया चार भईं, सो लरका भयो परायौ।
समझाने खों बींग बता कें, बौ उल्टौ-गुर्रायौ।
सास-ससुर के संगै देखौ, बहु कौ जी उमछानों।
भई दूसरी विदा बना लव, अपनों नयौ ठिकानों।।
खावे, पढ़वे, पैरावे में बिटियन कौ हक मारौ।
जोई हमारे कुल कौ दीपक, जौई करै-उजयारौ।।
बहु-लरका नाती-पोतन के देखे-हमनें साके।
मों न देख पांय काऊ के, ऐसे बँध गये नाके।।
ऐसे भये कुलतार, जियत में हमरे पिन्डु परा दये।
मरवे पै का देंय, जियत में लोटा खों तरसा गये।
उनके बोल हिया पै परतई घुरवा जैसी टाप।
कितऊँ ढूढंनें नईंयां, जां तां मिलजें अपने आप।।.........
धोके में कौनऊं कारन सें, अगर दुलैया मर गई।
तौ दहेज हत्या ठुक जानें, सातऊ, पुस्तें तर गई।
घर भर के संगै, नातेदारन के नाम लिखा दय।
जिनके नाम लिखे वे सबरे, भीतर पिड़े दिखा रये।।
धन्न हमारे भाग, बहु ने चारऊ धाम करा दये।
कौन जनम के पाप हते कै, सबरे करम करा दये।।
कानीभौद बनीं डुकरन खों, बृद्धाश्रम कहलातई।
कछू बिचारे बाप-मताई, उतै पिड़ैं-बतयातई।।
जी लरका के लानें, हमने मूढ़ जोंइया-जोरी।
घर से हमें काड़तन, उखों दया न आई थोरी।।
कौन घरी में हमनें सोची, लरका हमखों चानें।
घर के महल छूट जें, जे घरबूला बनें-ठिकानें।।
नाव सुनत लरकन कौ, दद्दा खों चढ़याई ताप।
सबसें जादा कोऊ दुखी है, तौ लरका कौ बाप।।......

-निवाड़ी (म.प्र.)मोबा0-7566277790 卐

बुंदेली 'नर' और उसका अर्थ विकास

-डॉ. राकेश नारायण द्विवेदी

बुंदेली में अब भी कई शब्द ऐसे प्रचलित हैं, जिनकी संगति न केवल वैदिक वाङ्मय से बैठती है, अपितु बौद्ध और यहाँ तक कि संगम या तमिल साहित्य से भी उनका मेल बनता है।

बुंदेली भाषा का प्रयोग क्षेत्र भारत के उत्तरी और दक्षिणी भागों के मध्य ही नहीं, पूर्वी और पश्चिमी भूभाग के बीच भी अवस्थित है। भारत के उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों में आर्य और द्रविड़ संस्कृति का विभाजन रहा है। बुन्देलखण्ड इन दोनों के बीच में होने से उत्तरी और पूर्वी भाग की संस्कृत, प्राकृत, पाली और पुरानी हिंदी की शब्दावली से जुड़ा रहा है। बुंदेली में कतिपय शब्द-पद ऐसे भी मिलते हैं, जिनका प्रयोग-क्षेत्र इस अंचल से बाहर वह क्षेत्र भी है, जिसे वैदिक संस्कृति में भी नहीं गिन सकते। इस आलेख में नर शब्द की अर्थ चर्चा करेंगे।

'नर' की अर्थव्याप्ति बहुत अधिक है। कोई शब्द अपने एक अर्थ से होता हुआ कहाँ तक पहुँच जाएगा, इसका अनुमान भी लगाना मुश्किल है। नर शब्द का प्रचलित हिंदी अर्थ व्यक्ति है, जिसमे स्त्री, पुरुष और उभयलिंगी मनुष्य सम्मिलित हैं, पर बुंदेली में नर का एक अर्थ पेट या उदर है। नर भरना मुहावरा यहाँ पेट भरने की व्यंजना के अर्थ में प्रयुक्त होता है, अन्न द्वारा भूख शांत करने के लिए नहीं। किसी शब्द का अर्थ विकास उन शब्दों के पर्यायवाची शब्दों में मिलता है, पर कई बार देखते हैं कि किसी शब्द के अनेकार्थ होते हैं। उन अर्थों में परस्पर समानता नहीं मिलती। उनमें संगति नहीं दिखती, उसका कारण है कि वह शब्द प्रसंग विशेष में प्रयुक्त हुआ, पर उसका उद्गम भाव कुछ अन्य था। पर्यायवाची शब्द वैयाकरणों ने अपनी सुविधा के लिए तय किये हैं, पर कोई शब्द दूसरे शब्द का पर्याय नहीं होता। प्रत्येक शब्द एक विशिष्ट भावदशा और क्रिया सम्पादन के लिए प्रयुक्त होता है, उसका समानार्थी किसी अन्य शब्द को मान लिया जाता है, पर वह ठीक-ठीक वही नहीं होता, जिसके लिए वह पहली बार प्रयुक्त होकर रूढ़ हुआ है। भाव सागर में जब व्यक्ति गोते लगाता है तो उसे व्यक्त करने के लिए शब्द बौने पड़ने लगते हैं। जिस व्यक्ति ने जितनी भावदशाओं को व्यक्त कर लिया, वह उतना बड़ा साहित्यकार बन गया। सम्पूर्ण भावदशाओं को व्यक्त नहीं किया जा सकता। साहित्य में इन भावों को पूरी तरह शब्दबद्ध न कर पाने के कारण विभिन्न ललित कलाएं विकसित हुई, चित्रकला, मूर्तिकला इत्यादि। इन कलाओं में भी जब यह भावालोडन बना ही रहा तो संगीत और वाद्य से भी उसे जानने समझने का प्रयत्न किया गया, पर फिर भी उसे केवल अवगाहन ही किया जा सका है।

नर का अर्थ व्यक्ति हिंदी में है, पर बुंदेली में यह कभी न मिटने वाली क्षुधा को शांत करने वाला उदर है। नर का अर्थ व्यक्ति ग्रहण करने के लिए हमे बुंदेली भाषा के इस शब्द की गहराई में जाना होगा। बुंदेली में एक शब्द नरा भी है, जो गर्भस्थ शिशु और प्रसूता मां की नाभियों से जुड़ा रहता है। जनन के समय इसे काटकर जच्चा और बच्चा को पृथक किया जाता है। गर्भनाल ही बच्चे के विकास को प्रेरित करती है। इसी की वजह से बच्चा माँ के गर्भ में जीवित रहता है। यह सुरक्षा के साथ-साथ पोषण देने का भी काम करती है। यह बच्चे को कई तरह के संकमण से सुरक्षित रखने का काम करती है। गर्भनाल माँ और बच्चे को जोड़ने का काम करती है। माँ जो कुछ भी खाती है, आहार नाल के माध्यम से उसका पोषण बच्चे को भी मिलता है। गर्भनाल बच्चे के लिए फिल्टर की तरह भी काम करती है। यह उस तक सिर्फ पोषण पहुँचाती है और विषैले पदार्थों को भ्रूण तक नहीं जाने देती। नरा काटने की प्रक्रिया यहाँ सम्पादित की जाती है। गर्भावस्था में बच्चे की गर्भनाल ही उसकी लाइफलाइन होती है जिसकी मदद से बच्चे को सभी पोषक तत्व और ऑक्सीजन मिलता है। ये गर्भाशय में आपको और बच्चे को छठे सप्ताह से बच्चे के जन्म तक जोड़े रखता है। बच्चे के कुल वजन का छठा हिस्सा इसी गर्भनाल का होता है। नरा गाड़ना एक और बुंदेली मुहावरा है, जिससे व्यक्ति के मूल निवासी होने का बोध होता है। कोई व्यक्ति जहाँ जन्म लेगा, वहाँ का निवासी स्वाभाविक रूप में होगा ही, अब आवागमन बढ़ने से यह मुहावरा अर्थ छवि खो रहा है।

यहाँ भी नर का अर्थ व्यक्ति पूरी तरह स्पष्ट नहीं होता है। नर का एक अर्थ जल है, नार भी उसे कहते हैं। नारायण (Narayan) नार + अयन। नारायण में संधि का प्रकार दीर्घ संधि है।

'जल' एक बहुश्रुत शाश्वत वाक्य 'जन्मात् लयपर्यंतं यत् स्थितं तज्जलम' का प्रत्याहार या 'शॉर्टफॉर्म' है। अर्थात जो वस्तु इस संसार के जन्म से लेकर उसके समाप्त होने तक मौजूद रहे, वह 'जल' कहलाती है। 'ज' अर्थात् जन्म और 'ल'अर्थात् 'लय' (अथवा प्रकृति में लीन हो जाना) इन दो क्रियाओं का वाचक जल कहलाता है।

मनुस्मृति में लिखा है कि 'नर' परमात्मा का नाम है। परमात्मा से सबसे पहले उत्पन्न होने का कारण जल को 'नार' कहते हैं। महाभारत के एक श्लोक के भाष्य में कहा गया है कि नर नाम है आत्मा या परमात्मा का। यह 'नार' कारणस्वरूप होकर सर्वत्र व्याप्त है इससे परमात्मा का नाम नारायण हुआ। कई जगह ऐसा भी लिखा है कि किसी मन्वतंर में विष्णु 'नर' नामक ऋषि के पुत्र हुए थे जिससे उनका नाम नारायण पड़ा। ब्रह्मवैवर्त आदि पुराणों में और भी कई प्रकार की व्युत्पत्तियाँ बतलाई गई हैं। तैत्तिरीय आरण्यक में नारायण की गायत्री है जो इस प्रकार है—

'नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्'। यजुर्वेद के पुरुषसूक्त और उत्तर नारायण सूक्त तथा

शतपथ ब्राह्मण (16 / 6 / 2 / 1) और शांखायन श्रौत सूत्र (16 / 13 / 1) में नारायण शब्द विष्णु या प्रथम पुरुष के अर्थ में आया है। जैन लोग नरनारायण को 9 वासुदेवों में से आठवाँ वासुदेव कहते हैं ।

जल को 'नीर' या 'नर' से जाना जाता है और भगवान विष्णु पानी में रहते है तो उनका नाम नारायण बना। नारायण क मतलब है पानी के अंदर रहने वाले भगवान।

पानी का जन्म भगवान विष्णु के पैरों से हुआ है. पानी को नीर या नर भी कहा जाता है. भगवान विष्णु भी जल में ही निवास करते हैं. इसलिए नर शब्द से उनका नारायण नाम पड़ा है. इसका अर्थ ये है कि पानी में भगवान निवास करते हैं। इसीलिए भगवान विष्णु को उनके भक्त 'नारायण' नाम से बुलाते हैं। नारायण का शाब्दिक अर्थ : नर के चलने के लिए दिखाया गया मार्ग (orbit) होता है।

चूंकि सनातन धर्म में ईश्वर को परम आत्मा माना गया है, और सभी मनुष्यों को उसी एक परम पिता की संतान, अत: उस ईश्वर के बताये रास्ते पर चलना ही सब मनुष्यों का ध्येय बनता है। इसलिए परमात्मा के लिए भी नारायण शब्द का प्रयोग करते हैं।

नारासु अयनं,यस्य स: नारायण:। जल में है घर जिसका, अर्थात् नारायण-क्षीरशायी श्री हरि विष्णु। ईश्वर,भगवान, परमात्मा।

जल पीने से भूख भी शान्त हो जाती है; प्यासे मनुष्य की प्यास अन्न से नहीं बुझती। हमारे शरीर मे तीन चौथाई हिस्सा जल ही है, उसी प्रकार भूमण्डल का तीन चौथाई हिस्सा भी जलाप्लावित है। यह अलग बात है कि उसमें से 97.5 प्रतिशत जल पीने योग्य नहीं है। सब प्राणी जल से पैदा होते हैं और जल से ही जीवन धारण करते हैं और उसी में लय हो जाते हैं। कबीर कहते हैं-

जल में कुंभ कुंभ में जल है बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ जल जलहिं समाना यह तत कथ्यो ग्यानी।

वेदों में वर्णित है-

अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा।।
अग्निं च विश्वशम्भुवमापश्च विश्वभेषजी:।।

मुझ (मंत्रदृष्टा ऋषि) से सोमदेव ने कहा है कि जल में (जलसमूह में) सभी औषधियाँ समाहित हैं। जल में ही सर्व सुख प्रदायक अग्नि तत्व समाहित है। सभी औषधियाँ जलों से ही प्राप्त होती हैं।

आप: पृणीत भेषजं वरुथं तन्वेऽमम।।
ज्योक् च सूर्यं दृशे ।।

हे जल समूह! जीवनरक्षक औषधियों को हमारे शरीर में स्थित करें, जिससे हम निरोग होकर चिरकाल तक सूर्यदेव का दर्शन करते रहें।।

जल' की उत्पत्ति के संबंध में एक अन्य पुरातन-अवधारणा भी विचारणीय है। लगभग सभी पुराणों और स्मृतियों में यह श्लोक (थोड़े-बहुत पाठभेद से) दिया रहता है जो इस अर्थ का वाचक है कि जल की उत्पत्ति 'नर' (पुरुष = परब्रह्म)से हुई है अत: उसका (अपत्य रूप में) प्राचीन नाम 'नार' है, चूंकि वह (नर) 'नार' में ही निवास करता है, अत: उस नर को 'नारायण' कहते हैं-

आपो नारा इति प्रोक्ता, आपो वै नरसूनव:।
अयनं तस्य ता: पूर्वं तेन नारायण: स्मृत:।।

-ब्रह्मपुराण/अ-1/श्लोक-38

विष्णुपुराण के अनुसार इस समग्र संसार के सृष्टि कर्ता 'ब्रह्मा' का सबसे पहला नाम नारायण है। दूसरे शब्दों में में भगवान का 'जलमय रूप' ही इस संसार की उत्पत्ति का कारण है-

जल रूपेण हि हरि: सोमो वरूण उत्तम:।
अग्नीषोममयं विश्वं विष्णुरापस्तु कारणम्।।

-अग्निपुराण /अ.-64/श्लोक 1-2

'हरिवंश पुराण' भी इसकी पुष्टि करता है कि 'आप:' सृष्टिकर्ता ब्रह्मा हैं। 'हरिवंश' में कहा गया है कि स्वयंभू भगवान् नारायण ने नाना प्रकार की प्रजा उत्पन्न करने की इच्छा से सर्वप्रथम 'जल' की ही सृष्टि की। फिर उस जल में अपनी शक्ति का आधीन किया जिससे एक बहुत बड़ा 'हिरण्यमय-अण्ड' प्रकट हुआ। वह अण्ड दीर्घकाल तक जल में स्थित रहा। उसी में ब्रह्माजी प्रकट हुए-

तत: स्वयंभूर्भगवान् सिसृक्षुर्विविधा: प्रजा:।
अप एव ससर्जादौ तासु वीर्यमवासृजत्।।35।।
हिरण्य वर्णभभवत् तदण्डमुदकेशयम।
तत्रजज्ञे स्वयं ब्रह्मा स्वयंभूरिति न: श्रुतम्।। 37।।

इस 'हिरण्यमय अण्ड' के दो खण्ड हो गये। ऊपर का खण्ड 'द्युलोक' कहलाया और नीचे का 'भूलोक'। दोनों के बीच का खाली भाग 'आकाश' कहलाया। स्वयं ब्रह्माजी 'आपव' कहलाये-

'उच्चावचानि भूतानि गात्रेभ्यस्तस्य ज्ञज्ञिरे।
आपवस्य प्रजासर्गे सृजतो ही प्रजापते:।। 49।।'

अर्थात्- इस प्रकार प्रजा की सृष्टि रचते हुए उन 'आपव' (अर्थात् जल में प्रकट हुए) प्रजापति ब्रह्मा के अंगों में से उच्च तथा साधारण श्रेणी के बहुत से प्राणी प्रकट हुए।

ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र का रसमय रूप आदि से अंत तक जो परब्रह्म है, जिसे तत् कहा गया, उसे आप कहा गया। आप सम्बोधन में वह जल ही आत्मतत्व को व्यक्त कर रहा है।
-हरिवंश/हरिवंश पर्व/प्रथम अध्याय

'जल' केवल 'नारायण' ही नहीं, ब्रह्मा विष्णु और महेश (रूद्र) तीनों है।

'वायु पुराण' के अनुसार जल शिव की अष्टमूर्तियों में से एक है। दूसरे शब्दों में 'रूद्र' की उपासना के लिए जो आठ प्रतीक निर्धारित हैं उनमें से एक जल है। जल का कोई रंग नहीं होता। वह इंद्रधनुष के सभी रंगों को धारण कर सकता है। उसका कोई आकार नहीं, आवाज भी नहीं और गति भी नहीं।

सिद्ध और नाथ परम्परा में भोगनाथ के नाम से विख्यात चीन के लाओत्से ने जल की तरह व्यक्ति को रहने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा है -

The supreme good is like water, which nourishes all things without trying to. It is content with the low places that people disdain. Thus it is like the Tao. In dwelling, live close to the ground. In thinking, keep to the simple. In conflict, be fair and generous. In governing, don't try to control. In work, do what you enjoy. In family life, be completely present. When you are content to be simply yourself and don't compare or compete, everybody will respect you.

बिहारी ने इसे एक सुंदर दोहे में इस प्रकार कहा है-

नर की अरु नर नीर की एकै गति कर जोइ।
जेतो नीचे ह्वै चले तेतो ऊँचे होइ।—बिहारी

आदिवासियों की एक लोककथा में आता है कि सृष्टि के आरंभ में केवल माता, रात्रि और जल ही था। जल ही सब सभ्यताओं और संस्कृतियों का विभाजक तत्व है। नदी के ऊपर या नदी के नीचे, इस प्रकार लोगों को बांटा जाता रहा। किस नदी से हो, यह पहचान व्यक्ति की रही। अपनी नदी या जल के प्रति सच्चे रहे तो अंततः समुद्र में मिल ही जायेंगे। दो भिन्न जल जब मिलते हैं तो प्रयाग बनता है, इसी से हमने भिन्न गोत्रों में विवाह करना सीखा है। मरने के बाद भी वैतरणी नदी का प्रतीक हमने बनाया, जो चाहे कहीं मौजूद न हो, पर जल तत्व ही हमारी मरणोत्तर गति के साधनो में है।

गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है-

छुद्र नदीं भरि चलीं तोराई। जस थोरेहुँ धन खल इतराई॥
भूमि परत भा ढाबर पानी। जनु जीवहि माया लपटानी।।

भावार्थ- छोटी नदियाँ भरकर (किनारों को) तुड़ाती हुई चलीं, जैसे थोड़े धन से भी दुष्ट इतरा जाते हैं। (मर्यादा का त्याग कर देते हैं)। पृथ्वी पर पड़ते ही पानी गंदला हो गया है, जैसे शुद्ध जीव के माया लिपट गई हो।

समिटि समिटि जल भरहिं तलावा।
जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा॥
सरिता जल जलनिधि महुँ जाई।
होइ अचल जिमि जिव हरि पाई॥

भावार्थ : जल एकत्र हो-होकर तालाबों में भर रहा है, जैसे सद्गुण (एक-एककर) सज्जन के पास चले आते हैं। नदी का जल समुद्र में जाकर वैसे ही स्थिर हो जाता है, जैसे जीव श्री हरि को पाकर अचल (आवागमन से मुक्त) हो जाता है। स्कॉटलैंड में नर का अर्थ प्रसन्नता, कोरिया में देश, मंगोलिया में सूर्य तो कुर्दिस्तान में इसका अर्थ अनार वृक्ष होता है। जापान के मध्य भूभाग में, होन्शु द्वीप स्थित है, वहाँ नर नामक एक शहर है, यह जापान की पहली राजधानी (710-784) रहा। जापानी बौद्धों का यह महत्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ के ऐतिहासिक स्मारक को यूनेस्को द्वारा संरक्षित स्मारकों में सम्मिलित किया गया है। सायोनारा एक फिल्मी गीत में आया शब्द है, जिसका अर्थ अलविदा होता है। अमेरिका में नर बहुत लोकप्रिय शिशु नाम है।

वराहमिहिर की वृहत्संहिता और बाल रामायण में नर का अर्थ हीरो या नायक से लिया गया है। नर से ही विकसित होकर नीर बना है, जल के अर्थ में इसे प्रयुक्त किया जाता है। नर्दा (जलस्त्रोत), नरेटी (जल पूरित नारियल का बाह्य भाग), नर्र्याबो (जल की उग्रता के कारण चीत्कार का अर्थ), नरुवा (डंठल) इत्यादि शब्दों में जल की विभिन्न गतियों के कारण अर्थ उद्भासित हो रहे हैं। इस प्रकार नर का अर्थ जब जल से होते हुए व्यक्ति तक पहुँचता है तो इसमें अर्थ की इयत्ता की सीमा नहीं रहती, उसी तरह जैसे 'मनुष्य' के अर्थ में असीम सौंदर्यबोध प्रकट होता है। नर और नारायण की युति भी यूं ही नहीं हुई। भगवान के चौबीस अवतारों में से यह एक अवतार हैं, जो बद्रीनाथ हिमालय में अगल बगल के दो पहाड़ों के रूप में मान्य हैं। करोड़ों वर्ष पहले आज के हिमालय की जगह समुद्र था। सब मिलाकर हिंदी में नर का अर्थ जल से होते हुए व्यक्ति तक विकसित हुआ है।

-प्राचार्य, नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ललितपुर 卐

आम

-अभिनन्दन गोइल

बसंत पाँचे आबे के पैलेसेईं आम के पेड़ बौरान लगत। बौर सें लदे-फदे आम के पेड़ देखतनईं आम के सौकीन मान्सन के हिये में पीरीं पीरीं रसीलीं अमियन खों ओंठन सें दबावे की मन्सा हिलोरें लेन लगत। आम के फरबे औ पकवे की बाठ में दिल में ऐसी हूक रै रै कें उठत, जैसी तौ 'मेघदूतम' के यक्ष खों ना उठी हुइयै।

संस्कृत में आम खों आम्र कत हैं। जनबन नें कई है कै आम्र शब्द अम्र या अम्ल शब्द कौ रूपांतर आय। अम्र कौ मतलब 'खट्टौ' होत है। आम वैदिक काल में अपनी खटाई के लाने जानौ जात तो। वैदिक आर्यन ने ई फल की जादां कदर नईं कर पाई। ऊ समै ई के पेड़ हिमालै के जंगलन में होत ते औ इनमें हल्के हल्के खट्टे फल फरत ते । कजन की दार पके तौऊ खट्टे रत ते। हाँ, जब जे पेड़ बौरात ते तौ असफेर भर खों मोहित कर देत ते। ऐसी कानात है कै आम के बौर मदन देवता के खास बाण आएँ। जब आम के पेड़ गंगा के मैदानन में उतरे तौ देस की माटी ने चमत्कार कर दऔ। हौलें हौलें इनकौ काया कलप हो गवो। फल बड़े बड़े हौन लगे। कछू डार पै पकन लगे तौ कछू खों पाल लगाकें मान्स पकाउन लगे। कलमी आम की नसले काड़ीं गईं। ई तरा सें जौ धीरें धीरें फलन कौ सिरमौर हो गवो।

वात्स्यायन के कामसूत्र में तौ आम औ माधवी लता के विवाहोत्सव कौ बड़ौ मनोरंजक बरनन है। वात्स्यायन के जमाने में मिल-जुर कें आम के नए टिकोरन खों खावे कौ उत्सव होत तो, जियै उनने ' नवाम्रखादनिका' नाव दवो तो।

-टीकमगढ़ म.प्र. 卐

बुंदेली फिल्मों में किसान जीवन

– **नन्दकिशोर पटेल**

बुंदेलखण्ड भौतिक और जलवायुविक दृष्टि से विषम प्रकृति का क्षेत्र है। यहां की मृदा मिश्रित है, जो कम उपजाऊ है। यहां कभी अतिवृष्टि और कभी अल्पवृष्टि की स्थितियां बनती हैं। कृषि यहां आज भी प्रमुख उद्योग है। इस कारण यहां प्रचच्छन्न बेरोजगारी देखने को मिलती है। यहां द्वितीय और तृतीयक क्षेत्रों का विकास पर्याप्त नहीं हुआ। यहां के किसानों को विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है। साथ ही खरपतवार, जंगली जानवरों-पशुओं का आक्रमण तथा कीट प्रकोप इत्यादि के चलते प्रायः फसलें नष्ट हो जाया करतीं है। कम उपजाऊ भूमि, जोत का आकार छोटा, अधिक लागत आदि के कारण यहां के किसान गरीबी, लाचारी, और ऋणग्रस्तता का जीवन जीने के लिए मजबूर होते हैं। कई बार तो वह जीवन संग्राम हार कर आत्महत्या जैसा कदम उठा लेता है।

पिछले कुछ वर्षों से बुंदेलखण्ड में बुंदेली फिल्मों का अविर्भाव हुआ है। यहां निर्मित बुंदेली फिल्मों में किसान जनजीवन प्रमुखता से अभिनीत हुआ है ''साहित्य समाज का दर्पण है।'' फिल्म साहित्य की दृश्य-श्रव्य विधा है। इस प्रकार सिनेमा भी समाज का दर्पण हुआ। जिसमें समाज में घटित घटनाओं का अभिनय बखूबी हो रहा है। बुंदेली फिल्मों में बुंदेलखण्ड का किसान जीवन की गंभीरता और व्यापकता के साथ चित्रित हो रहा है। यहां लगभग एक दर्जन से ज्यादा बुंदेली फिल्में प्रदर्शित हो चुकीं है। इनमें से अधिकांश फिल्में किसान जीवन की त्रासदी को गंभीर मानवीय विडम्बना के रूप में देखी जा सकतीं है और इस त्रासदी का उत्तरदायित्व यहां के नेतृत्व, जमींदार, तथा सेठ-साहूकार तथा व्यक्ति इतर पर्यावरणीय व जलवायुविक परिस्थितियों पर है। यहां निर्मित लगभग सभी फिल्में यथार्थपरक हैं। जिस प्रकार शास्त्र लोक से पोषित होता है इसी तरह आदर्श यथार्थ से। अभी बुंदेली फिल्में यथार्थ की भूमि पर हैं पर आदर्श की ओर अग्रसर हो रहीं है। आदर्श श्रेष्ठता, संस्कारों और मूल्यों की ओर अवलंबित होता है। मनुष्य का सांस्कृतिक विकास उच्चतम मूल्यों से होता है। यहां तक पहुंचने का रास्ता यथार्थ से ही प्रारंभ होता है।

बुंदेलखण्ड के किसान जीवन पर आधारित पहली फिल्म 'किसान' २०१६ में प्रदर्शित हुई। इसके निर्देशक और मुख्य पात्र छतरपुर निवासी नितिन पटैरिया है। इस फिल्म में यह दिखाया गया है कि संकट के समय जब किसान भूख और कर्ज से परेशान होकर आत्महत्या कर लेते है, तब गांव के बच्चों पर इन घटनाओं से भयभीत किसान का पुत्र 'भूरा' स्वप्न में उस रस्सी को छुपाकर रख देता है जिससे उसे अपने पिता द्वारा फांसी लगाने का आभास होता है। बाल मन पर ऐसी घटनाओं का प्रभाव भय और चिंता की लकीरों के साथ-साथ कुंठा व मानसिक विक्षिप्तता के रूप में पड़ता है।

किसपुरा जिला दमोह निवासी जित्तू खरे बादल द्वारा निर्देशित फिल्म 'किसान का कर्ज' वर्ष २०१८ में प्रदर्शित होती है। इस फिल्म को देखकर विमल रॉय की बालीबुड फिल्म 'दो बीघा जमीन' याद आती है। 'दो बीघा जमीन' फिल्म की तरह इस फिल्म में भी किसान साहूकार का कर्ज आजीवन चुका नहीं पाता। दोनों ही फिल्मों में साहूकार किसानों पर कई गुना ब्याज लगाते है। 'किसान का कर्ज' फिल्म में क्षेत्र के नेता, व सरपंच किसान रामदीन का आर्थिक सुरक्षा का झूठा आश्वासन देते हैं। इस फिल्म में किसान का जीवन सामाजिक रूप से भी सुरक्षित नहीं है। साहूकार का बिगड़ैल एकलौता पुत्र किसान की पुत्री पर बुरी नजर डालता है। किसान उसे फटकारते हुए कहता है ''कर्ज लिया है इज्जत नहीं बेची।'' उसकी फटकार सुनकर वह दबे पांव भाग जाता है। किसान स्वाभिमानी है। मेहनत की कमाई से पेट भरता है। वह दाता है, शोषक नहीं, पर सामाजिक व आर्थिक ढांचे की चक्की में दिन रात पिसता है। उधर साहूकार किसान की पत्नी से अनैतिक आग्रह करता है। किसान पत्नी-पिता उसे फटकारती है तो, उसका काइयांपन हद में आ जाता है।

'किसान का कर्ज' फिल्म की शुरूआत 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान के एक आयोजन से होता है। इसमें क्षेत्रीय नेता, ग्राम प्रधान और साहूकार सहित ग्रामवासियों के बीच किसान रामदीन गर्भस्थ बेटी की कलम कथा का हृदय विदारक गीत गाता है –

बेटी है वरदान, है भारत की शान
उड़ जाय चिरैया, मायके में मेहमान।
मेरे बाबुल न मारो मुझे, मुझे धरती पै आने दे।
चली जाऊंगी जग से में, मां तेरे दर्शन तो पाने दे।।

इस गीत के साधारणीकरण का प्रभाव उपस्थित जनसमुदाय की आंखों में आंसू दे जाता है। सरकारों के प्रयासों, शिक्षा तथा जागरूकता के चलते महिलाओं को उनके अधिकार मिल रहे हैं। पर अभी भी कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य आपराधिक घटनाएं समाज में हो जाती हैं जो चिन्तनीय हैं।

किसान रामदीन आर्थिक तंगी से जूझ रहा है। खेती की लागत के लिए धन की व्यवस्था को लेकर चिंतित है। भारत का किसान जो सबका पेट भरता है उसे कहीं से भी सहयोग की आस नहीं है। साहूकार दस गुना ब्याज पर ऋण देने के लिए तैयार होता है। किसान रामदीन ने जो फसल खून-पसीने से सींची है, वह बहुत अच्छी होती है। मानों उसकी प्रसन्नता की फसल लहलहा उठी है। एक दिन खड़ी फसल पर ओलावृष्टि हो जाती है। रामदीन पर दुःख का पहाड़ टूट पड़ता है। गोदान के होरी की तरह रामदीन की मनुष्य का प्रकोप, दैव का प्रकोप तथा व्यवस्था का हाल सब कुछ झेलता है। जीवन संग्राम में रामदीन की हार-ही-हार होती है। छः

महीने की मेहनत मात्र बारह हजार की फसल होती है। जब वह फसल बेचकर घर आता है तब साहूकार उसे मार्ग में ही रोककर उससे सभी रुपये छीन लेता है साथ ही किसान ने अपनी बिट्टो के लिए दो रूपये का कपड़ा लाता है वह भी साहूकार ब्याज के नाम पर छीन लेता है। यहां किसान रामदीन पूरी तरह टूट पड़ता है वह असहाय हो जाता है। वह स्वाभिमानी-व्यवस्था का मारा लौटकर घर नहीं जाता। गोदान में होरी गाय खरीदने का स्वप्न पूरा नहीं कर पाता उसी तरह रामदीन की शोषण की पराकाष्ठा के चलते अपनी बिटिया को अच्छे कपड़े उपलब्ध नहीं करा पाता। वह हताश और निराश होकर आत्महत्या का का निश्चय कर लेता है। मंदिर में जाकर वह आत्मनिवेदन करता हुआ कह उठता है-''कर दव हमाय लाने ई जिंदगी में, गरीबी दयी हम खुश है, अगर तनक सी खुशियां हमें मिल रयीं तीं बेई छुडालयी थी। अब हम घरे मौं दिखाबे लायक तौ रै नई गय।'' वह स्वाभिमान से जीना चाहता है और मरना भी। वह भगवान से कहता है-''अपुन तौ धरती पैं नई आ सकत अब हमई आ रय आपके इतै। ''यह हताशा, करुणा का उफनता आवेग हृदय विदारक है। इस अर्थ प्रधान संसार में गरीबी भयानक रोग की तरह है, सभी रोगों का समुच्चय है। गरीबी शोषण का उपज है। रामदीन गीत के माध्यम से ईश्वर से कह उठता है-

सत्य रो रव अब कौने में, हँस रय हैं बेईमान।
कलयुग में अब को सुन रव है, पथरा के भगवान।।

रामदीन को गरीबी ईश्वर ने नहीं बल्कि शोषणकारी सामाजिक व्यवस्था ने दी है। अंत में रामदीन जीवन समर हार जाता है। नेता, साहूकार सरपंच व गांव वाले झूठी संवेदना व्यक्त करने के लिए आते है। जब नेता कहता है-''हम किसान की आवाज संसद तक उठायेंगे, हम किसानों के लिए हैं।'' तब रामदीन की पत्नी आक्रामक होकर कहती है-''जब मदद की गुहार लगायी तब वहां मर गय ते सबके सब।'' किसान की बेटी कहती हैं ''आज हमार बापू मर गय तब तुम सब आ गये सकल दिवावे, प्यार दिखावे के लाने, अगर जौई प्यार ऊके जिंदा में दिखाते तो आज वो न मरतौ किसान की पत्नी व पुत्री उसके मरने के बाद विद्रोही व आक्रामक हो जाते है। पेट की आग, गरीबी और शोषण उन्हें अंततः आक्रामक बना देता है। यहां डार्विन का सर्वोत्तम की उत्तर जीविता और वर्ग संघर्ष के सिंद्धांत के अनुसार शोषणकारी व्यवस्था के प्रति विद्रोही और आक्रामक होना अनिवार्य है। अन्यथा जीवन जीने का कोई रास्ता नहीं रह जायेगा।

हुकुम पटेल की एक आर्ट फिल्म 'किसान फँसे कर्ज में' का प्रदर्शन अक्टूबर २०१९ में हुआ। इस फिल्म में दर्शाया गया है कि प्राकृतिक प्रकोप के कारण उसकी फसल नष्ट हो जाती है। उसे बिटियों का विवाह साहूकार से कर्ज लेकर करना पड़ता है। कर्ज से उबरने के लिए किसान मजदूर बनकर शहर चला जाता है और उसका भाई उसकी जमीन बेचकर महाजन का कर्ज चुकाता है। बुंदेलखण्ड में कर्ज से दबे हुए किसान या तो शहर जाकर मजदूर बनते है या आत्महत्या करते हैं। उसकी किसानी घाटे का सौदा बनती है। किसान का मजदूर बनकर अपनी मातृभूमि छोड़कर शहर की ओर पलायन करना यहां की बहुत बड़ी विडम्बना हैं। शहर की ओर पलायन के अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं बचता।

'किसान की मजबूरी' नामक बुंदेली फिल्म जुलाई २०२० में प्रदर्शित हुयी। इसके निर्देशक मुकेश कुशवाहा झिन्नापुरा (राजनगर), छतरपुर के निवासी है। इस फिल्म में भी गरीबी व कर्ज के चलते मजबूर और लाचार किसान आत्महत्या कर लेता है। यह भी एक दुखांत फिल्म है। गरीबी व कर्ज के चलते किसान गाय का दूध बेचता फिरता है। किसान परिवार में तीन सदस्य हैं-किसान, उसकी पत्नी व एक दूधमुहा बच्चा। दिन-रात हाड़तोड़ मेहनत करने पर भी भरपेट पौष्टिक आहार मयस्सर नहीं हो पाता है। खरीफ की फसल का उत्पादन नहीं हुआ। रवी की फसल के लिए खाद बीज और जुताई के लिए लागत की आवश्यकता है। बिना खाद की खेती चेती कै न चेती, कोई निश्चय नहीं है। खाद अनिवार्य है।

कर्ज के ऐवज में साहूकार किसान की सारी सम्पत्ति 'पट्ट' रख लेता है। यदि कर्ज न चुकाया तो किसान की सारी सम्पत्ति साहूकार की। किसान के साथ लगातार छल होता है, साहूकार पचास हजार की लिखित पर उसे मात्र बीस हजार ही नगद देता है। ओलावृष्टि के कारण खून-पसीने से सींची फसल 'एक घड़ी' में चौपट हो जाती है। अब किसान अनाथ हो जाता है। फसल ही उसका जीवनसाथी है। जीवन के लिए कहीं कोई ठौर ठिकाना नहीं रह जाता। साहूकार का बुलावा होता है। 'टियां' पर कर्ज न चुका पाने के कारण उसकी सारी सम्पत्ति एक-एक करके छींन लेता है। पहले गाय फिर घर और खेतीहर जमीन। घर में खाने को कुछ नहीं रहता। पत्नी बच्चे को लेकर मायके चली जाती है। पत्नी भी मुंह फेर लेती है। निराश, हताश और जीवन संग्राम से हारा किसान एक जगह बैठा है। एक मित्र पास आकर ढांढस बंधाता है। किसान का मित्र उसकी सारी दुर्दशा का उत्तरदायी कारण अशिक्षा को मानते हुए कहता है:- ''अपुन पढ़े लिखे होते तौ ज गत न होती, अपने बाल बच्चन खाँ पढ़ाने है।'' निश्चित तौर से किसान की गरीबी, कर्ज, अपमान और जिल्लत भरी जिंदगी का मूल कारण अशिक्षा है। 'दो बीघा जमीन' फिल्म के किसान की तरह इस फिल्म का किसान बेघर और बिना जमीन का हो जाता है।

'किसान की लाचारी' नाम से दशरथ प्रसाद धनुषधारी ग्राम चोर टानगा, पलेरा एक फिल्म अक्टूबर २०२० में प्रदर्शित होती है। इस फिल्म में किसान छिद्दा की बेटी व्हिसिलब्लोयर की भूमिका में होती है। जब पटवारी द्वारा भोलेभाले किसानों से रिश्वत ली जाती है तो वह किसान पुत्री मोबाईल में वीडियो बनाकर रिश्वत का पर्दाफाश करती है। पटवारी व मुखिया उसके वीडियो डिलीट करने की मिन्नत मांगने लाते है। रिश्वत भारत की एक बड़ी समस्या है। मध्यम वर्ग शीघ्र काम करवाने के लिए रिश्वत प्रस्तुत करता है और निम्न वर्ग मजदूरी में। इस समय हरिशंकर परसाई की कहानी 'भोला राम का जीव' याद

आती है। बिना रिश्वत के भोलाराम की पत्नी को अटक जाती है। उसी तरह यहां किसान के काम की पेडिंग में चले जाते है। किसान की बेटी समझदार है और पढ़ी लिखी, वह किसानों के हो रहे आर्थिक शोषण के खिलाफ आवाज उठानी है।

दशरथ प्रसाद 'धनुषधारी' की एक और फिल्म 'किसान का दर्द' दो भागों में प्रदर्शित होती है। इसमें यह दिखाया गया है कि किसान किस तरह से विपरीत परिस्थितियों में काम करता है। किसान कहता है ''किसान कौन पनप सकत।'' क्योंकि खेती के लिए लागत, बीज, ट्रैक्टर की जुताई इत्यादि की आवश्यकता होती है तथा पशुओं के आतंक, प्राकृतिक आपदाओं इत्यादि के कारण फसल के उत्पादन की अनिश्चिता होती है। इतनी सारी समस्याओं के रहते वह कैसे पनप सकता है। किसान कहता है-''नेता अपनी रोटी सैंक रय, अकेली राजनीति चमका रय, मर रव है किसान, बीज बो है २२ रु. किलो ओर बिक रव है १४ रुपइया किलो कौ।'' किसान की सबसे बड़ी समस्या है- उत्पादित फसल का उचित दाम न मिलना। इस देश में निजी सेवाक्षेत्र के लोगों को अपने श्रम व वस्तुओं का मूल्य निर्धारित करने का अधिकार है, उद्योगपतियों को उत्पादित माल का मूल्य निर्धारित करने का अधिकार है, पर किसानों का अपने खून-पसीने की गाढ़ी कमाई से उत्पादित फसल का मूल्य निर्धारित करने का हक नहीं है। वह प्रकृति की विषम परिस्थितियों का सामना करता है, आपदाओं का सामना करता है। उद्योगपतियों को ऐसी समस्याओं, आपदाओं का सामना नहीं करना पड़ता फिर भी उसे आर्थिक रूप से सुरक्षित सुरक्षा प्राप्त है किसान को नहीं। यहीं उसकी सबसे बड़ी विडम्बना है। अंत में किसान कहता है ''जवान सीमा पर डटो है और किसान खेतों में।'' दोनों की राष्ट्रभक्ति वंदनीय है।

दिसम्बर २०२० में नितिन पटैरिया (छतरपुर) की किसान जीवन की दूसरी फिल्म 'कर्ज का चक्रव्यु' प्रदर्शित होती है। यह पूर्वदीप्ति शैली में फिल्मायी गयी है। स्वाभिमान किसान 'दद्दा' की भूमिका में हिमालय यादव और पुत्र की भूमिका नितिन पटैरिया होते है। किसान दद्दा के जब सभी आर्थिक रास्ते बंद हो जाते है, और जमींदार के फंदे उसे स्वाभिमान से जीने नहीं देता तब वह पत्नी और बेटी सहित जहर खाकर आत्महत्या कर लेता है। उसका पुत्र शहर शहर गया है-चार पैसे कमाने, कुछ तो कर्ज कम होगा। जब वह लौटकर घर आता है तब उसे तीनों की लाशें मिलती हैं। वह विद्रोह करते हुए जमींदार को मारने दौड़ता है और पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया जाता है। पूंछ-तांछ में वह पूरी कहानी पूर्वदीप्ति शैली में सुनाता है। यहीं अंधेरी कोठरी में पूछताछ से फिल्म का प्रारंभ होता है। यहां हिन्दी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कहानी उसने कहा था याद आती है। यह कहानी भी इसी शैली में लिखी गयी है।

जमींदार का मुनीम किसान को पैसों की 'टिया' याद दिलाने आता है। बेचारे किसान की हिम्मत टूट जाती है। कारण है ''कर्ज का चक्रव्यु'' कर्ज कुछ कम हो इसलिए किसान पुत्र परिवारजनों को छोड़कर जाने को तैयार नहीं होता। चार सालों से वर्षा नहीं हुई है। फसलोत्पादन नहीं हुआ है। किसान कर्ज के चक्रव्यु में फंसता चला जाता है। समझाने बुझाने पर किसान-पुत्र शहर जाने को तैयार हुआ। जीवन संग्राम में जाने से पहले वह माँ की सुखद, आनंददायी व कल्याणकारी गोद में बैठकर रात्रि में लोरी सुन लेना चाहता है। मानों वह लोरी के माध्यम से आशीर्वाद ले लेना चाहता है। मां लोरी सुनातीं है-

चुप-चुप निहारे, नजरें उतारे

आये सुलाने ये, चाँद और तारे.......

किसान भोलाभाला निश्चल प्राणी है। वह सुबह से सबके भले के लिए आंगन के तुलसीघरा में स्थापित शिवजी से प्रार्थना करता है-सबकौ भलौ करियों, पूरी वस्ती को, ऊके बाद हमाव करियौ। ''संर्वमगल मांगल्ये'' की भावना उसके स्वभाव में है। किसान का हृदय विशाल है जमींदार का नहीं। वह किसान पुत्री पर बुरी नजर डालता है। जमींदार की नजर उसकी जमीन पर भी होती है। बिजली बिल न भरने के कारण बिजली विभाग के कर्मचारी खेत से विद्युत की डोरी काट ले जाते है। बैंक लौन की किस्त समय पर न चुकाये कारण कुड़की कर लेने की चेतावनी भेजता है और जमीदार किसान को गांव से अनाज-पानी बंद करवाता है। अब किसान चारों तरफ से असहाय, मजबूर व लाचार होता जा रहा है। किसान का बचपन का मित्र उसके दुःख में शामिल है वह संवेदना व्यक्त करता है और सहयोग का आश्वासन भी देता है। किसान जमींदार की चालाकी समझता है वह कहता है-''जौन दिन सें ऊ जमींदार की नजर बिटिया पै परी ऊ दिना सैं इतने फंदे डार रव कै कोनऊ फंदे सैं हम नही कड़ पा रय।'' वह एक बार पुलिस प्रशासन की मदद के लिए जाता है पर, पुलिस प्रशासन जमींदार का नमक खाये बैठा है, वह नमक का फर्ज अदा करता और दरोगा जमींदार को किसान द्वारा रिपोर्ट लिखाने के प्रयास की बात बतला देता हैं जमींदार के लोग किसान के घर जाकर उसे पत्नी बिटिया सहित सभी की निर्मम पिटाई कर देते हैं। अंत में स्वाभिमानी किसान के जीवन के लिए कोई भी रास्ता नहीं दिखता, वह तंग होकर पत्नी विटिया सहित जहर खाकर आत्महत्या कर लेता है। यहां किसान के जीवन का अंत बेहद त्रासदीपूर्ण होता है। ये फिल्म को देखकर दर्शकों के नेत्र आसुओं से नम हो जाते हैं।

बुंदेलखण्ड में निर्मित अधिकांश फिल्में दुःखांत है। इन फिल्मों में किसान या तो जहर खाकर मरता है या फांसी लगाकर। किसान के विडम्बनापूर्ण जीवन की ओर सरकारों का ध्यान है पर पर्याप्त नहीं।

बुंदेली फिल्में बॉलीवुड फिल्मों से प्रभावित है। बॉलीवुड में भी अनेक फिल्में किसान जीवन की त्रासदी पर बनायी गई हैं। जिनमें से किसान, कन्या, दो बीघा जमीन, मदर इंडिया, हीरा मोती, उपकार, वारिस, किसान, गांधी, गर्म हवा और लगान प्रमुख हैं। इन सभी फिल्मों में किसानों की मुख्य विडम्बनायुक्त समस्या 'ऋण ग्रस्तता' का चित्रण किया गया है। ऋण ग्रस्तता के कारण किसानों का पूरा जीवन पीढ़ी दर पीढ़ी

अपार पीड़ा और कष्टों में तिल-तिल मरता है। रामविलास शर्मा गोदान के होरी के संबंध में लिखते हैं - ''वह (होरी) उन तमाम गरीब किसानों की विशेषताएं लिए हुए है, जो जमींदारों और महाजनों की धीमे-धीमे बिना रुके चलने वाली चक्की में पिसा करते हैं।'' शर्मा जी का यह कथन बुंदेली फिल्मों के किसान जीवन पर भी हूबहू लागू होता है।

बॉलीवुड की तरह बुंदेलीवुड फिल्मों में भी किसान जीवन की त्रासदीपूर्ण समस्याओं का चित्रण हुआ है। अभी तक यहां निर्मित लगभग सभी बुंदेली फिल्मों में किसान अंततः जीवन से पलायन करता है।

हिन्दी फिल्मों से प्रेरित होकर जिस प्रकार भोजपुरी फिल्में पिछले एक दशक में तीव्र गति से उभरी है उसी तरह बुंदेली फिल्में भी उभर रहीं हैं। बुदेली फिल्म कलाकार और 'किसान का कर्ज' फिल्म के नायक जित्तू खरे बादल कहते है- ''आगे आने वाली पीढ़ी के लिए बीज वो रहे है। फसल कैसी होगी यह तो भविष्य के गर्भ में है, आशा है भविष्य में इसका फल सुनहरा होगा।''

- सहायक प्राध्यापक
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर 卐

फसलों का फागोत्सव

- **डा.कुंजीलाल पटेल 'मनोहर'**

॥1 ॥
आई अलि से करन मिलनियाँ, मधु की कली सजनियाँ।
मटर फली नये चूरा पैरें, सैम फलीं पैजनियाँ।
चना फली के बोरा नूपुर, सरसों फली ककनियाँ।
जवा बाल कीं बिंछियां पैरें, सनहई फली ढुलनियाँ।
अरसी फली नाक में नथुनी, मसरी फलि झुमकनियाँ।
पहरैं बदन 'मनोहर' चोली, चाल चली ठुमकनियाँ॥

॥2 ॥
कोयल नओ सँदेसौ लाई, लेव-लेव चिल्लयाई।
बैठी आन आम के ऊपर, पाती बाँच सुनाई।
शिव-गौरा कौ व्याव रचाबें, सजनी करौ सबाई।
सब फसलन नें सजधज अपनी, सोभा रुचिर बनाई।
सजा रही है फसल 'मनोहर', अबनी की अँगनाई॥

॥3 ॥
डारन आई प्रेम कौ डोरौ, रसबे छैला भोरौ।
हरे पात रँग चूनर पैरैं, ललउं पात रँग जोरौ।
सरसों फूल सुनहरे गहनें, अरसी सौ तन गोरौ।
सुमन बास कौ अतर लगायें, ओसन सपरो खोरौ।
कूक 'मनोहर' कोयलिया सी, फैली अली बटोरौ॥

॥4 ॥
फागें कोयल के दल गायें, फसलें फाग मनायें।
सरसों राई मटर कौंसन की, पिचकें रुचिर बनायें।
घैंटी की लुटियन में निजरंग, अरसी चना लुकायें।
कड़त आत बालें भीतर सें, अपनी पिचक दबायें।
सुमन सींकरा बूँद 'मनोहर', सब पै रँग बरसायें॥

॥5 ॥
फसलें खेलें फाग सुहाई, अवनी-अँगन मझाई।
कथ्थई रंग चना लै आये, फूलौं के मिस भाई।
नीलौ-धवल आसमानी लयें, सैमें मटर सुहाई।
हरियल वसन पहन रँग पीरे, लाये सरसुआँ राई।
जबा बाल की पिचक 'मनोहर', लम्बी देत दिखाई॥

॥6 ॥
होरी खेलन आइ लली है, मँहकी गली-गली है।
भौतऊ नौंनी प्रकृति दुलैया, ओसन गोद पली है।
मटक-मटक कें इन्द्रपरी सी, चल रई छैल-छली है।
मिलबे काज 'मनोहर' मग में, मँड़रा रहे अली है॥

॥7 ॥
राधा बन गई धरा दुलैया, बने बसंत कन्हैया।
राधा की एक एक सहेली, बन गई फसल डरैया।
ढाक सुमन कौ रंग बनो है, पिचक-पवन-पुरवैया।
निज लाली की रोली छिड़के, सांध्य सखा रवि भैया।
तारन फूल 'मनोहर' नभ से, बरसा रही जुन्हैया॥

॥8 ॥
सज गई अजब अनौखी धरनी, सुखदाई मनहरनी।
त्रिबिध समीर सुगंधित बहती, कलियों से मधुझरनी।
रितुराजा ने करी धरनि पर, लीला जादूगरनी।
झिलमिल चमकें नईं कोपलें, मन में हलचल करनी।
कोयलिया की कूक 'मनोहर', पाप हरन वैतरनी॥

॥9 ॥
तन के सब सिंगार सजाकें, चली जात हरसा कें।
चाल सुचाल चलत मारग में, घूँघट में मौं ढाँकें।
पवन झकोरन मधुर मिलनियाँ, करत जात मुसका कें।
सूरज चाँद करैं रखवारी, बारी बारी आकें।
लहक मनोहर महक 'मनोहर', महकाई महका कें॥

॥10 ॥
अलकें लटक-लटक लटकाबै, मटक-मटक जब जाबै।
रूप अनूप प्रकृति के भूषन, अंग प्रति अंग सुहाबै।
चली जात नई पवनपरी सी, फूली नहीं समाबै।
मग में झला झुंड से पारत, झंडी सी फहराबै।
कुन्दकली सी महक 'मनोहर', मग-मग जाय चुँआंवै॥

-रेडियो कालोनी के सामने, छतरपुर
9425879773 卐

श्रद्धांजलि लेख-

गौरिहार रानी सरोज कृत सप्तपर्णी- सदा बहार काव्य का गुलदस्ता

– **बी.के. प्रजापति**

साहित्य सृजन की बुन्देलखण्ड में एक समृद्ध परम्परा रही है। इन रियासतों के नरेश साहित्य प्रेमी थे, संस्कृत में श्रेष्ठ रचनाकार थे, जिनके आश्रय में विपुल साहित्य का सृजन हुआ। जगनिक ने आल्हाखंड की रचना की जो आज भी लोकमानस की थाती है। केशव ,बिहारी , भूषण ,रसनिधि, पद्माकर, ईसुरी आदि कवियों का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

भारत का हृदय स्थल बुन्देलखंड कृष्ण की क्रीड़ा भूमि के चरणों को पखारने वाली यमुना, दक्षिण में शिलाओं का श्रृंगार करने वाली तमसा (टोंस) तथा पश्चिम में रेतीली धरती पर स्वर्णिम आत्मा बिखेरने वाली चंबल की सीमा रेखाओं के बीच स्थित है। इसका अपना अनुपम इतिहास तथा अपनी अनमोल परम्परायें है। बुन्देलखण्ड की इस भूमि पर मौर्यों, गुप्तों, परिहारों, चंदेलों ने शासन किया लेकिन अन्य राजवंशों की तुलना में बुन्देलों ने इसे कहीं अधिक स्वामित्व, अधिक गरिमा प्रदान की, इसलिये कहा जाता है कि प्रदेश बुन्देलखण्ड के नाम से विख्यात हो गया। समय –समय पर इसके नाम दशार्ण, ब्रज ,जेजाकभुक्ति, जुझौती तथा विंध्यलेखंड भी रहे। ऐसा प्रतीत होता है कि विंध्यावटी में स्थित होने के कारण इस प्रदेश का नाम विंध्येलखण्ड पड़ा, बाद में अपभ्रंश होकर बुन्देलखण्ड कहलाया।

विंध्याचल की एक मुख्य रियासत वर्तमान गौरिहार थी जो उत्तर मध्य में स्थित थी। यह रियासत वर्तमान जिला स्तर से उत्तर में लगभग 100 कि.मी. में स्थित थी। गौरिहार से उ.प्र. सीमा लगभग 15 कि.मी. के अंतराल में पड़ती थी। यहाँ का अपना एक इतिहास रहा है क्योंकि स्वतंत्रता का इतिहास प्रत्येक देश की आत्मा का अध्याय होता है। जन का यह जागरण अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि सोता हुआ जन जब जागता है तो हर क्षेत्र में एक अपूर्व क्रियाशीलता व चेतना की लहर दिखाई पड़ती है तथा हर व क्षेत्र जहाॅ अंधकार दिखाई दे रहा था , चेतना का प्रकाश फैलता दिखाई देता है। भारत में भी जनजागरण अथवा स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये संघर्ष का अपना एक अलग रोचक इतिहास है जिसका महत्व आज भी भारतवासियों के लिए वैसा ही है जैसा ब्रिटिश शासन में था। भारत के उन अमर आत्माओं में त्याग,बलिदान, प्राण प्रतिष्ठा ने ही सदियों से चली आ रही गुलामी से हमें छुटकारा एवं उन्मुक्त हवा का अहसास कराया जो अनमोल है। भारत में स्वाधीनता का यह संघर्ष दो मोर्चों पर लड़ा गया एक ब्रिटिश भारत में, दूसरा देशी रियासत में।

हिन्दी साहित्य की इस सुदीर्घ परम्परा में बुन्देलखण्ड के गौरिहार रियासत की महिला साहित्यकार ने जीवन के प्रेरणादायक अनुभवों को अपनी कविताओं, दोहा ,कुंडलियों, चौकड़ियों, चौपाई, कीर्तन के माध्यम से साहित्य जगत के कोश की अभिवृद्धि की है।

श्वेत केश, चेहरे पर ऋषियों सी आभा। होठों पर स्नेहिल मुस्कुराहट और हर किसी को अपना बनाने वाला अपनत्व अब भी इन आँखों में है। रह–रह कर याद आता है। जब से मैंने श्रद्धेय रानी सरोज गौरिहार जी को देखा, वे कभी खाली नहीं बैठीं। कोई दिन ऐसा नहीं जाता था, जब वे किसी न किसी समारोह की मुख्य अतिथि या अध्यक्ष न होती हों। विभिन्न संस्थाओं के पदों को भी वे मनोयोग से संभालती रहीं।

इतनी सामाजिक व्यस्तता के बावजूद उन्होंने भीतर के कवि को भी सदा जिंदा रखा । वे भीतर की पुकार निरंतर सुनती रहीं और एक से बढ़कर एक नई कविता के लिए शब्दों के मोती चुनती रहीं । जीवन का दीप बुझने से पहले वे सप्तपर्णी का ऐसा दीप जला गई, जिसके अनवरत प्रकाश से हम सबका अंतर्मन आहलादित होता रहेगा। समाज और राष्ट्र को प्रेरणा मिलती रहेगी। वैसे तो रानी सरोज गौरिहार जी के कई काव्य संग्रह पूर्व में प्रकाशित हो चुके हैं, लेकिन वे किसी न किसी एक विषय पर केंद्रित थे। वहीं यह संग्रह विभिन्न विषयों और अलग–अलग विधाओं में रचनाओं का ऐसा गुलदस्ता है, जिसे पाठक यदि एक बार पढ़ना शुरू कर दे तो अंतिम कविता तक पहुँचने से पहले विश्राम लेना उसके बस में नहीं।

इस संग्रह की कविताओं के विषय सार्थक, सामयिक और विविध सरोकारों से भरे हैं। ईश्वर भक्ति, प्रकृति प्रेम, पर्व त्योहार ऋतु के अलावा उन्होंने मियां नजीर अकबरावादी की तरह छोटे–छोटे विषयों पर भी रचनाएँ लिखी हैं। इनमें नारियल का वृक्ष, मिल की चिमनी, सड़क विद्युत दीप, पंखा आदि उल्लेखनीय हैं। सभी रचनाओं की भाषा सहज और सरस है। रानी गौरिहार जी ब्रज भाषा लेखन में भी बहुत सिद्धहस्त थीं। उनकी कई कविताएँ ब्रज भाषा में भी हैं। श्रीकृष्ण के विषय में लिखी कई रचनाएँ उन्होंने ब्रज भाषा में ही पिरोयी हैं। उनकी कविताओं में सस्पेंस भी है। हम चार बहनें कविता बड़ी रहस्यभरी है। जीवन भर उत्साहित रहने वाली रानी जी कभी हताश नहीं हुई। अंतिम समय में बीमारी के समय तक भी हताशा उनके चेहरे पर नही दिखी यह जिजीविषा और उत्साह उनके सृजन में भी निरंतर झलकता रहा, लेकिन जीवन में जो होना है, उसका उन्हें अंदेशा था। इसे उन्होनें अपनी कविताओं में रेखांकित भी किया है।

''अतीत'' शीर्षक से वे कविता लिखती हैं कि–

कितनी जल्दी बन जाता है, वर्तमान, अतीत का हिस्सा, अभी हम है, कल कोई कहेगा, वे थे, हमारा आज , कल बन जाता है। उन्होंने मृत्यु पर भी मार्मिक कविता लिखी ''मृत्यु को कितनी बार देखा है निकट से अति निकट से मेरे आसपास मंडरा कर निकटतम को छुकर चली जाती है बार–बार।''

''उस पार'' शीर्षक रचना भी ममज्ञ को हिला कर रख दिया, वे लिखती हैं– '' गिन रही हूँ दिन रात सांसें छूटे कब यह बंधन देह का उस पार जाने के लिए, तुम्हारे पास आने के लिए।'' रानी सरोज गौरिहार जी भले ही हमें छोड़ कर संसार के उस पार चली गई हैं, लेकिन अपने साहित्य, अपने स्नेहिल स्वभाव संदेशप्रद विचार और अपने यश के माध्यम से वे सदा–सदा हम सबके साथ रहेंगी।

''सप्तपर्णी'' का आशय ही सदाबहार वृक्ष होता है। रानी जी का जीवन भी सदाबहार था। वे अब जिस जहाँ में भी हों खुश रहें और हम सबको अपना शुभ आशीर्वाद प्रदान करती रहें यही प्रार्थना है।

सप्तरंगी तरू के सातों पात विगल होकर भी एक–दूसरे से जुड़े रहते हैं। इसके पुष्पों की सुगंध दिग् दिंगत को महकाती रहती है। इसी प्रकार रानी सरोज गौरिहार जी के इस संकलन की कविताएँ हैं जो भिन्न–भिन्न भावों को लेकर भी एक डाल से जुडी़ हैं।

इन्द्रधनुष की तरह सप्तरंगी हैं। जिस प्रकार ज्ञानयोग, कर्मयोग एवं भक्तियोग के माध्यम से जीवन प्रवाह को देखने का तरीका गीता में छिपा है, उसी प्रकार उनकी सप्तपर्णी आत्मा–परमात्मा की एकात्मकता प्रकृति से साक्षात्कार और स्नेह प्रेम तथा ममता की त्रिवेणी है।

सप्तपर्णी काव्य में एक सौ पन्द्रह रचनाऐं है जो जीवन समाज तथा पर्यावरण को लेकर है और समाज का पथ प्रदर्शन कर रही है

जीवन नामक शीर्षक से कविता एक पुष्प प्रस्तुत है।
नही छॉव का लोभ मुझे है नहिं डर अँधियारे काल का।
सोच समझ कर चुनती वह ऐसा मग, जहाँ कॉटे ही श्रृंगार माला का।।
आशा का सम्बल नहिं मेरे, लेकिन चिन्ता कभी नहीं की।
जिसने भगा दिया सभी को, भीख किसी से कभी नहीं ली ।।
दर्द मिला हॅस सहा राई में, अटकी नहीं न रूक कर रोई ।
त्वरित चाल नापा जीवन मग, चिन्ता नहीं कहे क्या कोई।।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सप्तपर्णी–रानी सरोज
2. बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहस –गोरेलाल तिवारी
3. जंग–ए–आजादी में बुन्देलखण्ड की देशी रियासतें – डॉ सुधावैसा

–विभागाध्यक्ष, शास. कन्या पी.जी. महाविद्यालय, छतरपुर 卐

तीन बुन्देली गजलें

– डां. राघवेंद्र उदैनियां 'सनेही'

(एक)

गम खा गम खा यार, धोंक ना लम्बी चौंड़ीं।
बातें लच्छैदार, धोंक ना लम्बी चौंड़ीं।।
सबै पतौ है इतै कौन कित्ते पानी में,
कैबे में का सार, धौंक ना लम्बी चौंड़ीं।।
अपने मौं नंइं बनों मियां मिट्ठू नइंतौ फिर,
होजै बन्टाढार धोंक ना लम्बी चौंड़ीं।
कां तौ राजा भोज और कां गंगू तेली,
तोउ बनत हुशियार, धोंक ना लम्बी चौंड़ीं।
मम्मा सें ममयारे की जो कैव 'सनेही'
कैसें गलहै दार, धोंक ना लम्बी चौंड़ीं।

(दो)

अबके कबियन की का कानें, कोउ काउ सें कम नइंयां।
कबि तौ सब दमदार सनेही, पै कबिता में दम नइंयां।।
कबिता में जे बन्न - बन्न के साजे - साजे शब्द गढ़त,
शब्दन के तौ फूल खिलत पै, फूल ओस सें नम नइंयां।
अब तौ बस कबिता कबितइ है, जांलौ जैसी टिकी रयै,
बात कात तौ जोरदार, पै कैबे में दमखम नइंयां।
दस बारा मुक्तक लिख लय सो, जानों हो गए बड़े कबी,
ऐसे बड़े - बड़े कबियन में बोलौ कियै अहम नइंयां।
एक दूसरे की बड़वाई, करबे खों सब चाड़े हैं,
करै बढाई कोउ न करबै, ईकौ कौनउं गम नइंयां।
कैउ कबी बस तुकें जोरकें गीत गजल ठोकें जा रय,
कैसें कैदें जे कबिता कौ जानत कछू मरम नइंयां।
कैदो कछू तनक तौ भइया , हेरौ तुरतंइं बिदी धरी,
ईसें अब कैबे सुनबे कौ, तनकउ आज धरम नइंयां।
मंचन पै सब बमक - बमक के,लगे ओज पढ़बे दम सें,
भलौ लगै ना लगै काउखां ,इनखों कछू सरम नइंयां।

(तीन)

बखत काउ कौ जानों नइंयां।
का हो जाय ठिकानों, नइंयां।।
हम जो कै रय, सांसी कै रय,
ईमें कछू बहानों, नइंयां।
बौ तौ धरो जनम कौ लबरा,
की कौ जानो मानों, नइंयां।
काम होत नंइं पूरे तौलौ,
जौलौ मन में ठानों नइंयां।
जां नां लांच घूस लइ जाबै,
ऐसौ कौनंउं थानों नइंयां।
ऊसें पूंछो ऐंन 'सनेही'
ऊनें कछुअइ रानों नइंयां।

– सरानी दरवाजा, छतरपुर, मोबा. 9406762156 卐

श्रद्धांजलि लेख-

बुन्देली साहित्य साधक काव्य मनीषी : श्री गुण सागर सत्यार्थी

- डॉ. सरोज गुप्ता

बुन्देली काव्य मनीषी, विद्वता तथा प्रखर प्रतिभा के प्रकाश पुंज श्री गुण सागर सत्यार्थी जी बुन्देली साहित्य जगत् के जनक श्री मुंशी अजमेरी जी के प्रपौत्र तथा बहुमुखी प्रतिभा के धनी पं. गुलाबराय जी के पुत्र रहे हैं। मनुष्य को कुछ अपने पूर्वजों से प्राप्त होता है, कुछ अपनी सहज प्रतिभा एवं शिक्षा से और कुछ अपने संकल्प तथा उद्योग से। सत्यार्थी जी को साहित्य एवं कला के प्रति अनुराग जहाँ पूर्वजों से विरासत में मिला है, वहीं कुण्डेश्वर जैसी पावन भूमि को अपनी कर्मभूमि बनाकर पं. बनारसी दास चतुर्वेदी तथा डॉ. यशपाल जैन सरीखे विद्वानों का सान्निध्य पाकर बुन्देली भाषा का साहित्य भंडार भरा है। आपने अपने अमूल्य उद्गारों, उत्कर्ष शालिनी कृतियों तथा कौशल द्वारा नई-नई विशेषताओं का समावेश कर बुन्देली साहित्य की उपलब्धियों को उर्वरता के नये अंकुर प्रदान किये हैं।

श्री गुणसागर सत्यार्थी मूलतः चित्रकार और बुनियादी शिक्षक, शिक्षण संस्था कुण्डेश्वर में चित्रकला के अध्यापक रहे हैं। कविता करना शौक रहा है जिसे स्वान्तः सुखाय ही रचते रहे। बुन्देली भाषा के प्रति समर्पित सत्यार्थी जी अपने भाषा प्रेम का परिचय देते हुए कहते हैं कि- 'बुन्देली भाषा साहित्य एवं लोक साहित्य मेरी कमजोरी है, बुन्देली भाषा साहित्य अथवा लोक साहित्य संस्कृति पर कार्य करने वाला मेरा सिर भी काटे तो मुझे आपत्ति नहीं होगी। बुन्देली साहित्य, लोक कला संस्कृति मेरे लिए माँ है और हल्के लोक रंजन एवं वाहवाही लूटने हेतु मैं अपनी माँ की आबरू नहीं बेच सकता, मर सकता हूँ।' परन्तु मातृभाषा का अपमान नहीं सह सकता। मातृभाषा के प्रति समर्पित सत्यार्थी जी ने बुन्देली भाषा में नवीन रक्त, नवीन स्वर, संगीत तथा अमृत संजीवनी का संचार किया 'मेघदूत' जैसी उत्कृष्ट रचना का उनके द्वारा अनुवाद किया जाना बुन्देली को विस्तृत फलक, अनुभूति जन्य नवीन सृजन की प्रेरणा प्रदान करता है। ऐसे राष्ट्रभक्त सत्यार्थी जी ने अपने लेख में बुन्देली को सबसे प्राचीन भाषा निरूपित किया। अपने सशक्त विचारों से 'यारो इतनों जस कर ली जौ' ईसुरी की जीवनी को जन-जन के कण्ठ का हार बनाया। (डॉ. राजमती दिवाकर को लिखित सत्यार्थी जी के पत्र से)

कवि ईसुरी के प्रति अपूर्व श्रद्धा के दर्शन 'ईसुरी' पत्रिका में प्रकाशित कवि के लेखों के माध्यम से होता है। 'जो तुम छैल छला हो जाते' की तर्ज पर रचित सत्यार्थी जी की बुन्देली चौकड़ियाँ फाग दृष्टव्य है-

जो कऊँ हम कपास हो जाते, तौ सातउ सुख पाते।
दिया आरती की बाती बन, उन हाँतन भज जाते।
नेह-तेल संग छिन-छिन बरते, सुबरन रेंन बनाते।
कै फिर कत बुन उन्ना होते, चन्दन आँग सुहाते।
गुन सागर बेखट काँ निसदिन, कुन्दन काम समाते ।

कवि सत्यार्थी जी ने ईसुरी को लेकर बुन्देली साहित्य में उनके विविध पक्षों का सृजनात्मक उद्घाटन किया है। 'यारी इतनों जस कर लीजो' नामक ईसुरी की जीवनी पर आधारित नाट्य कृति न केवल ईसुरी के जीवन के उत्तार-चढ़ाव की निराली छवि प्रस्तुत करती है वरन् इससे ईसुरी के काव्य की दुर्निवार मोहक भंगिमाओं की औपन्यासिक छवियाँ भी उपस्थित करती है। इस नाटक में सत्यार्थी जी ने ईसुरी को गहरे तक पहचाना ही नहीं, जिया भी है। इसी प्रकार बुन्देली लोक संगीतिका (ऑपेरा) की रचना की जिसमें लोक देवता हरदौल का दिव्य रूप प्रस्तुत किया है। हरदौल का जीवन उत्कृष्टता, उनके शौर्य, पराक्रम देश व जननी जन्मभूमि के प्रति उनका अनुराग इस नाट्य कृति में दृष्टव्य है। डॉ. मोहन लाल गुप्त चातक जी कहते हैं- 'मानव इतिहास महापुरुषों के उज्ज्वल कार्यकलापों की महत ज्योति से प्रकाशमान होता आया है। संस्कृति के ये अग्रदूत अपने जीवन काल में ही जनमानस में एक प्रेरणा प्रस्फुटित कर देते हैं, जो धरती के कण-कण में समाहित हो अनवरत प्रवहमान रहता है। इतिहास चाहे कुछ भी कहे किन्तु लोक गाथाओं के रूप में 'हरदौल' एक शाश्वत प्रेरणा के गीत बने हुए हैं। 'हरदौल' का चरित्र लोक गीतों के द्वारा लोक मानस को जहाँ उद्वेलित करता है वहीं 'हरदौल चबूतरे' लोक कल्याण के लिए प्रत्येक गाँवों में प्रतिष्ठापित हैं।' आज भी विवाह के अवसर पर बुन्देलखण्ड के हर गाँव की स्त्रियाँ यह गाते हुए मिल जायेंगी-

लाला बुन्देला, बड़े अलबेला,
जेवत में डार देते सेला, बुन्देला बड़े अलबेला ।।

लाला हरदौल बुन्देलखण्ड के लोकप्रिय मामा की भूमिका में आज भी सक्रिय हैं। विवाह के अवसर पर हर जाति वर्ग व जन-जन का निमंत्रण उन्हें दिया जाता है। लाला हरदौल अपनी अनुपस्थिति को उपस्थिति में बदलकर विवाह निर्विघ्न सम्पन्न कराते हैं। लाला हरदौल के त्याग पूर्ण विछोह से बुन्देलखण्ड की धरती का कण-कण व्यथित है देखिये कवि के शब्दों में-

सावन भादों, ठाँड़े रोवें, बरखा महल उदास रे
फूल बाग की कलियाँ रोवें, वन-उपवन बेहाल रे।
बेतवा अँसुआ ढारे-गंगा में दोस लगाये रे,
घाट कंचना बिलखत ऐसें, मानो कंचन लूट लए।
सूनों बैठका सिसक रओ है, लाला गए निरदोस रे,

वीर बुन्देलन में भए, अमर श्री हरदौल ।
भओ पुन्न बलिदान सें, जी की नईयाँ तौल,
गाँवन-गाँवन चोंतरा, पूजन जे नर-नार।
धरम परीच्छा सुफलकर, देवतन भए सुमार,
बरस सैकरन कड़ गए, बदल गए केऊ राज।
तऊ पूजा हरदौल की, जाँ ताँ हो रई आज।

इस काव्य नाटिका के अन्त में कवि ने दिखाया है कि बुन्देलखण्ड के गाँव में, हरदौल के चबूतरे पर जहाँ पास में मैतरबाबा की चौतरिया भी है। ग्रामीण महिलायें दीपक लिए गाती हुई आती हैं और हरदौल के चबूतरे पर दीपक रखती हुई अत्यन्त श्रद्धा भाव से यह गीत गाती हैं-

नजरियाँ के सामने तुम हरदम लाला रहियो।
जैसौ मान दऔ भौजी खाँ, एसोई सबै दिबइयो।
कुंजावती सी सब बैनन पै भैया होके छैयो ।
जुगन जुगन ई धरती पै, सबके काम बनइयो ।
नजरियन के सामने तुम हरदम लाला रहियो ।

लाला हरदौल, राजा वीर सिंह जू देव के पुत्र और जुझार सिंह के छोटे भाई थे। दुश्मनों के कहने पर उनके बड़े भाई द्वारा जननी समान भाभी के प्रति अटूट स्नेह को कलंकित करने की चेष्टा की गयी, जिससे उन्होंने विषपान कर अमरत्व प्राप्त किया किन्तु भाभी के आँचल की पवित्रता को आँच नहीं आने दी। यही नहीं अपनी बहिन कुंजावती को भात का दान कर जन-जन में पूजा के पात्र बन गये, उनके यही आदर्श हमारे जीवन की उत्प्रेरणा के गीत हैं। हरदौल का चरित्र वास्तव में हमारे लोक जीवन का प्राण है, जो हमें स्पंदन प्रदान करता है और सदियों तक करता रहेगा। (हरदौल चरित्र डॉ. मोहन लाल गुप्त 'चातक') सत्यार्थी जी ने बुन्देली को साहित्यिक उत्कर्ष प्रदान करने के लिए कई मौलिक उद्भावनायें प्रस्तुत की, मौलिक सृजन किया। वह कहते हैं कि बुन्देली को यदि साहित्यिक भाषा के रूप में देखना चाहते हैं तो बुन्देली कवियों को क्षेत्रीयता का मोह तोड़ कर उसका एक ऐसा मानक रूप निखारना होगा जिसे यमुना से नर्मदा तक एवं चम्बल से टोंस तक समान रूप से पाठक ग्रहण करके आत्मसात कर सके।'

इस कार्य के लिए वह अपने को अकेला महसूस करते हुए कहते हैं- 'मैं कदाचित' इकलौता बुन्देली कवि हूँ जिसने बुन्देली का ऐसा मानक स्वरूप अपनाया है जिसे समूचा बुन्देलखण्ड समान रूप से आत्मसात कर सके। अति क्षेत्रीय प्रभावों से सख्त परहेज करते हुए एवं बोली से ऊपर उठकर बुन्देली में खड़ी बोली के नवगीत एवं प्रयोगवादी नई कवितायें (गीत नाट्य) जैसी विधाओं में कलम चलाकर बुन्देली की शक्ति एवं सामर्थ्य को प्रमाणित करने का सतत् प्रयास मैंने किया।' ईसुरी की जीवनी पर आधारित गीत-नाट्य एवं हरदौल बुन्देली लोक संगीतिका का वर्णन ऊपर किया जा चुका है। कवि की बुन्देली की प्रयोगवादी रचनायें दृष्टव्य हैं। 'गैलारो' कविता में कवि ने राहगीर व राह का अनूठा चित्रांकन किया है-

जी कौ
ओर न छोर
ऐसी है गैल,
गैल गहे चलो जात
हेरौ, वो गैलारो।
किदना निगौ?
कोऊ नइँ जानत
बस निगत सबइ नें देखौ,
मानों
चका होय गाड़ी कौ,
भमत जात है ऐसें
जैसें पथरा ढुँड़कत-
चूना पीसत की चकिया कौ।
लीला-धौरा
खैचत जिऐ समै के बैला
और संग में पिसत जात हैं दिन चूना से
हराँ-हाँ सब
जिन्दगानी के।

समय का चक्र तीव्र गति से चलायमान हैं। यह ऐसी गैल है जिसका कोई ओर-छोर नहीं है। सत्यार्थी जी प्रयोग धर्मी कवि हैं आपने कुछ कवित्त बिना मात्राओं के भी रचे हैं देखिये-

दमकत कमल बदन पर श्रमकन, घर भर सर पर घर तन।
झमक-झमक जब चलत डगर पर, पगन बजत तब छन-छन।
हरकत पवन, बसन जब सरकत, लगत सरम तन लख तन ।
लचकत लरम डगन मन चल तन, हरषत हम लख मन-मन।

नायिका के कमनीय सौंदर्य का अनुपम वर्णन कवि द्वारा प्रस्तुत किया गया। ऐसे सौन्दर्य पर कवि बार-बार बलिहारी जाते हैं तथा कहते हैं-

तुम हौ पोथी लिखी लिखाई, कोई बाँच नई पाई।
खुद की एक कानियाँ बन कें हर पन्ना पै छाई।
तुमई प्रिया कवि की बन जाती और प्रवीन कुआई।

कवि सत्यार्थी जी ने प्रकृति के वैभव का विशद वर्णन किया है। कहीं-कहीं ये वर्णन उद्दीपन व आलम्बन जैसे हैं। उक्ति वैचिव्य एवं स्वाभाविकता का मणिकांचन संयोग देखा जा सकता है। कवि द्वारा षड् ऋतु वर्णन में 'बिरही कौ बसकारी' में वर्षा वर्णन, 'सरद दुलइया' में शरद ऋतु का 'बसन्त' का प्यार' में ऋतुराज बसन्त का अद्भुत वर्णन किया है। बुन्देलखण्ड तो वैसे भी प्रकृति की रंगीन छटाओं से भरा पड़ा है फिर कवि का भाव प्रवण हृदय बसन्त की मादकता, झरनों के संगीत, कल-कल नाद करते' जल सीकर, बौराई अमराई देखकर कैसे शान्त रह सकता है। बसन्त वर्णन कवि के शब्दों में-

क्वारी मन बगिया में कोयलिया कूक रई,
विरहन ने कर लऔं श्रृंगार, झूमे नए फूलन के हार।
दूर हरी खेतन में बँगरी है भाँग, गंध करत केवरे से झूम रई डाँग,
सरसों में गोरी को कंचन भऔ आँग, भरी नई बालन ने मोतिन से माँग ।

बसन्त जब सोलह श्रृंगार करके मानव को अपनी रंगीन छटाओं द्वारा आकर्षित करता है तो भाव लोक का प्राणी कवि चुप नहीं रह पाता। धरती का प्यार भरा सन्देश जन-जन तक पहुँचा ही देता है। 'उरइयाँ' कविता में प्रात:कालीन सौन्दर्य वर्णन देखिये-

साँकर बजी दुआरे, टेरन लगी उरइयाँ,
गई अंदरी रैन सगुन सी, बोलन लगी चिरइयाँ,
कुकरा की सुन बाँग, उल्लुअन की धक् धक् भई,
अँखियाँ हो गई चार, चकई की, पिया संग इठलाऐं।

प्रातः काल आँगन में सूर्य की हल्की धूप का आगमन होता है। सतरंगी किरणों का प्रकाश, चिड़ियों की चहचहाहट सुनकर लगता है ये किसी सगुन की सूचना दे रहे हों। कवि ने अपनी लेखन यात्रा के दौरान बुन्देली की शक्ति एवं सामर्थ्य को प्रमाणित करने के लिए संस्कृत के महाकवि कालिदास की अमर कृति 'मेघदूतम्' का बुन्देली में वरवै छन्द में पद्यानुवाद किया। प्रथम बार सत्यार्थी जी के सत्प्रयासों से बुन्देली एक साहित्यिक भाषा के रूप में समुद्र पार पहुँची। कवि का यह प्रयोग सराहनीय व गौरव से परिपूर्ण है। कवि की स्फुट रचनाओं का संग्रह 'प्रयास' और श्रृंगार रस प्रधान लोक कवि ईसुरी की परम्परा में बुन्देली फागों का वृहत संकलन 'धरती के गीत', 'गुन गुन', 'रंग फुहारौ' के साथ अनेक छोटे बड़े ग्रन्थों की रचना की।

'गहरे पानी पैठ', 'बाजीराव मस्तानी', 'राय प्रवीण', 'पानी उतर गया', 'रानी झाँसी बारी', 'नई सदी के नये स्वप्न', 'बेतवा', 'चाक पर घूमती जिन्दगी', 'छिटक रही है धवन यामिनी', 'मुझे मत रोको' आदि रचनाओं सहित स्व. मुंशी अजमेरी जन्मशती स्मारिका, बुन्देलखण्ड की विरासत ओरछा, 'पलाश' शैक्षिक पत्रिका का सम्पादन भी पं. गुणसागर सत्याथीज़ जी ने किया है।

सत्यार्थी जी मेरे पिताजी के शिष्य रहे हैं। उनके इस परिचय से मैं सर्वथा अनभिज्ञ थी। मेरी पहली मुलाकात फ़ोन पर हुई उन्होंने मेरे पिताजी के अनेक अनछुए प्रसंगों, पहलुओं पर चर्चा की, जिसकी जानकारी मुझे भी नहीं थी। मेरे पिताजी 18 दिसम्बर 1985 को हृदयाघात से मुझसे हमेशा के लिए विलग हुए। उस समय तक मैं अपने पिता के व्यक्तित्व व कृतित्व से पूर्णत: अपरिचित, उनके समाज व राष्ट्र के प्रति समर्पण से बेखबर थी। कम उम्र मात्र 22 वर्ष की अवस्था में सिर्फ पढ़ाई में संलग्न,अल्हढ़ रही। चर्चा के समय श्री सत्यार्थी जी ने अपने लिए सम्बोधन में कहा कि मैं तुम्हारा चाचा हूँ, यह सुनकर मैंने पितृसुख से वंचित हृदय को अमृततुल्य आत्मीय स्नेह महसूस किया। आपके बड़े भाई आदरणीय विद्यासागर शर्मा जी की पुस्तक प्रेमपराग के प्रकाशन का कार्य मैं कर रही थी। समय अपनी गति से प्रवहमान रहा। साहित्यिक गतिविधियों में संलग्नता बढ़ी। चाचाजी को कालेज आमंत्रित किया। डॉ. कान्तिकुमार जी के सम्पादकत्व में ईसुरी पत्रिका उससमय खूब चर्चा में थी। बातों-बातों में सत्यार्थी चाचाजी ने मुझे डॉ. राजमति दिवाकर का पत्र दिखाया जो उससमय ईसुरी में छपा था, जिसमें कुछ बातें उन्हें अच्छी नहीं लगी थीं, मैं उससमय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भोपाल द्वारा स्वीकृत माइनर प्रोजेक्ट पर कार्य कर रही थी। उसी समय मुझे डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग विभागाध्यक्ष डॉ. सुरेश आचार्य जी द्वारा शोधकार्य हेतु पी.एचडी. का निदेशक बनाया। मैंने पं. गुणसागर सत्यार्थी जी पर शोधकार्य हेतु रघुनाथ पाल को दायित्व सौंपा। रघुनाथ ने लगन व कमज्ठता के साथ कायज़ कर श्रेष्ठ शिष्य का परिचय दिया। पं. गुणसागर सत्यार्थी जी ने भरपूर सहयोग दिया। उनके समकक्ष साहित्यकारों, रचनाकारों से मिलते हुए रघुनाथ ने बहुत मेहनत की फिर कालेज में अतिथि विद्वान के रूप में कार्य करते हुए लोकसेवा आयोग द्वारा सहायक प्राध्यापक परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर शासकीय महाविद्यालय में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। जब कोई शिष्य श्रेष्ठ कार्य कर आगे बढ़ता है तो माता पिता से बढ़कर गुरु को प्रसन्नता होती है। हमने आदरणीय चाचाजी को खोया है, परन्तु आज उन पर शोधकार्य व थीसिस का प्रकाशन कराकर मैं आश्वस्त हूँ तथा उन्हें सच्ची श्रृद्धांजलि अर्पित करती हूँ। उनके सामने यदि यह ग्रंथ प्रकाशित होता तो मुझे लगता है कि चाचाजी को उनकी जिंदगी के आठ-दस वर्षों की खुशियां और मिलती, परन्तु 'ईश्वरेच्छा बलीयसी'। उनके जीवन के सुख-दुख, सृजनात्मकता व मनोरम पक्ष को रेखांकित कर नवीन जी के शब्दों में पुनः श्रृद्धा सुमन अर्पित हैं -

''अरे ! समुद्र अर्पण ही अर्पण, चिरजीवन का क्रम है।
और ग्रहण में मरण निहित है, प्रतिफल केवल भ्रम है।''

- प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
पं दीनदयाल उपाध्याय शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर
मध्यप्रदेश 470001 मोबाइल- 9425693570 卐

लेखकों से निवेदन

बुंदेली बसंत में बुंदेलखण्ड के लोक साहित्य, संस्कृति, कलाओं एवं इतिहास के साथ बुंदेली में लिखी रचनाओं का वर्ष भर स्वागत है। आप स्तरीय, मौलिक एवं अनुसंधानयुक्त रचना लिखकर संपादक के ई-मेल या पते पर भेज सकते है। चयन उपरांत उत्कृष्ट रचनाओं का प्रकाशन किया जायेगा।

- सम्पादक

चंदेल सत्ता के संवाहक बनाफर

– शिवभूषण सिंह गौतम 'भूषण'

बुन्देलखण्ड के इतिहास में चंदेलों के शासन काल को स्वर्ण युग माना जाता है। आठवीं शताब्दी से लेकर चौदहवीं शताब्दी तक लगभग छह सौ वर्षों तक चंदेल शासक सत्तासीन रहे हैं। किंतु इस बीच में लगभग चार सौ साल का काल खण्ड चंदेलों के उत्कर्ष का काल रहा है।

बुंदेलखण्ड के इतिहास का जिसे स्वर्णकाल कहा जाता है, उसके संस्थापन एवं संवर्धन में चंदेल शासकों के साथ-साथ बनाफरों ने महती भूमिका का निर्वाह किया है। किंतु इसे हम इतिहास के प्रति घोर उपेक्षा मानें अथवा अज्ञानता या उदाशीनता कहें कि जिस बनाफर वंश नें चंदेलों की कीर्ति कौमुदी को धरा से लेकर गगन तक पहुँचाने में अपनी पीढ़ियाँ खपा दी हमारी पीढ़ी आज उनका नाम तक नहीं जानती।

वह तो भला हो कवि जगनिक का जिसने आल्हखण्ड की रचना करके बनाफर वीर आल्हा ऊदल की गौरव गाथा को लोक व्यापी बना दिया। कतिपय इतिहास ग्रंथों के अनुशीलन तथा अन्यान्य सूत्रों के संयोग से चंदेल नरेशों के साथ-साथ उन बनाफर वीरों की पूरी की पूरी परम्परा का उल्लेख मिलता है जिन्होंने चंदेल सत्ता को फर्श से अर्श तक पहुँचाने में महती भूमिका का निर्वाह किया है।

दीवान प्रतिपाल सिंह रचित बुंदेल खण्ड का इतिहास भाग तीन पृष्ठ छह में लिखा है कि "बाँदा, हमीरपुर तथा दमोह गजेटियरों में लिखा है कि प्रत्येक चंदेल राजा के साथ एक बनाफर वंशी वीर का होना कहा जाता है।" इसी में वे आगे लिखते हैं कि "चंद नें प्रत्येक चंदेल राजा के साथ बनाफर वंशी सरदारों का बहुत गुण बखान किया है।" इतना ही नहीं स्वयं दीवान प्रतिपाल सिंह ने भी अपने इसी ग्रंथ में मुंशी ईश्वरी प्रसाद के संदर्भ से चंदेल राजाओं के साथ इन बनाफर वीरों का उल्लेख किया है।

महाराज छत्रसाल के पुत्र जैतपुर नरेश जगत राज के राज कवि पंडित हरिकेश ने जगतराज दिग्विजय नामक काव्य ग्रंथ में चंदेलों और बनाफरों के अन्योन्यश्रित संबंध के बारे में विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। वे लिखते हैं –

मम वंश पनाहक वन्हि देव। किय बन्हाफर मम करण सेव।।
जो चिंतामणि कुल मँह प्रवीन।शशिवंश धरोहा चंद्र कीन।।590।।

इसके आगे कवि नें कवित्त संख्या 592 में चिन्तामणि बनाफर से लेकर आल्हा ऊदल के पुत्रों तक की पीढ़ी का उल्लेख किया है –

चिंतामणि, शशीपाल, कृपाचंद्र, सभाचंद्र,
मकरन्द महावली, अकरूर अक्षराज।
मणिकंठ, सूनुकंठ, ताराचंद्र, दीपचंद्र,
सोडर अकूर भयो, वत्सराज, दस्सराज।।
दसराज जू के भे सुपुत्र युग महाबली,
आल्हा और ऊदल चंदेल के सुभलकाज।
आल्हा के इंदल भौ औ ऊदल के भौ नरेंद्र,
पुत्र भयो नामी यौं सनामी भौ चंदेल राजा।।592।।

इसी ग्रंथ से आगे कवित्त संख्या 595 में पुनः कवि पुष्टि करते हुये लिखता है –

वन्हिवर दै दियो बालक अतालिक से,
चिंतामणि ख्यात नाम चिंतामणि वरन में।
वंश प्रतिवंश याकौ शशीवंश संग चलै,
नाम कहो वन्हिदेव बन्हफर धरन में।।
चंद्रब्रह्म भूप भयो महि पै अनूप ताकौ,
बन्हफर बन्हि तुल्य ओप है उरन में।
ताके वंश सूरौ स्वामि धर्म में मशहूरौ,
महानामी भौ आल्हा आला जगत के नरन में।।595।।

मिश्र बंधु विनोद के रचनाकार पंडित श्याम बिहारी मिश्र व पंडित शुकदेव बिहारी मिश्र जब छतरपुर राज्य के दीवान थे, तब उन्होंने खजुराहो की तालिका नामक एक छोटी सी पुस्तिका तैयार करवाई थी, किंतु किसी कारणवस वह प्रकाशित नहीं हो सकी जिसकी अत्यंत जीर्ण-शीर्ण हालत में आधी अधूरी पाण्डुलिपि देखने को मिली है, जिसमें लिखा है कि "सात वर्ष चंद्रब्रह्म मौजा चांदी पठा (जिला बाँदा) में अपनी माँ की रक्षा में रहा। आठवें वर्ष हेमवती चंद्रब्रह्म को अपने साथ लेकर मौजा चांदी पाठा से खर्ज्जनपुर अर्थात खजुराहो में चली आई। "इसी में आगे लिखते हैं कि – "उस समय खजुराहो का मुखिया चिंतामणि नामक बनाफर था। वह बड़ा सज्जन था। उसने चंद्रब्रह्म का तेज प्रताप देख कर और उसे होनहार समझ कर उसके पालन-पोषण का भार अपने ऊपर ले लिया।

बीस वर्ष तक चंद्रब्रह्म चिंतामणि बनाफर की रक्षा में पालित-पोषित रहा, फिर उसकी सूरता का सूर्योदय हुआ, और गौंड़ भीलों का गोल जमा करके और चिंतामणि बनाफर को साथ लेकर कालींजर के राजा चंद्रश्री पर चढ़ाई की और उसे परास्त कर कालींजर पर अधिकार कर लिया। चंद्रब्रह्म इस तरह कालींजर का राजा हुआ और चिंतामणि बनाफर को अपना मंत्री नियत किया।

चंद्रब्रह्म के पश्चात् परिमर्दिदेव तक जो भी इस वंश का राजा हुआ उसका दीवान इसी चिंतामणि बनाफर का वंशज पीढ़ी दर पीढ़ी होता आया है। मुंशी ईश्वरी प्रसाद नें भी आल्हा समर सारावली में प्रत्येक चंदेल राजा के साथ उसके बनाफर दीवान का नामोल्लेख किया है।

खजुराहो की तालिका के अनुसार चंद्र ब्रह्म के पश्चात्

वाक्पति गद्दी पर बैठा जिसका दीवान चिंतामणि बनाफर का बेटा शशीपाल हुआ, जबकि जय शक्ति व विजय शक्ति के शासन काल में कृपाचंद्र बनाफर का दीवान होना बताया गया है। इसी प्रकार राहिल का दीवान नीलकंठ बनाफर तथा हर्षवर्मन के समय में अक्रूर बनाफर का दीवान होना कहा गया है। इसके बाद के राजाओं के दीवानों का नामोल्लेख होना नहीं पाया गया। इस सूची में मदन वर्मा के बाद परमर्दिदेव का राजा होना लिखा है अन्य सूचियों में इन दोनों के बीच अल्प समय के लिये यशोवर्मन या कीर्तिवर्मन का नामोल्लेख मिलता है जबकि हर्ष के बाद यशोवर्मन तथा देववर्मन के बाद कीतिवर्मन का क्रमशः आठवीं व चौदहवी पीढ़ी में राजा होने का स्पष्ट रूप से उल्लेख मिलता है।

दीवान प्रतिपाल सिंह के बुन्देलखण्ड का इतिहास भाग चार पृष्ठ 79 में लिखा है कि वाक्पति ने चिंतामणि की सहायता से कालींजर जीता। फिर आगे पृष्ठ 80 पर लिखते हैं चिंतामणि और चंद्रब्रह्म के पुत्र विश्वकर्मा ने सिंहलद्वीप जीता। इसी प्रकार पृष्ठ 83 में लिखते हैं कि अन्य पुस्तकों में लिखा है कि बालब्रह्म का बड़ा लड़का कालींजर की गद्दी पर बैठा। इसका मंत्री चिंतामणि बनाफर का पुत्र धारा जीत या धांधूजीत था। पृष्ठ 89 पर लिखा है कि उसका उत्तराधिकारी ब्रजब्रह्म या बीजब्रह्म हुआ जिसका मंत्री धाराजीत बनाफर हुआ इसका उत्तराधिकारी बेलब्रह्म या जयशक्ति हुआ और सभाचंद्र बनाफर इसका मंत्री था। इसके बाद इसका अर्थात जयशक्ति का भाई विजय शक्ति जिसे मानब्रह्म या नंदन ब्रह्म भी कहा गया है गद्दी पर बैठा मुंशी ईश्वरी प्रसाद नें इसका दीवान मकरंद बनाफर का होना लिखा है जबकि राहिल का अंकुर बनाफर बताया गया है। (पृष्ठ 96) हर्ष देव अथवा ज्ञानब्रह्म का दीवान अभयराज बनाफर का होना कहा गया है। जो यशोवर्मन के राज्य काल तक रहा। इसकी पुष्टि अन्य पुस्तकों से भी होती है। (पृष्ठ 98 व 103) जो चंदेल वंश की आठवीं पीढ़ी में हुआ माना जाता है।

यशोवर्मन के पुत्र धंग और उसका मंत्री भी अभय राज का होना स्थानीय पुस्तकों में लिखा है जबकि मुंशी ईश्वरी प्रसाद नें भीम बनाफर का दीवान होना कहा है। संभव है कि अभयराज धंग के समय में भी कुछ काल तक दीवान रहा हो बाद में वार्धक्य या फिर अवसान के पश्चात् भीम बनाफर नें दीवान पद सम्हाल लिया हो, क्योंकि धंगदेव ने लगभग पचास वर्ष तक सत्ता संभाली थी। इसके ही समय में गजनी का अमीर सुबुक्तगीन भटिंडा के राजा जयपाल पर चढ़ाई की थी। तब धंग ने जयपाल की सैन्य सहायता की थी।

धंग के पश्चात् गंड गद्दी पर बैठा, इसके बाद विद्याधर और फिर देवपाल ने थोड़े-थोड़े समय राज्य किया। इस बीच मुंशी ईश्वरी प्रसाद के अनुसार मनीकंठ व ताराचंद्र बनाफर दीवान हुये। किन्तु मदन वर्मन के एक शिला लेख के आधार पर इस बीच अक्षपाद नैयायिक का वंशधर प्रभास धंगदेव व गंडदेव का मंत्री तथा विद्याधर का मंत्री शिवनाग एवं इसका पुत्र महीपाल विजयपाल का मंत्री हुआ। इस विसंगति पर दीवान प्रतिपाल सिंह का विचार है कि ''मंत्रियों के लगातार विभिन्न नाम और जाति क्रम से मिलते जाने से भास होता है कि वे दोनों ही नाम और उनकी जाति ठीक है। बनाफर घराने के लोग भी मंत्री लिखे मिलते हैं।वे यथार्थ में युद्ध मंत्री अथवा सेनापति थे। शासन प्रबंध के प्रधानमंत्री वे ही लोग थे, जिनके नाम शिला लेखों में मिलते हैं। शिला लेखों में 8वें से लेकर प्रायः अंत तक के राजा तक के मंत्री लिखे हैं। स्थानीय पुस्तकों में प्रत्येक राजा का बनाफर मंत्री लिखा है। ये दोनों ही बातें ठीक जान पड़ती हैं। (भाग 4 पृष्ठ 120)

इसी क्रम में आगे कीर्तिवर्मन के मंत्री वत्सराज का उल्लेख देवगढ़ के शिला लेख में किया गया है। जिसे शिलालेख में महीधर कहा गया है। रूपब्रह्म का दीवान पुहमी सिंह व बच्छराज का दीवान होना लिखा है। मदनवर्मन के मंत्री का नाम गदाधर लिखा है।

इन्ही जस्सराज व बच्छराज का उल्लेख आल्हखण्ड में परमर्दिदेव के काल तक मिलता है जिनके पुत्र आल्हा, मलखान की वीरता का उल्लेख आल्हखण्ड के रूप में विख्यात है।

इस प्रकार प्राप्त ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह सत्य है कि चंदेल सत्ता के उद्भव से लेकर उसके विकास के चरम तक पहुँचाकर अंत में पराभव तक लगभग चार सौ वर्षों तक बनाफरों ने जो योगदान दिया है वह अद्भुत व अविस्मरणीय है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि चिंतामणि बनाफर वह पारस मणि था जिसके सानिध्य से एक निरीह अनाथ बालक इतिहास पुरुष बन गया।

अन्तर्वेद, कमला कालोनी, छतरपुर, मध्य प्रदेश
मोबा. - 9826756929 卐

फागुनी दोहे

- पद्मश्री डा. अवध किशोर जड़िया

वे प्रिय सो पियरे भये वे लाड़िली सो लाल।
प्रिया पलाशी हो गये गोरी भई गुलाल।।
पिचकारी छूटन लगी, लूटन लगी अनंद।
दिखन लगी मन की रसिक, लिखन लगी रस छंद।।
मिले लाल पीरे सभी सबज गुलाबी रंग।
अंग न चीन्हे परत है चीन्हे परत अनंग।।
फागुन रस रँगरेजिया, जिया जिया रँगदेत।
रँग न दिखाई देत सो, कछु न रँगाई लेत।।
चूनर भींजत कंचुकी, टप टप टपकत जात।
कछु ऐसो रँग रस रिसत, बाहिर नहीं लखात।।
बौराई सारी प्रकृति भौरे हुये मदंध।
घूँम घूँम कर ले रहे, रूप राशि रस गंध।।
विरह व्यथा में दुहुन कौ पृथक पृथक अस हाल।
पिया पलाशी हो गये, गोरी मई गुलाल।।

-हरिहर रोड, हरपालपुर, जिला छतरपुर卐

कविता-

पेड़ सब के साव

- लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर'

सबइं जियत पेड़न के बल पै पेड़े सबके साव।
पेड़न खौं नला कटन देव जीवे की गैल बचाव।।
अगय सबइ पेड़े कट जैं तौ पानी को बरसा है।
हम तुम साँस लेत जीसें बा हवा क्यांयें से आहै।।
जौन अपनु साँसें छोड़त बा पेड़े विरवा खात।
छान छान कैं उमदा साजी हवा बनाउत रात।।
सीचौं सेव पेड़ विरवा विरवन के संगै राव।
पेड़न खौं नला कटन देव जीवे की गैल बचाव।।
जेउ सोच कैं जेठे पैलाँ आम नीम पूजत ते।
बरा पीपरा ऊमर इनखौं जेठौ सौ लेखत ते।।
कौनउँ नला कौनउँ मिस अपनौ सब पेड़न से नातौ।
महामान कौ बड़ौ रिसल्लौ गाँव भरे कौ मातौ।।
जे कुदरत सें मेर कराउत इनैं रखायें राव।
पेड़न खौं ना काटन देव जीवे की गैल बचाव।।
कुदरत सैं जो मरे न राखौ भारी विपदा पर है।
रूख न रैं तो सबइ मनइ जा बिनइ मौत की मरहै।।
सुनत एक ओजौन परत है ऊमें छिदना हो गये।
हमें लगत के रूख कटै से रूखे बिधना हो गये।।
धरती पै सुक सें रानें तौ अब तुम रुख रखाव।
पेड़न खौं ना कटन देव जीवे की गैल बचाव।।
पेड़े विरवन में इमरत सो औखद को गुन रात।
उन्ना देत पैरबे खैबे देत दार उर भात।
पेड़न सैं है नाज टेर ईंदन घी शक्कर तेल।
छानी छप्पर सैं लै कैं जीवन कौ सबरौ खेल।।
ईंदन तन्-तन् कम बारौ नइ गोबर गैस लगाव।
पेड़न खौं ना कटन देव जीवे की गैल बचाव।।
जब सें ड़ॉगें कटन लगीं सो सूकइ सूका पर रये।
परयावरन विलुरबे सैं कउँ कउँ बाड़न में मर रये।।
हिरना खरा सामरा चीता आँखन नहीं दिखात।
कैसी नौंनी मोरन सें लौ छूटो अपनौ साथ।।
सिजवा खैर सगौना छेवला सबकी डाँग रखाव।
पेड़न खौं ना कटन देव जीवे की गैल बचाव।।
सौने के लोड़ा बेलन में चौं के कँथी मैं।
कैसे नौने लगत बेर लाँचे लाँचे पैदी मैं।।
दरमा बिहीं संतरा निबुआ इनकी अपनी शान।
टिको पापरे सें ठाँड़ो है खेतन बीच किसान।।
मैंड़न मैंड़न पै पेड़क खेतन में अन्न उगाव।
पेड़न खौं ना कटन देव जीवे की गैल बचाव।।
कैंमा कुरौ कसइ करधइ उर किरवारौ कचनार।
सीसौ साल सलैया श्यामर सिरसा वन कौ हार।।
खिरनी महुआ चरवा तेंदू इनकी अपनी बात।
फदक गड़ैलू कुमड़ा जे तौ खपरन पै चढ़ जात।।

आँगन में तुलसी बगिया में माँकत कदम लगाव।
पेड़न खौं ना कटन देव जीवे की गैल बचाव।।
गूगर अगर तगर चंदन कपूर के पेड़े होत।
बन्न बन्न की रबर बनत जा पेड़े इयै निचौत।।
चीड़ और देवदार सरग खौ सूदे सर्रा जात।
ढ़ूड़ें वे लौ रूख मिले जो बोलत हैं उर खात।।
रूखन सैं जा सबरी दुनियां इनसें मिल कैं राव।
पेड़न खौं ना कटन देव जीवे की गैल बचाव।।
काश्मीर में सेवफल की छीताफल कैसी डॉग।
इतै बगैचन में क्यारी केशर की भरती माँग।।
ऐसौ का है धरती पै जो पेड़े हमें न देत।
ऐसे ई तपसी पेड़न सें राखें रइयौं हेत।।
काश्मीर से कन्या कुँवारी जू लौ रूख रखाव।
पेड़न खौं ना कटन देव जीवे की गैल बचाव।।
पेड़न के गुन जान लैव तौ पेड़ कभउँ ना काटौ।
पठवा सौ ना डारें रैहो नदियाँ ढ़ीं कौ भाटौ।।
कंजी कुचला रैंवजा गुँजा कुल्ला धवा चिरौल।
सबइ पेड़ प्यारे है मोरवौं करत केर कौ कौल।।
लगा लेव पेड़े पेड़न के संग अमर हो जाव।
पेड़न खौं ना कटन देव जीवे की गैल बचाव।।
फल के ऊपर पत्ता ऊ तलवन में होत सिंगारौ।
राते छिटकत है गदूल दिन ऊँमें कमल प्यारौ।।
चंपा जुही चमेली गुड़हल जै गुलाब को भूल।
आक धतूरे कौ लौ चड़बै महादेव खौं फूल।।
आलू भटा टमाटर गोभी मिरचैं धना लगाव।
पेड़न खौं ना कटन देव जीवे की गैल बचाव।।
मदरा माँस बिगारत तन खौं करत उमर पे चोट।
कंद मूल फल फूल खाव बादाम गरी अखरोट।।
काजू दाख मुनक्का पिस्ता खइयौ पिड्डु.खजूर।
धन खौं हरयाई चराव दइ दूद खाव भरपूर।।
गौधन खौं रूँदन में चारौ गउचर-भूय रखाव।
पेड़न खौं ना कटन देव जीवे की गैल बचाव।।
सबरे धरम-ग्रन्थ हम तुम कौ वन सें जीवन जोरें।
रूख बने देवता ठाँड़े ते नंदबाबा के दोरें।।
वन में राम वसे ते वन सें लक्ष्मन बूटी आई।
एकलव्य ने अपने ऐसें वन में शिक्षा पाई।।
अपने अपने कुआ वावरिन नौंने बाग लगाव।
पेड़न खौं ना कटन देव जीवे की गैल बचाव।।
पैल पेड़ बोलत चालत ते देत हते उपहार।
वनदेवी जू शकुनतला खौं दए ते कुँडल हार।।
धन्वन्तरि लुकमान वैद्य सै खुद बोलत ती बूटी।
भौत बाँदबे लौ खौं इनकैं गड़ी रात ती खूँटी।।
पेड़े हरें पीर खौं इनखौं घर कौ बैद बनाव।

पेड़न खौं ना कटन देव जीवे की गैल बचाव।।
हर्र बहेरे औंरन को त्रिफला चूरन जो खात।
जोत घटत न ऊकी ऊखौं सबरे रोग डरात।।
सौंठ मिर्च पीपर मैंपर सें कफ खाँसी घबरात।
छाल कबा की पियें दूध सें हृदय रोग सब जात।।
कजन रतौंदी आड़त होय तौ रोजउँ गाजर खाव।
पेड़न खौं ना कटन देव जीवे की गैल बचाव।।
आदे खौं धो कें काटै फिर सैं धौनो न मिलाय।
धरै जमुरिया के रस में खैवे में पैलउँ खाय।।
बात पित्त कफ तीनउँ सुदरं भूंक दौर कैं आय।
मिटै गैस कौ रोग अकेलें चिकनइ थोरी खाय।।
बड़े भोर सें उठो हरीरी दूबा मैं फिर आव।
पेड़न खौं ना कटन देव जीवे की गैल बचाव।।
पौड़ा और बराईं चौखें जाय काँवरी वाय।
भतुआ चौरइ भूरा खैहो पथरी ना पर पाय।।

गुरयें कौ काड़ौ पीहौ ना कभउँ झुरझुरी आय।
कौंरे पत्ता खेव नीम के कैर खाज सब जाय।।
पके पके जामुन खाकैं शक्कर कौ रोग मिटाव।
पेड़न खौं ना कटन देव जीवे की गैल बचाव।।
नाँव शंखपुष्पी है जीकौ उयै सिकौली कात।
सेत फूल की होत पियैं विद्या आपउँ आ जात।
गौमाता के दूद संग खारक कौ पिंयाँ मिलत तो।
गबवारन कौ मौं देखौ तौ चंदा घाँइँ खिलत तो।।
घमरा के पत्तन के रँग सैं अपनौ मूड़ अनाव।
पेड़न खौं ना काटन देव जीवे की गैल बचाव।।
ईसै जीसै बनें ज्याँयँ सो विरवा खूब लगइयौ।
बस भर रूख हरीरे खौं तुम कौनउँ दुख ना दइयौ।।
बारा झरबे बनत जौन लौ खजरी की का कात।
सबसैं पैलाँ मौर टिंकत फिर पाँछू टिंकत बरात।।
सबइ शोक को वंश मिटै जो बाँस अशोक लगाव।
पेड़न खौं ना कटन देव जीवे की गैल बचाव।।

– ईशानगर (छतरपुर) म.प्र.

तीन बुंदेली ग़ज़लें

– महेश कटारे 'सुगम'

(एक)

हम नईं मानत भगवानन खों
पथरन के तारन हारन खों
जिन पूजौ जे बड़े कुकर्मी
झूठे बाबा,बैरागन खों
करत दलाली भगवानन की
चीन लेओ इन हत्यारन खों
जुरम करें लै आड़ धरम की
जेल में डारौ इन सारन खों
बना आश्रम ऐश करावें
नासमिटे पैसा वारन खों
मेंत,पसीना भरी कमाई
काय लुटा रये बदमासन खों

(दो)

ख़ुशी मिलत तौ उमर बढ़त है
दुखी आदमी वेग मरत है
जोंन आदमी मन कौ कारौ
खूबई बौइ सजत संवरत है
जी की अच्छी नज़र होत है
वौ अच्छौ अच्छौ देखत है
भादों में जो आँखें फूटें
फि़र तौ हरौ हरौ सूझत है
घाव देत जब अपनौ कौनऊं
हलकौ घाव भौत कसकत है
सुगम सुभाव होत है जैसौ
वौ सबखौं ऊसौ समझत है

(तीन)

फरुआ, गेंती, झउआ अपने
जेई हैं पेट भरउआ अपने
बुरये बखत में काम आत हैं
चना,चबेंना,मउआ अपने
खेतन पै रखवारी करवे
घर जैसे हैं ढबुआ अपने
अवा ग्रहस्थी कौ कच्चौ है
हल्के भौत बचउआ अपने
एक दिना आहै जब घर में
हुइयें चार कमउआ अपने
जा दिन मेंनत की अत होवै
खुलत वई दिना पउआ अपने
काछी, कोरी, धानक, धोबी,
मोची,राय,बरउआ अपने
चैन परै जब बामुन, ठाकुर
नईं रै जैहें हउआ अपने
जीवन भर दुख में पिर पिर कें
मर गये बब्बा,बउआ अपने

झउआ....बाँस की टोकरी। ढबुआ.... खेतों पर बनी झोंपड़ी।अवा.....मिट्टी के कच्चे बर्तनों को पकाने का उपक्रम। पउआ.......शराब की शीशी । हउआ....खौफ़नाक।

– काव्या, चन्द्रशेखर वार्ड, बीना
मोबा. – 9713024380

श्रद्धांजलि लेख -

वर्षा दीदी : मेरी दृष्टि में

– **डॉ.सुजाता मिश्र**

कोविड 19 के प्रकोप ने भारतीय साहित्य जग के कई चमकते, रोशनी बिखेरते सितारों को हमसे अकस्मात् ही छीन लिया, सागर साहित्य जगत में अपनी गज़लों, गीतों, अदब और मधुर आवाज़ के लिये जानी जाने वाली आदरणीय डॉ.वर्षा सिंह(वर्षा दीदी) भी कोरोना से जंग हार गयी छोड़ कर चली गयी हम सबको। वर्षा दीदी एक बेहतरीन गज़लकार होने के साथ – साथ एक उम्दा व्यक्तित्व की धनी भी थी। एक अनकहा सा अपनापन था उनमें, मुस्कुराता हुआ चेहरा, जब भी मिलती थी उत्साहवर्धन करती थी बड़ी बहन की तरह। प्रसन्नचित्त व्यक्तितत्व, सकारात्मक ऊर्जा से दमकता चेहरा ,खिले हुए फूलों सी मुस्कान बिखेरती आदरणीय डॉ. वर्षा सिंह (दीदी) जैसे खुद एक चलती, फिरती, मुस्कुराती, संवाद करती गज़ल थी। मेरी दृष्टि में वास्तविक साहित्यकार या रचनाकार वही होता जिससे मिलकर, बात कर आपको न सिर्फ उनके ज्ञान का बोध हो बल्कि उनकी सहजता,सरलता और संवेदनशीलता का भी एहसास हो जाए। निश्चित तौर पर साहित्यकार होने के लिये पहली आवश्यक शर्त तो व्यक्ति की संवेदनशीलता ही है, अध्ययन और चिंतन तो उस संवेदनशीलता को महज एक दिशा देते हैं, भावनाओं को बहाव से रोकते हैं। ''पथ के साथी'' में महादेवी वर्मा कहती हैं :- ''साहित्य की सामान्य अनुभूति और साहित्यकार के व्यक्तिरूप में समानता पाना प्रायः कठिन हो जाता है। कभी-कभी तो ये दोनों इतने अनमिल ठहरते हैं कि साहित्य से उत्पन्न पूजा-भाव व्यक्ति तक पहुंच कर अवज्ञा बन जाता है या व्यक्ति परिचय से उत्पन्न आसक्ति छलक कर साहित्य को धबीला कर देती है।''

आदरणीय वर्षा दीदी ऐसी साहित्यकार थी जिनके व्यक्तित्व और साहित्य में अद्भुत साम्य झलकता था। शायद इसकी वज़ह उनकी साहित्यिक पारिवारिक पृष्ठभूमि थी। वर्षा दीदी की माताजी डॉ.विद्यावती ''मालविका'' मध्यप्रदेश की जानी-मानी साहित्यकार थी, जिन्हें अपने साहित्य सृजन और सेवा के लिये मध्यप्रदेश सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार सहित अनेक साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मनित किया गया था। डॉ. विद्यावती ने अपने बलबूते पर अपनी दोनों पुत्रियों वर्षा सिंह और शरद सिंह का लालन-पालन कर उन्हें उच्च शिक्षित किया। उन्होंने व्याख्याता के रूप में मध्यप्रदेश शासन के शिक्षा विभाग में उज्जैन, रीवा एवं पन्ना आदि स्थानों में अपनी सेवायें दीं और सन् 1988 में सेवानिवृत्त हुईं।

हम देखते हैं कि एक आत्मनिर्भर, उच्च शिक्षित मां के सान्निध्य और साहित्यिक परिवेश में पली-बढी वर्षा दीदी ने स्त्री जीवन का संघर्ष ,स्त्रीत्त्व की शक्ति ,रिश्तों की जटिलता और खूबसूरती बचपन से ही देखी ली थी। यह उनकी मां की दूरदृष्टि ही थी कि अपनी बेटियों को पारिवारिक प्रपंचों से दूर रखकर समय की मांग के अनुसार शिक्षित किया, जिस बुंदेलखंड में आज भी कम उम्र में ही लड़कियों के ब्याह कर दिये जाते हैं, कच्ची उम्र में ही उन्हें पारिवारिक जिम्मेदारियों में धकेल दिया जाता है , वहां मालविका जी ने अपने समय और समाज से कहीं आगे की सोच को अपनाते हुए अपनी दोनों बेटियों बौद्धिक विकास को महत्व दिया, उनकी शिक्षा को महत्व दिया। उनके लेखन को आधार और दिशा दी। उन्हें उनके अस्तित्त्व और जीवन लक्ष्य से परिचित करवाया।

मां से वसीयत में मिली यही सहजता, यही परिपक्वता, यही आत्मनिर्भरता मैंने सदैव वषाज़ दीदी में देखी थी। 29 अगस्त 1958 को मध्यप्रदेश में जन्मी डॉ.वर्षा सिंह ने वनस्पति शास्त्र में एम.एस-सी की थी। शायद भादों के बरसाती मौसम में जन्म लेने के कारण ही उनका नाम ''वर्षा'' रखा गया हो। यह भी एक सुखद आश्चर्य ही है कि वनस्पति शास्त्र से एम. एस. सी., होमियोपथी और मेडिसिन में डॉक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त डॉ. वर्षा सिंह उर्दू और हिंदी गज़ल परम्परा की भी इतनी गहन जानकार और प्रबुद्ध रचनाकार थी। गज़ल को परिभाषित करते हुए वो लिखती है – ''गज़ल के अध्येताओं की मानें तो गज़ल का जन्म लगभग हज़ार वर्ष पहले ईरान में हुआ। यह भी माना जाता है कि इसकी शुरुआत कसीदे से हुई। तत्कालीन शायर अपने सरपरस्त शासक को खुश करने के लिये शराब और शबाब के साथ शासक की प्रशंसा के शेर कहा करते थे। गज़ल शब्द की उत्पत्ति के बारे में यह मान्यता प्रचलित है कि ''गज़ल'' फारसी के गज़ाला (अथवा गिज़ाला) से बना। गज़ाला का अर्थ होता है हिरणी। इस मान्यता के अनुसार किसी हिरणी के आर्तनाद के मार्मिक स्वर और उस स्वर के उतार-चढ़ाव के आधार पर पहली गज़ल कही गयी होगी। ''

वो आगे लिखती हैं ''गज़ल चाहे ईरान में जन्मी हो या अरब में , विशेषता यह है कि साहित्य की अन्य विधाओं की तरह गज़ल का वास्ता भी हिंसा या खून-खराबे से नहीं रहा लेकिन आक्रमणकर्ताओं के साथ उनकी संस्कृति की साहित्यिक प्रतिनिधि बनकर गज़ल भौगोलिक सीमायें लांघती गई और भारत तक आ पहुंची। मुगल शासक जब भारत आये तो उनके साथ फारसी संस्कृति भी भारत आई। मुगलकाल में सरकारी कामकाज की भाषा फारसी बनी और आम जनता को फारसी सीखनी पड़ी, भाषा के साथ उसका साहित्य और साहित्य की विधायें भी। इसी दौर में गज़ल ने भारतीय कवियों के मन को छुआ और कुछ फारसी शायर आम भारतीय बोली-भाषा से प्रभावित हुए।'' वर्षा जी कहती है कि ''गज़ल के बारे में इतनी चर्चा करने का उद्देश्य गज़ल का इतिहास बताना नहीं है, वरन गज़ल की उन विशेषताओं की चर्चा करना

उद्देश्य है जिन्होंने मुझे इस विधा की ओर आकर्षित किया''
बकौल वर्षा सिंह–
''गज़ल वो शै है जो दिल को हमेशा ही लुभाती है
निकलती है जो दिल से तो दिलों में ही समाती है''
वर्षा जी की गज़लों में विरह की वेदना का स्वर मुखर है, जो कहीं अनकहे प्रेम तो कहीं प्रेम के अधूरे वादों से उमड़े दर्द को बयां करते हैं:–
''एक सपना जो देखा था मिल कर कभी
वो अधूरा, न पूरा हुआ आज तक
आज तक फिर न कोई मिला उस तरह,
जिसके मिलने से दिल में यूं हलचल मचे।''

मोहब्बत तो राधा की भी अधूरी थी, शायद इसीलिये प्रेम में बिछड़े हर विरही को अपनी और राधा की कहानी एक सी लगती होगी, मिलना, मोहब्बत में डूब जाना, और फिर एकाएक जुदा हो जाना, और ज़िंदगी जो कल तक सजीलें सपनों से सजी थी, वो एक पल में ही जैसे उदासी भरे इंतज़ार में जाती है, कभी न खत्म होने वाले इंतज़ार में। वर्षा जी की यह गज़ल सच्चे प्रेम की सच्ची बयानगी है :–
''इक चांद हो मुट्ठी में, उस शाम की चाहत है
जो नाम मेरे आये, पैगाम की चाहत है
तहरीर अधूरी है,मंज़र भी अधूरे हैं
राधा की कहानी को घनश्याम की चाहत है
इक भीड है दुनिया की, अपना सा नहीं कोई
दुनिया से क्या लेना, उस नाम की चाहत है
जो साथ रहा कल तक, वो दूर है नज़रों से
आगाज़ – ए – मोहब्बत को अंज़ाम की चाहत है।''

प्रेम की यह पीर एक तरफा इश्क में और भी बढ़ जाती है, यह ऐसा दर्द है जो कहा भी न जाये और कहे बिना रहा भी न जाये। एक तरफा इश्क में डूबे प्रेमी को चांदनी भी जलाती है, हर जगह – हर कहीं प्रियतम की मौजूदगी महसूस होती है, ऐसा लगता है जैसे दूर कहीं से वो हमें आवाज़ देकर बुला रहा है:
''ये जो एक तरफा इश्क है, मुझे मुझसे ही है चुरा रहा
मेरी बेखुदी को बढ़ा रहा, मुझे चांदनी में जला रहा
मेरी सुबह भी परेशान सी, मुझे शाम लगती उदास सी
मुझे बेवजह ये भरम हुआ, मुझे दूर से वो बुला रहा

इस शैली की गज़ल में कहीं – कहीं हमें सूफी काव्य या आध्यात्मिक प्रेम की भी झलक दिखती है:–
कभी ख्वाब में भी जो था नहीं, वो ख्याल बन के है आ रहा
मुझे क्या हुआ कि मैं चल रही, मुझे रास्ता वो दिखा रहा''

किसी भी संवेदनशील रचनाकार के मन देश में चल रही सामाजिक–राजनीतिक गतिविधियों से प्रभावित होता है, तो ऐसे में वर्षा सिंह जैसी सचेतन और संवेदनशील गज़लकार कैसे ऐसे विषयों से अछूती रहती? यही वजह है कि प्रेम की रुमानियत के साथ ही वषाज़ जी की कुछ गज़ल और कवितायें देश प्रेम पर भी मिलती हैं, देश की आज़ादी पर लिखी यह कविता किसी भी विद्यालयीन समारोह में गाने के लिये उपयुक्त है:–
''आज़ादी के गीत हमेशा गायेंगे
अपना प्यारा परचम हम लहरायेंगे
संघर्षों के बाद मिली जो आज़ादी
उसका हम इतिहास सदा दोहरायेंगे
बलिदानों की गाथा को आदर्श बना
नई राह पर कदम बढ़ाते जायेंगे
चांद छू लिया, मंगल तक जा पहुंचेंगे
अंतरिक्ष को धरती पर ले आएंगे
एक देश है भारत, रंग हज़ारों हैं
रंग एकता का 'वर्षा' दिखलाएंगे॥''

स्त्री विमर्श का स्वर भी कहीं–कहीं उनकी कविताओं में उभर आया है। एक स्त्री ही स्त्री मन को समझ सकती है, अपनी कविताओं में वर्षा जी ने स्त्री के जीवन को देखने का प्रयास किया है : –
''देखो यहां उदास ख्यालों में औरतें
उलझे हुए जवाब, सवालों में औरतें
स्पीच,टॉक,लेख, कहानी की शक्ल में
खुशहाल दिख रही हैं रिसालों में औरतें।''

स्त्री हर परिस्थिति के अनुसार स्वयं को ढाल लेती है, अपनों की खातिर अक्सर अपने आप को ही भुला देती है, फिर संसार में त्याग की प्रतिमूर्ति स्त्री को पुरुष से कमतर ही माना जाता है, पुरुष की परछाई कहा जाता है, क्यों हम पुरुष को कभी स्त्री की परछाई नहीं कहते? जबकि आज स्त्रियाँ घर, परिवार, कैरियर , राजनीति, खेल हर जगह अपनी पहचान बना रही हैं फिर भी हम स्त्री को पुरुष के बिना अधूरा क्यों मानते हैं? अपनी कविता में वर्षा जी स्त्री अस्तित्व को कुछ यूँ बयाँ करती हैं:–
''धूप,पानी,नदी,हवा औरत
दिल से निकली हुई दुआ औरत
ओढ खामोशियों की चादर को
काट लेती है हर सज़ा औरत
घर हो, बाज़ार हो, सियासत हो
हादसों से भरी कथा औरत
प्यार के खेल में सदा 'वर्षा'
चोट खाती है हर दफा औरत।''

वर्षा जी की गज़लों में जहां थोड़ी उदासी है, दर्द है वहीं उनकी कविताओं में मैं सकरात्मकता देखती हूँ। इस कविता में जो वो कहती है, शायद यही उनका जीवन मूल्य भी था, शायद यही उनकी जिंदादिली भी थी :–
''लक्ष्य पाना है बढ़ो, यह शर्त है
जीतना है तो लड़ों, यह शर्त है
बात कहनी है, कहो निर्भीक हो
आंधियों से मत डरो, यह शर्त है
लालसा यदि है तुम्हें उल्लास की

दर्द भी हंस कर पढ़ो, यह शर्त है।''

वर्षा जी स्वभाव से प्रेमी हैं, उनकी गज़लों में लौकिक और अलौकिक प्रेम की झलक दिखती है, इस चित्रण में प्रेम की पीर ज्यादा है, अनकहे, अधूरे प्रेम का जिक्र है जो, और उस जिक्र में एक मीठा सा दर्द है। प्रेम का यही मीठा दर्द उन्हें बेहतरीन शायरा और कवयित्री बना देता है, और उनके प्रेम को विस्तार दे देता है। इसीलिये उनकी कविताओं में वो देश प्रेम भी है और प्रकृति प्रेम भी। यदि मैं कहूँ कि डॉ. वर्षा सिंह की लेखनी लौकिकता से अलौकिकता और आत्म पीड़ा से पर पीड़ा की यात्रा करती है तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

वर्षा दीदी की गज़लों पर आज के लोकप्रिय युवा शायर आदर्श दुबे कहते हैं ''ग़ज़ल जिस तहदारी की मुतक़ाज़ी है,वह सदियों के फ़िक्री रचाव का हासिल है,और इस हासिल से कुछ क़सीद कर पाना, अपने आप में बहुत मुश्किल और बड़ी बात है लेकिन इस बाकमाल हुनर को जीने का फ़न डॉ वर्षा सिंह जी को बख़ूबी आता था! इन की शाइरी में मुहब्बत और मासूमियत की बुनत साथ ? - साथ मिलती है और इस बेजोड़ मिलाप से मुतासिर हुए बग़ैर रहा ही नहीं जा सकता,यहाँ ज़ब्त और एहतराम इस एहतिमाम से मिलता है के कोई कैसे इन के क़रीब न आये! इंसानी बराबरी और इन्सानी हमदर्दी के ख़ूबसूरत और नायाब ख़्वाब में रचे बसे इन के तमाम अशआर अदबी दुनिया में ही नहीं बल्कि दिल की दुनिया में भी ख़ूब सैर करते हैं। सी सिलसिले के कुछ शेर हाज़िर कर रहा हूँ जो कि किसी भी मुहब्बत करने वाले के दिलो दिमाग़ में रक़्स करने के लिए काफी हैं,

''उसी का नाम ले-ले कर मेरे दिन-रात कटते हैं
उसी के नूर से दुनिया सितारों सी चमकती है''
''चमन गुलज़ार उससे है, बहारों का वो साया है
कहीं से वो निकलता है, गली मेरी महकती है''
''चले थे साथ अब राहें अलग अपनी भला क्यों हैं ?
नहीं दिल की कोई ग़लती तो पाता ये सज़ा क्यों है?''

सागर नगर की साहित्यकार डॉ.चंचला दवे वर्षा दी के ''गज़ल संग्रह जब बात करती है'' पर अपने विचार रखते हुए कहती हैं:- ''वर्षा जी की गज़लों में युगीन चेतना के स्वर हैं, उनकी गज़लों में मधुमास, औरत है, परिंदे हैं, प्रेम है, पीडा है, मिलन के साथ वियोग है, धरती है, बारिश और गांव है, शहर है, प्रकृति है, अतीत के साथ पक्षी और पानी भी है। वर्षा जी बनावट से दूर स्वाभाविक अभिव्यक्ति में विश्वास रखती हैं।''

वर्षा दीदी के तमाम गज़ल संग्रहों पर गौर करने पर एक समानता जो दिखी, वो अपनी हर पुस्तक की प्रस्तावना, या भूमिका स्वयं लिखती थी जिसमें सम्बंधित गज़ल संग्रह पर तो विचार होता ही था साथ ही गज़ल विधा के इतिहास, स्वरुप, महत्व और सामाजिक भूमिका पर भी गम्भीर चिंतन मिलता है। इन भूमिकाओं में उनके भीतर निहित एक गम्भीर आलोचक और अध्येयता नज़र आता है। मुझे उनकी गज़लों में समष्टि की पीडा भी नज़र आती है। सर्वहारा का अनुभूति भी उनकी निजी अनुभूति से जुड़ जाती है। वो लिखती हैं :-

''घिस गये मोजे,फटी एड़ी, चला जाता नहीं
क्या करें आकाश में उडना हमें आता नहीं।
आंच सिगड़ी में नहीं इतनी कि रोटी सेंक लें
बंद चौके के तवे का, धूप से नाता नहीं।
हम खुली पलके लिए, सोये न सोये, फर्क क्या?
दर्द लोरी और परभाती कभी गाता नहीं॥

एक अन्य समानता यह है कि अपनी गज़लों को वो कहीं भी कोई शीर्षक नहीं देती। हम जहां पर हैं, दिल बंजारा और सच तो ये है गज़ल संग्रहों में उन्होंने क्रम संख्या को ही बतौर शीर्षक लिखा है। उनके सभी संग्रहों में प्रकृति प्रेम, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, स्त्री चेतना, देश प्रेम आदि के भाव मिलते हैं।

वर्षा जी की गज़लों पर अपने विचार रखते हुए चिकित्सक और वरिष्ठ साहित्यकार डॉ.श्याम मनोहर सिरोठिया लिखते हैं:- ''सच कहा जाए तो जीवन के इंद्रधनुषी स्वरूप को गज़ल के कैनवास पर उतारने में डॉ. वर्षा सिंह सिद्धहस्त थी। उनकी एक गज़ल देखें:-

''करें जब दुश्मनी बेशक करें, पर ख्याल रक्खें,
सलीका भी जरुरी है, अदावत के लिये।''

अदावत में भी सलीके की बात कहना मानवीय संवेदनाओं और संस्कारों की पराकाष्ठा है जिसे वर्षा जी ने बेहद संजीदगी के साथ गज़ल में भी कहा है। वस्तुत: डॉ. वर्षा सिंह की गज़ल मासूमियत की गज़ल है। वर्षा जी जितनी ईमानदारी से आपबीती कहती थी उतनी ही ईमानदारी से जगबीती कहने का माद्दा भी रखती थी।मुझे लगता है कि डॉ. वर्षा सिंह केवल गज़ल लिखती ही नहीं थी, वह गज़ल जीती भी थी।''

उनके प्रकाशित गज़ल संग्रहों में सर्वहारा के लिये,वक्त पढ़ रहा है, हम जहां पर हैं,सच तो ये है, दिल बंजारा, गज़ल जब बात करती उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने ''हिंदी गज़ल : दशा और दिशा'' नाम से एक आलोचनात्मक पुस्तक भी लिखी, जो काफी चर्चित रही। सारिका, आजकल.वागार्थ, हंस, जनसत्ता, धर्मयुग, साप्ताहिक हिंदुस्तान, दैनिक भास्कर, नवभारत, लोकमत, दैनिक भास्कर, आचरण, देशबंधु सहित देश और मध्यप्रदेश की अनेक साहित्यिक पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में नियमित रूप से उनकी रचनाएं प्रकाशित होती रहती थी। समय-समय पर दूरदर्शन भोपाल और आकाशवाणी के सागर, भोपाल, छत्तरपुर केंद्रों से उनकी रचनाओं की प्रस्तुति होती रहती थी। बिजली विभाग में अतिरिक्त कार्यालय सहायक श्रेणी एक के पद पर कार्यरत डॉ. वर्षा सिंह साहित्यिक आयोजनों में भी निरन्तर सक्रिय रहती रहती थी। अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से हिंदी भाषा और साहित्य की सेवा करने हेतु उन्हें अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से विभूषित भी किया गया। जिनमें मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन सागर का ''सुधारानी डालचंद जैन'' सम्मान, बुंदेली लोककला संस्थान झांसी द्वारा ''गुरदी देवी स्मृति सम्मान'', मध्य प्रदेश राज्य विद्युत मंडल, जबलपुर द्वारा ''विशिष्ट हिंदी सेवी सम्मान'',

राजभाषा परिषद भारतीय स्टेट बैंक सागर द्वारा "उत्कृष्ट साहित्य सृजनकर्ता सम्मान" सहित अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं और पत्र-पत्रिकाओं के सम्मान-पुरुस्कार शामिल हैं।

गज़लकार होने के साथ ही वर्षा दीदी एक गहन समीक्षक और प्रभावशाली वक्ता भी थी। विभिन्न साहित्यिक गोष्ठियों और साहित्येत्तर कार्यक्रमों में मैंने उनके विचार सुने थे। आचरण अखबार में उन्होंने सागर के साहित्यिक जगत की तमाम हस्तियों पर विस्तृत आलेख श्रृंखला चलाई थी, जिसमें पहले वरिष्ठ साहित्यकारों को शामिल किया गया और फिर बाद में युवा रचनाकारों पर भी लिखा। मेरे लेखन और समीक्षा का यह शुरुआती दौर ही था अत: जब मैंने खुद के साहित्य पर वर्षा दीदी द्वारा लिखा आलेख पढ़ा तो मैं सातवें आसमान पर थी। वर्षा दीदी और शरद दीदी दोनों में ही नई प्रतिभाओं को अवसर देने, उनका उत्साहवर्धन करने की जो प्रवृत्ति मैंने देखी वो वर्तमान साहित्य जगत में दुर्लभ है! आजकल के साहित्यिक गिरोह जिनमें किसी नए लेखक की एक पुस्तक प्रकाशित होते ही उसकों साईड लाईन करना, अनदेखा करना शुरु कर दिया जाता है उनमें डॉ. शरद सिंह जैसी वरिष्ठ साहित्यकार जब अपनी दिवगंत बहन की स्मृति में युवा रचनाकार सम्मान की शुरुआत करती है तो मन कह उठता है एक सच्चे साहित्यकार का साहित्यिक अवदान यह भी है कि वो अपने बाद की पीढी को कैसे अवसर देता है कैसे उत्साहवर्धन करता है। मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूं कि आदरणीय शरद दीदी ने "प्रथम (स्व.) डॉ.वर्षा सिंह स्मृति युवा रचनाकार सम्मान 2022" के लिये मुझे योग्य समझा, और हिंदी दिवस पर श्यामलम द्वारा आयोजित कार्यक्रम में वरिष्ठ साहित्यकार, कवि ध्रुव शुक्ल, प्रो.सुरेश आचार्य, डॉ. अजय तिवारी तथा डॉ.शरद सिंह (दीदी) के हाथों मैंने यह सम्मान ग्रहण किया।

3 मई 2021 का दिन सागर के साहित्यिक समाज को लिये एक ऐसी पीड़ा दे गया जिसने सबको झकझोर दिया। कोरोना महामारी से संघर्ष करते हुए वर्षा दीदी का ऐसे खामोशी से चला जाना सभी को विचलित कर गया। लॉकडाउन की स्थिति में लोग चाहकर भी अपनी प्रिय दीदी को अंतिम विदा नहीं दे सकते थे। जो वर्षा दीदी हर साहित्यिक आयोजन की जान थी आज वो चिर एकांत की यात्रा पर निकल चुकी थी, और हम बेबस, गमगीन लोग सिर्फ फोन पर ही सारी जांनकारी प्राप्त कर पा रहे थे। लगभग सप्ताह भर से उनसे बात होती रही फोन पर, पहले माताजी का देहावसान हुआ, मां को श्रद्धांजली देते हुए उन्होने एक कविता भी लिखी थी "अलविदा मेरी मां" .... और फिर एकाएक 10 दिनों के बाद ही वर्षा दीदी भी चली गयी। उनका यूं जाना अचम्भित कर गया। अच्छे लोगों को भगवान भी जल्दी बुला लेता है! दो साल बाद उनकी स्थायी अनुपस्थिति को स्वीकारते हुए आज मैं कह सकती हूँ कि रचनाकार मरते नहीं.... वो अपनी रचनाओं, अपनी कविताओं, अपनी गज़लों, अपनी कहानियों, अपने विचारों के साथ अमर हो जाते हैं। रचनाकार मरते नहीं वो ब्रह्मलीन हो जाते हैं।

-अतिथि विद्वान हिंदी विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर,मध्यप्रदेश
ईमेल sujata0630@gmail.com 卐

कुदइ कड़ी

– नवल किशोर सोनी 'मायूस'

अपुन गुटक रइ कुदइ कड़ी।
मोरे लानैं दार सड़ी।।
मोरी एकउ बात न मानै।
मोखाँ तौ बा मूसर जानै।।
अपुन बनी हुसियार बड़ी।।
पड़ी लिखी नइयाँ रत्ती भर।
करिया दस्कत भैंस बिरोबर।
तउपै बाँदे हाँत घड़ी।।
जब मैं उयै तनक खिसयानो।
ऊनैं दिन भर दओ उरानो।।
तीन दिनाँ तक ऐंन लड़ी
ऐंन मना लओ तउ ना मानी।
पैलाँ से जादा उमछानी।।
मैंने जड़ दइ एक छड़ी।
मोरे ऐंगर नइयाँ धेला।
बा कैरइ कै ल्याव पटेला।।
साड़ी चानैं उयै जड़ी।।
हीग घाँइ मैं उयै बसा रओ।
मोरो घर नइँ उयै पुसा रओ।।
जैंव मायके करत अड़ी।
सोचन में घुर रओ जो चोला।
फटो बिदैंय फिरत मैं झोला।।
परदनिया दो बेर डड़ी।।
भरै सुपारन सैं बा बटुआ।
ठाँड़े मोल मँगाबे सतुआ।
उयै रहीसी ऐंन चड़ी
पउआ भर बा खाबै शक्कर।
मोय दैखकैं आबैं चक्कर।।
कर रइ मोरी खाट खड़ी।
हे भगवान मुसीबत हर लो।
मोरे संगै जो जस कर लो।
सम्पत कउँ मिल जाय गड़ी।
कविता लिखी हँसी के लानै।
ईको कउँ बा बुरओ न मानै।
पड़ लैबे जो होय पड़ी।
मैं 'मायूस' हीन हों धन सें।
चाहत तौ हौं ऐसो मन सें।
सोने सैं बा राय मड़ी।।

- सिटी कोतवाली के पीछे, छतरपुर 卐

बुंदेली व्यंग्य-

इनको पेट गणेशजी के पेट से बड़ो कहानो

- - डॉ. (सुश्री) शरद सिंह

जे ऊ समै की किसां आए जबे कुलियन, गलियन, चौराहा सबई जांगा गणेशजी की झांकियां औ पंडाल सज गए रए। सड़कन पे झालरें सज गई रईं औ डीजे-मीजे ढांय-ढांय करन लगे हते। राम धई ! जे ससुरे डीजे इत्ते जोर से बजाए जात आएं के कोनऊं कमजोर दिल वारो होय तो ऊको कलेजो पांचई मिनट में टें बोल जाए। मोरो तो दिल मजबूत आए मनो डीजे की धमा-धम के आगूं बा सोई कमजोर पड़न लगत आए। कैने खों तो खूब कओ जात आए के रात में दस बजे के बाद कोनऊं डीजे ने बजाए, मनो ऐसे कैबे वारों की सुनत कोआ? ऊ टेम पे मोय भैयाजी से लिबे की सूझी। काय से के भैयाजी ही एक ऐसे प्राणी आएं जोन से मोरी अच्छी बतकाव हो जात आए। ने तो और कोन ऊं के आगूं सो ही-ही, ठी-ठी करने पड़त आए। सयानी बतकाव सो आजकाल कोनऊं करबोई नईं चात। सो, मैं जबे भैयाजी के ऐंगर पौंची तो जेई सब कछू मोरे दिमाग में दौड़न लगो। बे झट्टई समझ गए के मोय कोनऊं सोच-फिकर में खटमल सी काट आ रई।

''का सोच फिकर में डूबी हो बिन्ना?'''' मोय ध्यान से देखत भए भैयाजी ने मोसे पूछी।

''मैं जे सोच रई के पंडाल सज गए। गणपति बिराज गए।'' मैंने कई।

''हऔ, सो ईमें सोचबे को का? जे तो हर साल होत आए।'' भैयाजी बोले।

''मनो कित्तों अच्छो लगत आए।'' मैंने कई।

''हऔ ! अच्छो तो लगत आए, मनो काय तुम टरका रईं औ मोय असल बात नई बता रईं।'' भैयाजी बोले।

''कोनऊं असल-वसल बात नइयां।''

''कैसे नइयां? का हम तुमें जानत नइयां। तुमाए माथे पे लकीरें देख के हम जान जात आएं के तुमें कोनऊं सोच मे हो।'' भैयाजी बोले। ''सो बताओ के का सोच रईं?'' भैयाजी ने फिर के पूछी।

''मैं जे सोच रई भैयाजी के जे जो अपने इते जित्ते बी भ्रष्टाचारी आएं इनको पेट सो मानो गणेशजी के पेट से बड़ो कहानो।'' मैंने कई।

''का मतलब?'' भैयाजी ने पूछी।

''मतलब जे के बेचारे गणेशजी सो लडडुअन के प्रेमी ठैरे, सो लड्डू खाए से उनको पेट फ ट गओ रओ, मनो इते तो जे भ्रष्टाचारी हरें खात जात-खात जात, औ डकार बी नईं लेत। पेट फटबे की तो छोड़ो।'' मैंने भैयाजी से कई।

''हऔ, बेई हराम के रुपैया से अपने घरे जिम बना के पेट कम कर लेत आएं।'' भैयाजी हंस के बोले। फेर पूछन लगे,''मनो जे गणेशजी के पेट फटबे की किसां कैसी आए?''

''आप खों नई पतो?'' मैंने पूछी।

''नईं ! हो सकत के कभऊं लोहरे में सुनी होय, सो अब याद कोन आए।''

''चलो आप के लाने सुनाए दे रई गणेशजी की कथा। कछू पुण्य सोई मिल जैहे !'' मैंने हंस के कई औ फेर गणेशजी की कथा सुनानी शुरू करी।

एक दार का भओ के गणेशजी एक गांव गए। उते कई जांगा पूजा हो रई हती औ सबई जांगा लड्डुअन को भोग लगाओ जा रओ हतो। अपने गणेशजी ठैरे लड्डुन के प्रेमी। उन्ने सबई जांगा के लडुआ जीम लए। एक तो बड़ो सो पेट, औ ऊंमें भर गए मुतके लडुआ। अब उनसे चलो नईं जा रओ हतो। ऊपर आसमान पे से चन्दा उने देख रओ हतो। ऊको गणेशजी की दसा देख के खूबई मजो आ रओ हतो। ऊंने सोची कि गणेशजी को तनक परेसान करो जाए। सो चन्द्रमा ने उने सलाह दई के जे जो तुमाए पेट के लड्डुआ तुमें परेसान कर रए, उनके लाने ऐसो करो के घड़ा भर दूध पी लेओ, इसे बे लड्डुआ पच जैहें। बिचारे गणेशजी आ गए ऊके कहे में। बे एक घरे पौंचे, उते रखो हतो घड़ा भर दूध। उन्ने घड़ा उठाओ औ पी गए सबरो दूध। फेर का हती, उनकी दसा औ बिगर गई।

गणेशजी ने सोची के कैसऊं बी घरो पौंचो जाए। उते मताई कछू दवा दैंहे सो आराम मिलहे। सो, बे लुढ़कत-पुढ़कत अपने घरे खों चल परे। जब चलो ने गओ सो अपनी सवारी चूहा पे बैठ के चल परे। अबे कछू दूर पौंचे हते के उते रस्ता में एक सांप कढ़ आओ। चूहा ने सांप खों देखी सो बो डरा गओ। ऊने छिपबे के लाने लगा दई दौड़। जा हड़बड़ में गणेशजी उतई ढुलक गए। औ उनको पेट फट्ट गओ। मनो पेट के भीतरे के सबई लड्डुआ बाहरे आ गिरे। चन्दा ने गणेशजी की जे दसा देखी सो ऊको मनो हंसी को दौरा सो पर गओ। बा उते ऊंपरे से ताली बजा-बजा के हंसन लगो।

इत्ते में गणेशजी की मताई पार्वती उने ढूंढत-ढूंढत उते आ पौंची। जो उन्ने अपने बालक की दसा देखी, सो बे घबड़ा

गईं। उन्ने बोई सांप पकरो और बोई से अपने बालक को पेट सिल दओ। फेर उनको ध्यान गओ के ऊपरे टंगो चन्दा ठिठिया रओ आए। खीं-खीं करत भओ हंसो जा रओ। अब बे कोनऊं ऐसी-वेसी मताई सो ठैरी ने तीं, के गम्म खा जातीं। उने चन्दा पे आओ गुस्सा औ उन्ने शाप दे दओ के "जे जो तुम हमाए बालक की दसा पे हंस रए आओ सो तुमाई दसा ईसे बुरी हुइए। तुम दुबरे होत-होत मर जैहो।"

जे सुन के चन्दा को समझ परी के ऊंसे का गलती हो गई आए? बा रोन लगो के हमें माफकर देओ। अब हम कोनऊं पे कभऊं ने हंसहें। कोनऊं खों तंग ने कर हें। पर पार्वती मैंया सो हती गुस्से में। उन्ने एक ने सुनी। औ बे अपने बालक गणेश जी खों ले के घरे चल परीं। चंदा हतो सो पार्वती मैया के शाप से पतरो होन लगो। सो बा भाग के ब्रह्मा, बिष्णु, महेश तीनों के ऐंगर पौंचो औ रोन लगो के मोय बचा लेओ। तीनों देवता ने कही के हम एक माता के शाप खों खतम नईं कर सकत आएं। माता के आगे हमाई बी कछू नईं चलत। तुम तो जा के माता के पांव पकर लेओ औ तभई छोड़ियो जब बे मान जाएं। पतरो होत जा रओ चंदा भगत-भगत पार्वती मैया के लिंगे पौंचो।

"हमें माफी दे देओ! हमसे गल्ती हो गई। जो आप हमें माफने करहो सो हम इतई आप के पांव पकरे-पकरे मर जेबी औ आप खों पाप परहे के आपने दया की भीख मांगबे वारे खों भीख ने दई औ बो मर गओ।" चंदा कैन लगो।

पार्वती मैंया ने सोची के जो ईको माफने करो सो जे मोरो पांव ने छोड़हे। औ इतई मर गओ सो सबरे नांव धराहें। सो उन्ने चन्दा खों कंधा पकर के उठाओ औ बोलीं के "सुनो! तुमने भौत बड़ो पाप करो आए। तुमने हमाए बालक खों दूध पीबे की गलत सलाह दई। जीसे ऊंको पेट औरई फूल गओ औ तनकई में फट परो। बो मर सकत्तो। सो तुमें ईकी सजा सो मिलहे ई। सजा से तुम नईं बच सकत। बस, हम जेई कर सकत आएं के तुमाई सजा कम कर दैंबे।"

"हऔ, हमें मजूर आए। आप जो सजा दैंहों मोय कबूल आए, बस मोय मरबे से बचा लेओ।" चंदा रोत भओ बोलो।

"सो सुनो! तुम पंद्रा दिना दूबरे हुइयो औ पंद्रा दिनां मुटाहो। हमेसा एक से ने रै पाहो। मंजूर होय सो बोलो ने तो तुमाओ मरबो तै आए।" पार्वती मैया बोलीं।

"हऔ हमें मंजूर आए।" चंदा ने जे सजा मान लई। मरबे से तो अच्छी हती।

"तुम जब दूबरे होत-होत न दिखाहो, सो मावस परहे औ मावस के बाद फेर तुम मुटाबो शुरू करहो। चलो, अब हमाएं पांव छोड़ो औ अपने घरे जाओ।" पार्वती मैया बोलीं।

चंदा ने मैया के पांव छोड़े औ प्रान बचात भओ अपने घरे खों भागो।

जे किसां सुन के भैयाजी बोल परे, "सो जे आए गणेश जी के पेट फटबे की किसां।"

"हऔ! जोन दिनां उनको पेट फटो रओ, ऊं दिनां भादों की चतुर्थी रई। जेई से कओ जात आए के जो भादों की चतुथीऱ् को चंदा देखत आए ऊंको दोस लगत आए। कृष्णजी ने चौथ को चंदा देख लओ रओ, सो उनको सोई झूठी चोरी को इलजाम लग गओ रओ।" मैंने भैयाजी खों बताई।

"बा कैसी किसां आएं?" भैयाजी ने पूछीं।

"अब सबरी किसां आजई नईं सुना रई। कोनऊं और दिनां सुनाबी। मैं सो जे कै रई हती के जे जो जनता को पइसा डकार जात आएं ने तो उनको पेट फटत आए औ ने उने कोनऊं दोस लगत आए।" मैंने भैयाजी से कई।

"मनो, उतई कोनऊं एकादई रुपइया नाए से मांए कर देवे सो ऊको तुरतई सजा दे दई जात आए। बे चोर हरें इते के पइसा खा-खुआ के बिदेस भाग गए, उने अबे लो देस में ने लौटा पाए। औ जो अपन ओरें कोनऊं किस्त टेम पे ने भर पाएं सो पैले सरचार्ज ठोंक दओ जात आए, औ ऊंके बाद तो कओ कुर्की करा दई जाए।" भैयाजी बोले।

"जेई तो मैं कै रई के जे बड़े मगरमच्छ तला की मछरिया बी खा जात आएं औ फेर तला के किनारे धूप सेंकत ऐसे परे रैत आएं के मनो उन्ने तो कभऊं मछरिया को मों ने देखो होय। बाकी चोरी सो चोरी होत आए, चाए एक रुपइया की होय, चाय एक हजार करोड़ रुपैया की।" मैंने भैयाजी से कई।

"ठैरो-ठैरो! जे तुम कित्ते की बोल गईं? एक हजार ... औ...?"भैयाजी ने पूछी।

"एक हजार करोड़ की।" मैंने दोहराई।

"तुमें पतो के एक हजार करोड़ में कित्ते सुन्न होत आएं?" भैयाजी ने पूछी।

"मोय कां से पतो हुइए? मैंने करोड़ कभऊं नईं देखे, सो एक हजार करोड़ कां से पतो हुइए?" मैंने कई।

"सो तुमें जे कां से सूझी?"

"जो घोटालन की खबरें पढ़त रओ, सो ईसे बड़े आंकड़े पढ़बे खों मिल जैंहें। बे ओरें सो पइसा जीम रए औ अपन सुन्न गिनत रैत आएं।" मैंने कई।

"हऔ जे तो आए। मनो अपनो जी छोटो ने करो। काय से के तुमाए सोचे से कछू ने सुधरे। तुम तो गणपति बप्पा की जै बोलो औ खुस रओ।" भैयाजी बोले।

सो मैंने सोई गणपति बप्पा की जै करी औ झांकी देखबे निकर परी। मनो बतकाव हती सो बढ़ा गई, हंड़ियां हती सो चढ़ा गई।

-एम-111, शांति विहार, रजाखेड़ी, मकरोनिया,
सागर (मध्यप्रदेश) - 470004
मोबा.: 7987723900 ईमेल: drsharadsingh@gmail.com

बुन्देलखण्ड का कश्मीर

– डॉ0 आशुतोष त्रिपाठी

यूँ तो बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत अत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के जिले आते हैं। परन्तु उत्तर प्रदेश के हिस्से का जो भाग बुन्देलखण्ड में आता है उसमें सात जिले प्रमुख हैं, ललितपुर, झाँसी, जालौन, हमीरपुर, बाँदा, चित्रकूट तथा महोबा। महोबा जनपद की एक तहसील चरखारी है। वैसे पहले चरखारी भी हमीरपुर जिले का ही हिस्सा थी परन्तु 1995 में महोबा स्वतंत्र जिले के रूप में सामने आया और चरखारी इसी जिले की एक तहसील है। वस्तुत: चरखारी की सुन्दरता पर मोहित होकर उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री गोविन्द वल्लभ पंत ने इसे 'बुन्देलखण्ड का कश्मीर' की संज्ञा से विभूषित किया था। चरखारी पहुँचने के लिये निकटतम रेलवे स्टेशन महोबा है। यहाँ से इक्कीस किलो मीटर की दूरी पर यह स्थान अवस्थित है। वहीं हमीरपुर से जाने वालों के लिये मुस्करा से साधन पकड़कर पहुँचा जा सकता है।

चरखारी का प्राचीन नाम वेदसहिता है। चरखारी का यह नाम देवनर्मन, वीरवर्मन, हम्मीरवर्मन के लेखों में मिलता है। राजा मलखान सिंह के समय चरखारी का नाम चक्रधारी मंदिर के नाम पर पड़ा। राजा छत्रसाल के पुत्र जगत राज ने चरखारी के किले का निर्माण करवाया था। कस्बे की सुन्दरता, सरोवरों, तालाबों से घिरे देवालय, विलक्षण प्रतिमायें, विभिन्न सांस्कृतिक रंगों से परिपूर्ण चरखारी लोक संस्कृति की अमूल्य निधि है। यहाँ के सभी मंदिर चंदेल कालीन हैं, तथा आज भी राजमहल बना हुआ है। राजमहल के चारों तरफ नीलकमल से घिरे तथा एक दूसरे से आन्तरिक रूप से जुड़े विजय सागर, मलखान सागर, वंशी सागर, जय सागर, रतन सागर और कोठी ताल नामक झीलें हैं। राजा विजय बहादुर ने ताल कोठी का निर्माण करवाया था जो कि उस समय राजकीय अतिथि ग्रह था। यह इमारत नेपाल की शैली पर आधारित है। चरखारी नगरी को बृज का स्वरूप एंव सौन्दर्य प्रदान करते हुए कृष्ण के 108 मंदिर जिसमें सुदामापुरी का गोपाल बिहारी मंदिर, रायनपुर का गुमान बिहारी, मंगलगढ़ के मंदिर, बख्त बिहारी, बाँके बिहारी के मंदिर तथा माडव्य ऋषि की गुफा है। इसके समीप ही बुन्देला राजाओं का आखेट स्थल टोला तालाब भी मौजूद है। ये सब मिलकर इस नगरी की सुन्दरता को सबसे अलग और अनोखा बनाते हैं। चरखारी का प्रथम उल्लेख चन्देल नरेशों के ताम्र पत्रों में मिलता है। चन्देलों के गुजर जाने के सैकड़ों वर्ष बाद राजा छत्रसाल के पुत्र जगतराज को चरखारी के एक प्राचीन मुंडिया पर्वत पर एक प्राचीन बीजक की सहायता से चन्देलों का सोने के सिक्कों से भरा कलश भी मिला। छत्रसाल के निर्देश पर जगतराज ने बीस हजार कन्यादान इसी धनराशि से किये, बाइस विशाल तालाब बनवाये, चन्देलकालीन मंदिरों और तालाबों का जीर्णोद्धार कराया, किन्तु इस धन का एक भी पैसा अपने पास नहीं रखा। जगतराज ने ही भूतल से तीन सौ फीट ऊपर चक्रव्यूह के आधार पर एक विशाल किले का निर्माण करवाया।

इस ऐतिहासिक किले में मुख्यत: तीन दरवाजे है। सूपा द्वार –जिससे किले के अन्दर रसद एवं हथियार भेजे जाते थे। ड्योढ़ी दरवाजा–राजा रानी के लिये आरक्षित था। इसके अतिरिक्त एक हाथी चिघाड़ फाटक भी मौजूद था। वर्तमान में यह किला आम आदमी के लिए प्रतिबंधित कर दिया गया है। इस किले के ऊपर एक साथ सात तालाब भी मौजूद हैं– बिहारी सागर, राधा सागर, सिद्ध बाबा का कुण्ड, रामकुण्ड, चौपरा, महावीर कुण्ड, बख्त बिहारी कुण्ड। चरखारी का किला अपनी अष्टधातु तोपों के लिये पूरे भारत में मशहूर रहा है। इसमें धरती धड़कन,कौली सहाय, कड़क बिजली, सिद्ध बख्शी, गर्भगिरावन तोपें अपने नाम के अनुसार अपनी भयावहता का अहसास कराती है। जगतराज के पश्चात् राजा विजय बहादुर सिंहासन पर बैठे। राजा विजय बहादुर ने विक्रम विरूदावली की रचना की। आपने मौदहा का किला और राजकीय अतिथि ग्रह–ताल कोठी का निर्माण कराया। यह कोठी एक झील में बनी है। इसकी गणना बुन्देलखण्ड की कुछ सर्वाधिक खूबसूरत इमारतों में की जाती है। पर वर्तमान में यह उपेक्षा का शिकार है। यहाँ का ऐतिहासिक ड्योढ़ी दरवाजे का निर्माण मलखान सिंह ने कराया था। यहाँ के सदर बाजार की राजसी बनावट मंत्रमुग्ध करती है। किन्तु राजा मलखान सिंह की सर्वाधिक प्रसिद्धि उनके द्वारा प्रारम्भ किये गये 1883 ई0 में गोवर्धन जू के मेले से मिली। मेला दीपावली के दूसरे दिन अन्नकूट पूजा से प्रारम्भ होकर एक महीने तक चलता है। यह बुन्देलखण्ड का सबसे बड़ा मेला है। पंचमी के दिन चरखारी के 108 मंदिरों से देवताओं की प्रतिमायें गोवर्धन मेला स्थल लायी जाती है। इस एक महीने में चरखारी वृन्दावन सी प्रतीत होती है।

अस्तु निर्विवाद रूप से यह कहा जा सकता है कि यदि सरकार उस नगर को खजुराहो–महोबा झाँसी आदि पर्यटन स्थलों से जोड़ते हुए यहाँ पर्यटकों की दृष्टि से मूलभूत सुविधायें उपलब्ध करा दे तो यह नगर देश ही नहीं समूचे विश्व में अपनी वैभवशाली परम्परा तथा काश्मीर सदृश सुन्दरता के चलते अपना अन्यतम स्थान सुनिश्चित कर सकती है।

– झलोखर (हमीरपुर)उ0प्र0 卐

श्रद्धांजलि लेख-

पापाजी की देन है, मेरा लेखन..... !

– **वन्दना अवस्थी दुबे**

20 अप्रैल 2021 को मेरे पिताजी ने इस नश्वर संसार से विदा ली. ये लिखना उतना ही तक़लीफ़देह है, जितना ये महसूस करना कि वे अब हमारे बीच नहीं हैं. सच तो यही है कि मेरा मन आज भी ये मान ही नहीं पाता कि पापाजी अब नहीं हैं, जबकि मैंने खुद उन्हें अग्नि की लपटों में क़ैद होते देखा है.... उनके शरीर को राख़ होते देखा है..... !

आज पापाजी नहीं हैं, तो उनकी तमाम यादें ज़ेहन में घूमती रहती हैं. मैं अपने पापा की बहुत लाड़ली बेटी थी. प्यारी तो उन्हें सभी बेटियां थीं, लेकिन मेरे साहित्यप्रेम और लेखन के चलते मैं उनके बहुत क़रीब थी. पापाजी हिन्दी के ऐसे उद्भट विद्वान, जो एक कॉमा भी यदि छूट जाये, तो बहुत बड़ी ग़लती मानते थे. वाक्य-दोष आ जाता है, ऐसा उनका कहना था, और ये सही भी है. वे कहते थे कि लेखन में विराम चिन्हों का बहुत महत्व है, और इसे नज़र अन्दाज़ नहीं किया जाना चाहिये. अभी भी, अपना लिखा उन्हें दिखाने के पहले मैं दस बार चैक करती थी, कि कहीं टायपिंग में वर्तनी की अशुद्धि तो नहीं रह गयी? विरामचिन्ह ठीक से लगे हैं या नहीं? इतनी कड़ाई से जांचने के बाद भी, कोई न कोई ग़लती उन्हें मिल ही जाती थी. हमारा घर, यानी एक सम्पूर्ण पुस्तकालय. यहां हर प्रकार की पुस्तकें, पत्रिकाएं और अख़बार उपलब्ध थे. सालों पुराने अख़बार पापाजी के पास सुरक्षित रहते थे. चालू माह के अख़बार एक अलग रैक पर रखे होते थे, सभी तारीखों के क्रमानुसार. इन अखबारों में से कोई एक भी अख़बार नहीं उठा सकता था. महीने के अन्त में पापाजी इन अख़बारों में से ख़ास ख़बर वाले अख़बारों को अलग कर लेते. उनके पास बहुत पुराने अख़बारों और पत्रिकाओं का संग्रह था, जो अब मेरे पास सुरक्षित है. मैने स्वयं उन्हें हमेशा पढ़ते या फिर लिखते देखा. आप समझ सकते हैं, कि साहित्य के इतने अनुकूल माहौल में मेरा रुझान लिखने और पढ़ने की ओर क्योंकर न होता?

बहुत छोटी थी, लगभग दस साल की, तब मेरी पहली बाल कथा प्रसिद्ध समाचारपत्र 'दैनिक जागरण' के झांसी संस्करण के बाल-जगत में प्रकाशित हुई. उस वक़्त तक मैं चोरी-छुपे लिखती थी. कारण- स्कूल की पढ़ाई भी करनी होती थी न! कोई ये न कह दे कि पढ़ाई छोड़ के ये क्या कर रही? उस कहानी के प्रकाशन के बाद ही पापाजी ने जाना कि मैं थोड़ा-बहुत लिख लेती हूं. अख़बार के उस अंक को पापाजी ने पता नहीं किस-किस को दिखाया... गर्व से बताया- 'रेखा की कहानी छपी है. दैनिक जागरण में छपना मामूली बात नहीं.' उनकी इस खुशी ने मुझे और-और लिखने को प्रेरित किया. उतनी सी ही उम्र में पापाजी ने अपनी किताबों की साज-सम्भाल मुझे सौंप दी थी. दीपावली के समय घर में पुताई होती तब सभी अल्मारियों से किताबें बाहर निकालना, उन्हें झाड़-पोंछ के साफ़ करना, जिनकी ज़िल्द ख़राब हो रही हो, उसे लेई और पुट्ठे से दुरुस्त करना. दुरुस्त करने का ये काम पापाजी ही करते थे, मैं केवल सहयोगी होती थी.

ग्यारहवीं में पढ़ती थी, तब 'मधु-स्यंदी' नाम की पत्रिका, जो मथुरा से छपती थी, मैं मेरी कहानियां लगातार छपीं. इन कहानियों को पापाजी बड़े मनोयोग से पढ़ते थे, विराम चिन्ह दुरुस्त करवाने के बाद हमेशा कहते थे- मुझे खुशी है कि तुम्हारी भाषा में व्याकरण दोष नहीं है. चूंकि मैं विज्ञान की छात्रा थी, तो विषय के रूप में हिन्दी से मेरा नाता स्कूल के बाद टूट चुका था, इसलिये भी पापाजी मेरी भाषा पर नज़र रखते थे. विज्ञान संकाय में होने के बावजूद, ग्यारहवीं तक हिन्दी विशिष्ट ही हम लोगों को पढ़नी होती थी, ये एक तरह से अच्छा ही हुआ मेरे लिये. ग्यारहवीं की सालाना परीक्षा के समय पापाजी के स्कूल के पचासों विद्यार्थी उनसे हिन्दी व्याकरण पढ़ने आते. पढ़ने के नाम पर उनके पास कोई भी विद्यार्थी आ सकता था. मैं भी अपनी किताब-कॉपी उठाये, एक कोने में खड़ी रहती कि पापाजी मुझे भी अलंकार, समास या संधि समझा दें. हिन्दी साहित्य का इतिहास समझा दें. लेकिन मुझे अलग से पढ़ाने का समय ही नहीं था उनके पास. वे कहते थे- जब सारे बच्चे पढ़ रहे होते हैं, तभी तुम भी वहीं पढ़ लिया करो. बच्चों की उस भीड़ की आप कल्पना नहीं कर सकते, जिसके साथ पढ़ लेने को वे कह रहे थे. मेरी इस बात पर भी वे सवालिया निशान लगाते-'क्यों? उतने सारे बच्चे एक साथ पढ़-समझ सकते हैं, तो तुम उनके ही साथ क्यों नहीं समझ पाओगी?' और हुआ भी वही........उस वक्त जो व्याकरण पापाजी समझा रहे होते थे, वो आज भी मेरे दिमाग़ में जस की तस है. कहानी. उपन्यास, नाटक, निबन्ध.... सबकी कितनी बारीक़ बातें!! उनके जैसा शिक्षक नहीं देखा मैने! उनसे पढ़ने के बाद किताब खोलने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती थी. पापाजी के सान्निध्य और लगातार साहित्य-अध्ययन ने, हिन्दी पर मेरी पकड़ कमज़ोर नहीं होने दी. मेरी भाषा, पापाजी की ही देन है.... !

1986 में मप्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कहानी रचना शिविर में जब मेरी कहानी प्रथम घोषित हुई, तब भी उन्होंने समझाया-'कहानी केवल भाव नहीं है न ही किसी घटना विशेष का उल्लेख है. बल्कि ये तो वो विधा है, जो जीवन से जुड़ती है. एक कहानी तभी सम्पूर्ण रचना मानी जायेगी, जब उसमें कहानी के सभी तत्वों का समावेश हो. आमतौर पर इन तत्वों का समावेश स्वत: ही हो जाता है, लेकिन एक कथाकार को मालूम होना चाहिये कि कहानी के ये तत्व कौन से हैं, और उसकी रचना में कौन सा तत्व छूट रहा?' उनकी ये बात मुझे शब्दश: याद है. याद इसलिये भी है, क्योंकि मैने इसे उसी वक़्त अपनी डायरी में नोट कर लिया था.

मेरा लिखना और छपना चलता रहा. उनकी महत्वपूर्ण टिप्पणियां भी चलती रहीं. अपने अख़बार के कार्यकाल में मेरा कथा-लेखन ख़ासा प्रभावित हुआ, जिस पर वे हमेशा टोकते थे-'तुम्हारा कथा लेखन छूट रहा है. इसे जारी रखो.' जब भी वे टोकते, उस दिन मेरी एक कहानी ज़रूर लिख जाती.

मैं नौगांव जाती, तो उनकी कोई न कोई पांडुलिपि तैयार मिलती, प्रूफ रीडिंग के लिये. वे स्वयं प्रूफ देख रहे होते, लेकिन मेरे नौगांव पहुंचते ही ये काम मुझे सौंप देते. ये उनका अतिशय विश्वास ही था, जो प्रूफ रीडिंग जैसा महत्वपूर्ण कार्य मुझे सौंप देते थे, वरना अपनी पांडुलिपि की प्रूफ रीडिंग पर तो वे किसी का भरोसा न करें! इसी दौरान मैने उनकी पुरानी फ़ाइल निकाली, जिसमें बहुत सी हस्तलिखित कहानियां रखी थीं. बहुत सुन्दर लिखावट में लिखी इन कहानियों के साथ, कथा से सम्बन्धित चित्र भी थे, जो पापाजी के ही बनाये हुए थे. आपको बता दूं, कि वे बहुत अच्छे चित्रकार थे. मुम्बई के किसी संस्थान से उन्होंने फ़ाइन आर्ट में डिप्लोमा भी लिया था. फ़ाइल पलटते देख बोले-

'अरे ये तो बहुत पुरानी, कच्ची कहानियां हैं. 15-16 साल की उम्र में लिखी गयी कहानियां हैं.'

मैने कहा होंगी कच्ची कहानियां....आपका लिखा कुछ भी अप्रकाशित क्यों रह जाये? मेरी ज़िद पर ही बाद में शिवना प्रकाशन से ये कहानी संग्रह-'प्रेम गली अति सांकरी' प्रकाशित हुआ.

फिर मेरा कहानी संग्रह छपा. उन्होंने पूरे मनोयोग से न केवल पढ़ा, बल्कि हस्तलिखित समीक्षा भी मेरे पास भेजी. सभी कहानियों पर मेरे साथ विस्तृत चर्चा की. शिवना से प्रकाशित मेरे लघु उपन्यास-'अटकन-चटकन' की पांडुलिपि उन्होंने पढ़ी थी. मैने जो शीर्षक दिया था, वे उससे संतुष्ट नहीं थे. बोले-'शीर्षक बदल दो' मैने कहा-आपसे बेहतर और कौन कर पायेगा ये काम?' उन्होंने कई शीर्षक सुझाये, लेकिन उन्हें उन सब में 'अटकन-चटकन' सबसे अधिक उचित लगा. मज़े की बात, शीर्षक पर हो रही चर्चा के दौरान, पंकज को भी यही शीर्षक सबसे अधिक उपयुक्त लगा. उपन्यास पापाजी के दिये शीर्षक से प्रकाशित हुआ...... उपन्यास से अधिक ये शीर्षक पसन्द किया गया.

मेरी मित्र डॉ. दया दीक्षित का उपन्यास-'फागलोक के ईसुरी' प्रकाशित हो के आया, तो पापाजी ने कुछ सोचते हुए मुझसे कहा-'बुन्देलखंड में जिस तरह ईसुरी के व्यक्तित्व, कृतित्व पर बहुत नहीं लिखा गया और इतिहास रचने वाले इस कवि को केवल लांछनों का शिकार बनाया, उसी तरह हरदौल पर भी बहुत नहीं लिखा गया. उपन्यास तो एक भी नहीं.... ! मैं चाहता हूं कि तुम हरदौल पर एक ऐसा उपन्यास लिखो, जो उनके जीवन को सही रूप में सामने लाये. ये उपन्यास ऐतिहासिक दस्तावेज़ बन सके.' मेरा मन तो नाच उठा! मतलब पापाजी मुझे इस लायक़ समझते हैं कि मैं किसी ऐतिहासिक चरित्र पर उपन्यास लिख सकूंगी! ये मेरे लिये बहुत बड़ी बात थी. अब सिलसिला शुरु हुआ, बुन्देलखंड के इतिहास से सम्बन्धित पुस्तकों के खोज का. मैं विस्मित रह गयी, कि पापाजी को इस अस्वस्थ अवस्था में भी पता नहीं कितनी पुस्तकों के नाम, लेखक सहित याद थे. पापाजी की दी हुई सैकड़ों पुस्तकों में ही तीन मिल गयीं. उनके बताये अनुसार मैने गूगल पर सर्च किया, तो और पुस्तकें भी उपलब्ध हो गयीं. उनकी सखूत ताकीद थी, कि मैं पहले इन पुस्तकों में ओरछा के इतिहास को ध्यान से पढ़ूं. हरदौल के बारे में बुन्देलखंड के ग्रामीण जनों से बातचीत करूं. हमारी जड़ें भी बुन्देलखंड में ही हैं, सो बहुत सी जानकारियां परिजनों से ही मिल गयीं सबसे अधिक जानकारियां पापाजी से ही मिलीं. मधुकरशाह से लेकर वीरसिंह देव द्वितीय तक, उन्होंने ऐसे ऐसे विवरण दिये, जो मुझे पुस्तकों में भी नहीं मिले. उन्होंने अपनी एक पुरानी कॉपी खोजी, जिसमें ओरछा राजघराने के महत्वपूर्ण बिन्दु नोट थे.

दो महीने लगातार पढ़ने के बाद लिखने का क्रम आरम्भ हुआ. रोज़ शाम को सात बजे से आठ बजे तक मेरी पापाजी से बात होती. कितनी भी तक़लीफ़ में होते, मुझसे बात ज़रूर करते और उतनी देर के लिये अपनी तक़लीफ़ एकदम भूल जाते. ये बातचीत मुख्य रूप से हरदौल पर ही केन्द्रित होती. रोज़ पूछते-आज कितने पेज़ लिखे? हड़बड़ी मत करना. आराम से लिखना. भाषा का खयाल रखना. ऐतिहासिक तिथियों के साथ छेड़छाड़ मत करना. हरदौल बुन्देलखंड में लोकदेवता के रूप में पूजे जाते हैं. उनसे जुड़ी ढेर सारी घटनाएं पापाजी ने मुझे सुनाईं. रोज़ एक घटना सुनाते और मैं तुरन्त उसे लिख लेती. पापाजी से बात करने के बाद ही मेरा मन लिखने में रमता.

फ़रवरी 2021 में पटना गयी तो जितने पृष्ठ लिख गये थे, उनका प्रिंट निकाल के ले गयी. पूरी-पूरी दोपहर वे धूप में बैठ के मेरा प्रूफ देखते. मुझे बुला के समझाते कहां क्या गड़बड़ है. फि र, सिनॉप्सिस की तरह पूरी सूची तैयार करवाई कि उपन्यास में किन-किन बिन्दुओं और पात्रों को शामिल होना ही है. बाद में, मैं लिखे गये पृष्ठ मेल कर देती, और मेरे बड़े जीजाजी उन्हें प्रिंट निकाल के दे देते. 18 अप्रैल को, अपने जाने के एक दिन पहले तक उन्होंने हरदौल के प्रूफ देखे और मुझसे चर्चा की. उसी दिन बातचीत के अन्त में अलग से बोले-मेरी तरफ़ से राजू जी को आशीर्वाद, माताजी को प्रणाम और विधु को स्नेहाशीष देना. वैसे तो वे ये पंक्ति हमेशा ही बोलते थे, लेकिन जब से हरदौल पर चर्चा शुरु हुई थी, वे हरदौल पर ही अपनी बात खत्म कर देते थे. उस दिन जब वे ये वाक्य बोले, तो मैने पूछा-आज ऐसा क्यों बोल रहे हैं पापाजी? तो हंस के बोले-'जा सकता हूं न' मैने नासमझ बनते हुए पूछा-कहां? तो फिर हंसे बोले-'ऊपर'। 19 अप्रैल को उनकी हालात बिगड़ी. उस शाम भी मेरी बात हुई, अपने नियत समय पर ही, लेकिन तब बहुत अस्पष्ट से स्वर में वे केवल इतना ही बोले- ''छालों के कारण बोल नहीं पा रहा'' और 20 तारीख़ को चले ही गये, दिन में ढाई बजे के आस-पास.... !

उंगली पकड़ के उन्होंने हरदौल पर जो उपन्यास लिखना शुरु करवाया है, आधे से ज़्यादा वे पढ़ भी चुके थे. अफ़सोस, कि शीर्षक नहीं दे पाये. शीर्षक के लिये बोले-इसे बाद में सोच समझ के देंगे. अब ये सोचने-समझने की ज़िम्मेदरी मेरे ही ऊपर छोड़ गये थे पापाजी.... ! शीर्षक को लेकर ऊहापोह में डूबी मैं तब आश्चर्य से भर उठी, जब सितम्बर में मेरी बड़ी दीदी हरदौल के उस प्रूफ को ले के आईं, जिसे पापाजी अपने अन्तिम दिनों में देख रहे थे. इस प्रूफ कॉपी के सबसे ऊपर स्पष्ट अक्षरों में हैडिंग लिखी थी-'हरदौल'. जैसे मेरी उलझन को पापाजी जान गये थे, और उपन्यास का शीर्षक स्वयं ही दे गये.... !

मैने अपने, अब तक के जीवन में पापाजी जैसा निष्छल, ईमानदार, कर्मठ और दूसरों के लिये जीने वाला इंसान नहीं देखा. कभी किसी की बुराई करना तो दूर, सुनना भी उन्हें

पसन्द नहीं था. हम लोग यदि बातचीत के दौरान किसी की कोई बुराई करें, तो तुरन्त टोक देते थे-'ऐसा नहीं कहते. हर व्यक्ति में अच्छाई-बुराई होती है. उसके बुरे पक्ष को ही क्यों देखना? व्यक्ति को उसकी समग्रता में देखो. बुरा कोई नहीं होता.' और हम लोगों की बोलती बन्द!

गज़ब की किस्सागोई थी उनके पास. कोई भी घटना सुनाते, तो छोटे से लेकर बड़े तक, सब मुंह बाये सुनते रहते. इतना रोचक अन्दाज़, इतना प्रवाह और सम्प्रेषण की क्षमता बहुत कम देखने को मिलती है. अनुभवों की पिटारी थे पापाजी.... एक से बढ़ के एक रोचक अनुभव, उनके बचपन के, उनके गांव के, उनके कार्यकाल के..... हम सुनते नहीं अघाते थे. फ़रवरी में विधु को भी पता नहीं कितने संस्मरण सुनाये उन्होंने. मैंने कुछ रिकॉर्ड भी कर लिये थे, पता नहीं क्या सोच कर....! उनका कविता पाठ ऐसा, कि श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाये! दो साल पहले, सतना में घर में ही कवि गोष्ठी आयोजित की, तो उनके कविता पाठ ने पूरी महफ़िल ही लूट ली. पापाजी के आगे कोई किसी और को सुनना ही नहीं चाहता था. कमाल कविता पाठ, गज़ब किस्सागोई......!

काश!! यही किस्सागोई मुझमें भी आ पाती!

कुछ भी लिखती थी, तो लगता था पापाजी पढ़ लें सबसे पहले. यहां तक कि फेसबुक पोस्ट भी....! अब वे नहीं हैं पढ़ने के लिये तो कुछ लिखने का मन भी नहीं होता....! लगता है, जो लेखनी उन्होंने विरासत में मुझे दी थी, अपने साथ ही ले गये हों....! मेरी तो पूरी लेखन-यात्रा ही उनको समर्पित है. मेरे हर लिखे पर उनकी छाप है. मेरा लेखन, उनकी ही देन है. मेरा अपना कुछ भी नहीं....!

उनके दिये कार्य को पूरी ईमानदारी के साथ पूरा कर सकूं, अब बस यही इच्छा है.

- सतना, म.प्र.
मोबा. 9993912823

अज्ञात कवि रामराजा के छंद

- संपादक

बुंदेलखंड में फड़ साहित्य की सुदीर्घ परम्परा नहीं हैं। छतरपुर में सैर के फड़ थे। सभापति भगवानदास कुशवाहा से एक पोथी प्राप्त हुई है जिसमें कवि रामराजा के छंद हैं। उनमें से कुछ छंद आपकी सेवा में प्रेषित हैं। यदि कवि रामराजा के बारे में कोई जानकारी हो, तो सूचित करें। - संपादक

दोहा- जिह्वा बैठो सारदा, कंठन रहौ गनेश।
विस्नु रमापति हृदय में, नजर सामने सेस।।

फाग- गनपति गौरी चरन मना कें, कहूँ फाग रंग गाकें।
सारद सेस महेश रमापति, चरनौं सीस नबाकें।।
करी समार सारदा दइए, अक्षर अगन बचा कें।
कहत 'राम राजा' दंगल मैं, बैठ जीभ पर आकें।।1।।

चोरीं खा-खा मोरी दईया, नाचत ता-ता थईया।
गुवाल बाल कौ संग मैं लैकें, तुम खुद दोई भईया।।
दैन उरानों जाकें द्वारें, डाटत यसुदा मईया।
कहत 'राम राजा' तुम हो गये, भड़या कृष्ण कनईया।।2।।

तैरौ सब दईया खा लैबू, जुवन मसक दोई दैबू।
गुवाल बाल कौ लैकें संग में, घरै तुमारे जैबू।।
सींकौ टोर मटुकिया फोरौ, मईं हर बोला कैबू।
कहत 'रामराजा' गोपिन के, कठन बोल ना सैबू।।3।।

जानत हौ अनहौनी करकें, चलत स्याम ना डर कें।
खेद लैयें हम घर के भीतर, दैबू मार पकर कें।।
जानै परै माई जसुदा लौ, मूँड़ मटकिया घर कें।
कहत रामराजा बाला कहें, नैंन तरीछे करकें।।4।।

हमकौं ना समुझावो मुनईयाँ, हमें माननें नईयाँ।
दईया खैबौं मटुकिया फोरौ, तुमें उठा लैयौं कईंया।।
भरन भरै तुम कंस रजा की, हमें तनक डर नईयाँ।
कहत राम राजा हरि वन गये, बृज वन तन के सईयाँ।।5।।

लागी डाट तुमारे लानैं, पिड़ौ यार जब जानैं।
कर देयें लाल गाल दै गुलचा, जिदना हम कौं पानैं।।
गुवाल बाल सब संग मैं पीटै, अब नहीं हमें डरानैं।
कहत राम राजा ना चल है, प्यारे कछु बहानैं।।6।।

ऊधौ स्याम हमैं तज दीनौ, बृज भर लगत बिहूंनौ।
दिन औ रात कटै ना काटी, ज्यौं अमाउस त्यौं पूंनौ।।
पर बाखर बाहर ना भावै, लगत मुहल्ला सूंनौ।
आज राम राजा कहें राधे, देत दु:ख दिन दूनौ।।7।।

ऊधौ हर कौ कहा बिगारो, काटे जौंन किनारो।
संसारी में कोई ऐसौ ना, जो तजबै घर द्वारो।।
काना बनी गई हमसैं, जासैं हमें बिसारो।
कहत राम राजा हरि हमकौं, दोई दीन कर डारो।।8।।

ऊधौ कब आवें नंद लाला, रो-रो कह रईं बाला।
जब सें गये खबर ना भेजी, बृज हो रओ बेहाला।।
रहन लगे मथुरा नगरी में, परे सौत के जाला।
कहत रामराजा हम जानी, कछू दूध में काला।।9।।

ऊधौ तज गये कृष्ण मुरारी, बनी कूबरी नारी।
मथुरा में सुख चैंन करत हैं, मोरी सुरत बिसारी।।
हमनें बालापन सो देहिया, उनके संग में गारी।
कहत राम राजा मतलब की, है सब दुनिया दारी।।10।।

ऊधौ स्याम करत बेईमानी, पियो सौत को पानी।
जब सें गए खबर ना भेजी, उनकी चाल नसानी।।
हम सब गय वृन्दावन बासी, टेक एक यह ठानी।
लगे राम राजा बातन में, पैलां सैं ना जानी।।11।।

ऊधौ लगे सौतन की बातन, कछू बनत ना करतन।
काना बनी बिगारी हमनें, सोचत हौं दिन-रातन।।
नैंनन नीर नींद ना आवे, जिऊ अकुलावे खातन।
कहत रामराजा हरि मारत, मिलकैं अपने हाँतन।।12।।

ऊधौ स्याम घरै ना आये, कुब्जा नें बिलमाये।
जानैं कहा बिगारौं ऊकौ, ऐसौ पिंयाँ पिलाये।।
हम सब मर बिरह में उनके, आप द्वारका छाये।
आज रामराजा राधे कहैं, रंग कारै अजमाये।।13।।

ऊधौ तुम माधौ लो जईयो, जाकें उनसैं कईयो।
बृज वनता बेहालत हो गईं, लिखत पत्र का दईयो।।
मरी जात विरहा के बस में, जौ अपराधन सईयो।
कहैं रामराजा राधे के, प्रांन नहीं लै लईयो।।14।। 卐

श्रद्धांजलि लेख-

बुन्देली हेतु समर्पित व्यक्तित्व-श्री जगदीश किंजल्क..... !

- सुधा रावत 'क्षमा'

लेखन में सबसे कठिन कार्य होता है श्रद्धांजलि लिखना किसी के बारे में उसके जाने के बाद लिखना। समझ ही नहीं आता कि क्या लिख जाये? जाने वाले के दोषों को अनदेखा, परे करके उसके गुणों को तलाशते हुये मन भावुक हो जाता है। स्मृतियों का सैलाव मन-मस्तिष्क को झकझोरने लगता है। कभी विचार शून्य हो जाते हैं तो कभी कलम चलने से इनकार कर देती है। ऐसा लेखन तब और भी मुश्किल हो जाता है जब ठीक लिखने से पहले ही यह सूचना मिले कि फलां व्यक्ति नहीं रहा। उस पर कुछ लिखना है।

ऐसा ही कुछ मेरे साथ हुआ। डॉ. परमार जी का फोन आया और उनका आदेश हुआ कि जगदीश किंजल्क जी पर श्रद्धांजलि लिखना है। मेरा पहला प्रश्न था-क्या किंजल्क जी नहीं रहे? मैं हतप्रत रह गई। वो तो भोपाल में ही थे, ना तो कुछ ऐसा पढ़ने में आया ना किसी ने कोई चर्चा की। समाज की संवेदन-हीनता पर मन दुःखी हो गया। किंजल्क जी साहित्य और साहित्यिक संस्थाओं से जुड़े हुये थे। पर ना तो कोई श्रद्धांजलि ना शोक सभा का कोई कार्यक्रम सुनने में आया। एक ही शहर में रहते हुये मुझे और मेरे जैसे अन्य अनेक लोगों को उनके जाने का पता ही नहीं चला। लेकिन इसमें इतने आर्श्च की कोई बात नहीं। शहरों में यही होता है "आँखों देखी दोस्ती, मुंह देखा व्यवहार"

पर अपने बुन्देलखण्ड में आज भी लोग अति संवेदनशील हैं इतनी आत्मीयता रखते हैं। भले ही लोग गाँव-कस्बे छोड़कर शहरों में जाकर बस गये हों, नौकरी-चाकरी के कारण उन्हें अपना गाँव-घर छोड़ना पड़ा हो, पर गाँव वालों ने उन्हें नहीं बिसराया। बुन्देलखण्ड के लोग तो पूरे क्षेत्र के लोगों को साथ लेकर चलते हैं। डॉ. परमार जी का फोन आना इस बात का प्रमाण है। अपने बिछड़े हुये साथी साहित्यकारों को लिये उन्होंने कुछ वर्षों से बंद "बुदेली बसंत" को प्रकाशित करने का ऐलान कर दिया और हम लोगों को अपनी भूल सुधारने और आत्मीय जनों को स्मरण करने का अवसर प्रदान किया। बहुत-बहुत आभारी हूँ डॉ. परमार जी की। आप वाकई बुन्देलखण्ड के लिये वरदान है।

आदरणीय किंजल्क जी से मेरा प्रथम परिचय १९७८ में आकाशवाणी छतरपुर में हुआ। बच्चों के कार्यक्रम में मैं कविता पाठ के लिये गई थी पहली मुलाकात का अनुभव कुछ अजीब सा ही था। रिकार्डिंग करने से पहले जैसे ही उन्होंने मेरी कवितायें पढ़ी। मुझसे पूछा-ये आपने लिखी है? मैंने कहा-जी उन्होंने पास खड़े आनंद वर्मा सर से कहा-ऐसा कैसे हो सकता है। इतनी छोटी बच्ची ऐसा कैंसे लिख सकती है और बिना रिकार्डिंग किये वापस अपने रूम में आ गये। फिर उन्होंने मुझे नया विषय दिया और बोले-इस विषय पर लिखो मैं लिखने बैठ गई। १०-१५ मिनट बाद उन्होंने कवितायें देखीं। मेरी ओर देखकर मुस्कुराये, फिर जाकर रिकार्डिंग की और ऐसा एक बार नहीं कई बार हुआ उन्होंने हमसे विषय परिवर्तन करवा कर कवितायें लिखवाईं। उस समय तो मुझे कुछ बुरा लगा पर बाद में कई अवसर ऐसे आये जब हमें इस बात का फायदा मिला। कैसे? इस बात की चर्चा फिर कभी करेंगे। क्योंकि अग्नि परीक्षायें तो हर मोड़ पर होती है।

१९९२ में हम लोग भैया के पास कलकत्ता चले गये। लगभग उसी समय किंजल्क जी तबादला जबलपुर हो गया। वहां से सागर, फिर शिवपुरी आदि अनेक आकाशवणी के केन्द्रों पर अपनी सेवायें देने के बाद वे २००७ सितम्बर में आकाशवाणी भोपाल में स्थान्तरित होकर आये। मैं उस समय आकाशवाणी भोपाल के ग्रामसभा कार्यक्रम में कॅम्पीयरिंग कार्य कर रही थी। सितम्बर २००७ से लेकर नवम्बर २००८ (किंजल्क जी के सेवानिवृत्त) तक उनके साथ काम किया और इस बीच उन्हें सही रूप में जाना किंजल्क जी हंसमुख, स्पष्टवादी, कर्मठ ओर बहुत सुलझे हुये व्यक्तित्व के मालिक थे। बुन्देली बोली और बुन्देलखण्ड के प्रति वे पूर्ण समर्पित थे। इसलिये उन्हें ग्रामसभा कार्यक्रम सोंपा गया। ग्रमसभा के मुखिया के रूप में उन्होंने बहुत अच्छा काम किया। बुन्देली बोली, संस्कृति, संस्कारों, तीज त्योहारों और रीति-रिवाजों पर हम लोग घंटों चर्चा करते थे। ऑफिस में पूरा माहौल बुन्देली का ही होता था। हम सब बुन्देली में ही बात करते थे। ग्रामसभा मूल रूप से कृषि एवं ग्रामीण विकास का कार्यक्रम है। साहित्य के नाम पर कभी-कभार कविता पाठय लोक-कथायें हो जाती थीं पर किंजल्क जी के समय में खेती किसानी की बातें भी कविता कहानी, फीचर और रूपकों में ढलकर प्रसारित होने लगीं। हम लोगों को ठेठ बुन्देली बोलने और नये-नये प्रयोग करने की स्वतंत्रत मिल गई।

नवम्बर २००८ में आकाशवाणी सेवा निवृत्ति के बाद किंजल्क जी ने यही मकान खरीदा और भोपाल के स्थाई निवासी हो गये। कुछ दिनों बाद उन्होंने ज्ञानवाणी और डायरेक्टर का पदभार सम्भाला और दो वर्ष तक ज्ञानवाणी में दीं और हम लोगों को वहां भी कार्यक्रमों से जोड़ा।

राज्य संसाधन केन्द्र की कार्यशालाओं में अक्सर उनसे मुलाकात हो जाती थी। साहित्यिक कार्यक्रमों में भी उनका निरन्तर आना जाना था। हिन्दी भवन से भी जुड़ रहे। "दिव्य लोकपत्रिका का संपादन करते हुये पत्रकारिता के क्षेत्र में उनकी अच्छी पैठ थी। लम्बे समय तक दिव्य अलंकरण के रूप में भव्य सम्मान समारोह का आयोजन कर साहित्य और कला के क्षेत्र में अनेकानेक विद्वानों और कलाकारों का सम्मान किंजल्क जी अपनी दम करते रहे। अपने पिता श्री के प्रति उनमें असीम श्रद्धा थी। किंजल्क जी अक्सर अपने श्री अंबिका प्रसाद 'दिव्य' जी और उनके साहित्य पर ही चर्चा करते थे। यह कहने में मुझे कोई संकोच नहीं है कि उन्होंने लिखा शायद कम है। और अपने पिता जी के लिखे हुये को सहेजा सम्भाला अधिक है। दिव्य जी के जाने के बाद भी उनका साहित्य प्रकाशित करवाकर किंजल्क जी ने नईं पीढ़ी से उनका परिचय और साहित्य जगत में उनकी उपस्थिति लगातार दर्ज करवाकर सही मायने से सुयोग सुपुत्र की भूमिका निभाई है। वरना कुछ लोग तो पिता के जाने के बाद उनके साहित्य को अपने नाम से उपयोग में लाते हैं। पितृऋण से मुक्त तो कोई भी नहीं हो सकता पर किंजल्क जी ने यह प्रयास अवश्य किया है, वह भी बड़ी ईमानदारी से।

डॉ. परमार जी से दूरभाष पर बात होने के बाद मैंने उनके घर संपर्क किया तो किंजल्क जी की धर्मपत्नि श्रीमती

राजो किंजल्क जी से बात हुई, तब उन्होंने बताया कि किंजल्क जी ने जो लिखा वह अप्रकाशित है। उनके लिखे साहित्य में संस्मरण व कहानी संग्रह की पाण्डुलिपियों तैयार है। अब परिवार वाले उनके प्रकाशन की तैयारी कर रहे। आशा है शीघ्र ही उनका साहित्य पढ़ने को मिलेगा।

राज्य संसाधन केन्द्र से उनकी एक पुस्तिका ''बातन हाथी पाइये बातन हाथी पाँव का प्रकाशन हुआ,जो एक लोक कथा पर आधारित है। बुन्देली बसंत और बुन्देली दर्शन में भी उनकी रचनायें पढ़ने को मिलती हैं।

पिछले कुछ वर्षो में बहुत कुछ बदल गया। कौरोना जैसी महामारी ने पूरी दुनिया में तवाही मचा दी। हम सबने पुरजन, प्रियजन और साथी सहयोगियों को खोया। साहित्य जगत की कई महान हस्तियाँ हमसें बिछुड़ गईं। कौरोना काल में गये लोगों का शोक-दु:ख भूल भी नहीं पाये थे कि महामारी के साईड इफेक्ड ने लोगों को लपेटना समेटना शुरू कर दिया। बुर्जुग और बीमार लोग और अधिकर कमजोर हो गये, और एक-एक करके हमारा साथ छोड़ गये। गुरू और पितातुल्य श्री गुणसागर सत्यार्थी जी का है जिनका वरद हस्त सदैव हमारे सर पर रहा। उनका जाना बहुत दु:खद है।

किंजल्क जी के जाने के कारण भी कौरोना काल की उदासी और मेल-जोल न हो पाने के कारण अवसाद और कमजोरी ही थी। जो थोड़ा सा हेमोग्लोबिन काम हुआ और फिर रिकवर नहीं हो पाया।

किंजल्क जी पत्नि के अलावा दो पुत्र-पुत्र वधुयें, एक बेटी और नाती पोतों से भरा पूरा परिवार छोड़कर कर गये है। आकाशवाणी और साहित्य जगत में रहते हुये अनेक उपलब्धियोँ व सम्मान पाने वाले, बुन्देली बोली और बुन्देलखण्ड से अत्यंत प्रेम करने वाले किंजल्क जी का इस तरह चले जाना साहित्य जगत आकाशवाणी परिवार और हम सब के लिये अपूर्णीय साहित्यकार दुनियाँ से जाने के बाद भी अपने व्यक्तित्व और कृत्तित्व के जरिये सबके मन में रहते हैं। श्री किंजल्क जी के साथ ही श्री गुणसागर सत्यार्थी जी श्री बटुक चतुर्वेदी जी श्री सुरेश पराग जी व अन्य जो भी साहित्यकार हमसे बिछड़ गये, उन सबको शत्-शत् सादर प्रणाम करते हुये अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ -

दुनियाँ से कूच करके जाते हैं सब कहाँ?
सम्मुख खड़ा है प्रश्न, यही यक्ष की तरह।
जग से गये हैं आप सब, मन से नहीं गये,
छाया रहेगी सर पर, वट वृक्ष की तरह

- एफ-7, गीत बंगलो, फेस-टू, दुर्गेश विहार,
जे.के.रोड,भोपाल (म.प्र.)
मोबा.- 8889114193

बुंदेली के दो नक्षत्रों का अस्त होना

- रामस्वरूप दीक्षित

टीकमगढ़ की धरती को इस बात पर गर्व है कि बुंदेली भाषा की समृद्धि और व्याप्ति के लिए काम करने में उसके लोग बहुत आगे रहे हैं। बुंदेली भाषा और उसके साहित्य पर बेहद महत्वपूर्ण काम करने वाले एक लेखक और कवि पिछले दिनों हमारा साथ छोड़कर चले गए। ये बुंदेली के ऐसे नक्षत्र थे जिनकी चमक समूचे बुंदेलखंड ने महसूस की।

डॉ कैलाश बिहारी द्विवेदी , जो दद्दा के नाम से विख्यात थे, ने बुंदेली भाषा के लिए बहुत ठोस और कारगर काम किया। बुंदेली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन कर उन्होंने इसे एक शास्त्रीय रूप देने की कोशिश की। वृहत क्षेत्र में अलग अलग रुपाकर में फैली बुंदेली के मानक स्वरूप को लेकर वे बहुत चिन्तित रहते थे और लगातार प्रयासरत भी।

बुंदेली शब्दकोश तैयार कर उन्होंने बुंदेली को समझने की पृष्ठभूमि तैयार की। इस शब्दकोष ने लोगों को अर्थ विभ्रम से दूर कर शब्दों के सही अर्थ जानने में बड़ी मदद की। इस श्रम साध्य काम को उन्होंने अकेले ही पूरा कर चमत्कृत कर दिया। इस काम ने उन्हें बड़ी पहचान और प्रतिष्ठा दी। बुंदेली लोकोक्तियों पर भी उनका काम उल्लेखनीय रहा। उनके अवदान को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली और वे पुरस्कृत भी हुए। कहना न होगा कि उनके माध्यम से बुंदेली का ही मान बढ़ा।

वे बहुत स्वाभिमानी व्यक्ति और निर्भीक वक्ता और लेखक थे। उन्होंने कुछ पाने के लिए कभी समझौते नहीं किए। वे टीकमगढ़ के गल्ला आंदोलन में भाग लेने वाले स्वतंत्रता सेनानी थे। स्वतंत्र वैचारिकी के सोच का तेज उनके चेहरे पर साफदेखा जा सकता था।

अपने समकालीन राजनेताओं से उनके गहरे संबंध होने के बाबजूद उन्होंने कभी इन संबंधों को भुनाने की कोशिश नहीं की।शासकीय सेवा में होने के बाबजूद किसी के सामने झुके नहीं, न कभी किसी की ज्यादा परवाह की।उनकी ऐसी धाक थी, ऐसा रुतबा कि उनसे तार्किक बहस करना भी संभव नहीं था, उनका एक तरह का बौद्धिक आतंक था, बाबजूद इसके वे भीतर से बेहद सहिष्णु और उदार थे और रिश्तों की कद्र करना जानते थे।

उनका जाना निश्चित ही बुंदेली के लिए ऐसी क्षति है, जिसकी भरपाई बहुत आसान नहीं।

डॉ दुर्गा प्रसाद दीक्षित 'दुर्गेश' जी बुंदेली के लोकप्रिय कवियों में शुमार थे। उन्होंने बुंदेली कविता को आम जन तक पहुंचाने में बड़ी भूमिका अदा की। उनकी कविताएं काव्य निकष की दृष्टि से भले ही कमजोर कही जाती रहीं , मगर उनमें साधारणता , सरलता का और संप्रेषणीयता का ऐसा अद्भुत गुण था कि वे श्रोता से सहज तादात्म्य स्थापित कर लेती थीं।उनके पढ़ने का ढंग इतना आकषज्र्क था कि लोग वाह वाह कह उठते थे।

बुंदेली साहित्य को समृद्ध करने में उन्होंने बहुत काम किया। आकाशवाणी के तब के सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम का सहारा लेकर बुंदेली लोक के मानस और उसकी संस्कृति को उन्होंने लोगों तक पहुंचाने में बड़ी भूमिका अदा की।

स्वभाव से बेहद विनम्र और मिलनसार दुर्गेश जी नए रचनाकारों को स्नेह, समवयस्कों को प्रेम और बड़ों को सम्मान देने में सबसे आगे थे। उन्होंने नई पीढ़ी के कई रचनाकार तैयार किए। शोधकार्यों में उनकी रुचि थी। उन्होंने खुद भी डॉक्टरेट की थी ओर शोधार्थियों को मार्गदर्शन देने में सदा तत्पर रहते थे।

कुंडेश्वर जैसी छोटी सी जगह पर रहकर भी उन्होंने अपनी रचनाधर्मिता के बल पर अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाई थी। उनके जाने से बुंदेली बानी में चुलबुलापन और निर्मल हास्य जैसे तिरोहित सा हो गया है।

- दीक्षित मुहल्ला, टीकमगढ़ (म.प्र.)

बुन्देली मेला

– सुरेन्द्र अग्निहोत्री

बुन्देलखण्ड में मेला हरई तीज त्योहारान पै भरत हैं। ई मेलों की भरवाई ज्यांय त्योहार की मानता खों गैरों जोर के सनंखन के मिलबे जुरबे में अपनी भूमिका निभात उतइं ई मेला में चीज बसत की खरीदी बिकरी सोई होय करत। मोंड़ा मोंड़न के ब्याव-चलाव की चरचा एक दूसरन सें चलन लगत। बुन्देली संसकिरती की छटा एई मेलन में देखतई बनत। जगा बिसेस की मानता के कारन जे मेला ज्यांय भरत उतईं की खासियत खों उजागर करत उतइं ई मेला में आंजर-पाजर के गाँव खेरन बारे लोग लुगाई, बारे-बूढ़े, बाल बच्चे सबई जात हैं। ईमें मुतकी तर की जात पांत बारे दिखत चांय बे काछी होंय, दउआ, गड़रिया कोरी, धोबी कैबे कौ अरथ कै सतउ जात ई मेलन में दिखात।

बुन्देली धरा पै अबै इत्तौ बिकास नंइं भओ आय सो ई मेलन में मनख पैदल उर के बैलगाड़ी (गड़रा) छकड़ा, घुरवा सबइ खों सजा संमार, के, ऊ पै बैठ कें जात हैं। मेलन में बुन्देली रीत रिबाज, पैरबौ, ओड़बौ चाल चलन उर लोकगीत की तान मिठास लयें देखबे सुनबे मिलते है। जीखों बुन्देली की परम्परा खों जाननें समजनें होय ऊ ई मेला में पोंचकें जांच परख सकत है। इतै दूरन देसी के ब्यापारी आउत। गाँव देहातन के हल्के पतरे भोंरी करन बारे सोई आ जात उर अपनी चीज बसत खों बेंच-बांच के मेला करकैं घरै जात। बुन्देली धरती की पज पक जोंन रित कौ मेला भरौ होत बा रित बारी खाबे पीबे बारीं चीजें मनख बेंचत हैं। कछू ऐसी चीजें हैं जोंन स्थानई बिशेष में उपजतीं हैं उन बन जाती हैं। बे सबइ ई मेला में मिल जातीं हैं। मेला की दुकानें एक कुदाईं सें लेंनबार सजी रैतीं हैं। जैसें उन्ना लत्ता एक कोद सिमें तौ एक कोद बिना सिमें बारी बजाजी की दुकानें। एक कोद किराने, लोहे नगरिया के बने सामान, एक कोद भाजी तिरकारी, मौसम फलन की, एक कुदाईं सुनारी तमेरे कसकुट सिलबिल, धात-पीतर, कांसे की, एक कुदांई धार्मिक फोटुअन, किताबन, कीं, पूजा बारे सामान की एं कोद ढरे भये पीतर, तामें माटी की मूरतन कीं घुरवां, हाँती, ऊँट, रथ एक कुदाईं जूता चप्पल मनियारी बारीं दुकानें तौ एक कोद खेल खिलौना, गल्ला झूला दिखा परत। ज्यांय जे मेला हत्ता पन्दइया उर कै मइना भर के भरत, दिन बूढ़े सें रामलीला रासलीला नाटक नोटकीं सोइ हो, सो मनरख उयै देखकें मनोरंजन करत, कउँ कउँ बैलवन घुरवन के मेला सोई भरत। ई मेलन में अच्छी नसल बारे बैला उर घुरवा बिकबे आउत हैं। ऐसे मेला स्थान बिशेष के नांव सें जाहर रहत है, कछू मेला तेहार के नांव सें और कछू मेला देवी-देवता के नांव सें जाने जात। जैसें कि ललितपुर में अमझर कौ मेला छतरपुर में सकरात कौ मेला, दसैरे को मेला, मऊरानीपुर में जलबिहार कौ मेला आदि। अब जा माघ मइना की सकरांत परी है तो ई में तिलवारा घाट कौ मेला भरौ जात। ई सकरांत में नरबदा में बुड़की में बुड़की दई जात औ भोले खां तिल के लडुआ चड़ा के मनख सपर खोर कें खात हैं। खिचरी गरीब-गुरवन खों दोन देत।

नरबदा में डुबकी लगाए सें पाप कट जात। नरबदा की भौत मानता है। जा गंगा सें पैलऊं की मानी जात। जा इकलौती नदिया है जीकी मनख परक्रमा लगाकें पुन्न कमाउत।

माँव मइना में मुतकी जगा सकरांत के बखत मेलनन की भरवाई होत। मान्सन खों जोन जगा ऐगर होत सो उतइं के मेला में जात और भोले खों बुड़की लगा कें ढारत पूजत उर खुरमा बतिया लड्डुआ ठडूला, पपरियां लुचईं तिरकारी जीखों जो कछू जुरत सो लै जाकैं उतइं खात पियत। ई तेहार पै कनक के लडुआ, मूंग के, बेसन के, सूजी कै मैदा के, मनंख खास बनाउत औ आज के दिना खात। जोंन बड़े घर होत सो उनके इतै इंदरसे, खुरमी नोंन गुर के खुरमा बेसन औ मेंदा-आटा की पपरियां सलौनी सोई बनती हैं। मेलन में कलाकंद, बरफी, बुंदी के लडुआ मिठया बेंचत हैं। बुड़की बारे ई मेला में बिही, पौड़ा बराई सिंगारे, महाबरीं, सकला, केरा, पिंडखजूर, की आवक जादां होत है उर मान्स जेइ खरीदत, घरै लै जात।

सरकारी मेलन उर ई परम्परा सें जुरे भए मेलन में भौत फरक होत है। सरकारी मेला जोंन भरत ऊमें सिरकारीपन दिखत। पै संस्कारन सें जुरे जोंन जे मेला होत इनमें लोक की संस्कृति, लोक कौ दरसन, लोक की आस्था हिलोरे लेत भइ दिखत है। ई बुड़की के परब पै नरबदा जी में बुड़की लगा उर भोले खों ढार कें तिली के लडुआ गरीब अमीर सबइ जुर मिलकें खाव। उर गाउत रऔ।

नरबदा के जल भरबी रे,
जल भरबी उर भोले बब्बा खों दैबी ढार रे...

तौ ललितपुर में अमझरा कौ मेला हनुमान जी की मडिया के नेंचें बसंत सें लगत है ई मेला में यू.पी. उर एम.पी. कौ भेद मिट जात है तौ राठ पंचमपुर कौ मेला होरी की रंग पांचें खों लगत है। ई मेला में अच्छी नसल बारे बैला उर घुरवा बिकवे आउत हैं। ऐसे मेला स्थान विशेष के नांव सें जाहर रहत हैं, कछू मेला तेहार के नांव सें औ कछू मेला देवी-देवतन के नांव सें जाने जात।

– ए 305 ओ.सी.आरर. बिल्डिंग, विधानसभा मार्ग लखनऊ उ.प्र.
मोबा. – 9415508695 卐

श्रद्धांजलि लेख-

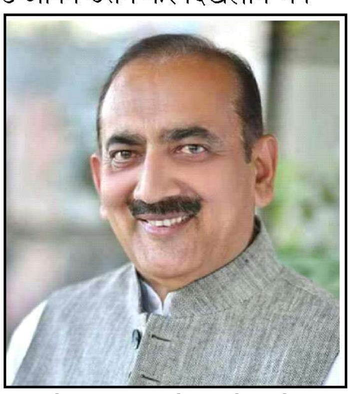
माटी की पुकार

– **जयहिन्द सिंह 'जयहिन्द'**

बृजेन्द्र सिंह दिल के दिली, दीनन के दिलदार।
दीन दुखिन के दर्द के, दिलवर साझे दार।

मै जेर पृथ्वीपुर की माटी हूँ, वही माटी जिसके छोटे से गांव जेर मे जन्मे एक बालक ने पूरे म.प्र. में अपना नाम रोशन कर दिया। मैं वही पृथ्वीपुर की माटी हूँ, जिसका मान सम्मान बालक के जन्म से बढ़ गया। सन् 1957 मे मेरे ही ऑगन में अमर सिंह राठौर के घर इस बालक का जन्म हुआ। इसी गांव में खेले यहीं के स्कूल में शिक्षा ग्रहण की जिसने जेर व पृथ्वीपुर का मस्तक हमेशा उँचा उठाये रखा। इस बालक का नाम बृजेन्द्र सिंह रखा गया। बृजेन्द्र सिंह शुरू से ही विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। वसुन्धरा के रंगमंच पर उनकी सवसे बड़ी खूबी थी उनका स्वभाव। स्वभाव जो उनके बचपन के साथियों को वरवस याद आता है।

वसुन्धरा के रंगमंच पर यह महाआत्मा आयी थी।
पाठ आदा करने की जिसने, अनुपम् कला सिखायी थी।
मनबुद्धि और संस्कार वो अपने संग में लाये थे।
मानवता के पाठ आपने उत्तम कर दिखलाये थे।



बृजेन्द्र सिंह ने सन् 1973 में पृथ्वीपुर से हायर सेकेण्डरी परीक्षा उतीर्ण की थी। सन् 1987 में प्रयागराज विश्वविद्यालय से बैद्यराज की उपाधि हासिल की, लेकिन यह तो डिग्री भर थी, क्योंकि मेरे बेटे को जनता की नब्ज पकड़ना शुरू से ही आता था। वे अपने पूज्य पिता के पद चिन्हो पर चलकर उन्होने देश की आजादी की लडाई में अगवा कांग्रेस का पथ अपनाया। पार्टी को अपना लक्ष्य बनाया और 1981-82 में जनपद अध्यक्ष के पद से अपना राजनीति का सफर शुरू किया। लगातार 1982 से 1989 तक जनपद अध्यक्ष पद पर रहे, साथ ही जिला सहकारी बैक टीकमगढ के संचालक भी रहे। सन् 1983 से 1990 तक म.प्र. अपेक्स बैक भोपाल तेदूपत्ता संघ टीकमगढ़ के पद पर रहे। सन् 1989 में यूथ कॉग्रेस के अध्यक्ष और 1991 में जिला कॉग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष पद पर रहे। सन् 1990 में हुए विधानसभा चुनाव में बृजेन्द्र सिंह राठौर उम्मीदवार वनाये गये, और उन्हे खूव वोट मिले पर चुनाव जीतने में सफल नही हो पाये। शायद यही मेरे बृजेन्द्र सिंह के जुझारूपन की पहली परीक्षा थी लेकिन विपरीत हालातो में टूटा नही वल्कि और मजबूती से खड़ा रहा। तभी 1993 के विधानसभा चुनाव में उन्हे ऐतिहासिक जीत मिली। 40000 से भी अधिक मतो से जीतकर विधानसभा पहुचे। वह वुलंद आवाज जिसके अपने ही नही विपक्षी भी अंतिम समय तक दीवाने रहे। सन् 1993 में विधायक बनकर बृजेन्द्र ने अपनी कार्यशैली और जनहितेषी सोच से लोगो के दिलो में अपनी जगह बनायी, और 1998 में भी निर्दलीय चुनाव जीता, यह बृजेन्द्र के व्यक्तित्व की खूबी थी कि अपनों के भरोसो पर खरा उतरना सबसे जरूरी होता था, यही वजय थी कि परिस्थिति वस निर्दलीय चुनाव लड़ने व जीतने वाले बृजेन्द्र कॉग्रेस पार्टी के हमेशा वफादार सिपाही बने रहे, जीतने के दूसरे ही दिन से ही कॉग्रेस पार्टी के साथ जनता की सेवा मे लग जाते थे। कॉग्रेस पार्टी ने भी इस बात को वखूबी समझा और 2003 में उन्हे अपना प्रत्याशी वनाया और जीत मिली। सन् 2008 में भी पृथ्वीपुर सीट से पुन: प्रत्याशी हुयें और पुन: विधायक बने पर विपक्ष ने उनके मनोबल को तोडने की कई कोशिशे की पर मजबूत इरादे वाले बृजेन्द्र पहले कानूनी अदालत में और फिर 2018 में जनता की अदालत में विजयी होकर लोटे। सन 2018 में पहला अवसर था जव वे सत्ताधारी दल के मंत्री बनाये गये उनकी वरिष्ठता को कमलनाथ जी ने सम्मान दिया। उन्हे वाणिज्यिक कर मंत्री वनाया और इसी के साथ बृजेन्द्र सिंह ने खुले मन से टीकमगढ़ और निवाडी जिलों के विकास दरवाजे खोल दिये। रामराजा सरकार के भक्त बृजेन्द्र सिंह ने रामराजा की नगरी ओरछा को विश्वस्तरीय पहचान दिलाने के लिए नमस्ते ओरछा कार्यक्रम की रूपरेखा तत्कालीन मुख्यमंत्री कमलनाथ जी को बतायी और इसके बाद हुआ वह ऐतिहासिक आयोजन। ओरछा में विकास के कार्य हों या पृथ्वीपुर विधानसभा क्षेत्र में पानी, सड़क, शिक्षा से जुड़े कार्य वतौर विधायक उन्होने जो प्रयास किये उनको मंत्री बनते ही पंख मिल गये और जन जन में उत्साह छागया। ग्रामीण प्रतिभाओं के लिए राष्ट्रीय स्तर का वॉलीवाल टूनार्मेट कराने वाले बृजेन्द्र सिंह बुन्देली बोली और परम्पराओं का विशेष ध्यान रखते थे। अपनी माटी और अपनी बोली से अधिक प्यार करते थे। पृथ्वीपुर क्षेत्र के विकास को गति मिली ही थी कि म.प्र. में दुर्भाग्य से कॉग्रेस सरकार गिर गयी, तब भी मजबूत इरादे वाले बृजेन्द्र सिंह ने विधानसभा में विपक्ष की बुलंद आवाज बनकर विकास के कामों को आगे बढ़ाना जारी रखा, साथ ही कॉग्रेस पार्टी के मजबूत सिपाही के

तौर पर कोरोना की भीषण परिस्थितियों मे भारतीय जनता पार्टी द्वारा जबरन लादे गये दमोह सीट के उपचुनाव में पार्टी के लिए सर्वस्व दिया। कॉग्रेस की विचार धारा में जन्में बृजेन्द्र अपनी ही पाटी की सेवा करते हुए अचानक कोरोना बीमारी के शिकार हो गये। हर तरफ तनाव था हर कोई इनकी बेहतरी की दुआये कर रहे थे, सब को विश्वास था कि फौलादी इरादे वाले बृजेन्द्र इस जानलेवा बीमारी को मात देकर आयेगे। बृजेन्द्र भी पूरी ताकत से कोरोना से लड़ रहे थे, अस्पताल के बिस्तर पर भी वही विश्वास वही दिनचर्या और एक दिन अचानक मनहूस खबर किड़मेरालाल जेर की माटी का लाड़ला इस पूत इस जगत में नही था, मुझे इसका भरोसा ही नही हुआ। हर तरफ चीत्कारथा, हर तरफ बद हवासी थी लेकिन मैं विश्वास करने को तैयार नही थी। मेरा लाल अचानक मृत्यु शैया पर लेटा शांत गम्भीर होकर मेरे गोद मे शमा गया। हाय मैं कैसी बदनसीव कि जिसका वेटा उससे छीन लिया गया हो, मेरा बेटा सवक्ष सहारा सबकी आंखो का तारा था। अवजेर की गलिया सूनी हो गयी है। पृथ्वीपुर की उम्मीदे, कौन सुनेगा इस माटी की पुकार अब कौन बँधायेगा सम्वल। यह गम झेलने के लिए शाया इससे भी ज्यादा हिम्मत की जरूरत है। इस माटी ने अपना बृजेन्द्र खो दिया शायद वह अपनी जनता कि लिए अपने लोगों के लिए किसी स्वरूप में अवश्य आयेगा। आज मेरी गोद का हर लाल बृजेन्द्र के लिए रोता है लेकिन मैं विखलने के साथ बृजेन्द्र की तस्वीर उनके एकलौते बेटे नितेन्द्र सिंह उर्फ नीटू में देख रही हूँ। जो जनता के सम्वल सेआज पृथ्वीपुर का विधाय क बन कर सबके बीच में है। वही गुण वही सम्वल वही आवाज वही सहयोग की भावना मुझे नीटू में देखने को मिल रही है, बृजेन्द्र की तरह नितेन्द्र भी हमारी संस्कृति, साहित्य, खेल, विकास एवं वहुआयामी क्रियाकलापों में सहयोगी बनकर मुझे चैन की मुद्रा में रहने को प्रेरित करता है। मैं पृथ्वीपुर की माटी आप सबका नमन करते हुए सहयोग की आकांक्षा करती हूँ।

-(लेखक पूर्व मंत्री बृज्रेन्द्र सिंह राठौर के निज सहायक रहे है।)

श्रद्धांजलि -

शिरीष जी का जाना एक युग का अंत है

- बहादुर सिंह परमार



गोरा रांग, हँसमुख चेहरा, स्नेहिल स्वभाव के धनी गीतकार संपादक, कुशल संचालक की सुरेन्द्र शर्मा 'शिरीष' का निधन छतरपुर के साहित्यिक जगत् के एक युग का अंत होना है। उनके गीत बहुत लोकप्रिय रहे हैं। वे अच्छे संपादक थे। उन्होंने राष्ट्र गौरव के अंकों के साथ श्रीयुत श्रीनिवास शुक्ल, पं. भैयालाल व्यास तथा डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त के अभिनंदन ग्रंथों का संपादन किया। बुन्देली भाषा के सामर्थ्य पर आपने काफी उत्कृष्ट कार्य किया। सरस्वती सदन पुस्तकालय ट्रस्ट, बुन्देल केशरी महाराज छत्रसाल द्वारा नंदीबाला मंरि समिति सहित अनेक संस्थाओं के सक्रिय सदस्य व पदाधिकारी रहे।

आदरणीय शिरीष का जीवन आदर्शों से युक्त रहा। वे सदैव को छोटों को स्नेह प्रदान करते व प्रोत्साहित करते थे। उन्हें कभी मैंने गुस्सा नहीं देखा। कोई उन्हें कितने ही कटु वचन बोल दे लेकिन वो हमेशा मुस्कराते रहते। उनके साथ मैंने अनेक यात्रायें की और यह अनुभव किया वे व्यवस्थित व अनुशासित जीवन जीते थे। उनके जीवन में बड़ा सघर्ष रहा। भाभी जी के बिछुड़ने के बाद उन्होंने अपने को बहुत सम्भाला किंतु मधुमेह व अन्य रोगों ने उन्हें घेर लिया। परिजनों ने बहुत सेवा की। खासतौर से बहू भावना ने अपने सेवा भाव से उनका हदय जीत लिया था। एक दिन मैं उनके घर अस्वस्थता की हालत में उन्हें देखने गया तो उन्होंने बताया कि भैया भावना माँ की तरह सेवा कर रही है।

दोनों पुत्रों व पुत्रवधुओं को उन्होंने बहुत अच्छे संस्कार दिये जिनके आधार पर वे आज भी संस्कारित भाव सेवाभावी है।

बुन्देली विकास संस्थान बसारी के प्रादुर्भाव १९९६ ई0 से ही सक्रिय सदस्य, पदाधिकारी तथा सहयोगी रहे है। सम्मान चयन समिति के अध्यक्ष का दायित्व भी उन्होंने सफलतापूर्वक निर्वहन किया। श्रद्धेय श्री सुरेन्द्र शर्मा 'शिरीष' के महाप्रयाण पर हम उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते है।

नईं नईं पोथी अपुन के लानें

- **झाँसी जनपद के अज्ञात लोक कवि और उनके काव्य का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन** - डॉ. डी.आर. वर्मा 'बेचैन' प्रकाशक-डॉ. एस.पी. वर्मा, स्यावरी - वर्ष-2023 कीमत-500/-
- **पंचतंत्र कौ बुन्देली अनुवाद**-डॉ. राघवेन्द्र उदैनियाँ, 'सनेही' प्रकाशक-बुन्देली साहित्य प्रकाशन, छतरपुर वर्ष-2022 कीमत 1600/-
- **गले का हार**-डॉ.प्रेमलता नीलम, प्रकाशक - भव्या पब्लिकेशन, भोपाल वर्ष 2021 कीमत 100/-
- **बुंदेली मोहनी चौकड़िया**-आशाराम वर्मा 'नादान', प्रकाशक-लेखक स्वयं वर्ष-2023
- **दतिया धाम वृंदावन**- विनोद मिश्र 'सुरमणि',प्रकाशक-लायन्य पब्लिकेशन,ग्वालियर, वर्ष-2023, कीमत 200/-
- **अविरल बहने दो**-डॉ. राज गोस्वामी, प्रकाशक-शिवम् पूर्णा प्रकाशन, भोपाल, वर्ष-2023, कीमत 200/-
- **सिद्ध सृजन**-अरूण सिद्ध 'गुरू', प्रकाशक-निरूपमा प्रकाशन, मेरठ, वर्ष-2022, कीमत 100/-
- **तुम** (काव्य संग्रह) -रामेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव, प्रकाशक-नेशन प्रेस डॉट कॉम,दिल्ली,वर्ष-2022 कीमत 190/-
- **रंगमंच**-आभा श्रीवास्तव, प्रकाशक-स्वयं, वर्ष-2024
- **भारत की महान् मातृशक्ति**-राकेश व्यास, प्रकाशक-मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष-2023, कीमत 325/-
- **कौटिल्य नीति निहारिका** -पं. रामसेवक पाठक 'हरि किंकर' प्रकाशक-हरि किंकर साहित्य संस्थान, तालबेहट, कीमत 50/-
- **जगज्जननि माँ जानकी**-पं. रामसेवक पाठक 'हरि किंकर' प्रकाशक-पूज्य संत श्री पुनीत रामदास जी महाराज, अयोध्या, वर्ष 2019 कीमत 100/-
- **रास्ता इधर से भी है**-अश्विनी कुमार दुबे', प्रकाशक-इंक पब्लिकेशन,प्रयागराज, वर्ष-2022, कीमत250/-
- **कशिश**-डी.आर. रजक,प्रकाशक-मुस्कान पब्लिकेशन, टीकमगढ़, वर्ष-2022, कीमत 250/-
- **फगवारे**-प्रताप नारायण दुबे, 'प्रताप' काव्यकार स्वयं, वर्ष-2021, कीमत 250/-
- **बुंदेली वैभव**-डॉ. पुनीत श्रीवास्तव, प्रकाशक-इंस्टा पब्लिकेशन, वर्ष-2023, कीमत-150/-
- **राना लिधौरी गौरव ग्रंथ** -सं. रामगोपाल रैकवार, प्रकाशक -जे.टी.एस. पब्लिकेशन, दिल्ली,वर्ष 2023, कीमत 1200/-
- **कोउ काउ को नँइयाँ**-बी.एस. सेंगर, प्रकाशक-कवि स्वयं, वर्ष-2022, कीमत 250/-
- **तुलसी रतना दीप**-सुरेन्द्र सिन्हा 'अंजलि', प्रकाशक-समदर्शी प्रकाशन, गाजियाबाद, वर्ष-2023,कीमत 500/-
- **सांसों की सरगम** -डॉ.वन्दना मिश्र, प्रकाशक-आईसेक्ट पब्लिकेशन, भोपाल, 2023, कीमत 25/-
- **विन्ध्य लाड़ली**-अभिनंदन गोइल -मनीष प्रकाशन,भोपाल, 2022, कीमत 175/-
- **बुन्देली वागेश्वरी**-देवी सिंह राजपूत, प्रकाशक-कवि स्वयं, 2023, कीमत 250/-
- **उत्तरप्रदेश का स्वतंत्रता संग्राम महोबा** -संतोष कुमार पटैरिया, प्रकाशक-नयी किताब प्रकाशन,दिल्ली,2022, कीमत 550/-
- **राजपूतों की युद्ध नीति**-नरसिंह परदेसी बघेल,प्रकाशक-आर्यावृत्त संस्कृति संस्थान, दिल्ली, 2022, कीमत 400/-
- **छत्रसाल रचना संचयन**-डॉ. बहादुर सिंह परमार प्रकाशक-ग्रंथ अकादमी, नईदिल्ली, 2023, कीमत 200/-
- **थेरि गाथा प्रबुद्ध बौद्ध भिक्षुणियों के गाथा गीत**-राकेश व्यास,काव्यानुवाद-शिवभूषण सिंह गौतम, प्रकाशक-ओरोजिनल्स, दिल्ली 2023, कीमत 750/-
- **ईसुरी काव्य भीमांसा ग्रंथ**-डॉ.रामनारायण शर्मा, प्रकाशक- डॉ. सुशीला,बुन्देली साहित्य समिति, झाँसी, 2022, कीमत 700/-
- **आओ बणावां निमाड़ का मांडणा**-पूर्णिमा चतुर्वेदी, प्रकाशक-शिवम् प्रकाशन, प्रयागराज,2022,कीमत 150/-
- **नौनिहाल देश के**-डॉ. प्रेमलता नीलम, प्रकाशक-आचार्य प्रकाशन,इलाहाबाद, कीमत 150/-
- **बुन्देली शब्दकोश**-डॉ.आर.पी पाण्डेय, प्रकाशक - स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली 2022, कीमत 195/-
- **शत्रुघ्न महाकाव्य**-सन्तोष सौनकिया 'नवरस' प्रकाशक-रचनाकार स्वयं, 2022, कीमत 50/-
- **कुन्जी दाऊकी शादी की पचासवीं वर्षगांठ** -आर.के. तिवारी, प्रकाशक-रचनाकार स्वयं, 2022, कीमत 175/-
- **दावानल**-इंजी हेमराज राठौर, 'राजा' प्रकाशक-ऋषि मुनि प्रकाशन, उज्जैन, 2020, कीमत 300/-
- **स्मृतिद्वय**-भारतेंदु प्रकाश, प्रकाशक-शब्द शिल्पी पत्रिका, और प्रकाशन, सतना, 2021, अमूल्य
- **काव्योधानम्**-सं. श्रीराम तिवारी 'सहज', प्रकाशक-कामायनी प्रकाशन, प्रयागराज, 2021, कीमत 250/-
- **कोरोना संकट और संत साहित्य की प्रासंगिकता** - सं.डॉ. बारेलाल जैन, प्रकशक-संकल्प प्रकाशन, नौबस्ता, कानपुर, 2021, कीमत 795/-
- **अनजानी राहें**-लक्ष्मीचंद्र गुप्त,प्रकाशक-मंगलम् प्रकाशन छतरपुर, 2021, कीमत 250/-
- **हद या अनहद**-डॉ. सुनील कुमार शर्मा,प्रकाशक -वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2022, कीमत 299/-
- **बीन क्या पकड़ी सपेरा हो गया**-डॉ. श्याम सुन्दर

श्रीवास्तव, 'श्याम' प्रकाशक-रचनाकार स्वयं, 2022, कीमत 290/-

- **धीरे समीरे** -बाबा विष्णु शरण, प्रकाशक-वैभव प्रकाशन, रायपुर, 2023, कीमत 200/-
- **बीन बीन फुलवा लगाई बड़ी रास**-श्रीमती कला वर्मा, प्रकाशक-कृष्णा कम्प्यूटर, सागर, 2021, कीमत 70/-
- **राष्ट्र बोध**-अभिराम पाठक,प्रकाशक-बुक्स क्लिनिक प्रकाशक, 2022 कीमत 290/-
- **कजली (खण्ड काव्य)**-जयगोविन्द मिश्र, प्रकाशक-अतुल प्रकाशन, कानपुर, 2021, कीमत 350/-
- **लोक नाट्य परम्परा में नौंटकी**-डॉ. लखनलाल खरे, प्रकाशक-आराधना ब्रदर्स,कानपुर, 2021,कीमत 450/-
- **राग बुन्देली**-रमेश तिवारी,प्रकाशक-जवाहर पुस्तकालय मथुरा, 2022 कीमत 150/-
- **काव्य सुरभि** -डॉ. गायत्री वाजपेयी,प्रकाशक-साहित्य संस्थान, गाजियाबाद, 2022, कीमत 400/-
- **कलम की अनंत दिशाएँ**-डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैयाँ', प्रकाशक-अनामिका प्रकाशन, प्रयागराज,2022,कीमत 750/-
- **रैन पुतरिया (बुन्देली नाटक)**-स्वामीप्रसाद श्रीवास्तव, प्रकाशक-जनजातीय लोककला एवं बोली विकास अकादमी भोपाल, 2023, कीमत 50/-
- **साहित्य में महाराज छत्रसाल**-सं. प्रो. बहादुर सिंह परमार, प्रकाशक-जे.टी.एस. पब्लिकेशन,दिल्ली 2022,कीमत 500/-
- **लोक मंजरी**-आचार्य भगवत दुबे,प्रकाशक-पाथेय प्रकाशन, जबलपुर, 2022, कीमत 200/-
- **चौकड़िया कलश**-लक्ष्मीमल चौरसिया,प्रकाशक-जे.टी.एस. पब्लिकेशन, दिल्ली 2023 ,कीमत 395/-
- **दो रंग दो दिशाएं** -कृपाशंकर तिवारी, प्रकाशक-प्रतिश्रुति प्रकाशन, कोलकाता, 2019, कीमत 380/-
- **कथा सागर**-कृष्णमुरारी श्रीवास्तव, 'सखा' प्रकाशक-सत्यनाम प्रकाशन, झाँसी, 2020, कीमत 200/-
- **खोबा भर मिठाई**-दिव्य यादव,प्रकाशक-लोकोदय प्रकाशन लखनऊ 2021 कीमत 150/-
- **आशदीप**-डॉ. आशीष कुमार तिवारी, 'आश' प्रकाशक-शैलजा प्रकाशन, कानपुर, 2021, कीमत 450/-
- **बुन्देली काव्य कुंज**-सुकदेव प्रसाद व्यास, प्रकाशक-दिलीप व्यास, गुरसराय, झाँसी, 2021,कीमत 100/-
- **कुसुमांजलि**-भूमि कुमारी,प्रकाशक-नूतन साहित्य समिति पन्ना, 2021 कीमत 250/-
- **महादेव** - आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल,प्रकाशक -जनजातीय लोककला एवं विकास विधाय अकादमी, भोपाल,2021, कीमत 500/-
- **प्रबोध दर्शन**-जगदीश कुमार प्रबोध, प्रकाशक-समय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021, कीमत 250/-
- **आपदा ही अवसर**-डॉ. नाथूराम राठौर,प्रकाशक-जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2021, कीमत 450/-
- **संघर्षों की धूप**-डॉ. वीरेन्द्र निर्झर,प्रकाशक-स्वयं प्रकाशन बुरहानपुर, 2020, कीमत 200/-
- **हाँ, हम राजनीति नहीं कर रहे**-सेवाराम त्रिपाठी, प्रकाशक-कलमकार मंच, जयपुर, 2020, कीमत 150/-
- **बुन्देली गीतमाला**-कृष्णमोहन नायक, प्रकाशक-त्र्यम्बक प्रकाशन, कानपुर, 2021 ,कीमत 395/-
- **संकल्पों के पंख**-डॉ. नाथूराम राठौर,प्रकाशक-अयन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020, कीमत 220/-
- **बुन्देलखण्ड के उपन्यासकार**-डॉ. रामनारायण शर्मा, प्रकाशक-डॉ. सुशीला शर्मा, झाँसी, 2021, कीमत 300/-
- **बड़े साब एवं अन्य कहानियाँ**-महेन्द्र भीष्म, प्रकाशक-एस.डी.आर. इन्वोवेज इंडिया,कुलपहाड़,2021,कीमत 100/-
- **बुन्देली रसगोरस**-सुकदेव प्रसाद व्यास,प्रकाशक-दिलीप व्यास, गुरसराँय, झाँसी, 2021, कीमत 100/-
- **कालजयी कालिन्जर**-श्रवण सिंह सेंगर, प्रकाशक-गन्धर्व भवन प्रकाशन,गुरसराँय, झाँसी, 2021, कीमत 100/-
- **पूछत पूछत आय जू**-रामकिशोरी गुप्ता, प्रकाशक-इन्द्रा पब्लिकेशन हाउस, भोपाल, 2020 ,कीमत 150/-
- **वृन्दावन से वृन्दावनलाल वर्मा**-डॉ. दया दीक्षित, प्रकाशक-अमन प्रकाशन,कानपुर,2021, कीमत450/-
- **बुन्देलखण्ड का इतिहास**-कन्हैयालाल अग्रवाल, प्रकाशक-बी.आर. पब्लिशिंग कारपोरेशन, दिल्ली,2020,कीमत 1950/-
- **पिया के पास**-डॉ. प्रीति सिंह परमार,प्रकाशक-जे.टी. एस. पब्लिकेशन, दिल्ली, 2024, कीमत 200/-
- **भाव भूषण**-शिवभूषण सिंह गौतम 'भूषण', प्रकाशक-जे.टी.एस. पब्लिकेशन, दिल्ली, 2024, कीमत 300/-
- **रामकथा का वैश्विक परिदृश्य**-डॉ. घनश्याम भारती प्रकाशक-जे.टी.एस. पब्लिकेशन, दिल्ली, 2024, कीमत 815/-
- **राज कवि बिहारी भट्ट और उनका सृजन**-डॉ. लखनलाल खरे, जे.टी.एस. पब्लिकेशन, दिल्ली, 2024, कीमत 700/-
- **लोकदेवता कारसदेव**-डॉ. एम.एल प्रभाकर,प्रकाशक-आशा प्रकाशन, कानपुर 2020, कीमत 700/-
- **कलम की अनंत दिशाएँ**-डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैयाँ', प्रकाशक-अनामिका प्रकाशन, प्रयागराज, 2022, कीमत 700/
- **ब्रह्मवादिनी**-डॉ. सरोज गुप्ता प्रकाशक-जे.टी.एस. पब्लिकेशन, दिल्ली, 2021, कीमत 595/-
- **देह, भूमि और भित्ति अंकन**- डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, प्रकाशक-जनजातीय लोककला एवं बोली विकास अकादमी, भोपाल, 2022, कीमत 50/-
- **खंड बुंदेला देख**-डॉ.कुंजीलाल पटेल 'मनोहर 'प्रकाशक-जे.टी.एस. पब्लिकेशन, दिल्ली, 2023, कीमत 350/-
- **माधौ सिंह बुंदेला भजनावली**-डॉ.कुंजीलाल पटेल 'मनोहर' प्रकाशक-जे.टी.एस. पब्लिकेशन, दिल्ली, 2023, कीमत 350/-

24वें बुन्देली उत्सव का प्रतिवेदन

– **अतीन्द्रमणि त्रिपाठी**

पर्यटक ग्राम बसारी के राव बहादुर सिंह स्टेडियम में 24 वें बुन्देली उत्सव का भव्य शुभारंभ हुआ। बुन्देली कला और संस्कृति को समर्पित इस सात दिवसीय आयोजन का शुभारंभ मप्र के राजस्व एवं परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपूत के मुख्य आतिथ्य में किया गया। इस अवसर पर श्री राजपूत ने कहा कि 24 साल एक बहुत बड़ा वक्त होता है। बुन्देली विकास संस्थान एवं पूर्व वि धायक मुन्ना राजा के प्रयासों का नतीजा है कि उन्होंने इस अनूठे आयोजन को देशभर में पहुंचाकर बुन्देलखण्ड की क ला और संस्कृति को विस्तार दिया है। उन्होंने कहा कि हमें गर्व है कि हम बुन्देलखण्डी हैं। हमारी कला, संस्कृति, रीतिरिवाज, बोली, खेल, गायन और नृत्य आज देशभर में चर्चित हो रहे हैं। उन्होंने फिल्मों में लिए गए कई बुन्देली गीतों को मंच से गाकर सुनाया और कहा कि यह हमारे लिए गर्व की बात है कि हमारे शब्द और संस्कृति दुनिया का ध्यान खींच रहे हैं। उन्होंने कहा कि उनके सागर जिले की राई लोक नृत्य की टीम को जापान में नृत्य प्रतियोगिता में जब प्रथम पुरस्कार मिला तब दुनिया ने माना। श्री राजपूत के उद्बोधन के पूर्व बुन्देली विकास संस्थान के संरक्षक एवं पूर्व विधायक मुन्नाराजा ने अपने स्वागत भाषण में मंत्री गोविंद सिंह राजपूत का स्वागत करते हुए कहा कि वे बुन्देलखण्ड के एक ओजस्वी नेता हैं जिनसे समूचे बुन्देलखण्ड को ढेर सारी आशाएं हैं। उन्होंने कार्यक्रम में पधारे अन्य मेहमानों का भी स्वागत किया। संबोधन के पूर्व स्कूली बच्चों के द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से बुन्देली एवं छत्तीसगढ़ की लोक कलाओं को मंच पर उतारा गया। कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर एवं साहित्यकार डॉ. बहादुर सिंह परमार ने किया। इस अवसर पर पूर्व कृषि मण्डी अध्यक्ष डीलमणि सिंह बब्बूराजा, देवेन्द्र प्रताप सिंह दिल्लू राजा, बुन्देली विकास संस्था के अध्यक्ष आदित्य शंकर बुन्देला, प्रदेश सचिव सिद्धार्थ शंकर बुन्देला, घासीराम साहू, लखन दुबे, चौबे चौधरी, जमाल अहमद, प्रभात अग्रवाल, सोनू खान, फै य्याज खान, मोहम्मद हनीफ, दीसी पाण्डेय, रमा चौहान, सपना चौरसिया, आबिद सिद्धीकी, अमित गोस्वामी, लोकेन्द्र वर्मा सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

24वें बुन्देली उत्सव का शुभारंभ रंगोली, लोक चित्रकारी और विराट दंगल की प्रतियोगिताओं के साथ हुआ। इस अवसर पर देश के कोने-कोने से आए पहलवानों के अलग-अलग मुकाबलों के साथ-साथ एक-दूसरे से भी रोचक मुकाबले हुए। इस मुकाबले में पंजाब की महिला पहलवान परमजीत, राजस्थान के शमशेर, जालिम सिंह, मथुरा के सोनू, राजस्थान के ज्वाला सिंह की कुश्तियां लोगों को रोमांचित करती रहीं। अन्य पहलवानों में पंजाब से भीम, अंबाला से मोनू, कानपुर से आदिल, मथुरा से अनुज, जालौन से टाईगर मोहन सिंह, कोटरा से मनोज पहलवान, कानुपर से बबलू पहलवान, राजस्थान से शैतान पहलवान के अलावा कालीघटा पहलवान एवं रसीद पहलवान ने भी अखाड़े में अपने दांवपेंच से दर्शकों को हैरान कर दिया।

बुन्देली उत्सव के मंच से इस वर्ष पत्रकारिता के लिए दिए जाने वाले पं. हरिराम मिश्र स्मृति सम्मान को देश के जाने-माने पत्रकार राजेश बादल को प्रदान किया गया। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के क्षेत्र में देश के कई शीर्षस्थ चैनलों में अपनी सेवाएं दे चुके राजेश बादल छतरपुर की मिट्टी से जुड़े और यहीं के निवासी हैं। उन्होंने छतरपुर से ही अपनी पत्रकारिता का सफर शुरू किया था। रविवार को वे सपत्नीक इस आयोजन में शामिल हुए। बुन्देली उत्सव के शुभारंभ अवसर पर बुन्देली विकास संस्थान द्वारा उन्हें उक्त सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री बादल ने कहा कि देश में अन्य स्थानों पर सम्मानित होने और अपनी माटी अपने लोगों के बीच सम्मान पाने में बहुत फर्क होता है। उन्होंने कहा कि यह अवसर पर भावुक होने का है। मुझे समझ नहीं आ रहा है कि मैं क्या कहूं। उन्होंने कहा कि मैं छतरपुर में ही जन्मा, पढ़ा-लिखा और यहीं से मिली प्रेरणाओं ने कुछ करने लायक बना दिया।

बुन्देली विकास संस्थान द्वारा 24वें बुन्देली उत्सव में दो अनूठे आकर्षक शामिल किए गए हैं। बसारी के राव बहादुर सिंह स्टेडियम में ही मंच के दाएं तरफ एक बुन्देली बखरी का निर्माण किया गया है। बुन्देलखण्ड के ग्रामीण अंचलों में मौजूद मिट्टी के कच्चे मकान और उन पर अनूठी लोक चित्रकारी इस बुन्देली बखरी को आकर्षक बना रही है। बखरी में ही छोटा कुआं, चारा काटने वाली मशीन और खाट के कारण इस बुन्देली बखरी की सुंदरता देखते ही बनती है। इसी बुन्देली बखरी के बगल में लकड़ी के सुंदर खिलौनों की एक दुकान सजाई गई है। काष्ठ शिल्प को प्रदर्शित करने और हस्तकला को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सजायी गई इस दुकान पर रखे खिलौने लोगों को आकर्षित कर रहे हैं एवें लोग इन्हें खरीदकर अपने घरों में ले जा रहे हैं।

बुन्देली कला एवं संस्कृति को समर्पित बुन्देली उत्सव के सांध्यकालीन कार्यक्रमों में पर्यटक ग्राम के राव बहादर सिंह स्टेडियम में लोकनृत्यों एवं लोक गायनों की प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि म.प्र. शासन के वाणिज्य कर मंत्री एवं जिले के प्रभारी मंत्री बृजेन्द्र सिंह राठौर रहे तो वही विशिष्ट अतिथि के रूप में कांग्रेस के दिग्गज नेता अजय सिंह राहुल भैया उपस्थित रहे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद श्री राठौर ने बुन्देली विरासत को संरक्षित करने के लिए आयोजित इस महोत्सव की जमकर सराहना की।

श्री राठौर ने कहा कि मैं बुन्देली विकास संस्थान के सभी पदाधिकारियों और इसके संरक्षक पूर्व विधायक शंकर प्रताप सिंह मुन्नाराजा को बधाई देता हूं कि उन्होंने 24 वर्षों की कड़ी तपस्या के साथ इस आयोजन को सफलता की ऊंचाई तक पहुंचाया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में अनेक आयोजन होते हैं लेकिन अपनी कला और संस्कृति को सहेजने के लिए जो दृढ़ संकल्प इस आयोजन में दिखता है वह कहीं नहीं दिखता है। उन्होंने कहा कि यह आयोजन इस छोटे से ग्राम बसारी और इसके आसपास रहने वाले लोगों को बड़े अवसर उपलब्ध करा रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन को सरकार भरपूर सहयोग करेगी। उन्होंने म.प्र. सरकार की नीतियों पर चर्चा करते हुए बताया कि कमलनाथ सरकार ने तय किया

है कि बुन्देलखण्ड में पर्यटन के विकास की संभावनाओं को खोजा जाए और हम अपनी कला को पर्यटकों के सामने पहुंचा पाएं। इस क्रम में सरकार नमस्ते ओरछा, खजुराहो महोत्सव जैसे आयोजन को भरपूर सहयोग देगी।

अतिथियों के संबोधन उपरांत मंच पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां हुईं जिनमें लोक गायन गारी, कहरवा, ख्याल, दादरा की प्रस्तुतियां दी गईं तो वहीं दिवारी, बधाई और कछियाई जैसे लोकनृत्य भी हुए। कलाकारों ने मंच से बुन्देलखण्ड की महिमा का बखान करते हुए कहा कि ऐसी माटी न भारत के कोनऊ खण्ड में जनम दईयो विधाता बुन्देलखण्ड में। मंच पर बधाई और नोरता की प्रस्तुति स्वर्ण बुन्देल ग्रुप छतरपुर के द्वारा दी गई। इसी तरह दादरा की चार टीमों में करन सिंह यादव निवाड़ी, रेखा सरगम पनवाड़ी, दशरथ हसमुख छतरपुर एवं कालीचरण अनुरागी बसारी ने गीत प्रस्तुत किए। गारी गायन की टीमों में मत्थीबाई एवं सखियां बसारी, कंदू रैकवार बसारी, बेबीराजा बसारी, मालती कुशवाहा एवं रेखा सरगम पनवाड़ी ने अपनी प्रस्तुति दी। दिवारी में उर्दमऊ से आयी महेश कुशवाहा पार्टी एवं बसारी की टीमों ने धूम मचाई तो वहीं बुन्देली कीर्तन में बसारी के आशीष चौबे, पलेरा के प्रमोद राजपूत, करन सिंह यादव निवाड़ी ने सबको भक्तिभाव से जोड़ा। बनरे गायन में दमोह के चौधरी रामलाल, बसारी के कंदू रैकवार, टीकमगढ़ की मेघा यादव व बसारी की मथीबाई ने प्रस्तुति दी। कहरबा में बलवीर सिंह यादव निवाड़ी, प्रमोद राजपूत पलेरा, बेबीराजा बमीठा। ख्याल में कालीचरन अनुरागी और दशरथ हसमुख ने अपनी प्रस्तुति दी। कछियाई में राजारंक कुशवाहा टीम महोबा एवं अहिरवारी बैठक में श्यामरीपुरवा की टीम ने श्रोताओं और दर्शकों को खूब लुभाया।

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी बुन्देलखण्ड के इतिहास के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए दीवान प्रतिपाल सिंह बुन्देली स्मृति सम्मान से सागर विश्वविद्यालय में पदस्थ इतिहास विभाग के प्रोफेसर डॉ. बृजेश कुमार श्रीवास्तव को सम्मानित किया गया तो वही बुन्देली लोक साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए उमाशंकर खरे पृथ्वीपुर को राव बहादुर सिंह बुन्देला स्मृति सम्मान से नवाजा गया।

बुन्देली उत्सव के अंतर्गत निशानेबाजी की रोमाचंक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छतरपुर के अचूक निशानेबाजों ने सतना और दिल्ली के धुरंधरों को भी पीछे छोड़ दिया। बसारी के गढ़ी तालाब में हुई निशानेबाजी प्रतियोगिता में छतरपुर के इन्द्रविक्रम सिंह ने सबसे अचूक निशाना साधकर इस प्रतियोगिता को अपने नाम कर लिया। दूसरे स्थान पर सतना के सागर एवं तीसरे स्थान पर दिल्ली के दानिश खान रहे। इसके साथ ही इस वर्ष से बुन्देली उत्सव में बुन्देलखण्ड के भूले बिसरे खेल गुलेलबाजी को भी शामिल किया गया जिसमें कई प्रतिभागियों ने गुलेल से निशाने लगाए। गुलेलबाजी की प्रतियोगिता में रमेश कुशवाहा प्रथम और राजू रैकवार द्वितीय स्थान पर रहे। खिलाड़ियों एवं कलाकारों को बुन्देली विकास संस्थान के संरक्षक एवं पूर्व विधायक शंकर प्रताप सिंह मुन्नाराजा, पूर्व मण्डी अध्यक्ष डीलमणि सिंह बब्बूराजा, देवेन्द्र प्रताप सिंह दिल्लू राजा, कांग्रेस के प्रदेश सचिव सिद्धार्थशंकर बुन्देला, पूर्व जनपद अध्यक्ष महिपाल सिंह बरोंही ने पुरस्कृत किया।

उधर बीती शाम बसारी के राव बहादुर सिंह स्टेडियम में लोक संस्कृत की रंगारंग प्रस्तुतियां हुईं जिसमें बुन्देलखण्ड के कोने-कोने से आए कलाकारों ने ढिमरयाई, कार्तिक गीत, आल्हा, दलदल घोड़ी, लमटेरा, बिलवारी, सोहरे, रावला, कड़ारा, बहुरूपिया, गोटें और अलगोजा में अपनी प्रस्तुतियों दीं। इन प्रस्तुतियों में सर्वाधिक ध्यान खींचा दीक्षा और प्रतीक्षा की आल्हा गायन प्रस्तुति ने। इन बेटियों ने आल्हा गायन में बुन्देलखण्ड के शौर्य को गाकर लोगों को स्वाभिमान की भावना से भर दिया। उनके अलावा महोबा से आए बृजेन्द्र यादव एवं हरडोनी के प्रेमनारायण यादव ने भी आल्हा की प्रस्तुतियां दी। ढिमरयाई में कर्रापुर के चुन्नीलाल, छतरपुर के मुन्नालाल सैनी, बसारी के कंदू लाल रैकवार एवं दमोह के चौधरी रामलाल काठिल व साथियों ने अपनी प्रस्तुति दी। कार्तिक गीत में संपत नामदेव और बमीठा की गोल्डी विश्वकर्मा ने अपनी कला का प्रदर्शन किया। दलदल घोड़ी में बसारी के रमेश बाबा, लमटेरा में दमोह के चौधरी रामलाल काठिल, बसारी के कालीचरण अनुरागी व सपना रंगमंच ने धार्मिक आख्यान सुनाए। बिलवारी में सपना रंगमंच, दमरूलाल आदिवासी, बेबीराजा, मत्थीबाई एवं संजू सबनम कटनी की प्रस्तुति लाजवाब रही तो वही सोहरे में संपत नामदेव ने खूब रंग जमाया। रावला में छतरपुर के राम सिंह राय, बहरूपिया की प्रस्तुति में बसारी के कंदूलाल रैकवार, गोंटें की प्रस्तुति में झांसी से अखिलेश पाल व अलगोजा में सुखलाल आदिवासी ने श्रोताओं को तालियों बटोरी। कार्यक्रम के दौरान अतिथियों के द्वारा बुन्देली संस्कृति के क्षेत्र में डॉ. दयाराम वर्मा बैचेन श्यावरी मऊरानीपुर को राव बहादुर सिंह बुन्देला स्मृति सम्मान से नवाजा गया तो वहीं बुन्देली साहित्य में अलोचना के लिए डॉ. के.बी.एल. पाण्डेय दतिया को राव बहादुर सिंह बुन्देला स्मृति सम्मान सौंपा गया।

बुन्देली उत्सव में कबड्डी के रोचक मुकाबलों और नौका दोड़ के आकर्षक के नाम रहा। बुन्देली विकास संस्थान के द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के अंतर्गत बसारी के राव बहादर सिहं स्टेडियम में जहां कबड्डी, चौपड़ और खो-खो के शानदार मुकाबले खेले गए तो वही बसारी तालाब में हुई नौका दौड़ प्रतियोगिता दर्शकों को रोमांचित कर गई। नौका दौड़ प्रतियोगिता में 7 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। प्रत्येक नौका पर दो-दो नाविक सवार होकर बिजली की रफ्तार से पानी पर सरपट दौड़ते नजर आए। इस मुकाबले में प्रथम आशाराम और द्वितीय छोटू रैकवार की टीम को मिला, तीसरे स्थान पर नौनेलाल एवं लक्ष्मण रैकवार की टीम रही। इस मुकाबले में मुख्य अतिथि के तौर पर नरेश जैन उपस्थित रहे। आयोजन के सरंक्षक पूर्व विधायक शंकर प्रताप सिंह मुन्नाराजा ने सभी खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया और अपने संक्षिप्त संबोधन में इस उत्सव के महत्व पर प्रकाश डाला।

बुंदेली उत्सव के अंतर्गत बुंदेली कलाओं और खेलों के साथ-साथ बुंदेली व्यंजनों का आनंद भी देखने को मिला। चौथे दिन बुंदेली उत्सव की सबसे आकर्षक प्रतियोगिता अश्वनृत्य का आयोजन हुआ जिसमें दूर-दूर से आए घुड़सवारों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। अश्वनृत्य प्रतियोगिता को तीन श्रेणियों में आयोजित किया गया था। अश्वनृत्य श्रेणी में मऊरानीपुर के चंद्रभान यादव का घोड़ा अपने नृत्य से निर्णायकों का ध्यान आकर्षित करने में कामयाब रहा और उसे पहला स्थान हासिल हुआ। इस श्रेणी में दूसरे स्थान पर ग्राम खैरी निवासी उत्तम सेन एवं गंज निवासी रविंद्र पाल रहे। घुड़सवार सज्जा के दूसरे स्थान पर रामदीन यादव पिपरिया एवं घोड़े की सज्जा प्रतियोगिता में दूसरे स्थान पर कल्याण सिंह ग्राम सैला रहे।

बुधवार को बुंदेली उत्सव के अंतर्गत बुंदेली व्यंजन

प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। जिसमें छतरपुर जिले के ग्रामीण और शहीर क्षेत्रों से आई महिलाओं ने अपने हाथ से बनाए बुंदेली व्यंजन जनता के सामने परोसे। महिलाओं ने बरा, ठडूला, मुरका, कढ़ी, गुलगुला, मालपुवा जैसे बुंदेली व्यंजन जब जनता के सामने परोसे तो लोग उंगलियां चाटते रह गए।

24वें बुन्देली उत्सव में कबड्डी और चौपड़ के रोमांचक मुकाबले खेले गए तो वहीं बीती शाम बुन्देली सिनेमा का प्रदर्शन किया गया। खुले आसमान के नीचे बुन्देलखण्ड के विभिन्न हिस्सों से आए फिल्म निर्माताओं की आधा दर्जन फिल्मों का प्रदर्शन प्रोजेक्टर स्क्रीन के जरिये किया गया। बुन्देली सिनेमा प्रदर्शन की पहली फिल्म रही हमार गांव जिसकी निर्देशन मऊ के राजा तिवारी द्वारा किया गया था। इसके अलावा बसारी के हिमालय यादव द्वारा निर्देशित फिल्म देशी लैला विदेशी छैला, संजू सबनम की फिल्म आक्रोश, झांसी के देवदत्त बुधौलिया द्वारा निर्देशित फिल्म हालात 3 एवं झांसी के ही अजय साहू द्वारा निर्देशित फिल्म घर में घुस गए चोर का प्रदर्शन भी किया गया। हमार गांव फिल्म में जहां ग्रामीण परिवेश को दर्शाकर उसके महत्व पर प्रकाश डाला गया तो वहीं हिमालय यादव की देशी लैला विदेशी छैला एक शानदार कॉमेडी फिल्म के रूप में दर्शकों को गुदगुदाने में कामयाब रही। सभी निर्देशकों का बुन्देली विकास संस्थान के संरक्षक पूर्व विधायक शंकर प्रताप सिंह मुन्नाराजा के द्वारा सम्मान किया गया।

मंगलवार को बसारी के राव बहादुर सिंह स्टेडियम में कबड्डी के सेमीफाइनल और फाइनल मुकाबले खेले गए। महिला वर्ग में फाइनल मुकाबला ग्वालियर एवं आजमगढ़ की लड़कियों के बीच खेला गया। ग्वालियर की खिलाड़ियों के शानदार दांवपेच के आगे आजमगढ़ की टीम परास्त हो गई और इस तरह ग्वालियर ने फाइनल पर कब्जा कर लिया।

बुन्देली उत्सव के पांचवें दिन इस उत्सव की सबसे रोमांचक बैलगाड़ी, दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में छतरपुर जिले के लगभग एक दर्जन गांवों से आए बैलगाड़ी सवारों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम के दौरान अपने हष्टपुष्ट बैलों के साथ मैदान में उतरे बैलगाड़ी सवारों ने अपनी गति से सभी को रोमांचित कर दिया। इस प्रतियोगिता में ग्राम बंधियन निवासी कल्लू यादव प्रथम स्थान पर रहे। ग्राम तिलौहां निवासी अरविंद यादव द्वितीय स्थान पर रहे जबकि ग्राम खुड़न निवासी कैलाश यादव तीसरे स्थान पर रहे।

बैलगाड़ी प्रतियोगिता के तीनों विजेताओं को बुन्देली विकास संस्था के संरक्षक एवं पूर्व विधायक शंकर प्रताप सिंह मुन्नाराजा के द्वारा शील्ड एवं पुरस्कार राशि देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर देवेन्द्र प्रताप सिंह दिल्लू राजा सहित क्षेत्र के कई गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

वहीं एक दिन पूर्व आयोजित की गई बुन्देली व्यंजन प्रतियोगिता के परिणाम भी पांचवे दिन घोषित किए गए। इन परिणामों के मुताबिक रूचि अग्रवाल प्रथम, श्रीमती ऊषा गुप्ता द्वितीय, एवं कंचन अग्रवाल को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। इन प्रतिभागियों को भी मंच से सम्मानित किया गया।

24वें बुन्देली उत्सव का आखिरी शाम बुन्देली विकास संस्था के द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों में श्रेष्ठ कार्य करने वालीं तीन विभूतियों को मंच से सम्मानित किया। लोक गायन के क्षेत्र में श्रीमती उर्मिला पाण्डेय को डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त स्मृति सम्मान से नवाजा गया तो वही प्रिंट मीडिया के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए वरिष्ठ पत्रकार रविन्द्र सोनकिया पं. हरीराम मिश्र स्मृति सम्मान एवं बुन्देली उत्सव में सराहनीय योगदान के लिए पर्वत सिंह को गौरिहार नरेश प्रताप सिंह सम्मान से सम्मानित किया गया। तदोपरांत बुन्देली उत्सव में लगातार 7 दिनों तक अपनी सेवाएं देने वाले संचालक जगदीश गंगेले, डॉ. बहादुर सिंह परमार, अशोक ताम्रकार, डॉ. विष्णु अरजरिया, सचिन जैन, जयप्रकाश श्रीवास, राजकुमार सेन गोल्डू, संदीप यादव को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए।

बुन्देली बसंत की सदस्यता हेतु आवेदन

नाम..पिता का नाम...

स्थाई पता ....

डाक का पता .... पिन नंबर ....

मोबाइल नम्बर ....ई-मेल आई.डी..

सदस्यता का प्रकार-वार्षिक/द्विवार्षिक/पंचवार्षिक सदस्यता राशि ....

भुगतान का तरीका .... चैक/आर.टी.जी.एस./ऑन लाइन बैकिंग/नगद

हस्ताक्षर

वार्षिक-२५० रु.(डाक व्यय सहित), द्विवार्षिक -५०० रु.(डाक व्यय सहित)पंचवार्षिक-१००० रु.(डाक व्यय सहित)

सदस्यता शुल्क की राशि बुन्देली विकास संस्थान, बसारी के **केनरा बैंक** के **खाता क्र. 1915101001608 IFSC Code - CNRB0001915** में आर.टी.जी.एस. या ऑनलाइन जमा कराई जा सकती है। चैक भी बुन्देली विकास संस्थान, छतरपुर के नाम देय होंगे।

बुन्देली विकास संस्थान, छतरपुर को आयकर आयुक्त, भोपाल के आदेश क्रं. **AAABTB1073HF20221** दिनांक १२.०५.२२ के अनुसार **Under Section 80G** के तहत आयकर छूट के लिये मान्यता दी गयी है। अतः आप अधिकाधिक राशि दान कर छूट का लाभ उठायें।

जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित

छतरपुर (म०प्र०)

1. बैंक से सम्बद्ध प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों के माध्यम से उनके सदस्यों को अल्पकालीन फसल ऋण शून्य प्रतिशत ब्याज दर पर उपलब्ध करवाना।
2. बैंक में जमा अमानतों का जिले के कृषि विकास में शत-प्रतिशत विनियोजन।
3. जिले के दूरदराज के क्षेत्रों में सार्वजनिक वितरण प्रणाली अन्तर्गत उपभोक्ताओं को उचित मूल्य की
   दुकानों से राशन सामग्री उपलब्ध कराना।
4. मध्यप्रदेश शासन की जय किसान फसल ऋण माफी योजना वर्ष 2022-23 के अन्तर्गत प्रथम चरण में कृषकों का ऋण माफ किया गया। दूसरे चरण की स्वीकृति प्रक्रियाधीन है।
5. अन्य बैंकों की तुलना में जमा अमानतों पर अधिक ब्याज।

जिला सहकारी बैंक एवं उसकी सेवा सहकारी समितियों से
जुड़िये और जिले के कृषि विकास में
अपना योगदान दीजिये।

संदीप जी. आर
प्रशासक

एस.के. रावत
मुख्य कार्यपालन अधिकारी